सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : समूह या सेल अगुवा

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 5

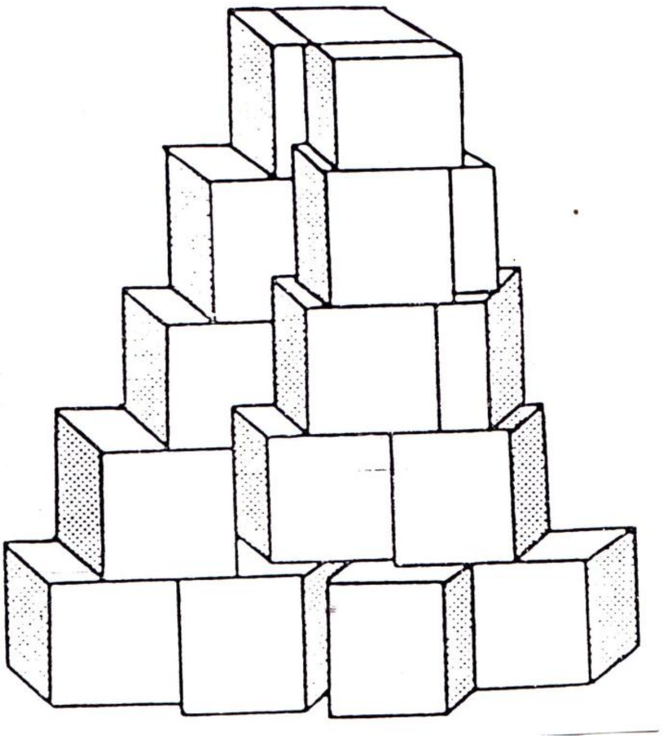

स्तर:

5. सेवक

4. अगुवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

उद्देश्य:

- ## उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

  (विकसित होना / परिपक्व होना)

  - यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

  - 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

  - 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

  - कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- ## और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

  (गुणा / पुनरुत्पादन)

  - 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

  - 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

  - इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

  - 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र.: 5

क्रमाँक | | पृष्ठ

–	बाइबल के विश्वास और अभ्यास की बुनियाद - एक संक्षिप्त पुनरीक्षण (21 अध्याय)	624
–	कुछ मुख्य शब्दों की परिभाषाएँ, जैसे कि: उद्धार, नया जन्म, प्रायश्चित	669
–	पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व	671
–	पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और प्रदर्शन (7 अध्याय)	675

(1) पवित्र आत्मा कौन है ?
(2) पवित्र आत्मा पूर्णता की भविष्यवाणी
(3) पवित्र आत्मा का बपतिस्मा
(4) पवित्र आत्मा और विश्वासी
(5) पवित्र आत्मा पाना
(6) अन्य भाषाओं में क्यों बोलें ?
(7) आत्मा के वरदान

–	पवित्र आत्मा द्वारा चलाए चलना - ईश्वरीय मार्गदर्शन और प्राथमिकताओं के अनुसार जीना (5 अध्याय)	699

(1) परमेश्वर के लोगों की अगुआई के एनेक तरीके
(2) परमेश्वर हमें हमारी आत्माओं द्वारा कैसे अगुआई करता है
(3) कठिन समयों में निर्देश कैसे पाएँ
(4) जीवन की प्राथमिकताएँ
(5) परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने के फन्दे और खतरे

–	और ये चिन्ह होंगे....(पवित्रशास्त्र से चिन्ह और चमत्कारों का एक अध्ययन)	710
–	बाइबल का विवरण: सुसमाचारों, प्रेरितों के काम, और पत्रों में चिन्ह और चमत्कार	714
–	आत्मिक युद्ध - एक परिचय	727
–	शैतानी गढ़ों से निपटना - विजयी कैसे हों	733
–	अपने शत्रु को समझना: शैतान और दुष्टात्माएँ	737
–	परमेश्वर का चंगा करने का सामर्थ्य (5 अध्याय)	741

(1) बीमारी कहाँ से आई ?
(2) लोग बीमार कैसे होते हैं ?
(3) चंगाई का परमेश्वर का उपाय
(4) चंगाई के माध्यम
(5) नया नियम सुसमाचार प्रचार और चंगाई

बाइबल के विश्वास और अभ्यास की बुनियाद – एक संक्षिप्त पुनरीक्षण

अध्याय 1 बाइबल परमेश्वर का वचन है

अ. परमेश्वर की विशेष पुस्तक

परमेश्वर का वचन - पवित्र बाइबल - परमेश्वर की विशेष पुस्तक है। यह दूसरी पुस्तकों के समान नहीं है, परन्तु एक अलौकिक पुस्तक है। इसे कई विभिन्न लोगों ने लिखा, जिन्होंने पवित्र आत्मा की प्रेरणा में लिखा था (2 तीमुथियुस 3:16 देखो)।

बाइबल विश्व की सबसे अधिक बिकनेवाली पुस्तक है। यह किसी भी दूसरी पुस्तक से अधिक बिकती है। बाइबल विश्व की किसी भी दूसरी पुस्तक से अधिक भाषाओं में अनुवाद की गई है। यह आदि में तीन भाषाओं में लिखी गई थी - इब्रानी, अरमिक और यूनानी। आपके पास जो बाइबल है समर्पित लोगों ने अनुवाद की है ताकि परमेश्वर के शब्द, विचार और योजनाएँ आपके पास उस भाषा में पहुँच सकें जिस में आप उन्हें समझ सकते हैं।

बाइबल विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक भी है। बाइबल के सबसे अधिक प्राचीन भाग लगभग 4000 वर्ष पुराने हैं। फिर भी यह आज विश्व में सबसे आधुनिक पुस्तक है; क्योंकि इसमें हम जीवन के बड़े बड़े प्रश्नों के उत्तर पाते हैं:

1. "मैं कहाँ से आया हूँ ?"
2. "मैं यहाँ क्यों हूँ ?"
3. "मैं कहाँ जाऊँगा ?"

हालाँकि बाइबल 66 छोटी छोटी पुस्तकों से बनी है, फिर भी इसका एक ही प्रमुख विषय है: मनुष्यजाति को बचाने की परमेश्वर का प्रेमी योजना।

बाइबल के आरंभ में आप 66 पुस्तकों की एक सूची पाएँगे जो बाइबल के अन्दर पाई जाती हैं।

बाइबल को दो भागों में बाँटा गया है:

1. पुराना नियम, और
2. नया नियम

पुराना नियम हमें यीशु के जन्म के पहले परमेश्वर का उसके लोगों (मुख्य रूप से यहूदी लोग) के साथ काम के बारे में बताता है।

नया नियम हमें यीशु के जन्म, उसके जीवन, चंगाई, छुटकारा और बीमार और पापी लोगो के क्षमा की उसकी विशाल सेवकाई, क्रूस पर उसकी मृत्यु, उसका मरे हुओं में से जी उठना और उसके स्वर्गारोहण (वापस स्वर्ग जाना) के बारे में बताता है।

यह हमें उसकी चंगाई, छुटकारा और क्षमा करने की सेवकाई उनके द्वारा जिन्होंने उसे उसके पुनरुत्थान के बाद देखा था, के पुनरारम्भ के बारे में भी बताता है। जो यीशु के पीछे चलते हैं उसी के समान बहुत से आश्चर्यजनक काम करते हैं जैसे उसने कहा था वे करेंगे (यूहन्ना 14:12 देखो)।

उनकी शिक्षाएँ जिन्होंने उसे उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद देखा था पत्रों में पाई जाती हैं। वे सब यीशु के पुनरुत्थान के पहले पच्चास वर्ष के अन्दर लिखे गए थे। वे नए नियम का लगभग आधा भाग लेते हैं।

आ. बाइबल का अध्ययन करना

सबसे महत्त्वपूर्ण सम्बंध जो आप इस जीवन में बना सकते हैं वो है परमेश्वर के साथ। बाइबल पढ़ने के द्वारा आप जान सकते हैं कि परमेश्वर कैसा है - उसके विचार, उसकी योजनाएँ और आपके लिए उसकी प्रतिज्ञाएँ।

बाइबल के आरंभ में दी गई सूची आपको बाइबल के उस भाग की पृष्ठ संख्या बताएगी जिसका आप अध्ययन करना चाहते हैं। बाइबल के विशेष भागों को ढूँढने में सहायता के लिए, अनुवादकों ने बाइबल को इस प्रकार संघटित किया है:

(1) पुस्तकें; (2) पुस्तकों में अध्याय; और (3) अध्यायों में आयतें।

इ. बाइबल की सबसे बड़ी प्रतिज्ञा

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:16)

ई. परमेश्वर के वचन का उद्देश्य

"...पवित्रशास्त्र....तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है" (2 तीमुथियुस 3:15-16)। "क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बंध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार बुलाया है। जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत सी बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं : ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती हैं, ईश्वरीय स्वभाव में समभागी हो जाओ" (2 पतरस 1:3-4)।

उ. परमेश्वर का वचन जीवन पैदा करता है

"....जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं" (यूहन्ना 6:63)।
परमेश्वर का वचन रचनात्मक है। "आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुँह की श्वास से बने।....क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया" (भजन 33:6,9)। इब्रानियों 11:3 भी देखो।

ऊ. परमेश्वर का वचन पानी के समान है

1. यह शुद्ध करता है

हम परमेश्वर के राज्य में जीवन परमेश्वर के वचन से "साफ धुलकर" आरम्भ करते हैं। "तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो" (यूहन्ना 15:3)। इफिसियों 5:25-27 भी देखो।

2. यह शुद्ध रखता है

हमारे हृदयों में बोया गया परमेश्वर का वचन हमें पाप से स्वतन्त्र रखता है। "जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन से सावधान रहने से...मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ" (भजन 119:9,11)।

ए) परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों के लिए प्रकाश है

"हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमके" (2 पतरस 1:19) यह एक अन्धियारे संसार में प्रकाश देता है। "यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आँखों में ज्योति ले आती है" (भजन 19:8)। "तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है....तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है, उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं" (भजन 119:1-5, 130)।

ऐ) परमेश्वर का वचन आत्मिक भोजन है

"यीशु ने उत्तर दिया : 'लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा'" (मत्ती 4:4)। यह आत्मिक वृद्धि लाता है। "हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं। मैं ने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे...." (1 कुरिं. 3:1-2)। "नए जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ" (1 पतरस 2:2)।
परमेश्वर का हम सब के लिए लक्ष्य इफिसियों 4:12-15 में व्यक्त किया गया है: "जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए, जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ।"

ओ) परमेश्वर का वचन बीज है

लूका 8:14-15 में, यीशु ने अपने चेलों को बोनेवाले का दृष्टान्त बताया। आय. 11 में उसने कहा: "बीज परमेश्वर का वचन है।" हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा फलवन्त होना है (भजन 1:3)। "अत: जो बानेवाले को बीज और भोजन के लिए रोटी देता है, वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा" (2 कुरिं. 9:10)।

औ) परमेश्वर का वचन तलवार के समान है

"...आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो" (इफि. 6:17)। इब्रानियों 4:12 भी देखो। ध्यान दो कि किस प्रकार यीशु ने जंगल में अपनी परीक्षाओं में शैतान के विरुद्ध "तलवार" इस्तेमाल की थी (लूका 4:1-14)।

अं) परमेश्वर का वचन प्रार्थना करने में हमारी सहायता करता है

"यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा" (यूहन्ना 15:7)। 'तो जो चाहो माँगो' का अक्षरक्षः अर्थ है 'ऐसे माँगो जैसे तुम्हारा हक है....अधिकार के साथ (आज्ञा देना)'। रचनात्मक वचन हमारे मुँह में है!

अः) परमेश्वर का वचन हम में मजबूत है

"इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियाँ चलीं, और उस घर से टकराईं, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी" (मत्ती 7:24-25)। आय. 26-27 भी देखो। यीशु ने कहा कि बुद्धिमान व्यक्ति जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया, उनकी तस्वीर है जो उसके वचन को सुनते और उन पर चलते हैं। परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों में भीतरी कंकरीट बनाता है ताकि जो चाहे हमारे विरुद्ध आए हम मजबूत खड़े रहेंगे।

अध्याय 2 परमेश्वर

परमेश्वर इतना बड़ा है कि हम उसे पूरी तरह समझ नहीं सकते हैं। उसकी न कोई शुरूआत है और न कोई अन्त है। ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ उसकी उपस्थिति महसूस नहीं होती। बाइबल अय्यूब 11:7 में पूछती है, "क्या तू परमेश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जाँच सकता है?" परमेश्वर स्वर्ग में रहता है और सारी पृथ्वी पर राज्य करता है। बाइबल हमें बताती है: 'यहोवा यों कहता है: "आकाश मेरा सिंहासन और पृथवी मेरे चरणों की चोकी है"' (यशायाह 66:1)। "परमेश्वर जाति जाति पर राज्य करता है; परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजमान है" (भजन 47:8)। इस अध्ययन में हम परमेश्वर के बारे में कुछ विशेष सच्चाइयों पर ध्यान देंगे। परमेश्वर के अपरिवर्ती चरित्र के बारे में कुछ तथ्य हैं। इनके द्वारा आप और अधिक समझ पाएँगे कि परमेश्वर कैसा है। आप परमेश्वर को समझने लगेंगे और कि कैसे वह आपकी चिन्ता करता है।

अ. परमेश्वर कैसा है?

1. परमेश्वर ने सबकुछ बनाया है

"तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन् सबसे ऊँचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, और समुद्र और जो कुछ उसमें है, सभों को तू ही ने बनाया, और सभों की रक्षा तू ही करता है; और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत् करती है" (नहेम्याह 9:6)। "मेरे मन का स्वामी तो तू है; तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा" (भजन 139:13)।

2. परमेश्वर सर्वशक्तिमान है

"...कौन उसकी इच्छा का सामना करता है?... क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं?" (रोमियों 9:19-21)। "हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और प्रधान ठहरा है" (1 इतिहास 29:11)। "अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है" (इफिसियों 3:20)।

3. परमेश्वर सर्वज्ञानी है

सारी सृष्टि में कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है। वरन् "जिस से हमें काम है, उसकी आँखों के सामने" (इब्रामियों 4:13), सब वस्तुएँ खुली और प्रकट हैं। "...परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है, और सब कुछ जानता है" (1 यूहन्ना 3:20)।

4. परमेश्वर पवित्र है

"यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं, क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई है ही नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है" (1 शमूएल 2:2)।

5. परमेश्वर आत्मा है

"परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें" (यूहन्ना 4:24)।

6. परमेश्वर एक व्यक्ति है जिसे आप जान सकते हो

"परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा..." (याकूब 4:8)। "जितने यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं, उन सभों के वह निकट है" (भजन 145:18)।

7. परमेश्वर एक प्रेमी पिता है

"देखो, पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ; और हम हैं भी" (1 यूहन्ना 3:1)।

आ. परमेश्वर इतना बड़ा है कि वह मन्दिरों में नहीं रह सकता

"जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर, हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता; न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, 'हम तो उसी के वंशज हैं'" (प्रेरितों 17:24,25,28)।

इ. हम

1. हमें परमेश्वर ने बनाया है

"मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, इसलिए कि मैं भयानक और अदभुत् रीति से रचा गया हूँ। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भाँति जानता हूँ। जब मैं गुप्त में बनाया जाता, और पृथ्वी के नीचे स्थानों में रचा जाता था, तब मेरी हड्डियाँ तुझ से छिपी न थीं। तेरी आँखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा; और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे" (भजन 139:14-16)।

2. हमारा मालिक परमेश्वर है

"क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है; और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो" (1 कुरिन्थियों 6:19-20)।

3. हम परमेश्वर की आराधना करने के लिए बुलाए गए हैं

"हे हमारे प्रभु परमेश्वर, तू ही महिमा और आदर और सामर्थ्य के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएँ सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं और सृजी गईं" (प्रकाशितवाक्य 4:11)।

ई. एक फैसला करो

यीशु ने कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (मत्ती 22:37)। बाइबल यहोशू नामक एक पुरुष के बारे में बताती है। वह इस्राएल के देश का एक महान लीडर था। इस्राएल के लोग चालीस वर्ष, बिना अपने कोई देश के, जंगल में भटकते रहे। यहोशू ने, परमेश्वर के निर्देशन में, इस्राएल के लोगों को कनान के दुष्ट देशों पर विजय दिलाई, और उनके देशों को इस्राएल के लिए बाँट कर दे दिया। यहोशू ने फिर सारे लोगों को एक फैसला करने के लिए चुनौती दी: "... आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; **परन्तु मैं तो अपने**

घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा" (यहोशू 24:15)। वही चुनौती हम सब के सामने है। क्या आप भी वैसी ही वचनबद्धता करेंगे जैसी उस दिन यहोशू ने की थी?

मेरा समर्पण
इस दिन मैं अपनी आराधना स्वर्ग और पृथ्वी के एक मात्र सच्चे परमेश्वर को देता हूँ, और अपनी इच्छा-शक्ति, अपना जीवन और अपनी धन-सम्पत्ति उसे सौंपता हूँ। इस दिन से मैं किसी दूसरे देवता की आराधना नहीं करने का निश्चय करता हूँ। मेरी आराधना केवल उसी के लिए है, और मैं दूसरों को परमेश्वर की सच्चाई के बारे में सिखाऊँगा।

अध्याय 3 मनुष्य और शैतान

क. मनुष्य

- परमेश्वर के स्वरूप में - राज्य करने के लिए बनाया

परमेश्वर का मनुष्य (नर और नारी) को बनाने का एक बहुत की असली कारण था। उसकी उनके लिए एक अदभुत योजना और उद्देश्य था। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है, उसने समान-मन और समान-हृदय जैसे प्राणियों को बनाना चाहा जिनके साथ वह अपना जीवन...सबकुछ जो वह है और सबकुछ जो वह करता है...बाँट सकता, जो उसके साथ पुत्रों के समान स्वर्ग और पृथ्वी पर राज्य करते। इसलिए उसने मनुष्य को बनाया - अपने ही स्वरूप में।
"फिर परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथवी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।' तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की' (उत्पत्ति 1:26-27)।

ख. लूसीफर

परमेश्वर ने स्वर्गों और पृथ्वी की रचना करने से पहले कई अदभुत चीजें बनाई। उनमें स्वर्गदूत थे - आत्माएँ जिनका काम परमेश्वर की इच्छा पूरी करना है। स्वर्गदूत परमेश्वर की आराधना करते और निरन्तर उसकी सेवा करते हैं (प्रकाशितवाक्य 5:11-14)। परन्तु, जब लूसीफर ने जो प्रमुख स्वर्गदूतों में एक था, मनुष्य को बनाने की परमेश्वर की योजना के बारे में सुना, तो उसने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया। वह उस पद और अधिकार को पाना चाहता था जो परमेश्वर ने मनुष्य के लिए आयोजित किया था। वह स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के ऊपर से सारी सृष्टि पर राज्य करना चाहता था।
जब लूसीफर ने विद्रोह किया, तब परमेश्वर ने उसे स्वर्ग से निकाल दिया। उसी समय, एक तिहाई स्वर्गदूत उसके साथ विद्रोह में शामिल हो गए और उसके साथ निकाले गए (प्रकाशित. 12:4)। "हे भोर के चमकनेवाले तारे, तू कैसे स्वर्ग से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? तू मन में कहता तो था, 'मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूँगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा, मैं मेघों से भी ऊँचे ऊँचे स्थानों के ऊपर चढूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा।'" (यशा. 14:12-14)। लूसीफर को पृथ्वी पर फेंक दिया गया, जहाँ वह अब "शैतान" के नाम से जाना जाता है। सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर की महिमा से अलग, उसने उस सुन्दरता और ज्योति को खो दिया जो पहले उसकी थी (यहेजकेल 28:11-17) और दुष्टता और अन्धकार से भर गया। स्वर्गदूत जो उसके साथ पृथ्वी पर गिरे थे, उन्होंने भी अपनी महिमा खो दी, और परमेश्वर के नए संसार में दुष्टात्माएँ बन गए। परन्तु शैतान की दुष्ट अभिलाषाएँ बदली नहीं और उसने परमेश्वर के सिंहासन को हड़पने की कोशिश करने की एक दूसरी योजना बनाई...वह उस मनुष्य के पीछे पड़ा गया जिसे परमेश्वर ने बनाया था।

ग. परीक्षा

परमेश्वर ने अपने पहले पुरुष और स्त्री को सारी पृथ्वी पर अधिकार दिया, और उन्हें बताया कि वे इसे उसके अधिकार तले रखें। उन्हें शैतान और उसकी दुष्टात्माओं से सुरक्षित रखने के लिए, परमेश्वर ने अदन के उद्यान में जहाँ वे रहते थे दो विशेष पेड़ बनाए। परमेश्वर ने उन्हें "जीवन का पेड़" और "भले और बुरे के ज्ञान का पेड़" नाम दिया (उत्पत्ति 2:9,17)। जीवन का पेड़ परमेश्वर का अपना जीवन और अधिकार चित्रित करता है - तो इसका फल खाने से, आदम और हव्वा अधिकाधिक परमेश्वर की

सामर्थ्य और प्रेम और महिमा से भर जाते। भले और बुरे के ज्ञान का पेड़ शैतान के जीवन और अधिकार को चित्रित करता है, और जब तक आदम और हव्वा उसका फल नहीं खाते तब तक वे उन दुष्टात्माओं से सुरक्षित रहते जो पृथ्वी पर फैली हुई थीं। सारी सृष्टि का अधिकार सदा उन्हीं का होता यदि वे अपने प्रेमी सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते रहते (इब्रा. 28)। "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और और उसकी रक्षा करे। और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा" (उत्पत्ति 2:15-17)।

परन्तु शैतान ने हव्वा को धोखा दिया। उसने उसको कहा कि भले और बुरे के ज्ञान का पेड़ वास्तव में बुरा नहीं है - बल्कि यह उन्हें परमेश्वर के समान बना देगा। उसने झूठ पर विश्वास लिया और पेड़ का फल खा लिया। आदम हालाँकि जानता था कि यह झूठ है, फिर भी पेड़ का फल खा लिया (1 तीमु 2:14)। "अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिए चाहनेयोग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया" (उत्प. 3:6)।

घ. परिणाम

पाप के उस एक कार्य से, मनुष्य ने परमेश्वर की महिमा और स्वरूप और सृष्टि का अधिकार खो दिया। फिर शैतान ने आदम और हव्वा द्वारा खाली किया सिंहासन ले लिया और पृथ्वी पर अपना राज्य चलाने लगा, और मृत्यु ने संसार को भर दिया (इब्रानियों 2:14-15)। "...एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया" (रोमियों 5:12)। आदम और हव्वा के बाद आनेवाली सब पीढ़ियों ने उनके गिरे हुए स्वभाव को पाया है। सब शैतान की शक्ति और अधिकार के अधीन हो गए हैं।

"उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएँ पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे" (इफिसियों 2:1-3)।

हर जगह लोगों के हृदय अब....से भरे पड़े हैं:

1. मूर्तिपूजा

"इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए, और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला" (रोमियों 1:21-23)।

2. अनैतिकता

"इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उन के मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिए छोड़ दिया कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहाँ तक कि उनकी स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को उससे जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया" (रोमियों 1:24-27)।

3. सब प्रकार की दुष्टता

"जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, तो परमेश्वर ने भी उन्हें निकम्मे मन पर छोड़ दिया कि वे अनुचित काम करें। इसलिए वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करनेवाले, परमेश्वर से घृणा करनेवाले, दूसरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनानेवाले, माता-पिता की आज्ञा न माननेवाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और

निर्दय हो गए। वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं" (रोमियों 1:28-32)।

4. पुनःस्थापन की परमेश्वर की महान योजना

परमेश्वर ने उसके पाप के कारण मनुष्य को छोड़ नहीं दिया। नहीं! बल्कि उसने एक दूसरी महान योजना कार्य में लाई - शैतान के अधिकार से मनुष्यजाति को बचाने और उसे अपने पुत्र होने और अपने सिंहासन को बाँटने के उसके प्रारंभिक योजना पर पुनःस्थापित करने की योजना। वह संसार को उद्धारकर्त्ता - यीशु के आने के लिए तैयार करने लगा। "जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे" (1 कुरिं. 15:22)। नया नियम मसीह की कहानी का विवरण है, जो हमें हमारे पापों से बचाने आया है।

अध्याय 4 यीशु

अ. यीशु परमेश्वर का पुत्र है

दो हजार साल पहले एक मनुष्य इतिहास के दृश्य पर प्रकट हुआ। वह संसार में पैदा हुआ और एक सामान्य व्यक्ति के समान बड़ा हो गया, परन्तु यह पुरुष सब से भिन्न था। वह कोई साधारण पुरुष नहीं था। एक कुँवारी उसे जन्म देने के लिए पवित्र आत्मा द्वारा गभवती हुई। वह स्वयं परमेश्वर था, जो पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में आया था। वह "परमेश्वर का पुत्र" था (लूका 1:26-35)। "आदि में वचन (यीशु) था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था....और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसे पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना 1:1, 14)।

आ. यीशु संसार में एक विशेष उद्देश्य से आया

1. मनुष्यजाति को शैतान की शक्ति से छुड़ाने के लिए

"क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूढ़ने और उनका उद्धार करने आया है" (लूका 19:10)। कुलुस्सियों 1:13 देखो।

2. हमें मोल देकर छुड़ाने को अपना प्राण एक छुड़ौती के रूप में देने के लिए

"...मनुष्य का पुत्र..इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण देने दे" (मत्ती 20:28)।

3. हमारे जीवनों में शैतान के काम नष्ट करने के लिए

"जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे" (1 यूहन्ना 3:8)।

4. हमें अनन्त जीवन देने के लिए

"और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है" (1 यूहन्ना 5:11-12)। यूहन्ना 3:16 और यूहन्ना 10:10 भी देखो।

5. हमें परमेश्वर के परिवार में नया "जन्म" देने के लिए

"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं" (यूहन्ना 1:12-13)। 1 यूहन्ना 3:12 भी देखो।

6. परमेश्वर पिता से हमारी सहभागिता पुनःस्थापित करने के लिए

"जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है" (1 यूहन्ना 1:3)।

इ. यीशु हमें बताने आया कि परमेश्वर कैसा है

"यदि तुम ने मुझे (यीशु) जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते; और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है...जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा? क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो" (यूहन्ना 14:7-11)। यूहन्ना 1:18 भी देखो।

1. उसने हमें परमेश्वर का प्रेम दिखाया

"जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। प्रेम इसमें नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा" (1 यूहन्ना 4:9-10)। रोमियों 5:8 भी देखो।

2. उसने हमें परमेश्वर का सामर्थ्य दिखाया

उसने बीमारों, लंगड़ों और अन्धों को चंगा किया। "और सारे सीरिया देश में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएँ थीं, और मिर्गीवालों और लकवे के रोगियों को, उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया" (मत्ती 4:24)। यूहन्ना 9:1-7 भी देखो।

उसने दुष्टात्माओं को निकाल दिया। "उसने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुखी थे, चंगा किया, बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला, और दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं" (नरकुस 1:34)। मरकुस 5:1-17 भी देखो।

उसने चमत्कार किए। 'तब बड़ी आँधी आई, और लहरें नाव पर यहाँ तक लगीं कि वह पानी से भरी जाती थी...तब उसने (यीशु) उठकर आँधी को डाँटा, और पानी से कहा, "शान्त रह, थम जा।" और आँधी थम गई और बड़ा चैन हो गया...वे बहुत डर गए और आपस में बोले, "यह कौन है कि आँधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?"' (मरकुस 4:37-41)। यूहन्ना 6:1-21 भी देखो।

उसने मरे हुओं को जीवित किया। 'यह कहकर उसने (यीशु) बड़े शब्द से पुकारा, "हे लाजर, निकल आ!" जो मर गया था वह कफन से हाथ पाँव बँधे हुए निकल आया, और और उसका मुँह अँगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कह, "उसे खोल दो और जाने दो।"' (यूहन्ना 11:43-44)।

ई. यीशु अपने जीवन में हमारी दुखों में सहभागी हुआ

पृथ्वी पर अपने जीवन में यीशु ने जीवन की उन सारी समस्याओं को अनुभव किया जो हम करते हैं, और इसलिए हम कैसा महसूस करते हैं, समझता है। "क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला" (इब्रा. 4:15)। मत्ती 8:17 भी देखो।

उ. यीशु हमारे लिए क्रूस पर मरा

दुष्ट लोगों ने प्रभु यीशु को लेकर एक आम अपराधी के समान एक लकड़ी के क्रूस पर कीले ठोककर मार डाला। वह खुद को बचा सकता था, परन्तु उसने नहीं बचाया, क्योंकि क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर जगत का उद्धार करने वाला था। यीशु हमारे लिए मरा! (मरकुस 15:16-39)। "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मरकर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएँ : उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए" (1 पतरस 2:24)। यशायाह 53:5-6 भी देखो।

ऊ. यीशु हमारे लिए स्वर्ग का द्वार खोल दिया

जब पृथ्वी का उसका काम समाप्त हो गया, तब वह अपने पिता परमेश्वर के पास लौट गया। परन्तु यह भी हमारे लिए था...क्योंकि उसने हमारे लिए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने का मार्ग खोल दिया, जहाँ हम अब और सदा के लिए जी सकते हैं!

"इसलिए हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है...तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएँ" (इब्रानियों 10:19-22)। यूहन्ना 14:1-3 भी देखो।

मेरा समर्पण
आज मैं स्वीकार करता हूँ कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और वह संसार में मेरी एक उद्धारकर्त्ता की सबसे बड़ी आवश्यकता को पूरी करने आया था। मैं दूसरों को भी बताऊँगा कि वह संसार में उनके लिए आया था।

अध्याय 5 क्रूस

जब यीशु मसीह को एक लकड़ी के क्रूस पर कीले ठोककर मारा डाला गया, तब दुष्ट मनुष्यों ने सोचा कि वे एक साधारण व्यक्ति को फाँसी दे रहे हैं जो उनके जीने के तरीक में विध्न डाल रहा था। वे समझे नहीं कि परमेश्वर ने क्रूस की योजना उत्पत्ति के पहले से बना रखी थी।

अ. परमेश्वर सारे पापों से निपटता है

क्रूस पर अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा, महान सृजरहार परमेश्वर हर व्यक्ति के पाप, पीड़ा और दुख से निपट रहा था। यीशु संसार के हर व्यक्ति के स्थान पर मर रहा था।
उसे अपने जीवन में स्वीकार करना जो उसने क्रूस पर किया है, हमारी सारी आवश्यकताओं का उत्तर लाता है।

1. परमेश्वर क्रूस के द्वारा अपना सामर्थ्य प्रकट करता है

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिए मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है" (1 कुरिं. 1:18)। रोमियों 1:16 भी देखो।

2. परमेश्वर क्रूस पर अपना प्रेम दिखाता है

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा" (रोमियों 5:8)।

3. परमेश्वर ने क्रूस पर हमारे दुखों को ले लिया

"निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा" (यशा. 53:4)।

4. यीशु ने क्रूस पर हमारे पापों की सजा ले ली

"परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया" (यशा. 53:5-6)। 1 पतरस 2:24 भी देखो।

आ. क्रूस के द्वारा परमेश्वर के साथ एक नया सम्बंध

क्योंकि परमेश्वर इतना पवित्र और धर्मी है, पाप हमें उससे अलग करता है। कोई भी अपने हृदय में पाप लिए उसकी उपस्थिति में आ नहीं सकता है। इसलिए, क्रूस पर मरकर न केवल यीशु ने हमारे स्थान पर हमारे पापों के लिए दुख उठाया, बल्कि उसने हमारे लिए परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना और उस प्रेम, शान्ति और आनन्द को अनुभव करना जो उसके साथ सहभागिता लाती है मुमकिन बनाया।

1. हम क्रूस के द्वारा परमेश्वर के सामने स्वीकार किए जाते हैं

"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ" (2 कुरिं. 5:21)।

2. हम क्रूस के द्वारा क्षमा प्राप्त करते हैं

"उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया, जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है" (कुलु. 1:13-14)। 1 यूहन्ना 2:1-2 भी देखो।

3. हम क्रूस के द्वारा परमेश्वर के परिवार के सदस्य बनते हैं

"क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल के हैं; इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता। वह कहता है, 'मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊँगा; सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊँगा'" (इब्रानियों 2:11-12)। यूहन्ना 1:12 भी देखो।

4. क्रूस के द्वारा जातीय बाधाएँ टूट जाती हैं

"पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया, और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएँ विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे, और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए" (इफिसियों 2:13-16)।

इ. क्रूस द्वारा स्वतंत्रता

क्रूस पर यीशु की मृत्यु हमारे लिए एक बहुत बड़ी विजय थी। क्योंकि परमेश्वर ने क्रूस पर हमारे पापों से निपटा, तो इसका यह भी अर्थ है कि सारी दुर्दशा और पीड़ा जो पाप का परिणाम है, उस से निपटा गया था।
क्रूस हमारे लिए एक बड़ी स्वतंत्रता लाया है !

1. शैतान से स्वतंत्रता

"और उसने प्रधानताओं और अधिकारियों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया, और क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार की ध्वनि सुनाई" (कुलु. 2:15)। कुलुस्सियों 1:13 भी देखो।

2. भूत के पापों से स्वतंत्रता

"इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे" (यूहन्ना 8:36)। कुलु. 2:13 भी देखो।

3. वर्तमान पापों से स्वतंत्रता

"तब तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो" (रोमियों 6:14)।

4. बीमारी से स्वतंत्रता

'ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो : "उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया"' (मत्ती 8:17)।

5. शाप से स्वतंत्रता

"मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, 'जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है'" (गलातियों 3:13)। व्यवस्थाविवरण (28:15-68) भी देखो।

6. न्याय से स्वतंत्रता

"नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार-बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे। और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है" (इब्रानियों 9:26-27)।

7. अनन्त मृत्यु से स्वतंत्रता

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

ई. प्रेम और न्याय क्रूस पर मेल करते हैं

क्रूस वह जगह है जहाँ पर परमेश्वर का प्रेम और परमेश्वर का धर्मी न्याय मेल करते हैं। उसके धर्मी न्याय ने पाप की सजा - लहू का बहाना, मृत्यु की माँग की। उसके प्रेम ने उसकी अपनी माँग को पूरा किया और परमेश्वर का पुत्र, यीशु हमारे स्थान पर मरा। "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ मेल हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे? केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में आनन्दित होते हैं" (रोमियों 5:8-11)।

उ. क्रूस इतिहास का केन्द्र है

यीशु मसीह का क्रूस पृथ्वी पर मनुष्य के अस्तित्व का केन्द्र बिन्दु है। उसी क्षण से जब पहले पुरुष और स्त्री ने पाप किया (उत्पत्ति 3 देखो), परमेश्वर ने पूर्व योजना बना ली थी कि यीशु क्रूस पर मरेगा। उस समय से आगे, लोग विश्वास से परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि उनके उद्धार के लिए क्रूस पर वह जो करेगा, उसकी देखने लगे। आज हम मुड़ कर देखते हैं, और जो यीशु ने हमारे लिए किया है उस पर विश्वास करके क्षमा और नया जीवन पाते हैं।

अध्याय 6 मसीह का लहू

यीशु मसीह का क्रूस पर बहा लहू हमारे पापों से क्षमा पाने और परमेश्वर की उपस्थिति में स्वीकृति का कारण था। "...बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं" (इब्रा. 9:22)।

अ. जीवन लहू में है

"क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिए दिया है कि तुम्हारे पापों के लिए प्रायश्चित किया जाए; क्योंकि पाप के कारण लहू ही से प्रायश्चित होता है" (लैव्यव्यवस्था 17:11)। जब हम पाप करते हैं, हम मृत्यु पाते हैं। "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23)। यीशु ने अपना लहू बहाकर (हमारे लिए मरा - हमारे स्थान पर), इस सजा को हमारे लिया लिया।

प्रायश्चित का अर्थ है परमेश्वर के एक होना। यीशु ने क्रूस पर हमारे एक होने के लिए अपना प्राण त्याग दिया (अपना लहू बहाया)। इससे हम परमेश्वर के साथ एक हो गए। यीशु के लहू का अर्थ है कि अब हम उसके शत्रु नहीं परन्तु उसके मित्र, उसके पुत्र और पुत्रियाँ हैं। यीशु ने जो हमारे लिए किया है उसे हम विश्वास द्वारा स्वीकार करते हैं।

आ. पाप हमारे जीवन में क्या करता है

1. हमें परमेश्वर से अलग करता है

"परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता" (यशा. 59:2)।

2. हमें दोषी महसूस कराता है
"क्योंकि मेरे अधर्म के कामों में मेरा सिर डूब गया, और वे भारी बोझ के समान मेरे सहने से बाहर हो गए हैं" (भजन 38:4)।

3. शैतान को हम पर दोष लगाने देता है
"...हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था..." (प्रकाशित. 12:10)।

4. मृत्यु की सजा की माँग करता है
"...जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा" (यहेजकेल 18:4)।

मसीह का लहू हमारी सारी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

इ. लहू परमेश्वर के लिए है
मसीह का लहू परमेश्वर की व्यवस्था को सम्पूर्ण रूप से पूरा करता है - जो व्यवस्था के उल्लंघन की सजा की माँग है। 1 यूहन्ना 3:4 कहता है, "पाप तो व्यवस्था का विरोध है।" लहू हमें व्यवस्था के उल्लंघन की सजा (मृत्यु) से बचाता है। निर्गमन 12 में, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को आज्ञा दी कि वे एक मेम्ने के लहू को नष्ट करनेवाले से बचने के लिए अपने द्वारों की चौखटों पर लगाएँ - जो सब पहलौठों को मार डालेगा। यह मेम्ना यीशु का चित्र है - जो बाद में आनेवाला था। परमेश्वर ने कहा, "...मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊँगा (रक्षा करूँगा)..." (आय. 13)।

1. सहभागिता पुनःस्थापित होती है
"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे?" (रोमियों 5:8-9)।

2. हम उद्धार पाए हैं (गुलामी से मोल देकर खरीदे गए)
"हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है" (इफि. 1:7)।

ई. लहू मनुष्य के लिए है
लहू ने परमेश्वर को संतुष्ट किया है; अब यह हमें हमारे विवेकों को दोष से शुद्ध करके संतुष्ट करता है।

1. लहू दोष से शुद्ध करता है
"तो मसीह का लहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो" (इब्रा, 9:14)।

2. लहू हमें पवित्र करता है
"इसी कारण यीशु ने भी लोगों को अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने के लिए फाटक के बाहर दुख उठाया" (इब्रा. 9:14)।

3. लहू हमें परमेश्वर के करीब लाता है
"और उस के क्रूस पर बहे लहू के द्वारा मेलमिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों चाहे स्वर्ग की हों। तुम जो पहले निकले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे; उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया..." (कुलु. 1:20-22)।

4. लहू परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने का साहस देता है

"इसलिए हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उसके परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है...तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएँ" (इब्रा. 10:19-22)।

5. लहू हमें परमेश्वर की दृष्टि में सिद्ध करता है

"क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध कर दिया है" (इब्रा. 10:14)।

उ. लहू शैतान के विरुद्ध है

शैतान का इस युग में सबसे अनुकूल कार्य भाइयों पर दोष लगानेवाले का है (प्रकाशित. 12:10) और इसी बात पर प्रभु उसका महायाजक के रूप में अपनी विशेष सेवकाई में अपने लहू के द्वारा सामना करता है। (इब्रा. 9:11-14)।

1. लहू परमेश्वर को शैतान के विरुद्ध मनुष्य के पक्ष में रखता है

"...यदि परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?..परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर ही है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है। फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है" (रोमियों 8:31, 33-34)। शैतान को उनके विरुद्ध दोष लगाने का कोई आधार नहीं है जिन्होंने उनके लिए मसीह के बहे लहू के काम को स्वीकार किया है।

2. लहू शैतान के स्वामित्व के सारे कानूनी अधिकारों को समाप्त करता है

"जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है" (कुलु. 1:14)। 'छुटकारा' का अर्थ है 'वापस खरीदना"। हम अब नई स्वामित्व के अधीन हैं, और जो कीमत हमारे लिए दी गई थी मसीह का बहा लहू है। "...परमेश्वर की कलीसिया...जिसे उसने अपने लहू ले मोल लिया है" (प्रेरितों 20:28)। 1 कुरिं. 6:19-20; 1 तीमु. 2:6) भी देखो।

ऊ. मसीह के लहू ने हमारे लिए क्या लाया है

1. हृदय की शुद्धता

"पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)।

2. अनन्त जीवन

"यीशु ने उनसे कहा, 'मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का माँस न खाओ, और उसका लहू न पियो, तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है; और मैं उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊँगा" (यूहन्ना 6:53-54)।

3. परमेश्वर तक पहुँच

"पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो" (इफि. 2:13)।

मेरा समर्पण

मैं अब समझता हूँ कि यीशु के बहे लहू का अर्थ परमेश्वर के लिए, शैतान के लिए और मेरे लिए क्या है। मैं मसीह के लहू के बारे में दूसरों को बताने के लिए खुद को वचनबद्ध करता हूँ। मैं, मेरे पाप क्षमा करने और मुझे पाप से शुद्ध करने और शैतान की हानि से मुझे सुरक्षित रखने की परमेश्वर ने जो वाचा मेरे साथ बाँधी है, उसके बारे में खुद को अकसर याद दिलाऊँगा।

अध्याय 7 पुनरुत्थान

क्रूस पर अपनी मृत्यु के बाद, यीशु कब्र में तीन दिन तक रहे (मत्ती 12:40)। तब - परमेश्वर ने अपने पुत्र को मरे हुओं में से जीवित कर दिया ! (मत्ती 28 पढ़ो)। "और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है" (रोमियों 1:4)।

अ. परमेश्वर ने तुम्हें मसीह के साथ जीवित कर दिया

यीशु की मृत्यु आपके लिए थी। और उसका पुनरुत्थान भी ! "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे...परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है), और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया" (इफि. 2:2, 5-6)। कुलु. 3:1-3 भी देखो।

1. तुम्हें नया जीवन देने के लिए

"परमेश्वर...जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है, पर अब हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ, जिसने मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया" (2 तीमु. 1:9-10)

2. नया जन्म देने के लिए

"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया" (1 पतरस 1:3)।

3. तुम्हें एक नई शुरूआत देने के लिए

"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है :पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं" (2 कुरिं. 5:17)

4. तुम्हें देने के लिएः-

...शैतान पर विजय

"हे बालको, तुम परमेश्वर के हो, और तुम ने उस पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है वह उस से जो संसार (शैतान) में है, बड़ा है...क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है। संसार पर जय पानेवाला कौन है ? केवल वह जिसका यह विश्वास है कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है" (1 यूहन्ना 4:4; 5:4-5)।

...शैतान पर अधिकार

अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु मसीह "..स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके अधीन किए गए हैं" (1 पतरस 3:22)। लूका 10:17-19 भी देखो।

...शैतान पर शक्ति

"मैं अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूँ कि तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि ... उसकी सामर्थ्य हम में जो विश्वास करते हैं, कितनी महान् है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह में किया कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया; और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणी ठहराकर कलीसिया को दे दिया,

यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है" (इफि. 1:18-23)। मरकुस 16:15-18; प्रेरितों 1:8 और 4:33 भी देखो।

5. तुम्हें परमेश्वर के राज्य में एक पुत्र और वारिस बनाने के लिए

"क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं; और यदि सन्तान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं" (रोमियों 8:15-17)।

आ. पुनरुत्थान जीवन की आवश्यकता पूरी करता है

1. यह भूत से तुम्हारा छुटकारा है

तुम्हारा पुराना पापी स्वभाव यीशु के साथ क्रूस पर मर गया, और उस के साथ कबर में दफनाया गया था। तब, जब यीशु मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम भी उसके साथ एक नई सृष्टि के रूप में जिलाए गए - अपने पुराने जीवन को यीशु की कबर में छोड़ दिया ! "अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें...क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिए एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है तो परमेश्वर के लिए जीवित है। ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो" (रोमियों 6:4,10-11)। इफिसियों 2:1-7 और कुलुस्सियों 2:12-15 भी देखो।

2. यह वर्तमान के लिए तुम्हारा सामर्थ्य है

क्योंकि यीशु जीवित है, हमें पाप पर विजय का जीवन जीने के लिए और शैतान के हमारे विरुद्ध सारे आक्रमणों पर उसके आत्मा का सामर्थ्य मिला है। "अतः हम इन बातों के विषय में क्या कहें ? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है ? जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा ? परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा ? परमेश्वर ही है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है। फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा ? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है। कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा ? क्या कलेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार ? परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोमियों 8:31-39)।

3. यह भविष्य के लिए तुम्हारी आशा है

यीशु का पुनरुत्थान भविष्य के लिए हमें एक बड़ी आशा देता है। उसे "मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा" कहा गया है (कुलु. 1:18)। अपने पुनरुत्थान में, वह उन सब के लिए मार्ग खोल रहा था जो उसके पीछे आने के लिए उस पर विश्वास करेंगे - मरे हुओं में से जी उठने के लिए ! भविष्य में एक अदभुत दिन, यीशु मसीह एक बार फिर पृथ्वी पर आएगा - परन्तु इस समय एक शिशु के रूप में नहीं, बल्कि सारा जगत उसे देखेगा जैसा वह वास्तव में है - महिमामय परमेश्वर और सारी सृष्टि का शासक। उस समय, वे सब जो उस में विश्वास करते हुए मरे हैं, दोबारा जीवित हो जाएँगे ! "..यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है, और तुम अब तक अपने पापों में फँसे हो। वरन् जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नष्ट हुए...परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें वह पहला फल हुआ। क्योंकि मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे, परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से : पहला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग" (1 कुरिं. 15:17-18, 20-23)। 1 कुरिन्थियों 15:50-57 और 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 भी देखो।

अध्याय 8 पश्चाताप

पश्चाताप पहला कदम है जो हम उस उद्धार को पाने के लिए लेते हैं जो परमेश्वर ने हमें प्रभु यीशु मसीह में पेश किया है। "...परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। तब सुननेवालों के हृदय छिद गए,

और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, 'हे भाइयो, हम क्या करें ?' पतरस ने उनसे कहा, 'मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'" (प्रेरितों 2:36-38)। प्रेरितों 17:30 भी देखो।

अ. पश्चाताप क्या नहीं है

1. केवल दोषी महसूस करना नहीं

अपने पाप के लिए दोष महसूस करना पश्चाताप से पहले होता है, परन्तु यह खुद पश्चाताप नहीं है। कोई भी पश्चाताप नहीं करता यदि पहले वह अपने पाप के लिए दोषी महसूस नहीं करता, परन्तु वे सब जो दोषी महसूस करते हैं वास्तव में पश्चाताप नहीं करते। "जब वह धर्म, और संयम, और आनेवाले न्याय की चर्चा कर रहा था, तो फेलिक्स ने भयभीत होकर उत्तर दिया, 'अभी तो जा; अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊँगा'" (प्रेरितों 24:25)। फेलिक्स ने दोषी महसूस किया, परन्तु मन नहीं फिराया।

2. केवल अपने पाप के लिए दुख प्रकट करना नहीं

कुछ लोग उनके पाप के परिणाम के कारण, या क्योंकि वे पकड़े गए हैं बहुत दुख महसूस करते हैं। कई लोग दुख प्रकट करते हैं, इसलिए नहीं कि उन्होंने कुछ गलत किया है, परन्तु क्योंकि पकड़े जाने की सजा उन्हें मिली है। "क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता। परन्तु सांसारिक शोक मृत्यु उत्पन्न करता है" (2 कुरिं. 7:10)।

3. केवल एक अच्छा व्यक्ति बनने का प्रयास करना नहीं

अनेक लोग अपनी शक्ति से एक बेहतर व्यक्ति बनने और उनके जीने का तरीका बदलने का प्रयास करते हैं। किसी भी आत्म-प्रयास में आत्म-धार्मिकता की जड़ छिपी होती है, जो पाप से मन फिराने की आवश्यकता स्वीकार नहीं करती। "हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते के समान मुर्झा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु के समान उड़ा दिया है" (यशा. 64:6)।

4. धार्मिक नहीं बनना

बाइबल के फरीसी व्यवहार और आचरण में बहुत ही धार्मिक थे। वे उपवास करते और प्रार्थना करते थे और अनेक धार्मिक विधियों पर चलते थे, पर कभी मन नहीं फिराते थे। "जब उसने बहुत से फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा के लिए अपने पास आते देखा, तो उनसे कहा, हे साँप के बच्चो, तुम्हें किसने जता दिया कि आनेवाले क्रोध से भागो ? इसलिए मन फिराव के योग्य फल लाओ ? और अपने अपने मन में यह न सोचो कि हमारा पिता अब्राहम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए सन्तान उत्पन्न कर सकता है। अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाएगा" (मत्ती 3:7-10)। मत्ती 5:20 भी देखो।

5. केवल सत्य को जानना नहीं

सत्य का एक बौद्धिक मस्तिष्क-ज्ञान होने से कोई गारंटी नहीं कि सत्य अपने जीवन में एक सजीव वास्तविकता बन गई है। सर से विश्वास करना और हृदय से विश्वास करना दो भिन्न चीजें हैं (रोमियों 10:10 देखो)। "तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है। दुष्टात्मा भी विश्वास करते हैं, और थरथराते हैं। पर हे निकम्मे मनुष्य, क्या तू यह नहीं जानता कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है ?" (याकूब 2:19-20)।

आ. सच्चा पश्चाताप क्या है

1. अपने पाप के लिए परमेश्वर के सामने दुख प्रकट करना

सच्चा पश्चाताप एक दुख है जो न केवल अपनी ओर, या दूसरे व्यक्ति की ओर, परन्तु सबसे पहले यह परमेश्वर की ओर सच्चा दुख है। "हे परमेश्वर, अपनी करुणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे। मुझे भली भाँति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर ! मैं तो अपने अपराधों को जानता हूँ, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है। मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वहीं किया है" (भजन 51:1-4)। भजन 38:8 भी देखो।

2. अपने पाप के बारे में सच्चा होना

"जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अधर्म न छिपाया, और कहा, 'मैं यहोवा के सामने अपने पापों को मान लूँगा', तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया" (भजन 32:5)। 1 यूहन्ना 1:9 भी देखो।

3. अपने पाप से फिरना

"जो अपने पाप छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाएगा" (नीतिवचन 28:13)।

4. पाप से घृणा करना

"तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस कारण..परमेश्वर ने...तेरा अभिषेक किया" (इब्रा. 1:9)।
"...और अपने सब बुरे कामों के कारण अपनी दृष्टि में घिनौने ठहरोगे..." (यहोजकेल 20:43-44)।

5. जब मुमकिन हो, दूसरों को वह चुकाना जिसके तुम ऋणी हो

"जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, 'हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुणा फेर देता हूँ" (लूका 19:8)। लैव्यव्यवस्था 6:1-7 भी देखो।

इ. पश्चाताप में क्या शामिल होता है

1. पाप से फिरना

"अपने पुरखाओं के समान न बनो, उनसे तो पूर्व काल के भविष्यद्वक्ता यह पुकार पुकारकर कहते थे, 'सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अपने बुरे मार्गो से और अपने बुरे कामों से फिरो।' परन्तु उन्होंने न तो सुना, और न मेरी ओर ध्यान दिया, यहोवा की यही वाणी है" (जकर्याह 1:4)। गलातियों 5:19-21 और इफिसियों 5:5 भी देखो।

2. संसार से फिरना

"तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं" (1 यूहन्ना 2:15)। याकूब 4:4 भी देखो।

3. अपने आप से फिरो

"और वह इस निमित्त सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा" (2 कुरिं. 5:15)। लूका 14:26 भी देखो।

4. शैतान से फिरना

"कि तू उनकी आँखें खोले कि वे अन्धकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें..." (प्रेरितों 26-18)। कुलु. 1:13 भी देखो।

5. परमेश्वर की ओर फिरना

"इसलिए तू इन लोगों से कह, सेनाओं का यहोवा यों कहता है : तुम मेरी ओर फिरो, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है, तब मैं तुम्हारी ओर फिरूँगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है" (जकर्याह 1:3)।

6. सही जीवन की ओर फिरना

"और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंपो" (रोमियों 6:13)।

अध्याय 9 विश्वास

विश्वास सदा से यीशु के चेलों का एक चिन्ह रहा है। प्रारंभिक चेले विश्वासी कहलाते थे। यीशु ने कहा: "विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है" (मरकुस 9:23)।

विश्वास का अर्थ है परमेश्वर पर सम्पूर्ण भरोसा। जब आदम ने पाप किया तब वह परमेश्वर पर निर्भरता से निकलकर स्वाधीनता (जो अविश्वास है) में आ गया। यही कारण है कि परमेश्वर ने विश्वास पर इतनी बड़ी प्राथमिकता रखी है। विश्वास वो मार्ग है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के साथ सम्बंध (परमेश्वर-निर्भरता) में आते हैं।

परमेश्वर पर यह निर्भरता विश्वास कहलाती है। विश्वास तुम्हें तुम्हारी पाँच इन्द्रियों - देखना, सुनना, चखना, सूँघना और छूना - से आगे ले चलता है। विश्वास तुम्हें तुम्हारी सीमित क्षमताओं से मुक्त करता है। विश्वास के द्वारा तुम अयोग्यता से उसकी-योग्यता में जाते हो। यही विश्वास का जीवन है जिसमें हम सब बुलाए गए हैं - जहाँ 'कुछ भी असम्भव नहीं है'। (मत्ती 17:20)।

अ. विश्वास क्या है

विश्वास जो परमेश्वर ने कहा है उस की ओर आज्ञाकारी कार्य है। सच्चा विश्वास: 1) परमेश्वर का वचन (आवाज) सुनने, की ओर 2) आज्ञापालन, और 3) कार्य की प्रतिक्रिया है। "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रा. 11:1)। विश्वास का अर्थ है दूसरे व्यक्ति में या उस व्यक्ति के शब्दों में भरोसा, आश्वासन या आसरा होना। परमेश्वर में विश्वास होने में आत्म-विश्वास को परमेश्वर-विश्वास से बदलना शामिल है। हम अपने आप पर भरोसा करना बन्द करते हैं और उस पर भरोसा करते हैं। हम अपने सीमित ज्ञान के स्रोत पर भरोसा करना छोड़ देते हैं और उसके असीमित स्रोत से पाना आरम्भ करते हैं।

आ. दो प्रकार के ज्ञान

"मेने वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था, इसलिए कि तुम्हारा विश्वास **मनुष्यों के ज्ञान** पर नहीं, परन्तु परमेश्वर के सामर्थ्य पर निर्भर हो। फिर भी सिद्ध लोगों के लिए हम ज्ञान सुनाते हैं, परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान नहीं; परन्तु हम परमेश्वर का वह **गुप्त ज्ञान**, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया है" (1 कुरिं. 2:4-7)। आय. 8-16 भी देखो।

1. इंद्रिय ज्ञान

सारा ज्ञान जो सांसारिक मनुष्य के पास आता है उसकी पाँच इंद्रियों - देखना, सुनना, चखना, सूँघना और छूना - द्वारा आता है। यह सीमित ज्ञान है, जिसे 'मनुष्य का ज्ञान' कहते हैं।

2. प्रकाशन ज्ञान

यह ज्ञान पाँच इंद्रियों पर निर्भर नहीं है, और न ही स्वाभाविक तर्क पर है, परन्तु एक वैकल्पिक स्रोत पर है - परमेश्वर के वचन का **सत्य**। इसे मनुष्य के आत्मा द्वारा प्राप्त किया जाता है, और 'परमेश्वर की बुद्धि' कहलाता है। "हम रूप देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं" (2 कुरिं. 5:7)।

इ. विश्वास का आधार

परमेश्वर में विश्वास होने का आधार तीन महत्त्वपूर्ण सच्चाइयों में है:

1. परमेश्वर का प्रकृति

"परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा करते समय जब शपथ खाने के लिए किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा" (इब्रा. 6:13)।

अ) वह बदल नहीं सकता

"क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं..." (मलाकी 3:6)। याकूब 1:17 भी देखो।

आ) वह असफल नहीं होता

"मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती" (अय्यूब 42:2)। 1 इतिहास 28:20 भी देखो।

इ) वह झूठ नहीं बोल सकता

"ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?" (गिनती 23:19)। तीतुस 1:2 भी देखो।

2. परमेश्वर के पुत्र का उद्धार का काम

"विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा" (इब्रा. 12:2)। मसीह परमेश्वर में हमारे विश्वास का स्रोत बन गया है। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान हमारे विश्वास करने का आधार बना है। "...मसीह यीशु..जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा है, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा" (1 कुरिं. 1:30)। रोमियों 5:1-2 भी देखो।

3. परमेश्वर का वचन

"आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी" (मत्ती 24:35)। यशायाह 40:8 भी देखो। 'तब यहोवा ने मुझ से कहा, "तुझे ठीक दिखाई पड़ता है, क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने के लिए जागृत हूँ"' (यिर्मयाह 1:12)। उसका वचन सदा सच्चा रहता है। विश्वास आता है जब - जो कुछ उसने कहा है उसमें से -परमेश्वर हमारी परिस्थितियों में सीधे एक विशेष वचन हमारे लिए लाता है। इस प्रकार बोले जाने से, परमेश्वर का वचन हमारे लिए जागृत होता है, जो हमें विश्वास देता है।

ई. विश्वास कैसे कार्य करता है

विश्वास का नियम (रोमियों 3:27) चाहे परिस्थितियाँ कुछ भी हों, हमारे जीवनों में निरन्तर कार्य करता रहता है (2 कुरिन्थियों 5:7; याकूब 1:5-6 देखो)। यह नीचे दिए तरीकों से कार्य करता है:

1. परमेश्वर हमें विश्वास देता है

'क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रगट होती है, जैसा लिखा है, "(परमेश्वर के) विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा"' (रोमियों 1:17 और हबक्कूक 2:4 की तुलना करो)। धर्मी जन परमेश्वर के विश्वास से जीवित रहता है, जो विश्वास परमेश्वर हमें एक दान के रूप में देता है। "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है" (इफि. 2:8)। "...जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है..." (रोमियों 12:3)।

2. विश्वास परमेश्वर द्वारा कहे एक वचन से आता है

पहले, परमेश्वर हमारी परिस्थितियों से संबद्ध एक "वचन" बोलकर हमें उत्साहित करता है। यह बाइबल पढ़ते समय या अपनी आत्मा में पवित्र आत्मा की आवाज सुनकर आ सकता है। "...विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियों 10:17)। उत्पत्ति 15:3-5; 17:15-21; यहोशू 1:8 भी देखो)।

3. वचन को मानने से

विश्वास का हमारी परिस्थिति में कार्य करने के लिए, हमें उस वचन का पालन करना है। विश्वास सक्रिय है, निष्क्रिय नहीं। परमेश्वर की अधिकाँश प्रतिज्ञाएँ शर्तबन्द होती हैं - यदि हम अपना भाग करेंगे, तो वह अपना भाग करेगा। "...विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है" (याकूब 2:17)। याकूब 1:22-25; उत्पत्ति 15:6; मत्ती 7:24-27 भी देखो।

4. संकट, या "हमारे विश्वास की परख"

यह हमारे विश्वास की परख है। हमारे आस-पास हो रहा सबकुछ परमेश्वर ने जो कहा है उसके विपरीत होता नजर आता है, और हमारे विश्वास करने का कोई स्वाभाविक प्रमाण दिखाई नहीं देता है। ऐसे समय पर, हमारा विश्वास पूरी तरह से परमेश्वर के वचन (जो उसने आप से कहा है) पर निर्भर होता है। "इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिए नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुख में हो; और वह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे" (1 पतरस 1:6-7)। रोमियों 4:16-21; भजन 105:17-19 भी देखो।

5. **परिणाम**

अन्तिम परिणाम विश्वासी के लिए सदा विजय ही होती है, जिससे परमेश्वर को महिमा मिलती है (याकूब 1:2-4,12; उत्पत्ति 21:1-3; भजन 105:19-22; प्रेरितों 3:16; इब्रानियों 6:13-15 भी देखो)। "...जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है" (1 यूहन्ना 5:4)।

मेरा समर्पण

आज मैं विश्वास से जीवन जीने और अपने जीवन के हर क्षेत्र में परमेश्वर पर भरोसा रखने का फैसला करता हूँ। मैं परमेश्वर पर सम्पूर्ण रूप से निर्भर होने की अपनी आवश्यकता स्वीकार करता हूँ - जो कार्यों में विश्वास है। समस्याओं, चुनौतियों और कठिनाइयों में मैं उसकी विश्वासयोग्यता पर निर्भर रहूँगा। परमेश्वर का उत्तर उसका अनुग्रह - उसकी योग्य बनाने वाली सामर्थ्य होगी। मैं दूसरों को भी परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर निर्भर होना और परमेश्वर में विश्वास से जीना सिखाऊँगा।

अध्याय 10 अनुग्रह

"प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था" (प्रेरितों 4:33)। "और वहाँ से वे जहाज पर अन्ताकिया गए, जहाँ वे उस काम के लिए जो उन्होंने पूरा किया था परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपे गए थे" (प्रेरितों 14:26)। परमेश्वर का अनुग्रह प्रारंभिक मसीहियों के जीवन में इतना महत्त्वपूर्ण क्यों था? अन्ताकिया की कलीसिया ने पौलुस और बरनबास, और फिर पौलुस और सिलास के लिए, जब वे उनकी मिश्नरी यात्राओं पर निकले थे, क्यों प्रार्थना की कि परमेश्वर का अनुग्रह उन पर रहे?

अ. अनुग्रह का अर्थ

शब्द "अनुग्रह" की सबसे आम समझ है "परमेश्वर की अनर्जित कृपा", दूसरे शब्दों में, हालाँकि हम पापी थे और सजा के हकदार थे, फिर भी परमेश्वर ने हमें प्रेम से देखा और हमें क्षमा किया।

परन्तु यह आधा ही अर्थ हुआ। इसका अर्थ "परमेश्वर की योग्य बनानेवाली सामर्थ्य" भी है। "हमारा प्रभु यीशु मसीह आप ही, और हमारा पिता परमेश्वर, जिसने हम से प्रेम रखा और अनुग्रह से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है, तुम्हारे मनों में शान्ति दे और तुम्हें हर एक अच्छे काम और वचन में दृढ़ करे" (2 थिस्स. 2:16-17)। न केवल उसका अनुग्रह हमें परमेश्वर के परिवार में स्वीकार करवाता है, बल्कि यह हमें मसीही जीवन जीने के लिए सामर्थ्य भी देता है। दो वचन हैं जो हर विश्वासी के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के दो पहलू दिखाते हैं:

1. **परमेश्वर की अनर्जित कृपा**

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है; और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे" (इफि. 2:8-9)।

2. **परमेश्वर की योग्य बनानेवाली सामर्थ्य**

"जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह (योग्य बनानेवाली सामर्थ्य) की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत-मेंत दिया है" (इफि. 1:4-6)। पूरा अध्याय भी पढ़ो, जो उस सब कुछ के बारे में बताता है जो हमें अनुग्रह (उसके योग्य बनानेवाले सामर्थ्य से) से मिला है।

उद्धार में, न केवल परमेश्वर की अनर्जित सामर्थ्य व्यक्त की गई है (कि हमें क्षमा और उसके साथ पुनःस्थापित सम्बंध मिलता है, हालँकि हम इनके हकदार नहीं हैं), बल्कि परमेश्वर की योग्य बनानेवाली सामर्थ्य भी मिलती है - क्योंकि उसके सामर्थ्य के द्वारा ही

हम परिवर्तित होते हैं। "इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं" (2 कुरिं. 5:17)।

अनुग्रह का नियम परमेश्वर के साथ हमारे सारे सफर में चलता रहता है। हमारे मसीही जीवन के हर क्षेत्र में, यह परमेश्वर का अनुग्रह ही है जो हमें बढ़ने और मजबूत बनने में प्रेरित करता है - परमेश्वर की योग्य बनानेवाली सामर्थ्य हमें हमारी ओर से किसी गुण बिना दी गई है। "..हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ..." (2 पतरस 3:18)।

आ. विश्वास के वीरों को अनुग्रह दिया गया था

अनुग्रह की यह परिचालक शक्ति सारे बाइबल भर में पुरुषों और स्त्रियों के जीवनों में दिखाई देती है। विश्वास के हर वीर ने परमेश्वर के साथ अपना जीवन अपनी कमजोरी और अयोग्यता को पहचानते हुए शुरू किया था। और यह परमेश्वर का अनुग्रह - उसकी योग्य बनानेवाली सामर्थ्य - ही थी जो जब उसके जीवन में कार्य करने लगी तो वह वो व्यक्ति बनने के योग्य हुआ जो परमेश्वर चाहता था वह बने, और परमेश्वर का उद्देश्य उसके जीवन में पूरा हुया।

इ. मूसा के जीवन में परमेश्वर का अनुग्रह

निर्गमन 3:11-13; 4:1-13 पढ़ो। जो आज्ञा परमेश्वर ने मूसा को दी थी कोई छोटा काम नहीं था। मिस्र उस समय का प्रभावी साम्राज्य था। यह एक दुष्ट राष्ट्र था, और इसके शैतानी शासक, फिरौन का अधिकार ईश्वरीय माना जाता था। उस समय का हर राष्ट्र फिरौन के भय में रहता था। जब परमेश्वर ने मूसा को मिस्र जाने और फिरौन को उसके तीस लाख लोगों को स्वतंत्र करने लिए कहने के लिए कहा, तो मूसा की तात्कालिक प्रतिक्रिया - जो उसकी अपनी कमजोरी और अयोग्यता से थी - इस प्रकार थी:

3:11 "मैं कौन हूँ ?"

3:13 "आप कौन हैं ?"

4:1 "वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे !"

4:10 "मैं वाक्पटु नहीं हूँ !"

4:13 "प्रभु, किसी दूसरे को भेज !"

परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से मूसा मिस्र को गया, और चिन्ह और चमत्कारों के साथ इस्राएल के लोगों को निकाल लाया जैसे परमेश्वर ने उसे कहा था।

ई. गिदोन के जीवन में अनुग्रह

न्यायियों 6:1-24 पढ़ो। गिदोन को परमेश्वर का बुलावा उसके लोगों को जीत रही मिद्यानी सेनाओं से छुड़ाने के लिए आया। इस्राएल ने कई वर्षों से केवल हार ही देखी थी। आय. 13 में परमेश्वर के वचन की ओर गिदोन की प्रतिक्रिया उसका प्रारंभिक अविश्वास प्रकट करता है: 'गिदोन ने उससे कहा, "हे मेरे प्रभु, विनती सुन, यदि यहोवा हमारे संग होता, तो हम पर यह सब विपत्ति क्यों पड़ती ? और जितने आश्चर्यकर्मों का वर्णन हमारे पुरखा यह कहकर कहते थे, 'क्या यहोवा हम को मिस्र से छुड़ा नहीं लाया', वे कहाँ रहे ? अब तो यहोवा ने हम को त्याग दिया, और मिद्यानियों के हाथ कर दिया है।"' तब भी जब प्रभु ने उसको साहस दिलाया और उसके संग रहने की प्रतिज्ञा की, गिदोन ने उत्तर दिया: "मैं इस्राएल को कैसे छुड़ाऊँ ? देख, मेरा कुल मनश्शे में सब से कंगाल है, फिर मैं अपने पिता के घराने में सब से छोटा हूँ" (आय. 15)। परन्तु उसके भय और अयोग्यता के बावजूद, परमेश्वर के अनुग्रह (योग्य करनेवाली सामर्थ्य) से गिदोन ने इस्राएल को बचाया। और उसने ऐसा पुरुषों के एक छोटे दल के द्वारा किया। यह अनुग्रह ही था जो अन्तर लाया !

उ. प्रेरित पौलुस के जीवन में अनुग्रह

प्रेरितों 15:40 पढ़ो। पौलुस और सीलास के उनके मिश्नरी यात्रा पर कूच करने से पहले, अन्ताकिया की कलीसिया ने उनके लिए प्रार्थना की और "परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर" उस काम के लिए चले गए जो उनके आगे था। 2 कुरिन्थियों 11:22-33 में पौलुस के अनुभवों के बारे में पढ़ो। समझा जा सकता है कि वह पहले परमेश्वर के अनुग्रह में क्यों सौंपा गया था ! उसे जीवित रहने के लिए इसकी आवश्यकता थी ! पौलुस की कमजोरी की स्वीकृति के उत्तर में प्रभु की प्रतिज्ञा हमारे लिए भी है: "मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है..." (2 कुरिं. 12:9)।

ऊ. हमारे जीवनों में मिला अनुग्रह

परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध में - जैसे हम हर दिन उसके साथ चलते हैं - हमें लगातार ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जो हमें पराजित करना चाहती हैं। परमेश्वर की ओर हमारी प्रतिक्रिया उसके वचन पर भरोसा करना है। हम अपना भरोसा आज्ञापालन द्वारा प्रकट करते हैं। इससे प्रमाणित होता है कि परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों, हम जो परमेश्वर का वचन कहता है विश्वास करते हैं। हमारे विश्वास की ओर परमेश्वर की प्रतिक्रिया उसका अनुग्रह - उसकी योग्य बनानेवाली सामर्थ्य - है, जो हमें हर परिस्थिति में विजयी करती है।

ए. दो बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रतिज्ञाएँ

1. हम साहस के साथ अनुग्रह के सिंहासन के करीब जा सकते हैं

"इसलिए, आओ, हम **अनुग्रह के सिंहासन** के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह **अनुग्रह** पाएँ जो **आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे**" (इब्रा. 4:16)।

2. परमेश्वर योग्य है

"परमेश्वर **सब प्रकार का** अनुग्रह तुम्हें **बहुतायत** से दे सकता है जिस से **हर** बात में और **हर** समय, **सब कुछ**, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे; और **हर** एक भले काम के लिए तुम्हारे पास **बहुत कुछ हो**" (2 कुरिं. 9:8)।

अध्याय 11 पानी का बपतिस्मा

यीशु ने उन सब को जो उसमें विश्वास करते हैं आज्ञा दी है कि वे पानी में बपतिस्मा लें। "यीशु ने उनके पास आकर कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो..." (मत्ती 28:18-19)। प्रेरितों 2:38-41 भी देखो ! "बपतिस्मा" लेने का अर्थ है "पूरी तरह डुबाना"। जब एक व्यक्ति, अनेक गवाहों के सामने, अपने पाप से मन फिराता है और विश्वास करता है कि यीशु उसके लिए मरा, तो उसे पानी के पास ले जाया जाता है, पानी के अन्दर डुबाकर और बाहर लाया जाता है। यीशु ने क्यों आज्ञा दी कि उसके विश्वासी ऐसा अनोखा काम क्यों करें ?

अ. पानी के बपतिस्में को समझना

पानी का बपतिस्मा क्या है समझना एक जयवन्त और स्वतंत्र मसीही जीवन के लिए कुँजी है। पानी के अन्दर जाना और दोबारा उसमें से ऊपर आना एक तस्वीर है जो दिखाता है कि मसीही विश्वासी के साथ क्या हुआ है।

आ. मसीह के कार्य के चार चरण चित्रित किए गए

1. वह मरा....मैं उसमें मरा

"हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा" (रोमियों 6:6-7)

2. वह गाड़ा गया....मैं उसके साथ गाड़ा गया

"क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए..." (रोमियों 6:3-4)।

3. वह जिलाया गया....मुझे उसमें नया जीवन मिला

"...ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएँगे" (रोमियों 6:4-5)।

4. वह स्वर्ग में चढ़ा....मैं उसके साथ स्वर्ग में चढ़ा

"और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया" (इफि. 2:6)। कुलु. 3:1 भी देखो।

इ. पानी का बपतिस्मा है...

1. आपके अंतिम संस्कार की सभा !

एक दफन सभा व्यक्ति को मार डालने के लिए नहीं होती है। यह तब ही की जाती है जब व्यक्ति पहले मर चुका है। और इसलिए, क्योंकि आप मसीह में "मर" चुके हैं, आप अपना पुराना जीवन बपतिस्में के पानी में दफनाते हैं।

2. नए जीवन में तुम्हारा पुनरुत्थान !

तुम पानी में से यह दिखाते हुए बाहर आते हो कि तुम मसीह में एक नई सृष्टि हो ! "इसलिए यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जीएँगे भी। क्योंकि यह जानते हैं कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं; उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की। क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिए एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है तो परमेश्वर के लिए जीवित है। ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो" (रोमियों 6:8-11)।

ई. दो राज्य

"उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया" (कुलु. 1:13)। इस संसार में पैदा हुआ हर पुरुष और स्त्री अन्धकार के राज्य में पैदा होता है: तानाशाह शैतान का गुलाम। उसके राज्य में से बाहर निकलने का **मृत्यु** के सिवाय कोई दूसरा मार्ग नहीं है, और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का **जन्म** के सिवाय कोई दूसरा मार्ग नहीं है। तो इसलिए यीशु हमारी मृत्यु और नया जन्म दोनों बन गया - और इसे हम अपने पानी के बपतिस्में में घोषित करते हैं।

उ. दो जातियाँ

जिस प्रकार दो राज्य हैं, उसी प्रकार हर राज्य में लोगों की एक भिन्न जाति हैं। आदम की जाति अन्धकार के राज्य में बसी है, जबकि नई सृष्टि परमेश्वर के राज्य में बसती है।

1. पहला आदम

"जैसे आदम में सब मरते हैं..." (1 कुरिं. 15:22)। रोमियों 5:12 भी देखो। आदम हम सब का, सारी मानव जाति का पिता था। आदम के पाप ने हम सब को परमेश्वर से दूर कर दिया। उसके पाप के कारण, हम सब ने उसके विद्रोही और विकृत स्वभाव को पाया और मृत्यु के अधीन हो गए। आदम की सन्तान को "आदम की जाति" कहते हैं।

2. अन्तिम आदम

"क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा" (रोमियों 5:6)। परमेश्वर किसी प्रकार से भी पतन हुई आदम की जाति को बदल नहीं सकता था। उसे उस जाति का अन्त करना और एक नई मानव जाति का आरंभ करना अवश्य था। यीशु अन्तिम आदम था। वह आदम की जाति का अन्तिम जन्मा और नई जाति का पहला जन्मा के रूप में आया। जब वह क्रूस पर लटका था तो वह अन्तिम आदम - आदम की जाति का अन्तिम जन्मा - के रूप में लटका था। जब वह क्रूस पर मरा तो उसके साथ आदम की जाति और आदम का पापी स्वभाव भी मर गया। परमेश्वर ने पतन हुई सृष्टि को उसमें मार डाला। आदम की जाति मसीह में मर गई।

3. दूसरा मनुष्य

"...वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे" (1 कुरिं. 15:22)। यीशु परमेश्वर के नए मनुष्य के रूप में आया, जिसके द्वारा एक नई जाति बनाई जाएगी। यीशु मरे हुओं में से अन्तिम आदम के रूप में नहीं परन्तु दूसरे मनुष्य, नई सृष्टि के प्रधान के रूप में जिलाया गया। "ऐसा ही लिखा भी है, कि 'प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम जीवित प्राणी बना' और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना...प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात् मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है। जैसा वह मिट्टी का था, वैसे ही वे भी हैं जो मिट्टी के हैं, और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही वे भी हैं जो स्वर्गीय हैं। और जैसे हमने उसका रूप धारण किया जो मिट्टी का था वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप धारण करेंगे" (1 कुरिं. 15:45-49)।

4. **नई सृष्टि**

"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं" 2 कुरिं. 5:17)। इफिसियों 2:10 भी देखो। पानी के बपतिस्में में हम अपने सारे मित्रों और परिचितों को घोषित करते हैं कि अब हम आदम की जाति और अन्धकार के राज्य के भाग नहीं हैं। हम मसीह में एक नई सृष्टि हैं और परमेश्वर के राज्य के हैं !

अध्याय 12 पवित्र आत्मा

जब यीशु मरे हुओं में से जी उठा, तो वह अपने चेलों को 40 दिन तक दिखाई देता रहा। तब, जब वे सब एक पहाड़ पर इकट्ठे हुए थे, वह उनकी आँखों के सामने स्वर्ग पर उठा लिया गया (प्रेरितों 1:1-11)। परन्तु, उसके जाने से पहले, यीशु ने अपने चेलों को एक बहुत ही विशेष और अदभुत प्रतिज्ञा दी:

"मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा... मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है; क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊँ, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा..." (यूहन्ना 14:16-18; 16:5-7)। यीशु ने हमें संसार में अकेला नहीं छोड़ा है। उसने हमारे लिए पवित्र आत्मा भेजा है।

अ. पवित्र आत्मा परमेश्वर है

पवित्र आत्मा के बारे में सबसे पहली बात जो हमें समझनी है वह है कि वह वास्तव में परमेश्वर है।

'पतरस ने कहा, "हे हनन्याह ! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली कि तू **पवित्र आत्मा से** झूठ बोले...तू मनुष्यों से नहीं, **परन्तु परमेश्वर से** झूठ बोला है"' (प्रेरितों 5:3-4)। 2 कुरिन्थियों 3:17 भी देखो। परमेश्वर अपने आप को मनुष्य जाति को पिता के रूप में, पुत्र के रूप में और पवित्र आत्मा के रूप में व्यक्त करता है। ये तीन भिन्न व्यक्तित्वों की अभिव्यक्तियाँ हैं, फिर भी वे एक हैं।

आ. पवित्र आत्मा का वरदान

पवित्र आत्मा हर विश्वासी के लिए परमेश्वर से वरदान है। जब एक व्यक्ति यीशु में विश्वास करता है, और उद्धार को प्राप्त करता है, तब पवित्र आत्मा उसमें बास करने को आता है और उसे आत्मिक जीवन प्रदान करता है। 'पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुम में हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा"' (प्रेरितों 2:38-39)। यूहन्ना 7:37-39 भी देखो।

इ. पवित्र आत्मा का कार्य

1. **विश्वासी के व्यक्तिगत जीवन में:**

पवित्र आत्मा विश्वासी की सेवा के लिए उसमें बसने के लिए आता है:

क) वह परमेश्वर के साथ हमारे सम्बंध की गवाही देता है

"आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान है" (रोमियों 8:16)। 1 यूहन्ना 3:24 भी देखो।

ख) वह सिखाता है

"परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा" (यूहन्ना 14:26)।

ग) मह मार्गदर्शन देता है

"इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं" (रोमियों 8:14)।

घ) वह हमारी परमेश्वर को पसन्द जीवन जीने में सहायता करता है

"पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे" (गलातियों 5:16)। आय. 17-25 भी देखो।

च) वह प्रार्थना में हमारी सहायता करता है

"इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है : क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है" (रोमियों 8:26)।

छ) वह हमारे शरीरों को जीवन देता है

"यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा" (रोमियों 8:11)।

2. सेवा के लिए विश्वासी में:

पवित्र आत्मा को विश्वासी में बसने के लिए देने के साथ-साथ, परमेश्वर विश्वासी को सेवा के लिए सामर्थ्य देने और संसार में परमेश्वर को महिमा देने के लिए पवित्र आत्मा से भरना और बपतिस्मा देना भी चाहता है।

क) पवित्र आत्मा गवाह होने के लिए सामर्थ्य और साहस देता है

"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे" (प्रेरितों 1:8)। प्रेरितों 2:14-40 भी देखो।

ख) वह अलौकिक को मुमकिन करता है

"वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है...क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। किसी को उसी आत्मा से विश्वास, और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ्य के काम करने की शक्ति, और किसी को भविष्यद्वाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना" (1 कुरिं. 12:4,8-10)। प्रेरितों 2:4; 10:46; 19:6 भी देखो।

ग) वह गवाही देता है कि यीशु जीवित है

"हमारे बापदादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया...हम इन बातों के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा मानते हैं" (प्रेरितों 5:30-32)। प्रेरितों 4:31-33 भी देखो।

घ) वह परमेश्वर के वचन की एक ताजा समझ लाता है

"परन्तु जैसा लिखा है, 'जो बातें, आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं। परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है" (1 कुरिं. 2:9-10)। यूहन्ना 16:13 भी देखो।

च) वह हमारी आत्मा को परमेश्वर की सच्ची आराधना से भरता है

"...पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो" (इफि. 5:18-19)। यूहन्ना 4:24 भी देखो।

छ) वह यीशु की महिमा करता है

"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा" (यूहन्ना 16:13-15)। यूहन्ना 15:26 भी देखो।

ई. पवित्र आत्मा में बपतिस्मा कैसे पाएँ

परमेश्वर चाहता है कि उसका पवित्र आत्मा जो तुम में बसता है क्योंकि तुम यीशु में एक विश्वासी हो, उसकी सेवा के लिए तुम्हें सामर्थ्य के साथ परिपूर्ण कर दे (इफि. 5:18)।

1. यह परमेश्वर का प्रतिज्ञा किया हुआ वरदान है: इसलिए इसे माँगो

"...तो स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा" (लूका 11:13)। आय. 9-12 भी देखो।

2. **जैसे तुम विश्वास से पाते हो परमेश्वर की स्तुति करने लगो**

"तब वे उसको दण्डवत् करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए; और वे लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे" (लूका 24:52-53)।

3. **तुम एक अलौकिक भाषा में बोल सकते हो**

"...पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने लगे..." (प्रेरितों 19:6)। मरकुस 16:17; प्रेरितों 2:4; 10:45-46; 1 कुरिन्थियों 14:5,18 भी देखो।

मेरा समर्पण

मैं अपने जीवन में पवित्र आत्मा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। मैं पवित्र आत्मा की प्रेरणाओं और निर्देशों के अनुसार चलने का आज फैसला करता हूँ। मैं पवित्र आत्मा की आवाज सुनना सीखने का निश्चय करता हूँ। मैं पवित्र आत्मा से भरना चुनता हूँ। मैं इसी समय पवित्र आत्मा से भरने के लिए अपनी आत्मा खोलता हूँ।

अध्याय 13 परीक्षा

शैतान अधिकतर व्यक्तिगत मसीहियों पर परीक्षा द्वारा आक्रमण करता है। और वह अपने आक्रमण दो क्षेत्रों पर केन्द्रित करता है:

1. **संसार की इच्छाएँ**

वह एक विश्वासी को संसार में विलीन होने के लिए लुभाने की कोशिश करेगा:

क) सांसारिक आशीषों को जो संसार देता है एक प्रमुख इच्छा बनाना;

ख) इस संसार के आदर और सम्मान को एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य बनाना; और

ग) इस संसार में का एक होने की सुविधा को अपनी सुरक्षा का आधार बनाना।

"तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है" (1 यूहन्ना 2:15)। याकूब 4:4; 1 तीमु. 6:6-11 भी देखो।

2. **शरीर की इच्छाएँ**

क्रूस पर मसीह के कार्य के द्वारा, सच्चा मसीही पाप के परिणामों, और पाप की शक्ति से छूट गया है (रोमियों 6:6-14)। परन्तु वह अभी भी एक शारीरिक देह में रहता है जो स्वाभाविक अभिलाषाओं और इच्छाओं के वश में है। शैतान इन्हें एक मसीही को उन को और न कि उसके अन्दर पवित्र आत्मा की प्रेरणाओं को अधिक महत्त्व देने को इस्तेमाल करने की कोशिश करेगा (रोमियों 8:5-9)। याकूब 1:14; इफिसियों 2:3 भी देखो।

शैतान की प्रारंभिक विजय

संसार और शरीर के क्षेत्रों में ही शैतान ने पहले पुरुष और स्त्री की परीक्षाओं में प्रारंभिक विजय प्राप्त की थी, और आज भी यही उसकी युक्तियाँ है। "क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर से है" (1 यूहन्ना 2:16)।

हव्वा की परिक्षा की तुलना इस आयत से करो:

उत्पत्ति 3:6	1 यूहन्ना 2:16
खाने के लिए अच्छा	"शरीर की अभिलाषा"
देखने में मनभाऊ	"आँखों की अभिलाषा"
बुद्धि देने के लिए चाहनेयोग्य	"जीविका का घमण्ड"

आदम और हव्वा के पतन से लेकर, सारी मानव जाति उनके शरीर (ऊपर दी गई तीन चीजें) के नियंत्रण में है। शरीर भी पापी स्वभाव के द्वारा दूषित हो गया है (गलातियों 5:19-21)।

मसीह का विजयी होना

1. उसके जीवन द्वारा

यीशु सब बातों में बिलकुल हमारे समान परखा तो गया, "तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रा. 4:15)।

यीशु की परीक्षा की तुलना इस आयत से करो:

लूका 4:1-13	1 यूहन्ना 2:16
पत्थरों को रोटी	"शरीर की अभिलाषा"
पृथ्वी के राज्य	"आँखों की अभिलाषा"
मन्दिर का कंगूरा	"जीविका का घमण्ड"

2. उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा

विश्वास जो मसीह के कार्य को अपना बनाता है मसीह को पाप की शक्ति और अधिकार से जो उसके ऊपर है मुक्त करता है (रोमियों 8:9)। वह अब परमेश्वर के आज्ञापालन में चलना चुनने के लिए स्वतंत्र है (रोमियों 6:8-14)। "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में...भेजकर...इसलिए कि व्यवस्था की विधि हममें जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए" (रोमियों 8:3-4)।

मसीही की लगातार विजय

इस महान विजय की बुनियाद के आधार पर जो मसीह ने हमारे लिए प्राप्त की है, मसीही अब शत्रु के किसी भी आक्रमण को हरा सकता है। लगातार विजय की सात कुँजियाँ इस प्रकार हैं:

1. **जानना कि विजय पहले ही प्राप्त की जा चुकी है**
   क्रूस पर उसकी हार के कारण, शैतान की ताकत एक मसीही की अज्ञानता में ही पाई जाती है (होशे 4:6)। परन्तु जब एक मसीही क्रूस और पुनरुत्थान के सम्पूर्ण कार्य को अपने जीवन में जानता है, तब शैतान उसके विरुद्ध हर हथियार से वंचित हो जाता है।
2. **आत्मा के साथ कदम मिलाकर चलो**
   मसीही के अन्दर एक नया सामर्थ्य रखा गया है - स्वयं पवित्र आत्मा। हमें उसकी भातरी प्रेरणाओं के आज्ञापालन में हर दिन चलना है (गला. 5:22-25)।
3. **परीक्षा जो है उसे पहचानो**
   परीक्षा पाप नहीं है। परीक्षा में दे देना है ! (याकूब 1:15)। उत्पत्ति 4:6-7 देखो।
4. **समझो निकास का मार्ग दिया गया है**
   "तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको" (1 कुरिं. 10:13)। याकूब 4:7 निकास का मार्ग बताता है: परमेश्वर के अधीन हो जाओ, "शैतान का सामना करो और वह भाग जाएगा !
5. **जीवन में सही फोकस रखो**
   "अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ" (कुलु. 3:1-2)। फिलिप्पियों 4:8; 1 तीमुथियुस 6:11-12; 2 पतरस 3:11-13 भी देखो।
6. **परीक्षा के प्रत्यक्ष क्षेत्रों से दूर रहो**
   "मैं किसी ओछे काम पर चित न लगाऊँगा" (भजन 101:3)। 1 तीमुथियुस 6:9-11 भी देखो।
7. **शैतान की युक्तियों की जानकारी रखो**

यह हमारे लिए अवश्य है कि हम उन युक्तियों के बारे में जानें जो शत्रु हमारे विरुद्ध इस्तेमाल करता है ताकि वह हमें चालाकी से मात न दे जाए (2 कुरिं. 2:11)।

अ) वह झूठा है (यूहन्ना 8:44)
आ) वह निन्दक और दोष लगानेवाला है (प्रकाशित. 12:10)
इ) वह धोखेबाज है (प्रकाशित. 12:9)
ई) वह परखनेवाला है (मत्ती 4:1-11)
उ) वह अत्याचारी है (प्रेरितों 10:38)
ऊ) वह रुकावट डालता है (1 थिस्स. 2:18)
ए) वह गरजनेवाले शेर के समान है (1 पतरस 5:8)
ऐ) वह अपने आप को ज्योति के स्वर्गदूत में परिवर्तित कर सकता है (2 कुरिं. 11:14)

मसीहियों और विश्वासियों के रूप में, **हमें जय में रहने लिए बुलाया गया है !** मसीह के द्वारा, यह जय हमारी है:

1) संसार पर (1 यूहन्ना 5:4)
2) शरीर पर (गला. 5:16)
3) शत्रु पर (इफि. 6:11,13)

अध्याय 14 संगति

अ. संगति का उद्देश्य

मसीहियों के इकट्ठी संगति बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि हमारी एकता में ही..

1. विश्वासी मसीह में प्रोत्साहन पाता और बढ़ता है

"क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूँ कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूँ जिससे तुम स्थिर हो जाओ; अर्थात् यह कि जब मैं तुम्हारे बीच में होऊँ, तो हम उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में और तुम में है, एक दूसरे से प्रोत्साहन पाएँ" (रोमियों 1:11-12)।

2. संसार को पता चलता है कि यीशु को परमेश्वर ने भेजा था

"वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं, मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा" (यूहन्ना 17:22-23)।

आ. संगति की शर्तें

1. एक दूसरे की ओर मूल वचनबद्धता

"भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़े चलो" (रोमियों 12:10)।
बिना एक बुनियादी भरोसे के कोई संगति नहीं हो सकती है। वचनबद्धता की गहराई के अनुसार संगति की गहराई बदलती रहेगी।

2. हमारी वचनबद्धता 'अगापे' पर आधारित होनी चाहिए

'अगापे' एक प्रेम है, जो 'के बजाय' न कि 'के कारण' प्रेम रखता है। इसलिए ऐसी वचनबद्धता दूसरे व्यक्ति के असंगत व्यवहार से प्रभावित नहीं होगी। "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो" (यूहन्ना 13:34)।

3. सच्ची संगति मसीह-केन्द्रित होती है

हमारी एक दूसरे के साथ संगति मसीह में हमारी सामूहिक वचनबद्धता पर स्थापित है। "...हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है" (1 यूहन्ना 1:3)। फिलिप्पियों 2:1-2 देखो।

4. ज्योति में चलना

हमारी संगति एक दूसरे के साथ खुला, ईमानदार और सच्चा होने की आवश्यकता को सम्मिलित करता है। इसका कभी-कभार अर्थ हो सकता है:

अ) दूसरों के सामने अपने पाप स्वीकार करना, या प्रेम में दूसरे के पाप ढाँपना। "यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते; पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:6-7)। मत्ती 18:15 भी देखो।

आ) ज्योति का आज्ञापालन - परमेश्वर द्वारा दी गई सामान्य और विशेष आज्ञाएँ।

इ) हर प्रकार का पाखण्ड निकाल देना - भूमिका करना, और सच्चा नहीं होना। "अतः जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन-मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो" (1 पतरस 1:22)।

5. दूसरे के कल्याण में सच्ची रुचि रखना

आत्म-लाभ का कोई गुप्त अभिप्राय नहीं होना चाहिए। हमारी इच्छा देने की, न कि लेने की होनी चाहिए। "विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे" (फिलि. 2:3-4)।

6. अपना जीवन दे देने की उत्सुकता

"मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे" (यूहन्ना 15:12-13)। जीवन में शारीरिक जीवन से कुछ अधिक सम्मिलित होता है। इसमें हमारी धन-सम्पत्ति, हमारी व्यक्तिगत रुचियाँ और पसन्द, वगैरा सम्मिलित होती हैं (याकूब 2:15-16)। इसका अर्थ अपने आप को खुले दिल से बाँटने की उत्सुकता है। हम लोगों को उतना ही जान सकते हैं जितना वे अपने आप को प्रकट करने के लिए तैयार होते हैं।

इ. कलीसिया में संगति का अर्थ है:

1. सब चीजें साझे की होना

प्रेरितों 4:32 में उनकी संगति के विकास में तीन चरण थे - पहले, वे एक चित (आत्मा) के थे, फिर वे एक मन के थे, और फिर इनके पीछे सबकुछ साझे का होने की शारीरिक अभिव्यक्ति आई। "और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे में थीं। वे अपना-अपनी सम्पत्ति और सम्मान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे" (प्रेरितों 2:44-45)।

2. उनके जीवन दे देना

"प्रिस्का और अक्विला को जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार। उन्होंने मेरे प्राण के लिए अपना ही जीवन जोखिम में डाल दिया था; और केवल मैं ही नहीं, वरन् अन्यजातियों की सारी कलीसियाएँ भी उनका धन्यवाद करती हैं" (रोमियों 16:3-4)।

3. भाइयों की सेवा करने में समर्पित

"हे भाइयो, तुम स्तिफनास के घराने को जानते हो कि वे अखया के पहले फल हैं, और पवित्र लोगों की सेवा के लिए तैयार रहते हैं" (1 कुरिं. 16:15)।

4. दूसरों की आवश्यकता की आपूर्ति का एक माध्यम बनना

"परन्तु बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में काम आए, ताकि उनकी बढ़ती भी तुम्हारी घटी में काम आए कि बराबरी हो जाए" (2 कुरिं. 8:14)। 1 कुरिं. 16:17 भी देखो।

5. दुख में सहभागी होना

"तौभी तुम ने भला किया कि मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए" (फिलि. 4:14)।

6. बलिदान से देना

"कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन में उनकी उदारता बहुत बढ़ गई। उनके विषय में मेरी यह गवाही है कि उन्होंने अपनी सामर्थ्य भर वरन् सामर्थ्य से भी बाहर, मन से दिया" (2 कुरिं. 8:2-3)।

7. अतिथि-सत्कार करना

"हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है, जो परदेशी हैं, उसे विश्वासी के रूप में करता है" (3 यूहन्ना 5)। इब्रा. 13:5 भी देखो।

8. एक दूसरे की उन्नति करना और प्रोत्साहन देना

"और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिए कि तुम हमें प्रिय हो गए थे" (1 थिस्स. 2:8)। 2 तीमु. 3:10-14 भी देखो।

ई. संगति के परिणाम

प्रारंभिक कलीसिया में संगति के परिणाम इस प्रकार थे:

- परमेश्वर का भय (प्रेरितों 2:43)
- आनन्द (प्रेरितों 2:46)
- लोगों का अनुग्रह (प्रेरितों 2:47)
- नए विश्वासियों का जुड़ना (प्रेरितों 2:47)
- सारी आवश्यकताएं पूर्ण होना (फिलि. 419)
- अगुआई का उभाड़ (1 कुरिं. 16:15-16)

मेरा समर्पण

इस अध्ययन के द्वारा मैं अब दूसरे मसीहियों के साथ संगति रखने के महत्त्व को समझता हूँ। आज मैं अपने आप को विश्वासियों के एक समूह का भाग होने के लिए सौंपता हूँ जिन्हें मैं अपनी वफ़ादारी, अपना प्रेम और अपनी सेवा दे सकूँगा।

अध्याय 15 उदारता

"आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट करता है। दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है" (भजन 19:1-2)। य. 3-4 भी पढ़ो। इस भजन से, हम सीखते हैं कि परमेश्वर की सृष्टि (स्वर्ग और पृथ्वी):

1) परमेश्वर की महिमा वर्णन करती है
2) उसके हाथों के कामों को प्रकट करती है
3) बातें करती है, और
4) ज्ञान सिखाती है

यदि हम सावधानी से ध्यान दें तो हम परमेश्वर की सृष्टि से कुछ सीख सकते हैं। जिस प्रकार प्राकृतिक नियम होते हैं जो सृष्टि में व्यवस्था स्थापित करते हैं, परमेश्वर ने आत्मिक नियम भी दिए हुए हैं जो जीवन संचालन करते हैं। उनमें से एक उदारता का नियम है। यह हमें सिखाता है कि "जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा" (2 कुरिं. 9:6)।

अ. साझेदारी

परमेश्वर के साझेदारों के रूप में (1 कुरिं. 3:9; 2 कुरिं. 5:20; 6:10), यह हमारे लिए समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि जिम्मेदारी कहाँ होती है:

1. मालकियत परमेश्वर की है

"पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है, जगत और उस में निवास करनेवाले भी" (भजन 24:1)। भजन 89:11; अय्यूब 41:11; 1 इतिहास 29:10-14 भी देखो। हम मालिक नहीं, परन्तु भण्डारी हैं। सारी मालकियत परमेश्वर की है। हर एक सृजी गई सजीव या निर्जीव चीज, हर भौतिक या अभौतिक चीज जो हमारे पास हो सकती है: धन-सम्पत्ति, नौकरी, परिवार, आखिरकार परमेश्वर के है। उसने ये सब चीजें हमारे आनन्द के लिए दी हैं (1 तिमु. 6:17); और जब हमें अनुभूति हो कि वे अभी भी परमेश्वर की ही हैं, तो हम इस आश्वासन में शान्ति पा सकते हैं कि उनकी अन्तिम जिम्मेवारी परमेश्वर की है।

2. भण्डारीपन हमारा है

हम मालिक नहीं, परन्तु भम्डारी हैं। एक भण्डारी, जो किसी दूसरे का है उसका प्रबंध करता और उसकी देखभाल करता है। परमेश्वर हर चीज का मालिक है; परन्तु भण्डारी होने के रूप में, हम उसके लिए उनका प्रबंध करते और देखभाल करते हैं। इस भण्डारीपन में विश्वासयोग्य ठहरने का हमारा एक दायित्व है। प्रभु हमें जो चीजें उसने हमें दी हैं उनके प्रबंध और देखभाल की विशेष जिम्मेवारी का उत्तरदायी ठहराता है (मत्ती 25:14-30 पढ़ो)।

जब हम परमेश्वर की सम्पत्ति के साथ यह मालिक-भण्डारी सम्बंध जिसका हम आनन्द लेते हैं, समझते हैं, तब देने में आसान हो जाता है।

<u>परमेश्वर के सम्मुख, भण्डारीपन हर एक चीज का है जो हमारे पास है:</u>

- अ) **हमारा जीवन** (प्रेरितों 17:25; 1 कुरिं. 6:19; गला. 2:20; अय्यूब 33:4)
- आ) **हमारा समय** (भजन 90:12; इफि. 5:15; कुलु. 4:5)
- इ) **हमारी प्रवीणताएँ और योग्यताएँ** (1 पतरस 4:10; 1 कुरिं. 12:4-7,11)
- ई) **हमारी सम्पत्ति** (मत्ती 6:19-21; कुलु. 3:1-2)
- उ) **हमारा रुपया-पैसा** (1 तीमु. 6:6-10; मत्ती 6:24)
- ऊ) **सुसमाचार का संदेश** (1 कुरिं. 4:1; 9:16-17; 1 तीमु. 6:20)

जैसे कि, अनेक मसीही चाहे कितना भी वे क्यों न चाहें, देने में (दशमाँश और दान) वे फिर भी संघर्ष करते हैं। परन्तु जो कार्य एक विश्वासी को अच्छे भण्डारीपन की सम्पूर्ण आशीषों पाने के लिए मुक्त करता है, वह है <u>समर्पण</u> - परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य में अपना सारा जीवन, धन-सम्पत्ति और योजनाएँ बिनाशर्त अधीन कर देना। जब हम अपने आप को देते हैं, तब ही हम सीखते हैं कि अपनी धन-सम्पत्ति में से जो परमेश्वर ने हमें दी है, कुछ देना क्या होता है।

आ. प्रारंभिक कलीसिया में देना

"और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे में थीं। वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट लिया दिया करते थे...यहाँ तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे में था" (प्रेरितों 2:44-45; 4:32)। प्रारंभिक मसीहियों के इस मूल रवैये ने देने की हर अभिव्यक्ति की जो बाद में आनेवाली थी, नींव रखी। जैसे जैसे मसीहियों की संख्या बढ़ती गई, देने के भिन्न-भिन्न तरीके नजर आने लगे। परन्तु उनका सारा देना भण्डारीपन की उनकी समझ को व्यक्त करता था, कि आखिरकार सब कुछ परमेश्वर का है।

1. कलीसिया जरूरतमंदों का भरण-पोषण करती थी

प्रारंभिक कलीसिया में, विशेष पुरुषों को "डीकनों" के रूप में काम करने के लिए चुना गया था जो विधवाओं और जरूरतमंदों के लिए दान और भोजन बाँटने के सेवक थे (प्रेरितों 6-1-3 देखो)। इन पुरुषों ने सारे देने को जहाँ आवश्यकता होती थी वहाँ पहुँचाने को अपनी सेवकाई बनाया था।

2. कलीसिया एक दूसरे को बलिदान के साथ दिया करती थी

जब यहूदी मसीही यरूशलेम में अकाल में फंसे थे, तब गरीब, पीड़ित गैर-यहूदी कलीसिया ने उनकी सहायता की। "कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन में उनकी उदारता बहुत बढ़ गई। उनके विषय में मेरी यह गवाही है कि उन्होंने अपनी सामर्थ्य भर वरन् सामर्थ्य से भी बाहर, मन से दिया" (2 कुरिं. 8:2-3)। आय. 1 और 4 भी देखो।

3. कलीसिया भ्रमणशील सेवकाइयों की सहायता करती थी

प्रेरित पौलुस जगह जगह नई कलीसियाएँ स्थापित करने के लिए सफर किया करता था। कुछ अवसरों पर अपनी आवश्यकताओं के लिए वह अपने हाथों से काम भी करता था (प्रेरितों 18:3; 2 थिस्स. 3:7-9)। दूसरे अवसरों पर फिलिप्पी की कलीसिया ने पौलुस जैसी भ्रमणशील सेवकाइयों को सहयोग देकर, देने का सही दिल दिखाया जिसकी परमेश्वर आज्ञा भी देता है। "मेरे पास सब कुछ है, वरन् बहुतायत से भी है; जो वस्तुएँ तुम ने...भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ, वह तो सुखदायक सुगन्ध, ग्रहण करने योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है" (फिलि. 4:18)। आय, 15-17 भी पढ़ो।

4. मसीही काम करते थे ताकि दे सकें

"चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे, वरन् भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे, इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो उसे देने को उसके पास कुछ हो" (इफि. 4:28)।

5. देना उनके प्रेम का प्रमाण था

"...इस समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में काम आए...अतः (देना में) अपना प्रेम...सिद्ध करके दिखाओ" (2 कुरिं. 8:14,24)। आय. 7-15; 1 कुरिं. 16:12; 1 यूहन्ना 3:17-18 भी देखो।

इ. देने के परमेश्वर के नियम

1 कुरिन्थियों 10:11 में, हमें इस्राएल के उदाहरण से सीखने को कहा गया है। परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए नियम हमें उपयोग में लाने हैं। उसी के साथ हमें उन गलतियों से बचना है जो इस्राएल (और उनके अगुओं) ने जंगल में की थीं। देने के क्षेत्र में, कुछ उत्तम मार्गदर्शक हैं जो हमारे देने में हमारी सहायता करेंगे:

1. परमेश्वर अपेक्षा करता है कि हम एक प्रतिशत से आरंभ करें

"सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नहीं" (मलाकी 3:10)

2. हमें क्रमानुसार और नियमित देना है

"तब हिजकिय्याह ने यहोवा के भवन में कोठरियाँ तैयार करने की आज्ञा दी, और वे तैयार की गई। तब लोगों ने उठाई हुई भेंटे, दशमांश और पवित्र की हुई वस्तुएँ, सच्चाई से पहुँचाई..." (2 इतिहास 31:11-12)।

3. हमें प्रभु को पहला और उत्तम देना है

"अपनी सम्पत्ति के द्वारा, और अपनी भूमि की सारी पहली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना; इस प्रकार तेरे खत्ते भरे पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमड़ता रहेगा" (नीतिवचन 3:9-10)।

मेरा समर्पण

इस अध्ययन के द्वारा, मैं दूसरों की ओर एक उदार हृदय और रवैया रखने के महत्त्व को समझा हूँ। आज मैं, दशमांश देना आरम्भ करके (अपनी कलीसिया में प्रभु के काम के लिए अपनी आमदनी का दसवाँ हिस्सा) और दान देकर (मेरी कलीसिया और जो प्रभु की सेवा करते हैं उनको), देने के जीवन को आरम्भ करने के लिए वचनबद्ध होता हूँ। मैं दूसरों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रोत्साहित करूँगा और सिखाऊँगा भी।

अध्याय 16 राज्य का जीवन

अ. अधिकार में परिवर्तन

हमें शैतान के अधिकार से छुड़ाया गया है। हम अब एक बिलकुल नए अधिकार के - प्रभु यीशु के - अधीन हैं। जब एक विश्वासी प्रभु में अपने नए जीवन में बढ़ने लगता है, तो उसे शीघ्र पता लग जाता है कि परमेश्वर के राज्य में जीने का आनन्द लेने का एक मात्र तरीका यीशु के साथ सही सम्बंध में रहना है (इफि. 1:17; फिलि. 3:10)। परमेश्वर के साथ हमारे नए जीवन के आरम्भ में, यह सम्बंध दो भिन्न रूप लेता है:

1. उद्धारकर्त्ता

यह सबसे पहला सम्बंध है जो यीशु के साथ बनता है। जब तक हमें यीशु का उद्धारकर्त्ता के रूप में - जो हमारे लिए मरा और हमें शैतान के राज्य से छुड़ाया - प्रकटीकरण नहीं मिलता, हम परमेश्वर को पिता या मित्र के रूप नहीं जान सकते हैं। यीशु ने हमें बचाया है:

अ) **परमेश्वर के न्याय** से (1 थिस्स. 1:10; 5:9; रोमियों 5:9)

आ) **शैतान की शक्ति** से (प्रेरितों 26:18; कुलु. 1:13; इब्रा. 2:14; 1 यूहन्ना 1:18)

इ) **हम अपने** से (फिलि. 3:19; 2 कुरिं. 5:25; तीतुस 3:3-6; 1 पतरस 1:18)

"पुत्र होने पर भी...अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया" (इब्रा. 5:8-9)। इब्रा. 2:10; 2 तीमु. 1:10 भी देखो।

2. प्रभु

यीशु को उद्धारकर्त्ता के रूप में जानना हमें परमेश्वर के राज्य में लाता है, परन्तु हमारा उसके साथ सम्बंध यहीं पर समाप्त नहीं होता है। एक बार जब हम उसके राज्य में होते हैं, तो सम्बंध प्रभावशाली नए परिवर्तनों में से गुजरता है। अब हम उसे न केवल उद्धारकर्त्ता, परन्तु प्रभु - हमारा प्रभु ! के रूप में जानते हैं। वह अपने राज्य में राजा है (कुलु. 2:6)। "इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु स्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है" (1 कुरिं. 12:3)। यूहन्ना 13:13; रोमियों 1:4; 1 कुरिं. 8:6; 1 कुरिं. 4:5 भी देखो।

जब हम ज्योति के राज्य में प्रवेश करते हैं, तो हम उसका आनन्द लेते हैं जिसके लिए हम सृजे गए थे - प्रभु के साथ एक स्नेही सम्बंध। इसी के कारण से, जब यीशु हमारे जीवन का प्रभु बनता है, तो हम पाते हैं कि हमारे जीवनों में उसका राज्य हमें पाप की अव्यवस्था से निकालकर ईश्वरीय व्यवस्था और शान्ति में लाता है। कुलुस्सियों 2:9-10; 1 कुरिन्थियों 8:6 देखो।

आ. आदर्श नागरिक

"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो..." (फिलि. 2:5)। यीशु जो राज्य का राजा था, एक सेवक बन गया। वह एक उदाहरण है कि उसके राज्य का सच्चा नागरिक कैसा हो।

"तुम मुझे गुरू और प्रभु कहते हो, और ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ। यदि मैं ने गुरू और प्रभु होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए। क्योंकि मैं ने तुम्हें एक नमूना दिया है कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो" (यूहन्ना 13:13-15)। यूहन्ना 13:5-17; मत्ती 20:26-28; लूका 22:27 भी पढ़ो। मसीह के राज्य के सदस्यों के रूप में हम उसके साथ एक मालिक-सेवक सम्बंध में प्रवेश करते हैं (मत्ती 6:24)।

यीशु अपने पिता की इच्छा पूरी करने आया था (इब्रा. 10:5-9)। अपने रोजाना के जीवन में, उसने दिखाया था कि राज्य की जीवन शैली कैसी होती है: परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए जीना (इफि. 5:8-10)। हम में यही सेवक-हृदय, जैसा उसका सेवक-हृदय था, होना चाहिए। अनेक मसीही एक सेवक होने के इस विचार को पसन्द नहीं करते क्योंकि यह एक व्यक्ति को दूसरे से हीन करता नजर आता है।

परन्तु बाइबल में, हम चार दिलचस्प विरोधाभास पाते हैं:

1. गुलामी में, स्वतंत्रता है

"परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:22)। रोमियों 6:16-23; रोमियों 12:1; 1 कुरिं. 7:22; 2 कुरिं. 3:17; इफि. 6:6-7; 1 पतरस 2:16 भी पढ़ो।

2. एक सेवक बनने में, महानता है

"जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा" (मत्ती 23:11-12)। मत्ती 20:26-27; मरकुस 9:35; 10:43; यूहन्ना 12:26 भी देखो।

3. दीनता में, प्रतिष्ठा है

"जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा" (मत्ती 18:4)। लूका 18:14; नीतिवचन 29:23; याकूब 4:10; 1 पतरस 5:5-6; मत्ती 19:30 भी देखो।

4. अधीनता में, अधिकार है

रोमी सूबेदार जो यीशु के पास आया था इस नियम को समझता था। "...मैं ने अपने आप को इस योग्य भी न समझा कि तेरे पास आऊँ, पर वचन ही कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ, और सिपाही मेरे हाथ में हैं; और जब एक को कहता हूँ, 'जा', तो वह जाता है; और दूसरे से कहता हूँ, 'आ', तो वह आता है; और अपने किसी दास को कि 'यह कर', तो वह उसे करता है" (लूका 7:7-8)। क्योंकि सूबेदार अधिकार के नीचे था, वह अधिकार इस्तेमाल कर सकता था, और वह शीघ्रता से यीशु के अधिकार के नीचे हो गया। लूका 7:1-10; याकूब 4:7 भी पढ़ो।

परमेश्वर के राज्य की जीवन शैली परमेश्वर की अधीनता और आज्ञापालन का रवैया है (मत्ती 12:50; इफि. 6:6; इब्रा. 13:21; 1 यूहन्ना 2:17; 1 थिस्स. 4:1 देखो)। हम अपने आप को परमेश्वर की इच्छा के अधीन करते हैं - अनिच्छा से नहीं - न डर या कर्तव्य के कारण - बल्कि:

- अ. क्योंकि परमेश्वर ने जो सब कुछ हमारे लिए किया है (रोमियों 12:1; इफि. 4:1; तीतुस 3:4-7)
- आ. क्योंकि ऐसा करने से हम पूर्ति पाते हैं (भजन 40:8)
- इ. प्रेम के कारण (यूहन्ना 14:15; 1 यूहन्ना 5:3)

इ. राज्य का फल

"तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर एक को उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे कि तुम्हारा चाल-चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है" (1 थिस्स. 2:11-12)। 2 थिस्स. 1:5 भी देखो।
मत्ती 21:43 में, यीशु ने कहा कि राज्य उनका होगा जो "इसका फल लाएँगे"।

राज्य का फल कई वचनों में समझाया गया है:

- प्रेम, आनन्द, शान्ति (गलातियों 5:22-23)
- भलाई, धार्मिकता, सच्चाई (इफि. 5:9; याकूब 3:13-17)
- धार्मिकता, मेल, आनन्द (रोमियों 14:17; इब्रा. 12:1)

क्योंकि हम परमेश्वर द्वारा सृजे गए थे, हम उसके राज्य और इसकी जीवन शैली के लिए भी बनाए गए थे। राज्य का फल नए जन्म के चमत्कार का स्वाभाविक बाहरी कार्य मात्र है जिसे पवित्र आत्मा ने हम में किया है (गला. 5:22-23)। परमेश्वर के राज्य के नागरिकों के रूप में हमारी जिम्मेवारी उन लोगों के समान जीना है जो अब हम हैं ! (1 पतरस 2:11)। "तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और तुम परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ" (कुलु. 1:10)। कुलु. 2:6; इफि. 4-1; 6:8-10 भी देखो।

अध्याय 17 आराधना

अ. "परमेश्वर को धन्य कहना"

"हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे !" (भजन 103:1)। यह सोचना विस्मयकारी है कि हम अपने सृष्टिकर्त्ता को धन्य कह सकते हैं, परन्तु बार बार हमें बाइबल ऐसा ही करने के लिए कहती है। हम उसे अपनी स्तुति और आराधना के द्वारा धन्य कहते हैं। भजन 34:1-3 देखो।

आ. स्तुति

स्तुति प्रशंसा और आदर की अभिव्यक्ति है। जब हम किसी की प्रशंसा करते हैं तो हम उन्हें बताते हैं कि हमारे अनुसार वे कितने अदभुत हैं, या कि उनकी उपलब्धियाँ कितनी महान हैं। प्रभु के साथ भी ऐसा ही है। स्तुति परमेश्वर का चरित्र और सामर्थ्य स्वीकार करने के बारे में है। "क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है, मैं तेरी प्रशंसा करूँगा। इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूँगा; और तेरा नाम लेकर हाथ उठाऊँगा" (भजन 63:3-4)।

1. हम परमेश्वर की स्तुति क्यों करते हैं ?

अ. वह कौन है के कारण। "परमेश्वर का भजन गाओ, भजन गाओ ! हमारे महाराजा का भजन गाओ, भजन गाओ ! क्योंकि परमेश्वर सारी पृथ्वी का महाराज है; समझ बूझकर बुद्धि से भजन गाओ" (भजन 47:6-7)।

आ. वह क्या करता है के कारण। "हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे ! हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना। वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है, वही तो तेरे प्राण को नष्ट होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बाँधता है, वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है" (भजन 103:1-5)।

2. परमेश्वर की स्तुति किसे करनी है ?

अ. जो परमेश्वर के खोजी हैं। "...जो यहोवा के खोजी हैं, वे उसकी स्तुति करेंगे..." (भजन 22:26)।

आ. जितने प्राणी हैं। "जितने प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करें ! याह की स्तुति करो ! (भजन 150:6)

3. हमें परमेश्वर की स्तुति कहाँ करनी है ?

- अ. परमेश्वर के लोगों के बीच। "वह (यीशु) कहता है, 'मैं तेरा नाम भाइयों को सुनाऊँगा; सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊँगा" (इब्रा. 2:12)।
- आ. देश देश के लोगों के बीच। "हे प्रभु, मैं देश देश के लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं राज्य राज्य के लोगों के बीच में तेरा भजन करूँगा" (भजन 57:9)।
- इ. अपने बिस्तरों पर। "इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूँगा...जयजयकार करके तेरी स्तुति करूँगा। जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूँगा, तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूँगा" (भजन 63:4-6)।

इ. आराधना

जबकि स्तुति प्रशंसा और आदर की अभिव्यक्ति है, आराधना प्रेम और चाहत की अभिव्यक्ति है। बिना किसी से प्रेम किए, उनकी आदर करना और जो वे करते हैं की प्रशंसा करना मुमकिन है। उसी प्रकार, आराधना प्रभु के लिए हमारे प्रेम के बारे में है। इसे अपना सारा हृदय और जीवन उसे देकर ही व्यक्त किया जा सकता है। "उससे सारे मन, और सारी बुद्धि, और सारे प्राण, और सारी शक्ति के साथ रखना; और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमबलियों और बविदानों से बढ़कर है" (मरकुस 12:33)। पुराने नियम की इस्राएल की धार्मिक विधियाँ और पर्व प्रभु के लिए घृणित बन गए थे क्योंकि उनके हृदय उससे दूर थे (यशा. 1:10-15; 29:13)। आज भी, परमेश्वर निष्कपट और सच्ची आराधना में ही दिलचस्पी रखता है जो हृदय में से निकलती है। "परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें" (यूहन्ना 4:23-24)।

1. आत्मा से

हमारी आत्मा को "भीतरी मनुष्यत्व" कहा जाता है (इफि. 3:16)। सच्ची आराधना तब होती है जब भीतरी मनुष्य, पवित्र आत्मा की प्रेरणाओं के उत्तर में परमेश्वर को प्रेम और चाहत व्यक्त करता है। यह बोले गए शब्द, प्रभु के लिए एक प्रेम का गीत या शान्त चाहत का रूप ले सकता है। सच्ची आराधना में हमारी आत्मा पर पवित्र आत्मा के कार्य की आवश्यकता होती है (फिलि. 3:3)। इसलिए, केवल वही लोग जो यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा "आत्मा द्वारा जन्में" हैं, परमेश्वर की सच्चाई से आराधना कर सकते हैं ! (यूहन्ना 3:5-8)।

2. सच्चाई से

परमेश्वर की सच्चाई से आराधना करने का अर्थ है उसकी आराधना वैसे करना जैसे बाइबल कहती है हमें करनी चाहिए। नादाब और अबीहू (महायाजक के पुत्र) प्रभु के सम्मुख ऊपरी आग ले गए और मर गए (गिनती 3:4; 26:61)। यह गम्भीर चेतावनी याजकीय सेवकाई की परमेश्वर की योजना का (मूसा का तम्बू) अध्ययन करने की आवश्यकता चित्रित करती है। आराधना से पहले बलिदान, शुद्धीकरण और कपड़े पहनना होता था (निर्गमन 30:17-38)। प्रकाशितवाक्य 1:5-6 में आप ध्यान दें कि इससे पहले हम "...परमेश्वर के लिए याजक..." बनाए गए, यीशु ने "...अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है"। प्रभु की आराधना करने के लिए पवित्र स्थान में जाने से पहले याजकों को बहुत तैयारी करनी होती थी। बताए गए कदमों को अनदेखा करना खतरनाक था। हमें सच्चाई से आराधना करनी है - बाइबल के तरीके से।

ई. बाइबल में स्तुति और आराधना की अभिव्यक्तियाँ

1. मुँह से
   - अ. गीत गाना (भजन 9:2,11)
   - आ. स्तुति करना (भजन 103:1)

2. हाथों से
   - अ. उठाना (भजन 63:4)
   - आ. ताली बजाना (भजन 47:1)

3. शरीर से
   - अ. खड़े होकर (भजन 134:1)
   - आ. घुटनों पर, झुक कर (भजन 95:6)
   - इ. आनन्द से नाचते और उछलते हुए (भजन 30:11)

"हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है ? तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी, और अपनी स्तुति करने वालों के भय के योग्य, और आशचर्यकर्म का कर्त्ता है...यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है" (निर्गमन 15:11, 21)। "हे प्रभु, देवताओं में से तेरे तुल्य कौन है ?...क्योंकि तू महान् और आश्चर्यकर्म करनेवाला है, केवल तू ही परमेश्वर है...हे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर, मैं अपने सम्पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा, और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूँगा (भजन 86:6,10,12)।

मेरा समर्पण

सबसे बड़ा काम जो मैं इस जीवन या अनन्तकाल में करूँगा वह है परमेश्वर की आराधना करना। मैं आज के दिन एक सच्चा आराधना करनेवाला बनने और इसे अपने जीवन में सर्वोच्च लक्ष्य बनाने का निश्चय करता हूँ। मैं किसी दूसरे को भी जीवन का यह अत्यावश्यक तरीका सिखाऊँगा।

अध्याय 18 प्रार्थना

"जब वह मुझे पुकारे, तब मैं उसकी सुनूँगा...और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊँगा" (भजन 91:15-16)। हमारा प्रभु के साथ प्रार्थना में बिताया समय सबसे गतिशील, इतिहास-बदलने वाला सामर्थ्य निर्मुक्त कर सकता है जो संसार ने कभी देखा है।

बाइबल प्रार्थना की विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में बताती है, परन्तु इस शिक्षा में हम पहले प्रार्थना को व्यक्तिगत रूप में देखेंगे। एक देह के रूप में हमारी प्रार्थना उतनी ही मजबूत हो सकती है जितना प्रभु के साथ हमारा व्यक्तिगत समय होता है।

अ. गुप्त स्थान

"परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर। तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा" (मत्ती 6:6)। हमें घनिष्ठ प्रार्थना में किसी और ने नहीं बल्कि स्वयं प्रभु ने आमंत्रित किया है।

इस प्रकार की "गुप्त" प्रार्थना ... की अपेक्षा करती और निश्चित करती है:

- सही अभिप्राय मत्ती 6:5)
- पिता के रूप में परमेश्वर के साथ सही सम्बंध (लूका 11:11-13)
- प्रभु में सच्चा भरोसा (भजन 55:16-17)
- झूठे चेहरों को दूर करना (मरकुस 7:6-7)

जब हम परमेश्वर के साथ बातचीत में अपनी भावनाएं और बोझ व्यक्त करते हैं, तो यह चाहत (भजन 34:1-4), पाप स्वीकरण (1 यूहन्ना 1:9), विनती (मत्ती 7:7 या धन्यवाद (इफि. 5:4-20) के रूप में हो सकता है।

आ. प्रार्थना से संबंधित पाँच आज्ञाएँ

1. सदा जागते और प्रार्थना करते रहो

"इसलिए जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो" (लूका 21:36)। मरकुस 13:35-37 भी देखो।

2. प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो

"जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो : आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है" (मत्ती 26:41)।

3. मजदूरों के लिए प्रार्थना करो

"उसने उनसे कहा, 'पके खेत बहुत हैं, परन्तु मजदूर थोड़े हैं; इसलिए खेत के स्वामी से प्रार्थना करो कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे'" (लूका 10:2)।

4. अधिकारियों के निमित्त लिए प्रार्थना करो

"अतः मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किए जाएँ। राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ" (1 तीमुथियुस 2:1-2)।

5. अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करो

"जो तुम्हें स्राप दें, उनको आशीष दो; जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिए प्रार्थना करो" (लूका 6:28)।

इ. प्रार्थना कब करें ?

बाइबल अनेक लोगों के उदाहरण देती है जिन्होंने प्रार्थना की (1 इतिहास 4:10)। विश्वास के अनेक वीरों के जीवनों से हम देख सकते हैं कि उन्होंने दिन के नियमित समय विशेषकर प्रार्थना के लिए अलग किए होते थे, अकसर एक दिन के तीन समय - सुबह, दोपहर और शाम। "परन्तु मैं तो परमेश्वर को पुकारूँगा; और यहोवा मुझे बचा लेगा। साँझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों पहर मैं दोहाई दूँगा और कराहता रहूँगा, और वह मेरा शब्द सुन लेगा" (भजन 55:16-17)। दानिय्येल 6:10 भी देखो।

एक नियमित, सम्पूर्ण हृदय की प्रार्थना - प्रार्थना जो व्यर्थ धार्मिक विधियों से दूर रहती थी - के प्रतिदिन के नमूने का उत्तम उदाहरण, स्वयं प्रभु यीशु में पाया जाता है:

- सुबह भोर में (मरकुस 1:35)
- सारी रात (लूका 6:12)
- हर भोजन से पहले (मरकुस 6:41)

ई. क्या प्रार्थना करें?

1. अपने लिए

"याबेस ने इस्राएल के परमेश्वर को यह कहकर पुकारा, 'भला होता कि तू मुझे सचमुच आशीष देता, और मेरा देश बढ़ाता, और तेरा हाथ मेरे साथ रहता, और तू मुझे बुराई से ऐसा बचा रखता कि मैं उससे पीड़ित न होता! और जो कुछ उसने माँगा, वह परमेश्वर ने उसे दिया।" (1 इतिहास 4:10)।

2. एक दूसरे के लिए

"इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो..." (याकूब 5:16)।

3. मसीह की देह में सेवकाइयों के लिए

"अन्त में, हे भाइयो, हमारे लिए प्रार्थना किया करो कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले और महिमा पाए, जैसा तुम में हुआ" (2 थिस्स. 3:1)।

4. बीमार और परेशानों के लिए

"यदि तुम में कोई दुखी है, तो वह प्रार्थना करे...यदि तुम में कोई रोगी है, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलकर उसके लिए प्रार्थना करें, और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा...एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ.." (याकूब 5:13-16)।

5. पाप में फंसे हुओं के लिए

"यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे जिसका फल मृत्यु न हो, तो विनती करे और परमेश्वर से...जीवन देगा..." (1 यूहन्ना 5:16)।

उ. प्रार्थना में सहायता

"इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है : क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है" (रोमियों 8:26)। पवित्र आत्मा के उद्देश्य का एक भाग हमें सिखाना है (लूका 12:12), प्रार्थना में हमारा मार्गदर्शन करना है (रोमियों 8:27), और हमारे विश्वास में सहायता करना है (इफि. 3:16-17)। पवित्र आत्मा कभी-कभी एक विश्वासी की प्रार्थना को एक विशेष रूप से अभिषेक करता है, और इसे "पवित्र आत्मा में प्रार्थना करना" कहते हैं।" (यहूदा 20; इफि. 6:18)।
हमें प्रार्थना में सहायता के लिए, पवित्र आत्मा ने विश्वासी को एक विशेष वरदान भी दिया है: अन्य भाषाओं का वरदान - प्रभु से प्रार्थना में एक दूसरी भाषा में बात करना। 1 कुरिन्थियों 12:4-11 देखो। "...वह सीधे लोगों की प्रार्थना से प्रसन्न होता है...यहोवा धर्मियों की प्रार्थना सुनता है" (नीतिवचन 15:8,29)।

ऊ. सहकर्मी

प्रार्थना में दो का इकट्ठा होना कुछ बहुत वास्तविक लाभ लाता है: "फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए लिए हो जाएगी" (मत्ती 18:19)।

ए. कलीसिया की प्रार्थना

जब दो लोगों के प्रार्थना करने से जबरदस्त सामर्थ्य प्रकट होता है, तो परमेश्वर के लोगों के पूरे समूह के बारे में क्या कहेंगे? प्रेरितों 4:24 देखो। आज परमेश्वर अपने लोगों को प्रार्थना के लिए बुला रहा है! कलीसिया का कार्य प्रार्थना के द्वारा व्यक्तिगत जीवनों, परिवारों, समाजों, शहरों और देशों को बदलना है!

मेरा समर्पण

इस अध्ययन के द्वारा मैं प्रार्थना के अदभुत अवसरों को - न केवल परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध में, बल्कि परिणामस्वरूप अलौकिक परिणाम जो मिलते हैं - स्पष्ट रूप से देखता हूँ। मैं प्रार्थना को अपने जीवन में सदा एक प्राथमिकता बनाने के लिए अपने आप को समर्पित करता हूँ।

अध्याय 19 स्वर्ग

"...परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर...इसलिए तू परमेश्वर का भय मानना" (सभोपदेशक 5:2,7)।

अ. स्वर्ग क्या है?

1. स्वर्ग परमेश्वर का निवासस्थान है

"क्या परमेश्वर स्वर्ग के ऊँचे स्थान में नहीं है? ऊँचे से ऊँचे तारों को देख कि वे कितने ऊँचे हैं" (अय्यूब 22:12)। व्यवस्थाविवरण 26:15 भी देखो।

2. स्वर्ग परमेश्वर का सिंहासन है

"यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी पृथ्वी पर है" (भजन 103:19)। यशायाह 66:1 भी देखो।

3. स्वर्ग परमेश्वर की पूरी महिमा का स्थान है

"मैं ने देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम-सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिए धधकती हुई आग के से दिखाई पड़ते थे। उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी..." (दानिय्येल 7:9-10)। प्रेरितों 7:55 भी देखो।

4. स्वर्ग धर्मी (विश्वासी) मृतकों का घर है

"क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा, तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है" (2 कुरिं. 5:1)।

5. स्वर्ग सब विश्वासियों का भावी घर है

"इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है, और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, 'उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का, जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जय कार हो..." (प्रकाशित. 7:9-10)।

आ. स्वर्ग की प्रकृति

स्वर्ग एक ऐसी जगह है जो हमारी कल्पना से कहीं अलग है (1 कुरिं. 2:9; 13:12)। स्वर्ग पवित्रता के स्थान के समान, महिमा से भरी हुई और बिना अन्त के है। परन्तु हालाँकि बाइबल स्वर्ग के बारे में सब विवरण नहीं देती है, यह फिर भी हमें इसकी प्रकृति के बारे में कुछ सुराग देती है। यह है:

1. विशाल महिमा का स्थान

"उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे..." (मत्ती 13:43)।

2. लगातार आराधना का स्थान

"इसके बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, 'हल्लिलूय्याह ! उद्धार और महिमा और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर ही की है...' फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जन का सा बड़ा शब्द सुना : 'हल्लिलूय्याह ! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज्य करता है" (प्रकाशित. 19:1-6)। प्रकाशित. 5:11-12 भी देखो।

3. एक स्थान जिसका कभी अन्त न होगा

"वरन् इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे" (2 पतरस 1:11)। 1 पतरस 1:4 भी देखो।

4. बुराई से बेदाग एक स्थान

"परन्तु उसमें कोई अपवित्र वस्तु, घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला किसी रीति से प्रवेश न करेगा, पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं" (प्रकाशित. 21:27)। इफि. 5:5 भी देखो।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स्वर्ग से आता हुआ नए यरूशलेम का वर्णन एक ऐसे स्थान के रूप में करती है जो:

- अ. रात न होगी (22:5)
- आ. स्राप न होगा (22:3)
- इ. पीड़ा न होगी (21:4)
- ई. न शोक, न विलाप होगा (21:4)
- उ. मृत्यु न होगी (21:4)

यह इसलिए है क्योंकि स्वर्ग की प्रकृति परमेश्वर के स्वभाव की रचना है। क्योंकि स्वर्ग, परमेश्वर जो है, उसकी उपस्थिति की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति है, इसलिए स्वर्ग पवित्रता का स्थान, महिमा से भरा हुआ और बिना अन्त है।

इ. स्वर्ग से हमारा सम्पर्क

विश्वासियों के रूप में, हम अपने जीवन स्वर्ग के साथ एक विशेष सम्बंध में जीते हैं क्योंकि:

1. हम वहाँ के हैं

"पर तुम ...जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं..." (इब्रा. 12:22-23)। फिलिप्पियों 3:20 भी देखो।

2. हम वहाँ बैठे हैं

"और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया" (इफि. 2:6)।

3. हमारे जीवन का स्रोत वहा है

"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है" (इफि. 1:3)। कुलुस्सियों 3:1-4 भी देखो।

4. हमारे नाम वहाँ लिखे हैं

"इससे आनन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं" (लूका 10:20)। इब्रानियों 12:23 भी देखो।

5. हमें उसने भेजा है जो वहाँ रहता है

"जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा" (यूहन्ना 17:16,18)। 2 कुरिन्थियों 5:20 भी देखो।

6. हमारे आँखें वहाँ लगी हुई हैं

"क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है; और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं" (2 कुरिं. 4:17-18)। इब्रा. 11:9-10, 14-16 भी देखो।

7. हमार धन वहाँ है

"...हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया, अर्थात् एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास के लिए जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है" (1 पतरस 1:3-4)। मत्ती 6:19-21 भी देखो।

8. हमें वहाँ बुलाया जा रहा है

"...परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है" (फिलि. 3:13-14)।

यीशु ने खुद, स्वर्ग लौटने से पहले, हर विश्वासी से एक बहुत ही विशेष प्रतिज्ञा की है: "तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो" (यूहन्ना 14:1-3)। यूहन्ना 17:24 भी देखो।

मेरा समर्पण

मैं आज अपनी चाहतों को, इस पृथ्वी में की नहीं, परन्तु स्वर्ग में की चीजों पर लगाने का फैसला करता हूँ। मैं समझता हूँ कि पृथ्वी पर का मेरा जीवन अस्थाई है, इसलिए मैं इस सत्य द्वारा स्थापित प्राथमिकताओं से जीवन जीऊँगा। मैं दूसरों को इस अदभुत अनन्त घर का सुसमाचार सुनाऊँगा जो यीशु हर उस व्यक्ति को देना चाहता है जो उस पर विश्वास करेगा।

अध्याय 20 जब यीशु लौटेगा – पुनरागमन

"क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो" (1 कुरिं. 11:26)।

अ. उसके लौटने की प्रतिज्ञा

प्रभु यीशु का पृथ्वी पर दूसरी बार आना मसीही के लिए सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। नए नियम के लेखकों ने इसकी 300 से अधिक बार चर्चा की, और इस्तेमाल की गई भाषा सदा अवश्यकरणीय थी। पुनरागमन के बारे में पहली बात जो हमें पता होनी चाहिए वो है कि यह निश्चित है !

1. यीशु ने अपने पुनरागमन के बारे में कहा था

"तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे" (मत्ती 24:30)। यूहन्ना 14:2-3 भी देखो।

2. स्वर्गदूतों ने बताया

"उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए, और उनसे कहा, 'हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो ? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा'" (प्रेरितों 1:10-11)।

3. प्रारंभिक मसीही एक दूसरे को इससे प्रोत्साहित करते थे
"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। इस प्रकार इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो" (1 थिस्स. 4:16-18)। प्रकाशित. 1:7 भी देखो।

4. पवित्र आत्मा इसकी गवाही देता है
"जिसने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिसने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है" (2 कुरिं. 5:5)। "इसलिए हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो। देखो, किसान पृथ्वी की बहुमूल्य फसल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो; और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है" (याकूब 5:7-8)। इब्रा. 10:37 भी देखो।

आ. यीशु कैसे लौटेगा?

1. अचानक
"पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है। जब लोग कहते होंगे, 'कुशल है, और कुछ भय नहीं', तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा..." (1 थिस्स. 5:1-3)। आय. 4-11 भी पढ़ो।

2. बिजली के समान
"क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा" (मत्ती 24:17)। लूका 17:24 भी देखो।

3. जिस रीति से वह गया था
"...यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा'" (प्रेरितों 1:10-11)।

4. बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ
"तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे" (लूका 21:27)।

5. सबके देखेंगे
"देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हाँ। आमीन" (प्रकाशित. 1:7)।

इ. नाटकीय घटनाएँ घटेंगी

1. युग युग का रहस्य पूरा होगा
"...अब तो और देर न होगी। वरन् सातवें स्वर्गदूत के तुरही फूँकने पर होने वाले शब्द के दिनों में परमेश्वर का गुप्त मनोरथ उस सुसमाचार के अनुसार जो उसने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को दिया, पूरा होगा" (प्रकाशित. 10:6-7)। रोमियों 16:25-26 भी देखो।

2. परमेश्वर के लोग उनकी सम्पूर्ण महिमा में प्रवेश करेंगे
"पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा" (फिलि. 3:20-21)। 1 कुरिं. 15:35-53 भी देखो।

3. मसीह में मृत जिलाए जाएँगे

"क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा" (2 कुरिं. 4:14)। यूहन्ना 6:40; 11:25 भी देखो।

4. जो विश्वासी जीवित होंगे उसे मिलने के लिए उठा लिए जाएंगे

"वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे" (मत्ती 24:31)।

5. सृष्टि अपने दासत्व से छुटकारा पाएगी

"क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है। क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर अधीन करनेवाले की ओर से, व्यर्थता के अधीन इस आशा से की गई कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी" (रोमियों 8:19-21)। आय. 22 और यशायाह 35:1-7 भी पढ़ो।

6. हर शत्रु नष्ट किया जाएगा

"इसके बाद अन्त होगा। उस समय वह सारी प्रधानता, और सारा अधिकार, और सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। क्योंकि जब तक वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है" (1 कुरिं. 15:24-25)। 2 थिस्स. 1:7; 2:8 भी देखो।

7. शैतान बाँधा जाएगा

"फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह-कुंड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी। उस ने उस अजगर, अर्थात् पुराने साँप को, जो इब्लीस और शैतान है, पकड़ के हजार वर्ष के लिए बाँध दिया" (प्रकाशित. 20:1-2)। आय. 3, 7-10 भी पढ़ो।

8. न्याय किया जाएगा

"क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे" (2 थिस्स. 1:6-9)।

9. एक राज्य स्थापित किया जाएगा जो कभी भी नष्ट नहीं होगा

"उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा" (दानिय्येल 2:44)। प्रकाशित. 19:15-16 भी देखो।

अध्याय 21 परमेश्वर का बुलावा

परमेश्वर की प्रभु यीशु मसीह में हर विश्वासी के जीवन के लिए एक योजना है। न केवल उसके बुलावे में हमारे अनन्तकाल भर के लिए एक अदभुत उद्देश्य शामिल है, बल्कि अभी भी इस पृथ्वी पर हमारे लिए एक अभिव्यक्ति है। "जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया...उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है..." (2 तीमु. 1:9)। "और यदि हम सन्तान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं...हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं" (रोमियों 8:17,28)। आय. 29-30 भी देखो।

अ.   परमेश्वर ने संसार में के लोगों को बुलाया है

1.   संसार की उत्पत्ति से पहले से

"जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों" (इफि. 1:4-5)। इफि. 2:10 और मत्ती 25:34 भी देखो।

2.   उसके लिए अलग किए गए

"पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर) की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अदभुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो" (1 पतरस 2:9)। रोमियों 9:23-26 भी देखो।

3.   उसका उद्देश्य पूरा करना

"इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से..लज्जित न हो...जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार..." (2 तीमु. 1:8-9)। रोमियों 8:28 और फिलिप्पियों 3:14 भी देखो।

आ.   पृथ्वी पर हमारा बुलावा

"पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिए बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिए अलग किया गया है" (रोमियों 1:1)। अपनी सेवकाई का वर्णन करते हुए, प्रेरित पौलुस उस बुलावे का उदाहरण देता है जो हर विश्वासी पर है। इसके तीन पहलू हैं:

1.   सामान्य बुलावा - "मसीह का एक दास"

यीशु ने हमारे लिए एक भारी कीमत दी है: उसका अपना जीवन। "क्योंकि जो दास की दशा में प्रभु में बुलाया गया है, वह प्रभु का स्वतंत्र किया हुआ है। वैसे ही जो स्वतंत्रता की दशा में बुलाया गया है, वह मसीह का दास है। तुम दाम देकर मोल लिए गए हो..." (1 कुरिं. 7:22-23)। 1 कुरिं. 6:19-20 भी देखो। जब पौलुस खुद को यीशु मसीह का दास कहता है तो वह और भी गहरे अर्थ की ओर इशारा करता है। उसके समय के निवाज के अनुसार, यदि एक दास का समय आता था जब वह स्वतंत्र किया जा सकता था, परन्तु मालिक के लिए अपने प्रेम के कारण स्वतंत्र नहीं होना चाहता था, तो वह अपने कान में एक चिन्ह छिदवा लेता था। यह एक चिन्ह था कि वह जीवन भर के लिए अपने मालिक का एक "प्रेम का दास" है । (निर्गमन 21:5-6; व्यवस्था. 15:16-17)। प्रेरित पौलुस ने, अपनी इच्छा से, अपने आप को प्रभु यीशु का एक प्रेम का दास घोषित किया था।

2.   खास बुलावा - "प्रेरित होने के लिए बुलाया गया"

जिस प्रकार प्रेरित पौलुस के जीवन पर एक खास बुलावा था, उसी प्रकार हर विश्वासी पर भी होता है। पौलुस को प्रेरित होने के लिए बुलाया गया था, परन्तु मसीह की देह में अनेक विभिन्न प्रकार के बुलावे हैं। रोमियों 12:3-5; इफिसियों 4:7-16 देखो। जो खास भाग परमेश्वर ने हमारे करने के लिए रखा है, जब हम उसकी इच्छा की खोज करेंगे तो हमें प्रकट किया जाएगा।

3.   विशिष्ट बुलावा - "सुसमाचार के लिए अलग किया गया"

हर खास बुलावे में एक विशिष्ट बुलावा है। उदाहरण के तौर पर, पतरस और पौलुस दोनों प्रेरित थे, परन्तु एक यहूदियों के लिए और दूसरा अन्य जातियों के लिए प्रेरित था। रोमियों 11:13; 1 तीमु. 2:7; 1 कुरिं. 12:4-11 देखो। हम तब ही अपने खास और विशिष्ट बुलावे में काम करने लगते हैं जब हम अपने आप को "प्रेम के दासों" के रूप में प्रमाणित करते हैं, क्योंकि इसके पहले कि हम उसके द्वारा भेजे जाएँ हमें पहले सम्पूर्ण रूप से मसीह के अधिकार के अधीन होना सीखना है। मत्ती 28:18-19 देखो।

इ.   वह हमें क्यों बुलाता है?

1.   क्योंकि संसार अन्धकार में है

"हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है" (1 यूहन्ना 5:19)। इफि. 6:12 और कुलु. 1:13 भी देखो।

2. क्योंकि लोग भूखे और जरूरत में हैं

"जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे" (मत्ती 9:36)।

3. उसकी बुद्धि प्रमाणित करने के लिए

"ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी" (इफि. 3:10-11)।

4. क्योंकि समय कम है

"क्या तुम नहीं कहते, 'कटनी होने में अब भी चार महिने पड़े हैं ?' देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं" (यूहन्ना 4:35)। यूहन्ना 9:4 भी देखो।

ई. क्या होता है जब हम बुलाए जाते हैं

1. वह हमें बनाता है

'यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा"' (मत्ती 4:19)। यिर्मयाह 18:1-10 भी देखो।

2. वह हमें सिखाता है

"परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा" (यूहन्ना 14:26)। 1 कुरिं. 2:12; 1 यूहन्ना 2:27 भी देखो।

3. वह हमें भेजता है

"जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा" (यूहन्ना 17:18)। मरकुस 16:15 भी देखो।

जब परमेश्वर हमें बुलाता है, वह आकर हमारे जीवनों में हस्तक्षेप करता है। इसके बाइबल के कुछ उदाहरण हैं:

- मूसा (जंगल में एक चरवाहा): "जा मेरे लोगों को छुड़ा ला" (निगमन 3:1-12)
- शमूएल (मन्दिर में सेवा करनेवाला एक लड़का): "जाग, मेरे लिए बोल" (1 शमू. 3:1-19)
- यहेजकेल (दूसरे देश में एक बँधुआ): "खड़े हो जा, मैं तुझे भेज रहा हूँ" (यहेज. 2:1-7)
- चेले (व्यवसायी, मछुवे): "मेरे पीछे आओ" (लूका 5:27-28; मत्ती 4:18-22)
- शाऊल (कलीसिया का एक शत्रु): "जा, मैं तुम्हें बताऊँगा तुम्हें क्या करना है" (प्रेरितों 9:1-9)

मेरा समर्पण

अब जबकि मैं समझ गया हूँ कि संसार की सृष्टि के पहले से परमेश्वर की मेरे लिए एक योजना थी, मैं उसकी योजना की ओर पूर्ण समर्पण करता हूँ और अन्त तक प्रभु के पीछे चलूँगा। मैं दूसरों को भी उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के बुलावे के बारे में सिखाऊँगा।

कुछ मुख्य शब्दों की परिभाषाएँ

उद्धार के महत्त्वपूर्ण विचार

"कलीसिया की नींव" हमारे महान उद्धारकर्त्ता, यीशु पर बनी हुई है ! उद्धार के बारे में अनेक दूसरे शब्द हैं जो इस्तेमाल किए जाते हैं। उनके महत्त्व के कारण, उनमें से कुछ का इस समय अर्थ समझना अच्छा होगा।

1. उद्धार

यह मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह के काम के बारे में है जिसके द्वारा हमः

अ. पाप की सजा, शक्ति और भावी उपस्थिति "से" बचाए जाते हैं

आ. परमेश्वर के उद्देश्य "के लिए" बचाए जाते, और उसके परिवार में रखे जाते हैं जिसमें हम उसके पुत्र के स्वरूप को व्यक्त करते हैं।

जब मसीह क्रूस पर हमारे पापों के लिए मरा, तो वह हमारा उद्धारकर्त्ता बन गया। वह हमारे स्थान पर मरा और हमारे पाप की सजा चुकाई। जब हम उसे विश्वास से अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते हैं, तो हम उसके पुनरुत्थान के सामर्थ्य को भी पाते हैं। जब यह नया जीवन हम में आता है, यह हमारे आत्मा, प्राण और शरीर के लिए पूर्ण चंगाई लाता है। "उद्धार पाने" का अर्थ होता है क्षमा, चंगाई, छुटकारा पाना, सम्पूर्ण बनाया जाना और पुनःस्थापित किया जाना। हम सुरक्षित, स्वस्थ्य और स्वतंत्र हैं। हम वह सब बनने के लिए स्वतंत्र हैं जो परमेश्वर चाहता है हम उसके राजकीय और प्रिय पुत्र और पुत्रियों के रूप में बनें।

2. नया जन्म

नया जन्म का अर्थ है मृत्यु के बाद जीवन पाना। हम अपने पापों में "मरे" हुए थे। इसलिए हमारे अन्दर आत्मिक जीवन (नया जन्म पाना) का एक नया निवेश होना है ताकि हम परमेश्वर के परिवार में लाए जा सकें। एक सांसारिक परिवार में जन्म लेने का केवल एक ही तरीका है। यह स्वाभाविक जीवन देने के द्वारा होता है। यह जैविक प्रजनन की प्रक्रिया के द्वारा होता है। जीवाणु या जन-कोशिकाएँ मिलकर वो जीवन लाते हैं जो एक नवजात शिशु को पैदा करने के लिए आवश्यक होते हैं।

वैसा ही तब होता है जब कोई परमेश्वर के परिवार में "जन्म" लेता है। इसके लिए आत्मिक जीवन - एक ईश्वरीय बीज - का निवेश आवश्यक होता है। वह "जीवन का बीज" एक व्यक्ति है - और वह व्यक्ति यीशु मसीह है। जब हम मसीह को अपने हृदय में ग्रहण करते हैं, तब वह जीवन है जो परमेश्वर के पवित्र परिवार में हमें जन्म देता है। इसलिए हर मसीही के दो जन्म हुए होते हैं: एक **स्वाभाविक** जन्म और एक **आत्मिक** जन्म। "नए सिरे से जन्म लेने" का अर्थ यही होता है। (यूहन्ना 31-8 देखो)

3. प्रायश्चित्त

यह शब्द समझौते और शान्ति की बात करता है जो गलतियों को सही करने से प्राप्त होते हैं। पाप परमेश्वर के विरुद्ध अपराध है। इसलिए यह हमें परमेश्वर से अलग करता है। हमें उसके साथ मेल-मिलाप में वापस आना अवश्य होता है। पाप के परिणाम को प्रभावहीन करने का तरीका "धर्मी ठहराया जाना" (एक पापी को धर्मी मानना) है। धर्मी ठहराया जाना पाप को अनदेखा करना या अपराधों की ओर आँख बन्द कर लेना नहीं है जैसा कुछ समझते हैं। एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर पाप को अनदेखा नहीं कर सकता है। पाप तब ही मिटाया, ढाँपा या दूर किया जा सकता है यदि पाप की सजा चुकाई गई है। तब ही न्याय पूरा किया और पाप मिटाया जा सकता है। जब अपराध की सजा पूर्ण रूप से चुकाई जा चुकी हो, तब ही संगति पुनःस्थापित की जा सकती है।

पाप की सजा मृत्यु है। यीशु ने अपने अनुग्रह और दया में, जब वह हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा था, उस सजा को चुकाया था। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि उसके लहू ने हमारे पापों को ढाँपा है और मिटा दिया है। इसलिए प्रायश्चित्त, मसीह की मृत्यु के द्वारा, परमेश्वर का काम है जिसके द्वारा संगति पुनःस्थापित होती है। हम परमेश्वर के साथ एक हो जाते हैं।

4. धर्मी

यह परमेश्वर के पवित्र चरित्र की बात बताता है। वह विचार, शब्द और कार्य, रवैयों और कार्यों में सदा 'सही' है। वह सब तरीकों से और सब चीजों में सही, अच्छा और सच्चा है। यह व्यवस्था का "धार्मिक" स्तर है। जो कुछ धार्मिक नहीं है दुष्ट, बुरा और गलत है - संक्षेप में, पापी है। इसी कारण से, पापी मनुष्य एक पवित्र परमेश्वर के सामने खड़ा नहीं हो सकता है। धार्मिकता और अधार्मिकता सदा एक दूसरे के विरोधी होते हैं। संगति का कोई आधार नहीं है। इसी कारण से, परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे पापों का प्रायश्चित्त करने को भेजा। जब हम मसीह को अपने हृदय में अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते हैं, तब हमारे पाप छिपाए

और मिटाए जाते हैं। परमेश्वर फिर हमें हमारे पापों में नहीं बल्कि अपने पुत्र की धार्मिकता में देखता है। न केवल वह हम में है, बल्कि हम उसमें हैं (2 कुरिं. 5:21)। इसे "थोपी गई" धार्मिकता कहते हैं। "थोपना" एक कानूनी शब्द है। इसका अर्थ है कि किसी ने कुछ हमारे खाते में डाल दिया है। जो उनका था अब हमारा भी है। उनका पद और सम्पत्ति अब हमारा पद और सम्पत्ति बन जाते हैं। यह एक संयुक्त खाता है। यीशु की धार्मिकता हमारी धार्मिकता बन गई है। पिता के दाहिने यीशु की स्थिति हमारी स्थिति बन गई है (इफि. 1:20-22; 2:4-5)।

"थोपी गई" धार्मिकता के अलावा, जो हमारी वैध स्थिति है, एक "प्रदान की गई" धार्मिकता भी है। जब हम मसीही बने थे, तो कुछ हमारे जीवनों में "डाला गया" था। ने केवल हम वैध भाव से "मसीह में" हैं, परन्तु मसीह एक व्यक्तिगत और व्यावहारिक भाव से "हम में" है। (कुलु. 1:27)

यीशु को ग्रहण करने से, हम उसका पवित्र, धार्मिक स्वभाव भी पाते हैं। हमारा एक नया स्वभाव है - भीतरी सामर्थ्य का एक नया स्रोत - जिसके द्वारा हम एक "धार्मिक" जीवन जीना आरम्भ करते हैं। हमारा "पुराना स्वभाव" यीशु के साथ क्रूस के साथ चढ़ाया गया था, जो हमें हमारे "नए स्वभाव" को व्यक्त करने का अधिकार और स्वतंत्रता देता है (रोमियों अध्याय 6 देखो)।

5. धर्मी ठहराया जाना

"धर्मी ठहराया जाना" का अर्थ हैः कानून के सामने सही बनाना, और इसलिए दोष और दण्ड से स्वतंत्र बनाना। "दोषी ठहराना" का अर्थ हैः किसी को कानून के सामने दोषी ठहराना। पाप होता है परमेश्वर के नियमों को तोड़ना। इसलिए सब पापी परमेश्वर के सामने दोषी हैं। हमारे पापों की सजा मृत्यु है। कानून की माँगें पाप की सजा दिए बिना पूरी नहीं हो सकती हैं। "न्याय" पाप को अनदेखा नहीं कर सकता है जैसे कि यह हुआ ही नहीं है।

परमेश्वर की उद्धार की योजना, दया और न्याय एक ही तरीके से मिल सकते हैं। और यह ऐसे हैः न्यायी (परमेश्वर) न केवल सजा सुनाता है, परन्तु खुद सजा (मसीह की मृत्यु) भी भुगतता है ! दोषी पक्ष अब "धर्मी ठहराया गया" और कानून के सामने सही किया गया है। पापी अब स्वतंत्र हो सकता है क्योंकि उसका न्यायी न केवल **न्यायोचित** है (जिसकी वजह से उसने पापी को कानून की सजा सुनाई) परन्तु **दया से भरा हुआ** भी है (क्योंकि उसने वह सजा जो उसके न्याय ने पापी को सुनाई थी, अपने आप चुका दी)।

मसीह की क्रूस की मृत्यु में परमेश्वर ने ऐसा ही हमारे लिए किया है। पाप का न्याय किया गया। सजा चुकाई गई। और हम क्षमा किए गए और स्वतंत्र हुए ! इस प्रकार हम धर्मी ठहराए गए।

पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व

परिचय: यशायाह 61:1-2; जकर्याह 4:6
आत्मा के लिए इब्रानी शब्द है: 'Ruach' और यूनानी है: 'Pneuma', दोनों का अर्थ है: अदृश्य शक्ति या आत्मा। इसलिए पवित्र आत्मा है:

* एक व्यक्तिगत अस्तित्व जो हमें परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल करेगा !
* हमारे लाभ के इस्तेमाल के लिए परमेश्वर से प्रकट होती एक शक्ति !

क्या पवित्र आत्मा परमेश्वर है ?
बाइबल में एक परमेश्वर के लिए अनेक वचन: व्यवस्था. 6:4; 1 तीमु. 2:5; 1 यूहन्ना 5:7। क्या एक परमेश्वर में व्यक्तियों की विविधता हो सकती है ? हाँ ! एक के लिए इस्तेमाल किया गया इब्रानी शब्द एक मिश्रण इकाई है। उदाहरणार्थ, उत्पत्ति 1:26 - 'फिर परमेश्वर ने कहा, "<u>हम</u> मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ।"' उत्प. 2:24; गला. 3:28।

एक परमेश्वर, फिर भी अपने आप को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट करता है।

<u>कौन से गुण परमेश्वर को परमेश्वर बनाते हैं ?</u>

सर्वसामर्थी	- लूका 1:35
सर्वव्यापी	- 1 कुरिं. 2:10-11
सर्वज्ञानी	- भजन 139:7-10
अनन्त	- इब्रा. 9:14

<u>परिणाम:</u> पवित्र आत्मा परमेश्वर है इसलिए हमें उसे उसका आदर करना, उसकी आराधना करनी चाहिए; साथ ही साथ पवित्र आत्मा यीशु की महिमा करने आया था; अर्थ है: बढ़ाना, जगह देना, यीशु को उसका सही स्थान देना। पवित्र आत्मा बहुत विशेष है, हम यह नीचे दिए वचनों में देख सकते हैं:

* यशायाह 63:8-10, पवित्र आत्मा को खेदित करने से परमेश्वर हमारा शत्रु बन जाता है।
* जकर्याह 7:12, यदि आत्मा की आवाज का इनकार किया जाता है तो परमेश्वर प्रकोप भेजता है।
* मत्ती 12:31-32, पवित्र आत्मा की ईश-निन्दा क्षमा नहीं की जा सकती है।

परमेश्वरत्व में, हम सम्पूर्ण प्रेम, समन्वय और एकता पाते हैं:

* सृष्टि में, उत्प. 1:1-2 और इब्रा. 1:2; उत्प. 1:26, "हम...
* यीशु का बपतिस्मा, मत्ती 3:13-17
* अन्तिम आज्ञा, मत्ती 28:19
* परमेश्वर के निकट आने में, इफि. 2:18
* परमेश्वर के कार्यो में, 1 कुरिं. 12:5-7

अनेक काम:	प्रभु यीशु	-	प्रबंधक
	पिता	-	प्रचालक
	पवित्र आत्मा	-	प्रकट करनेवाला

क्या पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है ?

एक व्यक्ति को क्या बनाता है ?			आकार, रूप, व्यक्तित्व ?
व्यक्तित्व - अ)	इच्छा-शक्ति	-	1 कुरिं. 12:11
आ)	मन	-	रोमियों 8:27
इ)	भावनाएँ	-	इफि. 4:30 (शोकित), यशा. 63:10 (खेदित), रोमि. 15:30 (प्रेम)

परिणाम: हम पवित्र आत्मा को एक व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो सोचता. महसूस करता, प्रेम करता, योजना बनाता, इच्छा करता, जानता, शोकित होता और बोलता है (उदाहरणार्थ, प्रेरितों 13:1-2)।

इसलिए पवित्र आत्मा से निमंत्रण है कि हम उसे जानें, क्योंकि वह संगति की चाह रखता है। 2 कुरिं. 13:14। फिलि. 2:1 में हम देखते हैं कि पौलुस पवित्र आत्मा की संगति/सहभागिता जानता था।

संगति के लिए यूनानी शब्द - 'kanonia': के सात अर्थ हैं:

* संचारण और सहभागिता
* साझेदारी
* सम्मिलित होना
* मित्रता का व्यवहार करना
* उपस्थिति
* प्रेम
* सहचरिता

हमारे लिए न केवल पिता और हमारे प्रभु यीशु को बल्कि पवित्र आत्मा को भी जानने की क्या ही बड़ी चुनौती है। हमें अपने जीवनों में पवित्र आत्मा की बहुत आवश्यकता है क्योंकि:

- हम पवित्र आत्मा बिना परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते हैं। रोमियों 5:5
- हम पवित्र आत्मा बिना परमेश्वर की बाट नहीं जोह सकते हैं। गला. 5:5
- हम पवित्र आत्मा बिना आज्ञापालन नहीं कर सकते हैं। 1 पतरस 1:2
- हम पवित्र आत्मा बिना परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकते हैं। फिलि. 3:3
- हम पवित्र आत्मा बिना प्रार्थना नहीं कर सकते हैं। यहूदा 20

आओ हम कुछ और चीजें देखते हैं जो बाइबल पवित्र आत्मा के बारे में बताती है। यूहन्ना 16:7 में, यीशु ने कहा, "मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा।" (यूहन्ना 14:16)

तो पवित्र आत्मा के कुछ कार्य इस प्रकार हैं:

* हमारा सहायक: यहाँ इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द है "Parakletos" जिसका अर्थ है: अपनी सहायता के लिए बुलाना, सहारा, सहायक, सलाहकार।
  जैसे यीशु अपने चेलों के लिए सबकुछ था, वह उनका उपाय करनेवाला, सुरक्षक, प्रोत्साहक और शिक्षक था, परन्तु जब वह चला जाता तो वे त्यागे हुए और अकेले महसूस करते। परन्तु यीशु ने कहा, मैं तुम्हारे लिए "दूसरा" / "समान" / "मेरे जैसा" सलाहकार, सहायक, बल बढ़ानेवाला, योग्य बनानेवाला भेजूँगा जो तुम्हारे साथ और तुम में होगा !
* हमारा समर्थक: पहले उल्लेश किया शब्द 'Parakletos' का अर्थ यह भी है: समर्थक, जिसे हम अपने निमित्त निवेदन करने के लिए सहायता में बुलाते हैं क्योंकि 'वह हम से प्रेम रखता है'। यह वही है जो हमारी तुलना में जो हम अपने लिए कर पा रहे हैं, उससे अधिक प्रभावशाली तरीके से हमारे लिए वकालत करेगा।
* हमारा शिक्षक: यूहन्ना 14:26। वह हमें मसीह के बारे में और परमेश्वर के राज्य की बातें और अधिक सिखाएगा। 1 यूहन्ना 2:27 भी अभिषेक या पवित्र आत्मा की बात करता है जो तुम्हें सब बातें सिखाएगा।
* यूहन्ना 16:12-13 पवित्र आत्मा को सत्य का आत्मा कहता है, जो हमें सब सत्य का मार्ग बताएगा।
  यूहन्ना 8:32, "तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा", यह पवित्र आत्मा के सिखाने का उद्देश्य है, ताकि हम किसी भी प्रकार के बन्धन और पाप से छुटकारा पाएँ, रोमियों 8:2। फिर भी यह सोचना गलत होगा कि हम मानव बाइबल शिक्षकों के बिना काम चला सकते हैं। इफि. 4:12 स्पष्ट करता है कि मसीह ने कलीसिया को शिक्षक दिए हैं जो मसीह की देह को सिद्धता में लाने हेतु परमेश्वर का वचन सिखाने के लिए अभिषिक्त हैं।

पवित्र आत्मा के कुछ और कार्य और जिम्मेवारियाँ हैं:

* दोषसिद्धि कराना - यूहन्ना 16:8, पाप की, विशेषकर यीशु पर विश्वास नहीं करने के लिए। ध्यान दो कि पवित्र आत्मा न केवल पापी को उसका दोषसिद्ध कराता है बल्कि विश्वासी को भी गलत कामों और पाप का दोषसिद्ध कराता है। दोषसिद्धि सदा सुनिश्चित होती है जबकि दण्डाज्ञा हम में असफलता की एक सामान्य भावना छोड़ जाता है।
* मसीह का प्रतिनिधित्व करता है - यूहन्ना 16:14-15। पवित्र आत्मा अपने बारे में कभी भी बात नहीं करेगा, परन्तु केवल मसीह और उसका कार्य और प्रेम के बार में ही करेगा।
* नया जन्म / उद्धारः उत्तेजक / जीवन देनेवाला। जब मसीह का प्रचार होता है तब यह पवित्र आत्मा है जो अविश्वासी को जीवन देता (उत्तेजना पैदा करता) (यूहन्ना 6:63) है। अविश्वासी की आत्मा परमेश्वर की चीजों के लिए मरी हुई होती है (2 कुरिं. 3:6)। वह एक सांसारिक व्यक्ति के रूप में परमेश्वर की चीजें समझ नहीं सकता है (1 कुरिं. 2:14)। आत्मिक भोजन उसके लिए अपाच्य और अस्वीकार्य है।

  तो, एक व्यक्ति किस प्रकार दोबारा जन्म ले सकता है? वचन सुनकर? केवल यही नहीं, बल्कि अविनाशी बीज / परमेश्वर के वचन से (1 पतरस 1:23)। इसलिए, एक व्यक्ति तब ही वचन सुन सकता और इस अविनाशी बीच से जन्म पा सकता है जब वह पहले आत्मा द्वारा सुनने और प्रतिक्रिया दिखाने के लिए उत्तेजित किया गया है। पवित्र आत्मा के इस उत्तेजना पैदा करने और जीवन प्रदान करने के कार्य के द्वारा ही, सत्य समझा जाता है, बीज हमारी आत्माओं में बोया जाता है जिसके पश्चात् नया जन्म मिलता है; समझ लो कि जन्म से पहले जीवन आता है; तो जन्म उस जीवन की अभिव्यक्ति बन जाती है जो पहले ही विद्यमान है !

  एक बार जब एक व्यक्ति पवित्र आत्मा द्वारा उत्तेजित किया गया है, तो उसकी आत्मा मसीह को प्रतिक्रिया दिखा सकती है और पवित्र आत्मा उसे प्रभु को ग्रहण करने के लिए खींच लेगा, यूहन्ना 1:12-13, जिसका परिणाम उद्धार होता है।
* छाप लगना - इफि. 1:13, "सुनना - विश्वास करना - छाप लगना"। 2 कुरिं. 1:22-23। पवित्र आत्मा द्वारा यह छाप ईश्वरीय प्रमाण के रूप में लगती है जो हमें आश्वासन देता है कि हम परमेश्वर के हैं, वह हमसे प्रेम रखता और हमारी देखभाल करता है, परन्तु साथ में परमेश्वर को हमारे जीवनों में काम करने का अधिकार देता है - पवित्र आत्म के द्वारा हमें मसीह के स्वरूप में परिवर्तित करने का अधिकार।
* गवाही देता है, रोमियों 8:16। इस सच्चाई की गवाही कि हम परमेश्वर के परिवार में गोद लिए गए हैं, उद्धार का आश्वासन, कि हमें क्षमा मिली हुई है, कि परमेश्वर हमारा पिता है, वगैरा।
* हम में रहता है - यहेजकेल 36:27, 2 कुरिं. 6:19। हमारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है।
* मसीह की समानता में हमें परिवर्तित करता है - 2 कुरिं. 3:18, गला. 5:22-23।
* अगुआई और मार्गदर्शन करता है - रोमियों 8:14। पवित्र आत्मा सब विश्वासियों से, जो पवित्रता के मार्ग पर चलते हैं, उसके राज्य में उसकी इच्छा पूरी करते हैं, बात करता है।
* हमारे लिए विनती करता है - रोमियों 8:26-27; इफि. 6:18।

<u>विभिन्न तरीके जिनके द्वारा पवित्र आत्मा हम से बात करता है</u> (दीनता की आवश्यकता होती है, भजन 25:9)
- वचन के द्वारा, (भजन 119:105)
- एक भविष्यद्वक्ता के वचन से, (प्रेरितों 21:11)
- ज्ञान के वचन से, (1 कुरिं. 12:8; प्रेरितों 21:4)
- एक शान्त, धीमी आवाज से, (1 राजा 19:12; यूहन्ना 10:27)
- श्रव्य आवाज के साथ, (प्रेरितों 9:7)

<u>परमेश्वर इनके द्वारा भी बात करता है:</u>
- स्वर्गदूतों के द्वारा, (प्रेरितों 8:26)
- दर्शनों द्वारा, (दानिय्येल 10:7)
- बेसुध होने से, (प्रेरितों 10:11)
- सपनों में, (मत्ती 1:20)
- गहरे प्रभावों, अनुदेशों द्वारा, (प्रेरितों 17:16; 18:5)
- भक्तिपूर्ण बुद्धिमान व्यक्तियों की सलाह के द्वारा, (याकूब 1:5; नीतिवचन 2:1-12)

आत्मिक वरदान और विभिन्न प्रकार की भाषाओं पर एक लेख

1 कुरिन्थियों अध्याय 12 के वचनः

आय. 1 "आत्मिक वरदान"

यूनानीः "pneumatika", अक्षरक्षः अर्थः "spirituals"। दूसरे शब्दों में, वे तरीके जिनसे पवित्र आत्मा विश्वासी के द्वारा अलौकिक कार्य करता है।

आय. 4 "वरदान"

यूनानीः "charismata", अक्षरक्षः अर्थः "अनुग्रह के वरदान" (आत्मा के वरदान)। यह मुक्त भाव से दिए अनुग्रह, असाधारण सामर्थ्य और आशीष, ईश्वरीय योग्यता या लाभ के वरदान हैं।

आय. 7 "प्रदर्शन"

यूनानीः "phanerosis", अक्षरक्षः अर्थः एक चमक, एक दर्शन, एक दृश्य करना, और एक खुला प्रदर्शन। पवित्र आत्मा, आत्मा के वरदानों के द्वारा जो दृश्य रूप से प्रकट होते हैं, अपना प्रदर्शन करता या अपनी उपस्थिति के बारे में बताता है।

अन्य भाषाओं के बारे में वचनः प्रेरितों 2:4; 1 कुरिं. 14:5

\# "अन्य भाषाएँ"

यूनानीः "glossolalia", अक्षरक्षः अर्थः अन्य भाषाओं में बोलना। अन्य भाषाओं में बोलकर व्यक्ति अलौकिक रूप से एक भाषा में बोलता है जो उसने सीखी नहीं है और (सामान्यतः) सुननेवाले नहीं जानते हैं।

<u>अनावश्यक उलझनों से बचने के लिए हमें दो विभिन्न प्रकार की अन्य भाषाओं में भेद दिखाना होगा जिनके बारे में बाइबल बात करती है:</u>

भक्तिपूर्ण अन्य भाषाएँ

1. इस्तेमाल करनेवाले की उन्नति होती है
   1 कुरिं. 14:4
2. मनुष्य परमेश्वर से बात करता है
   1 कुरिं. 14:2
3. अर्थ की आवश्यकता नहीं होती
   1 कुरिं. 14:28
4. व्यक्तिगत प्रदर्शन
   1 कुरिं. 14:18-19
5. स्थाई योग्यता
   1 कुरिं. 14:18

सामूहिक अन्य भाषाएँ

1. कलीसिया की उन्नति होती है
   1 कुरिं. 12:7
2. परमेश्वर मनुष्य से बात करता है
   1 कुरिं. 14:4-5
3. अर्थ की आवश्यकता होती है
   1 कुरिं. 14:13,27
4. सार्वजनिक प्रदर्शन
   1 कुरिं. 14:26
5. पवित्र आत्मा की इच्छा के अनुसार किसी विशेष स्थान पर ही
   1 कुरिं. 12:11,30

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और प्रदर्शन

अध्याय 1 पवित्र आत्मा कौन है?

पवित्र आत्मा सम्भवतः परमेश्वरत्व का सबसे कम परिचित सदस्य है। दुख की बात है कि कलीसिया में भी उसके बारे में ज्ञान की कमी है। अनेक दृढ़ कारण हैं कि क्यों ऐसा नहीं होना चाहिए:

1. पवित्र आत्मा परमेश्वर है

परमेश्वरत्व का तीसरा सदस्य होने के नाते, वह परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के साथ समानाधिकारी है। इसलिए यह उपयुक्त है कि समान आराधना, आदर और सम्मान उसे भी दिया जाए। हमें कभी भी उसे कोई निकृष्ट व्यक्ति नहीं समझना चाहिए। हमें उसके बारे में भी उतनी ही जानकारी होनी चाहिए जितनी हमें ईश्वरीय त्रिएक के दूसरे दो सदस्यों के बारे में है।

2. बाइबल को पवित्र आत्मा के बारे में बहुत कहने को है

2 और तीन यूहन्ना के पत्रों को छोड़, नए नियम की हर पुस्तक में पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और कार्य के बारे में उल्लेख है।

3. वह परमेश्वर के उद्धार की योजना में तत्त्वतः सक्रिय है

वह संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करता है (यूहन्ना 16:8)। परमेश्वर के सच्चे बच्चे "आत्मा से जन्में" हैं (यूहन्ना 3:5-6)।

4. यह पवित्र आत्मा का युग है

वह "एक और सहायक" है जिसने यीशु का स्थान लिया है (यूहन्ना 14:16)। इतिहास का यह वर्तमान समय "बरसात के अन्त की वर्षा का समय" है (जकर्याह 10:1-3) या आत्मा के सबसे बड़े कार्यों का समय है जो कलीसिया ने कभी देखा है। इसि लिए हमें पवित्र आत्मा के बारे में जितना अधिक हम जान सकते हैं जानने की आवश्यकता है।

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है

अनेक मसीहियों को लगता है कि पवित्र आत्मा केवल एक अव्यक्तिक शक्ति या प्रभाव है। वे पवित्र आत्मा से ऐसा बर्ताव करते हैं जैसे कि वह कोई बिजली या किसी प्रकार की शक्ति है जिसे वे अपनी इच्छा से स्विच बन्द या चालू कर सकते हैं। ऐसा विचार सच्चाई से बहुत दूर है। <u>पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है</u>। वह एक व्यक्ति है जिसके **पास** विशाल अधिकार और सामर्थ्य है, परन्तु वह उस सामर्थ्य से, जो उसके पास है, **कहीं बढ़कर** है । वह उत्कृष्ट रूप से उस आदर और सामर्थ्य के योग्य है जो हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर को देते हैं।

उसके लिए व्यक्तिगत सर्वनाम इस्तेमाल किया जाता है

अ. "कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।" (यूहन्ना 14:16)

आ. "वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।" (यूहन्ना 14:17)

इ. "वह मेरी गवाही देगा।" (यूहन्ना 15:26)

ई. "परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा।" (यूहन्ना 16:13-14)

वह व्यक्तित्व के मूल गुण रखता है

अ. बुद्धि, सोचने और युक्ति की योग्यता।

आ. संवेदनशीलता, चीजों को महसूस करने की योग्यता।

इ. इच्छा-शक्ति, चुनाव और फैसले की क्षमता।

एक केवल शक्ति या प्रभाव उन चीजों को महसूस नहीं कर सकता है जो पवित्र आत्मा के बारे में कहा गया है वह करता है। उदाहरणार्थ, हमें उपदेश दिया गया है कि हम पवित्र आत्मा को 'शोकित' न करें (इफि. 4:30)। हनन्याह और सफीरा ने "पवित्र आत्मा से झूठ बोला" (प्रेरितों 5:3-4)। अब तो एक शक्ति को शोकित नहीं किया जा सकता है। आप बिजली को शोकित या

खेदित नहीं कर सकते हो। न ही तुम इससे झूठ बोल सकते, और नही इसकी परीक्षा कर सकते हो। एक अव्यक्तिक शक्ति ऐसी भावनाओं के अयोग्य है। परन्तु एक व्यक्ति को शोकित और खेदित किया जा सकता है, से झूठ बोला और की परीक्षा ली जा सकती है।

उन कुछ अभिव्यक्तियों पर ध्यान दो जो पवित्र आत्मा को दिए गए हैं:

1. वह अनुभव करता है (इफि. 4:30)
2. वह शान्ति देता है (प्रेरितों 9:31)
3. वह सोचता है (रोमियों 8:6)
4. वह बोलता है (प्रेरितों 13:2)
5. वह प्रार्थना करता है (रोमियों 8:26)
6. वह सिखाता है (यूहन्ना 14:26)
7. वह अपनी इच्छा इस्तेमाल करता है (1 कुरिं. 12:11)
8. वह मना करता है (प्रेरितों 16:6)
9. वह आश्चर्यकर्म करता है (प्रेरितों 19:6)

यह सब चीजें व्यक्तित्व की अभिव्यक्तियाँ हैं, जो एक अव्यक्तिक शक्ति के पास नहीं होती हैं।
एक कारण कि क्यों अनेक लोग उसे केवल एक शक्ति या बल मानते हैं क्योंकि बाइबल में कुछ नाम उसे दिए गए हैं जो उसकी सेवकाई के प्रतीक हैं। उसेः हवा, वर्षा, तेल, आग, ओस, वगैरा कहा गया है। ये सब उन विभिन्न सेवकाइयों के प्रतीक हैं जो वह करता है, परन्तु वह उन सब सेवकाइयों से कहीं अधिक महान है।

पवित्र आत्मा का देवत्व। (पवित्र आत्मा परमेश्वर है)

पवित्र आत्मा न केवल एक व्यक्ति है, वह ईश्वरीय अस्तित्व है। वह परमेश्वर है !

1. बाइबल उसे परमेश्वर कहती है (प्रेरितों 5:3-4)

"शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले...तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।"

2. उसमें वे गुण हैं जो केवल परमेश्वर में होते हैं

अ. उसका अनन्त स्वभाव है (इब्रा. 9:14)
आ. वह सर्वव्यापी है (भजन 139:7-10)। एक ही समय में सब जगह उपस्थित रहने योग्य।
इ. वह सर्वज्ञानी है (1 कुरिं. 2:10-11)। वह सब चीजें जानता हैं।
ई. वह सर्वशक्तिमान है (लूका 1:35)। सब चीजें करने की सामर्थ्य रखता है।

3. वह पिता और पुत्र के साथ समान प्रतिष्ठा में है

"उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" (मत्ती 28:19)

अध्याय 2 आत्मा की परिपूर्णता की भविष्यद्वाणी की गई है

पुराने नियम में हम पवित्र आत्मा को कुछ मुख्य लोगों पर और भीतर पाते हैं। ये लोग अपवर्जन लगते हैं न कि नियम। परन्तु परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा भविष्यद्वाणी की कि एक नया दिन आएगा जब उसका आत्मा उसके सब लोगों पर और भीतर होगा।
"उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिए स्वपन देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा" (योएल 2:28-29)। "मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे" (यहेजकेल 36:27)।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञ की थी कि मसीहा आत्मा से परिपूर्ण और समर्थ होगा

"मेरे दास को देखो जिसे मैं सम्भाले हूँ, मेरे चुने हुए को, जिस से मेरा जी प्रसन्न है, मैं ने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह जाति जाति के लिए न्याय प्रगट करेगा" (यसायाह 42:1)। यह लूका 4:18 में पूरा हुआ था, "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ...।"

परमेश्वर के सब लोगों को इस उद्गार का आनन्द लेना है

"क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर धाराएँ बहाऊँगा; मैं तेरे वंश पर अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूँगा" (यशायाह 44:3)।

"आत्मा की परिपूर्णता" के लिए अनेक नाम

पवित्र आत्मा की परिपूर्णता को बाइबल में अनेक तरीकों से समझाया गया है। हम उन में से अनेक पर संक्षेप में ध्यान देंगे।

1. "पवित्र आत्मा पाना"

यह वाक्यांश नए नियम में उस अनुभव को समझाने के लिए जिसकी हम बात कर रहे हैं, सबसे अधिक इस्तेमाल किया गया है:

- "उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे..." (यूहन्ना 7:39)
- "...पवित्र आत्मा लो" (यूहन्ना 20:22)
- "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे..." (प्रेरितों 1:8)
- "...तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे" (प्रेरितों 2:38)
- "उन्होंने जाकर उनके लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएँ" (प्रेरितों 8:15)
- "क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?" (प्रेरितों 10:47)
- "उनसे कहा, 'क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'" (प्रेरितों 19:2)

2. आत्मा से अभिषेक पाना

"अभिषेक" एक शब्द है जिससे हम बहुत परिचित हैं, क्योंकि इसे पुराने नियम में इस्तेमाल किया गया है। इसका महत्त्व 'व्यक्ति पर उण्डेलना" के विषय में है, जैसा अभिषेक करनेवाले तेल के साथ किया जाता था। इसलिए पवित्र आत्मा का सामर्थ्य विश्वासी पर 'उण्डेला' जाता है। यह विशेष वाक्यांश यीशु पर आत्मा के उतरने के विषय में इस्तेमाल किया गया है। "परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था" (प्रेरितों 10:38)।

3. आत्मा से भर जाना

यह वाक्यांश उस प्रभाव की बात करता है जो आत्मा का विश्वासी के भीतर होता है। वे 'आत्मा से भर जाते हैं'। जैसा पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था। "वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरितों 2:4)। आत्मा से भरने की अवस्था निरन्तर भरते रहने की है। पौलुस, निरन्तर काल का उपयोग करके, इसके बारे में इफि. 5:18 में कहता है; "आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।" आत्मा की परिपूर्णता को बनाए रखने के लिए, हमें भण्डार के स्रोत से पीने की आवश्यकता है।

4. आत्मा का बपतिस्मा पाना

यह कुछ विवादास्पद वाक्यांश है परन्तु जिसको फिर भी बाइबल का दृढ़ समर्थन है। यह सुसमाचारों में चार बार और प्रेरितों की पुस्तक में दो बार पाया जाता है (मत्ती 3:11; मरकुस 1:8; लूका 3:16; यूहन्ना 1:33; प्रेरितों 1:5; 11:16)। बपतिस्मा का अर्थ होता है 'पूरी तरह से डुबाना' या 'जलमग्न कर देना'। इसका और भी गहरा अर्थ है 'एक तत्त्व में जलमग्न करना जिसमें उसे बदलने की शक्ति है जिसे यह ढकता है'। इसका एक अच्छा उदाहरण है कपड़े का रंगना, जिसे एक तत्त्व में जलमग्न किया जाता है जो कपड़े को मूलतः परिवर्तित कर देता है। इसलिए आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ है पवित्र आत्मा में डूबना, जलमग्न होना, गाड़ा जाना, सम्पूर्ण रूप से घिर जाना, पूरी तरह ढक जाना।

5. आत्मा की रिहाई

यह एक शब्द है जो बाइबल में प्रयोग में नहीं लाया गया है परन्तु निश्चय ही संकेत पाता है। यह मनुष्य के आत्मा की रिहाई का वर्णन करता है, जो तब होता है जब उसकी आत्मा पवित्र आत्मा द्वारा उत्तेजित होती है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व का बन्धन से स्वतंत्रता में, सूखापन से जीवित जल की नदियों में, बाँझपन से फलवन्तता में रिहाई है। यह निश्चय ही उसका वर्णन करता है जिसकी बात यीशु यूहन्ना 7:38 में कर रहे थे। विश्वासी के हृदय में से जीवित जल की नदियों का बह निकलना।
यह वाक्यांश सम्भवतः सबसे ठीक-ठीक वर्णन करता है जो आजकल हजारों विश्वासियों में घटित हो रहा है। इसलिए इसका उपयोग विश्व-व्यापी नवजीवन कार्यों में होता है। अनेक मसीही जो विश्वास करते हैं कि, जब उन्होंने मसीह को ग्रहण किया था, तब उन्होंने पवित्र आत्मा पाया था, पर उन्होंने कभी भी उनके आत्मा में एक सकारात्मक और सामर्थी रिहाई अनुभव नहीं की है। आत्मा में बपतिस्मा पाने का उनका अनुभव और विशेषकर अन्य भाषाओं का प्रकाशन वह रिहाई लाता हुआ लगता है और इसीलिए इस अनुभव को "आत्मा की रिहाई" कहा गया है।

अध्याय 3 पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

आत्मा में बपतिस्में का प्रारंभिक प्रमाण

जैसे हम अब विचार करते हैं कि "वो प्रारंभिक प्रमाण (पहले चिन्ह) क्या हो सकते हैं कि किसी ने आत्मा की परिपूर्णता पाई है?" ...तो आओ हम तीन चीजें मन में रखें।

1. हम इस समय प्रारंभिक चिन्ह से सम्बंधित हैं। हम मानते हैं कि बाद में आत्मा की परिपूर्णता के अनेक दूसरे चिन्ह और प्रमाण पाए जाते हैं। परन्तु, इस समय हम यह पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं कि आत्मा के सामर्थ्य के इस नए आयाम में सबसे संभावनीय पहला चिन्ह जिसे व्यक्ति ने अनुभव किया है क्या है।

2. हम बाइबल के चिन्ह को खोज रहे हैं। इसलिए हम व्यक्तिगत अनुभव या मनुष्य की परम्परा से सम्बंधित नहीं हैं, बल्कि बाइबल उनके मूल सामान्य हर के विषय में क्या प्रकट करती है जिन्होंने बाइबल के दिनों में आत्मा के इस बपतिस्मा को अनुभव किया था।

3. हम आत्मा के बपतिस्में के बाइबल के अनुभव से न कि मनुष्य का विचार कि बपतिस्मा क्या है, में रुचि रखते हैं। ऐसे अनेक आत्मिक अनुभव हैं जिन्हें मनुष्यों ने 'आत्मा का बपतिस्मा' नाम दिया है। इसमें 'दूसरी आशीष', 'सम्पूर्ण पवित्रीकरण', 'पवित्रीकरण अनुभव', वगैरा सम्मिलित हैं। हालाँकि ये सब मान्य और बाइबल के हैं जिनकी हम उपेक्षा करते या कीमत कम जानते हैं, फिर भी इस अध्ययन में हम आत्मा के उस काम से सम्बंधित हैं जिसे बाइबल आत्मा का बपतिस्मा कहती है।

प्रमाण का मुख्य स्रोत प्रेरितों की पुस्तक है जिसमें लोगों का आत्मा की परपूर्णता पाने के पाँच अभिलिखित उदाहरण हैं:

1. **पिन्तेकुस्त का दिन (प्रेरितों 2:1-4)**
   यह बाइबल का सबसे पूर्ण विवरण है। मसीह के पुनरुत्थान के ठीक पचास दिनों के बाद, आत्मा के विषय में की गई प्रतिज्ञाएँ यरूशलेम में प्रतिक्षा कर रहे चेलों के मध्य पूरी हुई थीं। यह, जैसा भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की थी, आत्मा के एक सम्पूर्णतः नए काम का प्रारम्भ था। अनेक प्रमाण दिखाई दिए कि आत्मा उन पर उतरा था।
   पहला, आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ।
   दूसरा, आग की जीभें फटती हुई दिखाई दीं।
   तीसरा, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे, जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी।
   इब्रानी और यूनानी दोनों में, 'आत्मा' के शब्द का अर्थ 'हवा' भी है। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण था कि आत्मा के आने के अग्रदूत के रूप में एक बड़ी सनसनाती हुई आँधी आई थी। हवा जीवन, सामर्थ्य, गति, शक्ति की बात करती है जो सब

पवित्र आत्मा के प्ररूपी हैं। प्रतीकात्मक आग भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण थी। यूहन्ना बपतिस्मादाता ने भविष्यद्वाणी की थी कि यीशु 'पवित्र आत्मा और आग' से बपतिस्मा देगा। आगः शुद्धीकरण, भूसी और मैल जलाने का प्रतीक है।
इससे पहले कि चेलों के विषय में यह कहा गया कि वे 'आत्मा से भर गए', ये दोनों घटक घटे थे। इसलिए असल में यह नहीं कहा जा सकता है कि वे आत्मा से भरने के प्रमाण थे। जो प्रमाण चेलों के आत्मा से भर जाने के बाद प्रकट रूप से आया था, वो था कि चेले "जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा में बोलने लगे' थे। उस समय मण्डली में 120 चेले थे। हमें स्पष्ट रूप से बताया गया है कि वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और वे सब अन्य अन्य भाषा में बोलने लगे। इस अवसर पर हर चेले की अलौकिक रूप से उन भाषाओं में बोलने की योग्यता जो उन्होंने सीखी नहीं थीं स्पष्ट प्रमाण था। तीन प्रदर्शनों में से जो उस दिन दिखे थे केवल एक ही बाद में भी आत्मा के बपतिस्मा के साथ होने वाला संगत घटक रहा था। यह अन्य भाषाओं में बोलना था।

2. **कुरनेलियुस का घर (प्रेरितों** 10:44-48)

पतरस को अलौकिक रूप से कहा गया कि वह अन्य जाति रोमी पलटन के सूबेदार, कुरनेलियुस के घर जाए। वह, अपनी समझ के विरुद्ध कि वह मानना चाहता था कि परमेश्वर की आशीषें केवल यहूदियों के लिए हैं, गया। फिर भी, अपने सामने एक सभा को "जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है" (प्रेरितों 10:33) सुनने को तैयार पाकर, पतरस उनसे प्रभु यीशु मसीह के विषय में बातें करने लगा (प्रेरितों 10:34-43)। जबकि वह बातें कर रहा था कि पवित्र आत्मा सब सुननेवालों पर उतर आया। पतरस के यहूदी साथी पहले तो विश्वास नहीं कर पाए कि यह अन्य जातियों के साथ भी हुआ है (10:45), परन्तु उन्हें निश्चय हो गया क्योंकि "उन्होंने उन्हें भाँति भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना" (10:46)। इस चिन्ह को देखकर पतरस ने कहा, "क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है ?" (प्रेरितों 10:47)।
जब पतरस यरूशलेम लौटा, तो उसे जो कैसरिया में हुआ था, उसका लेखा देने को कहा गया (प्रेरितों 11:12)। इसलिए उसे अपने कार्यों का बचाव यह कह कर करना पड़ा कि "जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था" (11:15)। उसने आगे प्रमाण देते हुए कहा, "अतः .. परमेश्वर ने उन्हें भी वहीं दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था" (11:17)। उसका तर्क यह था कि जिस प्रकार परमेश्वर ने पिन्तेकुस्त के दिन यहूदी विश्वासियों को आशीष दी थी उसी प्रकार उसने अन्य जातियों को भी आत्मा के वरदान से आशीषित किया है, और उसके विश्वास का मुख्य कारण था कि उन्होंने ने भी अन्य भाषा में बोला है। "यह सुनकर वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई" करने लगे। (प्रेरितों 11:18)।

3. **इफिसुस में पौलुस (प्रेरित** 19:1-7)

यहाँ हमारे पास एक तीसरा बहुत ही स्पष्ट विवरण है। अपनी मिश्नरी यात्रा के दौरान पौलुस इफिसुस के यूनानी शहर में पहुँचा जहाँ उसे यूहन्ना बपतिस्मादाता के कुछ चेले मिले। अपने प्रश्न "क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया? के उत्तर में, उन्होंने कहा, "हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।" तब पौलुस ने उन्हें मसीह के बारे में सुसमाचार और अधिक स्पष्ट रूप से समझाया जिसके पश्चात् उन्होंने पानी में बपतिस्मा लिया। फिर पौलुस ने जब उन पर हाथ रखे, तो "पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे।"
हम ने इन तीन उदाहरणों में देखा कि आत्मा में बपतिस्मा एक संक्षिप्त, निश्चित, तात्कालिक घटना है। इन में से हर अवसर पर, एक घटक जो संगत रहा है वो है कि सब पानेवालों ने, सब अवसरों पर, आत्मा से भरने के सीधे परिणाम के रूप में अन्य भाषा में बोला। इसलिए हम सुझाव देते हैं कि अन्य भाषाओं में बोलना आत्मा पाने का एक असली और विश्वसनीय प्रारंभिक प्रमाण है।

प्रेरितों में विश्वासियों के आत्मा पाने के दो और विवरण हैं:

4. **सामरिया में बेदारी (प्रेरितों** 8)

इस विवरण में यह नहीं बताया गया है कि आत्मा को पानेवाले अन्य भाषा में बोले थे। परन्तु ध्यान देने के लिए कुछ दिलचस्प बातें हैं। पहला, फिलिप्पुस के प्रचार की ओर एक सच्ची प्रतिक्रिया दिखाई गई - जिसके तात्कालिक परिणाम थेः-

- "जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया" (8:6)

- "और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया" (8:8)
- "जब उन्होंने...विश्वास किया...तो लोग...बपतिस्मा लेने लगे" (8:12)
- "...वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था..." (8:16)

जब पतरस और यूहन्ना ने उन पर हाथ रखे, उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। शमौन जादूगर ने देखा कि उनके आत्मा पाने के सीधे परिणामस्वरूप कुछ होता है। यह जो कुछ भी था नाटकीय और एक दृश्य रूप से अचानक हुआ था। शमौन ने चाहा कि उसे भी इस चमत्कार को करने की योग्यता मिले। बहुत कुछ लिखा और बताया गया है कि शमौन ने वास्तव में क्या देखा था। वैसे तो कोई भी निश्चय से नहीं कह सकता है परन्तु क्या यह कल्पना करना उचित नहीं कि उसने वही चिन्ह देखा जो उन अवसरों पर घटे थे जब लोगों ने बाइबल के दिनों में आत्मा पाया था?

5. **तरसुस का शाऊल (प्रेरितों** 9)

शाऊल के नाटकीय तरीके से हृदय परिवर्तन के पश्चात्, प्रभु ने हनन्याह को शाऊल के पास यह कहने को भेजा, "हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु...उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए" (9:17)। हम जानते हैं कि उसकी दृष्टि लौट आई, और हम कल्पना कर सकते हैं कि मिश्न का दूसरा पहलू भी पूरा हुआ और कि शाऊल पवित्र आत्मा से भर गया था। जबकि तात्कालिक संदर्भ में यह ऐसा नहीं कहता कि वह अन्य भाषा में बोला, हम निश्चित रूप से जानते हैं कि उसने ऐसा बाद में किया था। असल में, कुरिन्थियों को अन्य भाषाओं के दुरूपयोग को सुधारने के बारे में लिखते समय, वह स्वीकार करता है, "मैं अपने परमेश्वर को धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सब से अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ" (1 कुरिं. 14:18)। उसी अध्याय में वह घोषित करता है, "मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो" (1 कुरिं. 14:5)। और अन्त में, "अन्य बाषा बोलने से मना न करो" (1 कुरिं. 14:39)।

बाइबल के अनुभव के ऊपर दिए प्रमाणों के आधार पर, हम विनम्रता से पुष्टि करते हैं कि अन्य भाषाओं में बोलना आत्मा के बपतिस्मा का पहला बाइबल का प्रमाण है। हम इसकी भी पुष्टि करते हैं कि और भी अनेक बाइबल के प्रमाण हैं जो इस पहले प्रमाण के पश्चात् अनुभव कि जाने चाहिए जिनके बिना अनुभव अपूर्ण होगा।

अध्याय 4 पवित्र आत्मा और विश्वासी

पवित्र आत्मा का हमारे जीवनों में उद्धार पैदा करना पहला लक्ष्य है। उसका दूसरा लक्ष्य पवित्र जीवन और सेवा के लिए हमें सामर्थ्य देना है।

1. उद्धार लाना

अ. वह दोषसिद्धि लाता है (यूहन्ना 16:8-11)

पवित्र आत्मा के काम का एक महत्त्वपूर्ण पहलू उद्धार-न-पाए लोगों को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषसिद्ध कराना, फटकारना और कायल करना है। दोषसिद्धि के आत्मा के काम के बिना हम अपनी पापी और भटकी हुई दशा से अनजान रहेंगे। वह हमें पाप के पापीपन से और कि हम परमेश्वर की धार्मिकता के स्तर से कितने कम पड़ते हैं, और उस न्याय से जो हर पापी का इन्तजार कर रही है, अवगत कराता है।

आ. वह उद्धार और नया जन्म पैदा करता है

"तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ" (तीतुस 3:5)। "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे" (इफि. 2:1)। "आत्मा तो जीवनदायक है" (यूहन्ना 6:63)।

इ. वह पाप और मृत्यु की शक्ति से स्वतंत्र करता है

"क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया" (रोमियों 8:2)।

ई. वह उद्धार का आश्वासन देता है

"आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं" (रोमियों 8:16)। "और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है" (1 यूहन्ना 5:7)। "गवाही देनेवाले तीन हैं, आत्मा, और पानी, और लहू; और तीनों एक ही बात पर सहमत हैं" (1 यूहन्ना 5:8)।

उ. वह सत्य का मार्ग बताता है

"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा" (यूहन्ना 16:13)।

ऊ. वह सब बातें सिखाता है

"परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा" (यूहन्ना 14:26)। "परन्तु तुम्हारा वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है और झूठा नहीं; और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो" (1 यूहन्ना 2:27)।

ए. वह हमारी शारीरिक देहों को जिलाएगा

"यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा" (रोमियों 8:11)। इस वचन की प्रतिज्ञा है कि पवित्र आत्मा, जो हम में बसा हुआ है, हमारे शरीरों को जीवन, ताकत, स्वास्थ्य और बल प्रदान करेगा। आत्मा में जीना एक स्वास्थ्य बढ़ाने का कार्य है।

ऐ. पवित्र आत्मा हमें सेवा के लिए सामर्थ्य देता है

"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और...मेरे गवाह होगे" (प्रेरितों 1:8)। यीशु ने 'dunamis' शब्द इस्तेमाल किया था जिससे हमें डायनामो शब्द मिलता है, जो एक मशीन है जो अपने आप एक बिजली की एक संगत और निरन्तर सप्लाई पैदा करती है। इसलिए हमारे भीतर आत्मा का सामर्थ्य मसीह के गवाह होने के लिए हमैरे भीतर सामर्थ्य पैदा करता है। न केवल हम यीशु के गवाह होने के लिए समर्थ पाते हैं, हम वास्तव में उसके गवाह बन जाते हैं।

ओ. पवित्र आत्मा हमारी प्रार्थनाओं को शक्ति देता है

"पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए" (यहूदा 20)। "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो" (इफि. 6:18)। "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है : क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है; और मनों को जाँचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है ? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है" (रोमियों 8:26-27)।

औ. पवित्र आत्मा परमेश्वर की स्तुति और आराधना प्रेरित करता है

"अपनी-अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं" (प्रेरितों 2:11)। "क्योंकि उन्होंने उन्हें भाँति भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना" (प्रेरितों 10:46)। "हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुआई से उपासना करते हैं" (फिलि. 3:3)। "आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ; और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो" (इफि. 5:18-19)। "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें" (यूहन्ना 4:24)।

अध्याय 5 पवित्र आत्मा पाना

आत्मा में बपतिस्मा के लिए पहली आवश्यक योग्यता है कि आप यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार किए हों। यदि आप परमेश्वर की सन्तान हैं तो आप पवित्र आत्मा का दान पा सकते हो। दूसरी अपेक्षा है कि आप इस आशीष की गहरी चाह

रखते हो। यीशु ने इसे इस प्रकार कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए।" क्या आप आत्मा के पानी के लिए प्यासे हो? यदि हो तो, आप यीशु के पास आकर पी सकते हो। यह बस इतनी ही सी बात है। याद रखो कि तुम्हें यह आशीष कमानी नहीं पड़ेगी। यदि तुम्हें ऐसा करना पड़ा तो यह पवित्र आत्मा का "दान" नहीं कहलाएगा। तुम कभी भी इस अदभुत आशीष को कमा या इसके योग्य नहीं हो सकते हो, और न ही ऐसा करने की आवश्यकता है। यह आपके लिए मुफ्त दान है। मैं आपको तीन सरल शब्द बताना चाहूँगा जो आपको यह बहुमूल्य आशीष पाने में समर्थ करेंगे। शब्द हैं, शान्त हो जाओ, पाओ, प्रतिक्रिया दिखाओ। आओ हम संक्षेप में उन पर नज़र डालें।

1. **शान्त हो जाओ।** कितनी ही बार लोग जब आत्मा को पाने के लिए आते हैं कसे हुए हो जाते हैं। ऐसा होना नहीं चाहिए। यह आपकी सहायता करने के बजाय रुकावट डालेगा। इसलिए मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि आप शान्त हो जाएँ। पहले शारीरिक भाव से शान्त हो जाओ, तो इससे आपको आत्मिक और भावात्मिक भाव से शान्त होने में सहायता मिलेगी। क्यों न किसी जगह आरामदायक स्थिति में बैठ जाओ। पिन्तेकुस्त के दिन, चेले बैठे हुए थे, इसलिए आत्मा पाने के लिए यह एक अच्छी बाइबल की मुद्रा है। बैठ जाओ और शान्त हो जाओ। आप अच्छे हाथों में हैं - यीशु के हाथों में। वह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देता है।

2. **पाओ।** इस समय अच्छ होगा कि आप यीशु को आपको आत्मा में बपतिस्मा देने को कहें। सरलता से, धीमें से और विश्वास से माँगो। आग्रह या विनती मत करो। आपको चिल्लाने या कराहने की आवश्यकता नहीं है। यीशु आपके पास ही है। वह आपकी प्रार्थना सुन सकता है। जब आपने उसे आत्मा से भरने के लिए कहा है, तब आपको विश्वास करना है कि उसने आपकी प्रार्थना सुन ली है और इसलिए विश्वास से आत्मा को पाओ। याद रखो कि आत्मा के लिए शब्द वही है जो साँस के लिए है। तो क्यों न अपना मुँह खोलो, और एक गहरी साँस लो, और पवित्र आत्मा ले लो। इसे ही यीशु ने आत्मा "पीना" कहा था। जिस प्रकार आप पानी पीने के लिए अपना मुँह खोलते हो, उसी प्रकार आत्मा पीने के लिए अपना मुँह खोलो। अपना मुँह खोलो और साँस अन्दर लो, और विश्वास करो कि पवित्र आत्मा आपके जीवन में एक नए तरीके से आपके अन्दर आ रहा है। ऐसा विश्वास से करो। "जो कुछ प्रार्थना करके मागो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा" (मरकुस 11:24)। आप यह विश्वास से कर रहे हैं। याद रखो, यह भावना नहीं है। आप सम्भव है कोई भावात्मिक प्रतिक्रिया महसूस न करें। यह कोई भावात्मक अनुभव नहीं है। यह एक आत्मिक अनुभव है।
   सम्भव है कि कोई भावात्मक संगत हो या न हो। यदि है तो, शान्त रह कर और इसका आनन्द लो। यदि नहीं है तो इसकी चिन्ता मत करो। भावनाएँ अनियमित और अविश्वसनीय होती हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं है आप क्या अनुभव करते हो। आप क्या विश्वास करते हो, यह है। विश्वास करो कि आपको आत्मा मिल गया है। यह फिर पहला कदम है। "साँस से अन्दर लेना" - पवित्र आत्मा। जब आप ऐसा करेंगे, खुशी से परमेश्वर का आत्मा से भरने के लिए धन्यवाद और स्तुति करने लगो। स्तुति में आपका हृदय परमेश्वर को छूने लगे और आत्मा को और गहराई से पीते रहो।

3. **प्रतिक्रिया दिखाओ।** अब तीसरा कदम आता है, आत्मा की ओर आपकी प्रतिक्रिया जो अब आपके सारे अस्तित्व को भरने लगा है। साँस लेने के बाद, आपको साँस छोड़नी भी है। आप आत्मा साँस से अन्दर लेते हो, और अब विश्वास से, इस आशीष के लिए परमेश्वर की स्तुति छोड़ने लगो। जब ऐसा करने लगो तो अपनी मातृ भाषा या सीखी हुई भाषा में मत करो। परमेश्वर की स्तुति करने की अभिलाषा रखो, परन्तु विश्वास करो कि ऐसा एक नई भाषा (जो सीखी नहीं है) में करो जो आत्मा आपको देगा। अन्य भाषा में बोलना एक चमत्कार है। यह आत्मा द्वारा दी गई एक अलौकिक योग्यता है। इसका अर्थ यह नहीं कि ऐसा करना कठिन है। इसका अर्थ यह है कि आप परमेश्वर को सहयोग दो। यह पतरस के पानी पर चलने की कहानी से अच्छी तरह चित्रित होता है (मत्ती 14:29)। यीशु ने पतरस को पुकारा, "आ !" और फिर हम पढ़ते हैं, "तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा।" जब पतरस पानी पर चलने लगा तो वह कुछ भी अलौकिक सोच समझ कर नहीं कर रहा था। वह उतने ही स्वाभाविक रूप से चल रहा ता जैसे कि वह ठोस भूमि पर चलता था। चमत्कार यह था कि वह डूब नहीं रहा था ! यह वैसा ही होता है जब हम अन्य भाषाओं में बोलते हैं। हम अपनी जीभ और होंठ वैसे ही इस्तेमाल करते हैं जैसे हम सदा बात करते हुए करते हैं। बोलने की क्रिया चमत्कार नहीं है। चमत्कार वह भाषा है जो हम बोलने वाले हैं। दूसरे शब्दों में, चमत्कार यह नहीं कि आप कैसे बोलते हैं बल्कि क्या बोलते हैं वह चमत्कार है।

बोलना एक स्वाभाविक कार्य है, वैसे ही जैसे चलना है। जब आप अन्य भाषाओं में बोलते हैं, तो बोलने की क्रिया उतनी ही स्वाभाविक होती है जितनी और किसी समय बातें करते हुए होती है। चमत्कार होता है जब पवित्र आत्मा आपको उन भाषाओं में बोलने के लिए शब्द देता है जो आपने कभी सीखी नहीं हैं या सम्भवतः सुनी भी नहीं हैं। मुझे अन्य भाषाओं में बोलने की सरलता के सहजपन पर जोर देना चाहिए, क्योंकि अनेक लोगों को इस जगह पर समस्या होती है। वे इसे अपने लिए कठिन कर देते हैं। उन्हें लगता है कि ऐसा करना उनके लिए बहुत कठिन है। कुछ शान्त होने के बजाय कस से जाते हैं। कुछ लोगों को लगता है कि उन्हें कुछ नहीं करना चाहिए, वे जम जाते, निष्क्रिय हो जाते हैं और इन्तजार करते हैं कि परमेश्वर उनकी स्वरतन्त्री को वश में करके उनके होठों के द्वारा बोलनेवाला है, और उनका इस प्रक्रिया में कोई भाग नहीं है।

कृपया प्रेरितों 2:4 में ध्यान दो, "वे" - (चेले), वाक्य का विषय हैं। इसलिए यह चेले थे जो पवित्र आत्मा से भर गए थे और यह चेले थे जो "जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।" वे बोलने लगे। जब आप अन्य भाषा में बोलने लगते हैं तो यह आप हैं जो पहल करते हैं। आप शब्द बोलते हैं। परन्तु पवित्र आत्मा उन्हें आपको देता है। पवित्र आत्मा आपको आपके मन में आवाजें, शब्द, वाक्यांश देगा। वे आपको बहुत अजीब लगेंगे। यह एक भाषा है जो आपने पहले कभी नहीं सुनी है। बहुत सम्भव है यह कोई स्वर्गदूतों या स्वर्ग की भाषा है जो किसी पृथ्वी की भाषा से बहुत भिन्न लगती है। जैसे आत्मा आपको यह शब्द देगा, तो बोलने लगो। वे आपके अन्दर से आते हैं, आपके मन से नहीं। बड़े साहस के साथ बोलने लगो। डरो मत। आरम्भ में हो सकता है आप एक या दो शब्द ही बोलें। और आप पाएँगे कि आप उन्हें बार बार दोहरा रहे हैं। वैसा ही करने लगो। जैसे आप उन्हें साहस के साथ बोलते रहोगे, पवित्र आत्मा आपकी शब्दावली बढ़ा देगा। शब्दों का बहाव बढ़ता जाएगा, जब तक कि आपके हृदय से नदियाँ न बहने लगें। इसलिए निश्चय करो कि जब आपने पवित्र आत्मा साँस से अन्दर लिया है, उसके बाद आप परमेश्वर की स्तुति बाहर निकालोगे।

अपनी आवाज से, न कि अपनी मातृ भाषा से करने का निश्चय करो। अपेक्षा करो कि उसी क्षण पवित्र आत्मा आपको एक नई भाषा देगा और विश्वास के साथ उस नई भाषा को बोलने लगो। जो कुछ भी आत्मा आपके हृदय में डालता है पूरी शक्ति के साथ बोलने लगो। सम्भव है आपको लगे कि आपके होंठ थरथरा रहे हैं और मुँह अजीब शब्दों से भरने लगा है। उन्हें जोर से बोलने लगो। एक बार जब आप बोलने लगो, तो बोलते रहो। रुको मत। इसे उमड़ने दो। जितना अधिक यह उमड़ेगा, उतना स्वतंत्र आप अनुभव करोगे। यह चिन्ता मत करो कि यह सुनने में कैसा लगता है, वह पवित्र आत्मा का काम है। वह आपको वह भाषा देगा जो वह चाहता है आप उस समय पाएँ।

जैसे आप अन्य भाषा का वरदान इस्तेमाल करते रहोगे, तो और-और भाषाएँ पाने लगोगे, क्योंकि अनेक प्रकार की भाषाएँ हैं (1 कुरिं. 12:10)। एक बार जब जैसे पवित्र आत्मा आपको उच्चारण देता है और आप अन्य भाषा में बोले हो, तो जब चाहो यह वरदान इस्तेमाल कर सकते हो। यह अब आपके फैसले और पहल-शक्ति पर निर्भर है।

पौलुस कहता है, "अतः क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा; मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा" (1 कुरिं. 14:15)। आप जब चाहो, बुद्धि से या आत्मा से प्रार्थना कर सकते हो। इस योग्यता को हर दिन और दिन में कई बार इस्तेमाल करो। जब कभी भी आप करो, यह आपकी उन्नति करेगा और आशीष देगा, जैसे पौलुस कहता है, "जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है" (1 कुरिं. 14:4)। जब कभी भी आप इस नई भाषा में बोलते और प्रार्थना करते हो, तो अपनी आत्मिक उन्नति करते हो। यह आत्मा का एक वरदान है जो इस्तेमाल करने वाले की उन्नति करता है। आत्मा के दूसरे सब वरदान दूसरों की उन्नति के लिए हैं। यह आपको अपने अति पवित्र विश्वास में उन्नति करने में योग्य करने के लिए है (यहूदा 20)।

अध्याय 6 अन्य भाषा में क्यों बोलें?

उन भाषाओं में बोलने का क्या उद्देश्य या लाभ है जिन्हें हम समझते नहीं हैं? नीचे आत्मा द्वारा दी भाषाओं में परमेश्वर के साथ सहभागिता के कुछ लाभों की एक संक्षिप्त सूची दी गई है।

1. यह पवित्र आत्मा की परिपूर्णता का बाइबल का प्रारंभिक प्रमाण है

"और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरितों 2:4)। "क्योंकि उन्होंने उन्हें भाँति भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना" (प्रेरितों 10:46)। "पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे।" (प्रेरितों 19:6)।

2. यह परमेश्वर की हमारे लिए इच्छा है

परमेश्वर कहता है (पौलुस के द्वारा) "मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो" (1 कुरिं. 14:5)। पौलुस ने यह भी कहा, "मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैं तुम सब से अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ" (1 कुरिं. 14:18)। घनिष्ठता पर ध्यान दो "मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ...।" आत्मा की भाषाओं में परमेश्वर से बातें करने से परमेश्वर के साथ हमारी व्यक्तिगत घनिष्ठ सम्बंध और सहभागिता बढ़ती और मजबूत होती है।

पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया:-

- अन्य भाषाओं में बोलने की योग्यता के लिए, क्योंकि यह परमेश्वर ही अपने आत्मा के द्वारा दे सकता है।
- ऐसी पवित्र और घनिष्ठ भेद की बातें बोलने का विशेषाधिकार।
- इस प्रचुर आशीष की उपलब्धता के लिए। हम परमेश्वर के साथ कभी भी, कहीं भी, किसी भी परिस्थिति में बातें कर सकते हैं। हम आत्मा में प्रार्थना, गीत, धन्यवाद कर सकते, और परमेश्वर को धन्य कह सकते हैं। इस समय हमारा मन तटस्थ होता है (1 कुरिं. 14:14), इसलिए हम इस आत्मिक अभ्यास द्वारा शान्त होते, ताजा होते और उन्नति पाते हैं।

3. शुद्ध और मुक्त होने का एक चिकित्सीय माध्यम है

रोमियों 8:26 में, पौलुस हमें बताता है कि हमारी एक कमजोरी है कि हमें सदा पता नहीं चलता कि हम क्या प्रार्थना करें। कभी कभी हमें ज्ञान होता है कि हमें सहायता की आवश्यकता है, परन्तु हमें समझ नहीं आता कि क्या समस्या है और इसके लिए कैसे प्रार्थना की जाए। परन्तु आत्मा हमारी इस कमी के पूरा करता है। वह हमारे हृदय को जाँचता है, और पता लगाता है कि हम किस स्थिति में हैं और क्या समस्या है। वह यह भी जानता है कि "आत्मा की मनसा" क्या है - परमेश्वर की हमारे लिए इच्छा। तब वह "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार" हमारे लिए प्रार्थना करने लगता है, और इस प्रकार हमें उस इच्छा के साथ समन्वय में लाता है। वह सब मनोग्रन्थियाँ, अन्तर्बाधाएँ, नकारात्मक विचार जो हमें रोके रहे हैं प्रार्थना के द्वारा निकाल देता है, और वह प्रार्थना के द्वारा हमारे जीवन के लिए परमेश्वर के सकारात्मक, शक्तिशाली, लाभप्रद उद्देश्य ले आता है। इस प्रकार की प्रार्थना "हमारे मन की आत्मा का नवीनीकरण" का एक सबसे शक्तिशाली उपाय है।

4. व्यक्तिगत उन्नति का एक स्रोत

"जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है" (1 कुरिं. 14:4)। उन्नति करने का अर्थ है बनाना या बढ़ाना। जब कभी भी हम अन्य भाषाओं में बोलते हैं, हम आत्मिक रूप से अपने आप को बनाते हैं, हालाँकि वो शब्द हमारे मन को समझ नहीं आएँगे। हर बार जब हम इस योग्यता को इस्तेमाल करते हैं हम थोड़ और बढ़ जाते हैं।

5. परमेश्वर के साथ घनिष्ठ आत्मिक सहभागिता का एक क्षेत्र

"क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी बातें कोई नहीं समझता, क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है" (1 कुरिं. 14:2)।

अन्य भाषाओं में बोलने के इस आत्मिक अभियास का प्रधान उद्देश्य यह नहीं है कि हम मनुष्यों से बोलें, परन्तु कि हम परमेश्वर से बोलें। परमेश्वर से इस प्रकार बातें करने से हम अपने सीमित, छोटे मन के प्रतिबन्धों और रुकावटों से स्वतंत्र हो जाते हैं। हम पर उन्ही बातों को बोलने का प्रतिबन्ध नहीं जो हमने सीखी हैं और अपनी बुद्धि में ग्रहण की हुई हैं। हम उन बातों को भी बोल सकते हैं जो हमें परमेश्वर के आत्मा ने सिखाई हैं (1 कुरिं. 2)। हम परमेश्वर के साथ गूढ़ बातें करते हैं जो हमारे सीमित मन के लिए रहस्य रहती हैं। यह सहभागिता की वो गहराई है जिसके बारे में दाऊद ने कहा, "जल, जल को पुकारता है" (भजन 42:7)। हमारे आत्मिक अस्तित्व की गहराई परमेश्वर के अस्तित्व की गहराई से बातें करती है, और दूसरी ओर।

6. अन्य भाषाओं में बोलना हमें अपने भीतर पवित्र आत्मा का बोध कराता रहता है

जब कभी हम अन्य भाषाओं में बोलते हैं तो हम तुरन्त अपने भीतर पवित्र आत्मा की गति और कार्य का बोध करते हैं। जब हम उन शब्दों के द्वारा जो पवित्र आत्मा हमारे द्वारा बोलता है, परमेश्वर से बातें करते हैं तो हमारे भीतर आत्मा की जानकारी बढ़ जाती है। हम वो माध्यम होते हैं जिनको आत्मा पिता को आराधना और स्तुति देने के लिए इस्तेमाल करता है।

7. यह हमारी परमेश्वर पर और सम्पूर्ण रूप से भरोसा करना सीखने में सहायता करता है

आत्मा में जीवन विकसित करना विश्वास की चाल है। अन्य भाषा की हर अभिव्यक्ति विश्वास का कार्य है। जैसे परमेश्वर हमें व्यक्तिगत उन्नति के क्षेत्र से देह की उन्नति के क्षेत्र में लाना आरम्भ करता है (1 कुरिं. 14:6), हर नई अवस्था एक विश्वास का कदम है।

8. सकारात्मक भावना का छूटना

आत्मा में बपतिस्मा एक भावात्मक अनुभव नहीं है, यह एक आत्मिक अनुभव है। फिर भी हमारी भावनाएँ अनिवार्य रूप से इस अनुभव की ओर प्रतिक्रिया दिखाती हैं और इसमें सम्मिलित हो जाती हैं। हमारी भावनाएँ प्रायः आत्मा द्वारा उत्तेजित होती हैं, और हम उन्हें आत्मा के अभिषेक के समय अभिव्यक्ति देते हैं। यह कोई हानिकारक या नकारात्मक बात नहीं है। बल्कि, यह स्वास्थ्य-वर्धक और लाभप्रद है। बहुत से मसीही अपनी भावनाओं का इनकार करते या दबाते हैं जैसे कि भावनाओं को व्यक्त करना कोई बुरी या पापी बात हो। यह ऐसा नहीं है। हमारी भावानाएँ हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें ऐसा ही बनाया है। पूर्ण रूप से कार्य कर सकने के लिए, समय समय पर भावनाओं की अभिव्यक्ति अवश्य है। जब वह अभिव्यक्ति आत्मा द्वारा हमारे भीतर प्रेरित और प्रोत्साहित की जाती है, तो हम निश्चित हो सकते हैं कि यह सबसे स्वस्थ्य और उत्तम अभिव्यक्ति होगी। यह हमें शुद्ध और मुक्त करता है। यह हमें मजबूत और उन्नत करेगा। इससे डरो मत। ऐसी भावनाओं को अभिव्यक्त और मुक्त करो। यह तुम्हें और अधिक स्वस्थ्य और सुखी बनाएगा।

9. परमेश्वर को स्वीकार्य रूप से "धन्यवाद देने" का अवसर

क्या आपको कभी अनुभव हुआ है कि आप पूर्ण रूप से परमेश्वर को धन्यवाद और प्रशंसा नहीं दे पा रहे हैं? उसने इतनी भलाई की है कि हमारे हृदय में जो धन्यवाद का कुण्ड बना है उसे व्यक्त करने के लिए मात्र शब्द कम पड़ रहे हैं। परन्तु यहाँ एक पूर्ति करनेवाला तरीका है। पौलुस कहता है कि हम आत्मा में प्रभु से बातें करके धन्यवाद के सकते हैं। यह धन्यवाद का देना उससे कहीं बढ़कर होता है जो हमारा मन कभी दे सकता है। यह कविता के क्षेत्र से दूर जाता है और आत्मा में परमेश्वर की उपासना करता है (1 कुरिं. 14:17-18)।

10. "आत्मा में" प्रार्थना करने में समर्थ करता है

"अतः क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा" (1 कुरिं. 14:15)। "...परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है; और मनों को जाँचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है" (रोमियों 8:26-27)। "पर हे प्रियो, तुम अपने अति प्रवित्र विश्वास में उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए" (यहूदा 20)।

11. विश्राम और ताजगी का एक स्रोत है

"वह तो इन लोगों से परदेशी होठों और विदेशी भाषावालों के द्वारा बातें करेगा; जिनसे उसने कहा, 'विश्राम इसी से मिलेगा; इसी से थके हुए को विश्राम दो'" (यशायाह 28:11-12)। परमेश्वर से अन्य भाषाओं द्वारा बातें करना एक बहुत ही विश्राम और ताजगी का अनुभव है। हमें सोचने की आवश्यकता नहीं है कि आगे क्या कहें या कैसे कहें। आत्मा हम में से पिता के साथ सिद्ध सहभागिता में प्रवाहित होता है और हम उस सुन्दर सहभागिता का लाभ पाते हैं। यह आत्मा, प्राण और शरीर के लिए बलवर्धक है।

12. परमेश्वर की स्तुति और आराधना की एक सेवकाई

"...अपनी-अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं" (प्रेरितों 2:11)। "क्योंकि उन्होंने उन्हें भाँति भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना" (प्रेरितों 10:46)। "और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो" (इफि. 5:19)। अनेक बार जब हम अन्य भाषा में बोलते हैं तो आत्मा परमेश्वर की आराधना और स्तुति कर रहा और उसे धन्य कह रहा होता है। पवित्र आत्मा हमारे द्वारा

परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा करता है। यह क्या ही विशेषाधिकार और आनन्द की बात है कि वह हमारे होठों को परमेश्वर की महिमा करने के लिए इस्तेमाल करता है !

13. आत्मा में गीत गाना

"मैं आत्मा से गाऊँगा और बुद्धि से भी गाऊँगा" (1 कुरिं. 14:15)। "...आत्मिक गीत गाया करो और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो" (इफि. 5:19)। कुलु. 3:16 भी देखो।

14. आत्मा की परिपूर्णता को बनाए रखने का एक आत्मिक उपाय

"पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो" (इफि. 5:18-19)। अन्य भाषाओं में परमेश्वर की उपासना करना आत्मा से भरते रहने का एक उचित उपाय है। इसलिए हमें यह हर दिन, और दिन में अनेक बार करते रहना चाहिए।

15. अनुवाद के साथ, दूसरों की उन्नति का साधन है

"यदि अन्य भाषाएँ बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिए अनुवाद न करे तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कर है" (1 कुरिं. 14:5)। हमारी व्यक्तिगत, भक्तिपूर्ण भाषा, या प्रार्थना की भाषा उसके लिए उन्नति का कारण है जो इसे इस्तेमाल करता है। वह अकेला इसके इस्तेमाल से उन्नति पाएगा। परन्तु अन्य भाषाओं का वरदान जो अकसर मण्डली के संदर्भ में कार्य करता है, यदि उसका अनुवाद किया जाए तो दूसरों की आशीष का कारण हो सकता है। इसलिए जो एक सभा में अन्य भाषा में प्रभु से एक संदेश लाता है, उसे प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अनुवाद कर सके, ताकि उपस्थित दूसरे विश्वासी भी उन्नति पा सकें। (1 कुरिं. 14:12-13)

16. हमारे मन से बढ़कर मसीह के मन को लाने की कुँजी

याकूब 1:26; 3:1। याकूब सिखाता है कि जीभ मनुष्य का "नियंत्रण केन्द्र" है। यह जहाज के पतवार, और घोड़े के मुँह में लगाम के समान है (याकूब 1:26; 3:1-18)। जब हम अपना नियंत्रण केन्द्र पवित्र आत्मा को देते हैं तो वह हमारी बातचीत को मसीह के वश में करता है। अन्य भाषा के वरदान में हमारा समर्पण जीवन के मीठे पानी, यानि, परमेश्वर के शब्दों का छूटना है। इस वरदान के प्रतिदिन के इस्तेमाल से हम में नकारात्मक और आलोचनात्मक बातों का सामना करने की शक्ति होगी। जिसे याकूब "खारा जल" कहता है (याकूब 3:11)। यह हम में मसीह के मन को लाने का साधन है, ताकि हम उन्हीं बातों को बोलें जो हमारी और सुननेवालों की उन्नति के लिए लाभदायक हों (इफि. 4:29)। अन्य भाषाओं में बोलना हमारे मन को शुद्ध और नया करता है, जो हमारी बातचीत और जीने के तरीके का स्रोत है।

अध्याय 7 आत्मा के वरदान

महान आत्मिक बेदारी जिसने पिछले दशकों में विश्व पर गहरा प्रभाव डाला है अकसर "कैरिस्मेटिक रीन्यूवल" नाम से जानी गई है। इस वाक्यांश को इस बेदारी के एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलू को वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया है, जो अलौकिक प्रदर्शन का कलीसिया को दोबारा दिया जाना है जो नए नियम की कलीसिया में कितनी शक्तिशाली रूप से प्रकट थीं। ये प्रदर्शन या आत्मा के वरदान, कई शताब्दियों से कलीसिया से अनुपस्थित रहे हैं। पिछले पचास वर्षों से परमेश्वर इन लक्षणों को पुनःस्थापित कर रहा है और पिछले बीस वर्षों में इस पुनःस्थापन कार्यक्रम की गति बहुत बढ़ी है। कैरिस्मेटिक नवीनीकरण मसीही कलीसिया के हर भाग में घुस पड़ा है, और मसीह की देह में नया जीवन और सामर्थ्य लाया है। इन आशीषों की पुनःस्थापना इन महत्त्वपूर्ण विषयों को सिखाने की विशाल आवश्यकता को पैदा करता है।
पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया से कहा, "हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अनजान रहो" (1 कुरिं. 12:1)। निश्चय ही परमेश्वर नहीं चाहता कि आज के विश्वासी भी अनजान रहें।

आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ (इफि. 5:18)

यीशु ने भविष्यवाणी की कि जब पवित्र आत्मा आएगा, तो विश्वासियों के पास उसके गवाह होने के लिए सामर्थ्य होगा (प्रेरितों 1:8)। उसके कहने का तात्पर्य यह था कि हम इस संसार में उसके प्रतिनिधि बनने के लिए सामर्थ्य पाएँगे। उसके समान जीने और कार्य करने के लिए सामर्थ्य। इसमें "उसके समान बनने" का सामर्थ्य और "उसके समान कार्य करने" का सामर्थ्य सम्मिलित है।

हमारी मानवीय पहचान में दो प्रमुख घटक समाविष्ट होते हैं:

1. चरित्र
2. व्यक्तित्व

चरित्र हमारे अस्तित्व का निष्क्रिय पहलू है - हम क्या हैं !
व्यक्तित्व हमारे अस्तित्व का सक्रिय पहलू है -हम क्या करते हैं !

मसीह का चरित्र हमारे अन्दर उसके आत्मा द्वारा बनाया जाता है और "आत्मा का फल" कहलाता है (गला. 5:22-23)।

- यह हम में व्यक्तिगत रूप से व्यक्त होता है: प्रेम, आनन्द और शान्ति द्वारा
- यह दूसरों के साथ हमारे सम्बंधों में व्यक्त होता है: धीरज, कृपा और भलाई में
- यह परमेश्वर के साथ हमारे सम्बंध में प्रकट होता है: विश्वास, नम्रता और संयम में

जैसे हम अपने भीतर पवित्र आत्मा की ओर निरन्तर समर्पित होते रहते हैं, उसका चरित्र हमारे अन्दर बनने लगता है और उन विशेषताओं के द्वारा, जिनका जिक्र अभी हमने किया, अर्थात् आत्मा के फल, हम में और हमारे द्वारा व्यक्त होता है (गला. 5:22-23)। यह हमें उसके समान जीने में योग्य बनाने के लिए है। यह हमें यीशु के समान परमेश्वर, दूसरों और अपने के साथ सम्बंध में रहने के योग्य बनाता है।

परन्तु परमेश्वर चाहता है कि हम यीशु के समान कार्य भी करें और इसे पूरा करने के लिए उसने हमें अपना आत्मा और उसके आत्मा की अभिव्यक्तियाँ (वरदान) भी दी हैं।

बाइबल में अनेक आत्मा के वरदानों का वर्णन है। वे मुख्य रूप से रोमियों 12:3-8; 1 कुरिन्थियों 12:8-10; 28-30; इफिसियों 4:11 में पाए जाते हैं।

इस संक्षिप्त अध्ययन के लिए हम अपने आप को 1 कुरिं. 12:8-10 में दिए नौ अभिव्यक्तियों तक ही सीमित करेंगे।
अपने अध्ययन को सरल बनाने के लिए हम इन्हें तीन श्रेणियों बाँटेंगे:

1. **वाणी के वरदान (उच्चारण)**
   - अनेक प्रकार की भाषा
   - भाषाओं का अर्थ
   - भविष्यद्वाणी

2. **प्रकाशन के वरदान (आत्मा में "देखना")**
   - बुद्धि की बातें
   - ज्ञान की बातें
   - आत्माओं की परख

3. **योग्यता के वरदान (परमेश्वर के कार्य "करना")**
   - विश्वास
   - चंगा करने का वरदान
   - सामर्थ्य के काम करने की शक्ति

मैं ने अकसर किसी को बोलते सुना है कि उसके "पास" एक खास वरदान है। उदाहरणार्थ, वे कहते हैं, "मेरे पास चंगा करने का वरदान है", "मैरे पास भाषाओं का अर्थ बताने का वरदान है", "मेरे पास भविष्यद्वाणी का वरदान है"।
मैं व्यक्तिगत रूप से नहीं मानता कि किसी के "पास" आत्मा का कोई वरदान होता है। (1 कुरिं. 12:11)। ऐसा होता है कि जब हम आत्मा से भरे हुए हैं और वह अपनी उपस्थिति किसी भी तरीके से और किसी भी समय जैसा वह चाहता है व्यक्त कर सकता है। वह ऐसा हमारे सहयोग के साथ, किसी भी अभिव्यक्ति के द्वारा जैसा वह चाहता है, करेगा। हमें अपने आप को या पवित्र आत्मा को किसी विशेष अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं करना है जो हम सोचते हैं हमारे "पास" है। हमें आत्मा के लिए सब समय उपलब्ध रहना चाहिए ताकि वह जैसा चाहता है और जैसा परिस्थिति के अनुसार वह उचित पाता है, वैसा किसी भी तरीके से हमारे द्वारा व्यक्त कर सके।

आत्मा ऐसे वरदानों के संचालन में किसे इस्तेमाल करेगा?

1. देह का कोई भी आत्मा से भरा हुआ सदस्य इस्तेमाल हो सकता है। 1 कुरिं. 12:7,11; 14:26,31
   कोई भी सदस्य किसी भी वरदान में पीछे नहीं रहना चाहिए। 1 कुरिं. 1:7
2. हमें निरन्तर आत्मा से भरते रहना चाहिए। इफि. 5:18
3. हम में इस प्रकार इस्तेमाल होने की इच्छा होनी चाहिए। 1 कुरिं. 12:31
4. हमें वरदानों के संचालन के विषय में अनजान नहीं रहना चाहिए। 1कुरिं. 12:1
5. हमें आत्मिक वरदानों की धुन में रहना चाहिए। 1 कुरिं. 14:1
6. हमें देह के लिए असली प्रेम से प्रेरित होना चाहिए। 1 कुरिं. 13। देह की उन्नति की शुद्ध इच्छा। 1 कुरिं. 14:12।
7. हमें वरदानों के संचालन में श्रेष्ठ होने का प्रयास करना चाहिए। 1 कुरिं. 14:12

वाणी के वरदानों का प्रचलन

1. <u>अन्य भाषाओं का वरदान</u> (1 **कुरिं.** 12:10)

आत्मा की इस अभिव्यक्ति के दो कार्य हैं। पहला, हमारे व्यक्तिगत उपयोग के लिए "भक्तिपूर्ण अन्य भाषाओं" के रूप में, जिसका उद्देश्य इस्तेमाल कर रहे व्यक्ति की उन्नति है। दूसरा, अन्य भाषाओं के वरदान के रूप में जो दूसरों के साथ सभा में कार्य करता है और भाषाओं का अर्थ बताने के साथी वरदान के संयोजन में सारी कलीसिया की, न कि व्यक्तिगत की, उन्नति के लिए इस्तेमाल होता है।

एक सार्वजनिक सभा में अन्य भाषाओं के इस्तेमाल के लिए मार्गदर्शन

1. इसका उपयोग सदा प्रेम से प्रेरित होना चाहिए (1 कुरिं. 13:1)।
2. सदा अर्थ बताने के साथ उपयोग होना चाहिए (1 कुरिं. 14:5,13,28)।
3. एक सभा में तीन उच्चारण तक ही सीमित रखना चाहिए (1 कुरिं. 14:27)।

कोई भी विश्वासी जिसने कभी अन्य भाषा में बोला है, अन्य भाषा के उच्चारण के द्वारा देह की उन्नति करने की क्षमता रखता है। इसलिए आपको ऐसा करने के लिए किसी भी समय तैयार रहना चाहिए। आत्मा की ओर समर्पित होने का प्रयास करो। अपने मन में शान्त और पवित्र आत्मा के लिए खुला रहो। एक विशेष सभा में आत्मा आपके द्वारा क्या करना या कहना चाहता है, उसकी ओर एक संवेदनशीलता विकसित करो। जब पवित्र आत्मा आपके द्वारा एक भाषा का उच्चारण लाना चाहता है, तो आपके असली में बोलने से पहले, आपके अन्दर कुछ समय तक इसका एक भीतरी ज्ञान रहेगा। यह अकसर आपकी आत्मा में एक हलकी उत्तेजना, और बढ़ती हुई प्रत्याशा होती है। यह एक गहरे ज्ञान में विकसित होता है कि आत्मा एक उच्चारण लाने वाला है और कि यह उच्चारण आपके अन्दर है।

आपको तुरन्त बोलना आवश्यक नहीं है। भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ता के वश में होती है (1 कुरिं. 14:32)। आप बोलने के सही समय का शान्ति से प्रतीक्षा कर सकते हैं। पवित्र आत्मा उस समय आपको स्पष्ट रूप से जताएगा। जो पहले सभा में हो रहा है उसे वह टोकेगा नहीं। वह कभी भी गड़बड़ी पैदा नहीं करेगा, क्योंकि वह शान्ति का परमेश्वर है (1 कुरिं. 14:33)। शान्त और नरम बने रहो और जब आत्मा प्रेरित करे, तब सामान्य और स्पष्ट श्रव्य आवाज में बोलो। आपको चिल्लाने की आवश्यकता नहीं है। आप एक सामान्य आवाज, सही रफ्तार से, और सब समय आत्मा के साथ जो आपको उच्चारण दे रहा है, प्रवाहित होने का प्रयास करते हुए बोल सकते हैं। जब उच्चारण हो चुके, तब सब को अर्थ के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा करनी चाहिए। अकसर

किसी दूसरे विश्वासी को अर्थ दिया जाएगा परन्तु जब ऐसा नहीं होता है, तब जिसने अन्य भाषा में बोला है, उसे शान्ति से प्रार्थना करनी चाहिए कि उसे भी अर्थ दिया जाए (1 कुरिं. 14:13)।

2. <u>अन्य भाषाओं का अर्थ</u> (1 कुरिं. 12:10)

यह एक सभा में अन्य भाषाओं के प्रचलन का साथी वरदान है, और सदा उस वरदान के संयोजन में इस्तेमाल होता है। यह अन्य भाषा के एक उच्चारण का मण्डली के स्वाभाविक भाषा में अर्थ बताने की पवित्र आत्मा द्वारा अलौकिक योग्यता है। यह अनुवाद का वरदान नहीं है। अर्थ बतानेवाला उच्चारण की भाषा को जो दी गई थी, समझता नहीं है। अर्थ भी उतना ही अलौकिक है जितना उच्चारण था। फिर भी, आत्मा के इस वरदान के द्वारा, सम्बंधित विश्वासी उच्चारण को मण्डली के लिए बोधगम्य व्यक्त कर सकता है ताकि वे इसे पाएँ और इससे उन्नति करें।

यह वरदान कौन इस्तेमाल कर सकता है?

अन्य भाषाओं का अर्थ जैसा आत्मा चाहता है वैसा दिया जाता है (1 कुरिं. 12:11)। कोई भी आत्मा से भरा हुआ विश्वासी इस वरदान को व्यक्त करने के लिए चुना और अभिषिक्त किया जा सकता है। यहाँ भी, हमें <u>पवित्र आत्मा की ओर संवेदनशीलता</u> विकसित करने की आवश्यकता है। जबकि आप विश्वासियों की सभा में परमेश्वर की आराधना कर रहे हो, तो अपना मन और हृदय पवित्र आत्मा के लिए खुले रखो। प्रायः आप पहले से महसूस करेंगे कि अन्य भाषा में एक उच्चारण होने वाला है और कि परमेश्वर आपको उसका अर्थ दे रहा है। जब वह उच्चारण आए, तो उसके समाप्त होने तक शान्त बने रहो। सम्भव है जब आप बोलना आरम्भ करें, तो प्रारंभ में आपके पास अर्थ का एक वाक्य और जो आनेवाला है उसका एक संक्षिप्त विचार ही हो। आत्मा के दूसरे सब वरदानों के समान, यह भी विश्वास से ही व्यक्त होता है। जैसे आप जो आत्मा आपको दे रहा है, बोलना आरम्भ करें, तो एक सामान्य, स्पष्ट, श्रव्य आवाज में बोलो। ध्यान दो कि "विश्वास के परिणाम" के बाहर न जाओ (रोमियों 12:6)। किसी व्यक्तिगत विचार, भावना या मत को अर्थ में घुसने से कठोरता से रोकें। आपके विचार तटस्थ हों, और आपका मन पवित्र आत्मा के प्रवाहित होने के लिए एक स्पष्ट माध्यम हो। जब अर्थ पूरा हो जाए और आपको महसूस हो कि पवित्र आत्मा जो कहना चाहता था समाप्त हो गया है, तब रुक जाओ ! और अर्थ का अर्थ बताने की कोशिश मत करो। दूसरे शब्दों में, लोगों को बाताना आरम्भ मत करो कि आप क्या सोचते हो अर्थ का अर्थ है। उसे लोगों पर छोड़ दो। अर्थ बोलने के बाद चुप हो जाओ जबकि जो बैठे हैं उच्चारण को परखते हैं। यदि कोई विश्वासी हैं जिन्हें उच्चारण के वरदानों में नियमित इस्तेमाल किया जाता है, तो उन्हें परखना चाहिए कि बोले गए शब्द परमेश्वर की ओर से हैं। परखने का स्तर वैसा ही है जिसे हम भविष्यद्वाणियाँ परखने में इस्तेमाल करते हैं, जो अगली अभिव्यक्ति है जिस पर अब हम विचार करेंगे।

3. <u>भविष्यद्वाणी का वरदान</u> – "प्रेरित उच्चारण" (1 कुरिं. 12:10)

भविष्यद्वाणी का सरल अर्थ है "प्रेरित शब्दों का उच्चारण करना"। 1 कुरिं. 14:31 के अनुसार सब विश्वासी, जैसा आत्मा चाहता है, इस वरदान का कभी न कभी प्रयोग कर सकते हैं। सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हैं, परन्तु एक सभा में तीन से अधिक नहीं (1 कुरिं. 14:29-33)।

ऐसी भविष्यद्वाणी के उच्चारण का उद्देश्य है:

- अ. कलीसिया की उन्नति करना। इसका अर्थ है विश्वासियों का निमार्ण करना और उनका बल बढ़ाना।
- आ. उन्हें उपदेश देना। विश्वासियों को प्रेरित करना। उनका सामना करना और चुनौती देना।
- इ. शान्ति देना। प्रोत्साहन, शान्ति के शब्द बोलना।
  (कभी-कभी एक भविष्यद्वाणी में तीनों तत्त्व सम्मिलित हो सकते हैं।)

भविष्यद्वाणी के विषय में तीन भ्रम

1. इसे प्रचार से उलझाना नहीं चाहिए

आजकल अनेक लोग जोर देते हैं कि भविष्यद्वाणी का वरदान अच्छा प्रचार करने की योग्यता है। परन्तु, प्रचार करना और शिक्षा देना अकसर, लोगों को समझ दिलाने के लिए, परमेश्वर के वचन का प्रार्थनाशील मनन और व्यक्ति के मन और आत्मा की सुविचारित तैयारी है। तुलना में, भविष्यद्वाणी का वरदान सुविचारित अध्ययन का परिणाम नहीं है। यह आत्मा द्वारा सहज बोलना है।

2. भविष्यद्वाणी का वरदान भविष्य बताने के लिए नहीं है

यह वरदान वर्तमान से सम्बंधित है, न कि भविष्य बताने के लिए है। इसका उद्देश्य उन्नति, उपदेश और शान्ति की बातें करना है और भविष्य की घटनाओं को बताने का प्रयास करना नहीं है। जब कभी भी भविष्यद्वाणी में भविष्य बताने का एक तत्त्व होता है, तो इसका अर्थ है कि इसके साथ एक और वरदान (ज्ञान या बुद्धि का वचन) कार्य कर रहा है।

3. यह वरदान व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए नहीं है

यदि हमें व्यक्तिगत मार्गदर्शन की आवश्यकता है तो हमें स्वयं यीशु से पूछना चाहिए (याकूब 1:5)। हम ऐसा मार्गदर्शन परमेश्वर के वचन, बाइबल के पन्नों में खोज सकते हैं। यदि एक भविष्यद्वाणी भविष्य के लिए निर्देशों के साथ आती है तो यह केवल उसी की पुष्टि करेगी जो परमेश्वर ने पहले हमें व्यक्तिगत बताया है।

भविष्यद्वाणी के वरदान के विषय में बाइबल की शिक्षा

1. यह मनुष्यों से अलौकिक रूप से बोलने के लिए है (1 कुरिं. 14:3)।
   इस प्रकार प्रभु का मन कलीसिया को प्रकट करता है। भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की ओर से विश्वासियों की उन्नति, उपदेश और शान्ति के लिए बोल रहा है।
2. भविष्यद्वाणी को अर्थ की आवश्यकता नहीं है।
   अन्य भाषाओं के वरदान को अर्थ बताने की आवश्यकता है, भविष्यद्वाणी को नहीं।
3. भविष्यद्वाणी अज्ञानी को कायल करती है (1कुरिं. 14:24-25)।
   भविष्यद्वाणी के वरदान के प्रचलन के द्वारा:-
   - सब उसे दोषी ठहरा देंगे।
   - सब उसे परख लेंगे।
   - उसके मन के भेद प्रकट हो जाएँगे।
   - वह मुँह के बल दीनता से परमेश्वर के सामने गिरेगा।
   - मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।
   - परमेश्वर को दण्डवत् करेगा।
4. भविष्यद्वाणी विश्वासी के सीखने के लिए कार्य करती है
   1 कुरिं. 14:31। यह उस शिक्षा की बात नहीं कर रहा है जो साधारणतः एक शिक्षक की सेवकाई के द्वारा परमेश्वर के वचन की व्याख्या करने से आती है। बल्कि यह आत्मा के अभिषेक से आत्मिक सच्चाइयों का सीखना है। ऐसी शिक्षाएँ इससे पहले कि वे आत्मसात् की जाएँ, परमेश्वर के लिखित वचन के द्वारा परखी जानी चाहिएँ।

5. सब को इस वरदान की इच्छा और लालच करना चाहिए
   1 कुरिं. 14:1,39। क्योंकि ऐसे एक साधन से हम परमेश्वर द्वारा उसके लोगों के प्रोत्साहन के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

6. वरदान प्रचालन कर रहा व्यक्ति इसके उपयोग या दुरूपयोग के लिए जिम्मेवार है
   1 कुरिं. 14:32। भविष्यद्वाणी कोई अनियंत्रित उच्चारण नहीं है। न ही भविष्यद्वक्ता किसी प्रकार के बेसुध या मन नियंत्रण के अधीन है। वह अपनी इच्छा के विरुद्ध न तो कुछ कर रहा है और न ही कुछ कह रहा है। भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है। यह भविष्यद्वक्ता है जो परमेश्वर की ओर से बोल रहा है, और सारे समय में वह जो कुछ भी कह रहा है उसके नियंत्रण में है।

7. क्योंकि मानवीय तत्त्व भ्रमशील है, भविष्यद्वाणी परखी जानी चाहिए।
   1 कुरिं. 14:29

8. हम भविष्यद्वाणी को किस प्रकार परखेंगे ?
   यह जानने के लिए कि क्या यह एक असली, आत्मा द्वारा प्रेरित भविष्यद्वाणी है:

अ. यह परमेश्वर के लिखित वचन का कभी भी खण्डन नहीं करेगी।
इसलिए हर भविष्यद्वाणी को परमेश्वर के वचन से परखा जाना चाहिए। परमेश्वर आपको भविष्यद्वाणी द्वारा ऐसा कुछ भी करने को नहीं कहेगा जो उसका वचन मना करता है।

आ. यह हमेशा यीशु मसीह की महिमा करेगी, उसे बदनाम नहीं करेगी।

इ. यह विश्वासियों की उन्नति, उपदेश और शान्ति देगी।
यह उन्हें कभी भी उलझन में, दुखी और अनिश्चित नहीं छोड़ेगी।

ई. यह अधिकाँश उपस्थित विश्वासियों के हृदय में "प्रमाण" पाएगी।
विशेषकर अधिक परिपक्व विश्वासियों में, जिन्हें उच्चारण के वरदानों में प्रायः इस्तेमाल किया जाता है।

उ. यह सभा के अभिप्राय को तोड़ेगी नहीं, हालाँकि यह इसकी दिशा को बदल सकती है।

ऊ. यदि इसमें एक भविष्य की बात है, तो यह पूरी होगी।

ए. फल से परखना (मत्ती 7:16)।
झूठे भविष्यद्वक्ताओं के बारे में बात करते हुए, यीशु ने कहा, "उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।" हमें कोई भी भविष्यद्वाणी जो ऐसे व्यक्ति से आती है जिसका जीवन और आचरण मसीह के नाम को एक कलंक है, ठुकरा देनी चाहिए।

भविष्यद्वाणी कैसे करें:

- शान्त हो जाओ। घोर प्रयास मत करो।
- अपनी आत्मा में शान्ति से प्रभु की प्रतीक्षा करो। अपना मन अपने अन्दर उसकी आवाज के लिए खुला रखो।
- जब आप अपनी आत्मा में आत्मा की प्रेरणा अनुभव करने लगो, तो अपने आप को उसके प्रवाहित होने के लिए एक नए माध्यम के रूप में समर्पित करो। याद रखो यह वरदान विश्वास द्वारा कार्य करता है।
- जो कुछ परमेश्वर देता है बोलने लगो। इसे सरल रखो।
- जैसे आप बोलते जा रहे हो, शान्ति से बाकी के संदेश के लिए उसकी प्रतीक्षा करते रहो।
- अपने विश्वास के परिमाण के बाहर भविष्यद्वाणी मत करो।
- जान लो कब आत्मा ने बोलना बन्द कर दिया है और रुक जाओ !

4. <u>ज्ञान का वचन</u> (1 कुरिं. 12:8)

परिभाषा: ज्ञान का वचन परमेश्वर के ज्ञान का एक अंश या एक छोटा भाग है, जो पवित्र आत्मा व्यक्ति को देता है।
यह पवित्र आत्मा के अलौकिक प्रकटीकरण के द्वारा हमें कुछ तथ्य और जानकारी देता है। यह जानकारी पहले व्यक्ति को पता नहीं थी और किसी दूसरे साधन से नहीं पाई जा सकती थी। यह अलौकिक रूप से दी गई है।

नोटः यह ज्ञान का "वचन" है, ज्ञान का वरदान नहीं है। यह अकसर धीमे से व्यक्ति के मन में आता है, जैसे अधिकाँश विचार आते हैं। फिर भी, यह जानकारी और ज्ञान है जो किसी स्वाभाविक साधन से नहीं पाया जा सकता था। यह एक व्यक्ति, घटना, या परिस्थिति के विषय में कुछ ज्ञान है जिसे अवलोकन या अनुमिति के स्वाभाविक साधनों से कभी नहीं जाना जा सकता था। यह अकसर इतने सहज भाव से आता है कि यह एक स्वाभाविक विचार लगेगा, परन्तु क्योंकि यह एक ऐसी जानकारी लाता है जो स्वाभाविक रूप से नहीं निकाली या जानी जा सकती थी, संकेत देता है कि यह आत्मा द्वारा दिया गया ज्ञान का वचन है।

बाइबल से उदाहरण:

अ. यीशु की सेवकाई में:
यूहन्ना 1:47-50। यीशु नतनएल से मिलने से पहले से उसके बारे में कुछ तथ्य जानता था।
यूहन्ना 4:18-20। यीशु सामरी स्त्री के बारे में अनेक सच्चाइयाँ जानता था हालाँकि उसने उसे पहले कभी नहीं देखा था। वह स्त्री अपने पूर्व और वर्तमान के जीवन के विषय में उसके ज्ञान की यथार्थता से चकित रह गई। इस ज्ञान के वचन के प्रयोग ने एक बहुत बड़ी बेदारी लाई।

आ. प्रारंभिक कलीसिया में

प्रेरितों 9:10-20। हनन्याह को शाऊल के बारे में बड़ी विस्तार में विशेष जानकारी मिली, हालाँकि वह उससे पहले कभी नहीं मिला था। उसे वह गली और घर जहाँ शाऊल टिका हुआ था, ठीक ठीक पता था। वह जानता था कि उस समय वह प्रार्थना कर रहा है और कि जब वह उस पर अपने हाथ रखेगा तो शाऊल अपनी दृष्टि पाएगा।

इ. पुराने नियम से उदाहरण

2 शमूएल 12:1-14। परमेश्वर ने दाऊद के पाप के विषय में नातान नबी को कुछ तथ्य दिखाए थे।

भिन्नता: एक ज्ञान का वचन मनुष्य के ज्ञान से भिन्न है जो स्वाभाविक साधनों से पाया जाता है। यह परमेश्वर द्वारा पवित्र किया गया मनुष्य का ज्ञान नहीं है। ज्ञान का वचन बुद्धि की विद्या से नहीं मिलता है। ऐसा ज्ञान पुस्तकों के अध्ययन या किसी कालेज या विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने से नहीं प्राप्त होता है। और न ही यह बाइबल का अध्ययन या समझने या अर्थ निकालने की योग्यता है।

बाइबल में इसका नियोजन:

अ. पाप उघाड़ने के लिए। 2 शमू. 12:1-10; प्रेरितों 5:1-11

आ. लोगों को परमेश्वर के पास लाने के लिए। यूहन्ना 1:47-50; 4:18-20

इ. मार्गदर्शन और दिशा देने के लिए। प्रेरितों 9:11

ई. निराशा के समयों में प्रोत्साहन लाने के लिए। 1 राजा 19:9

उ. भविष्य की घटनाओं का ज्ञान देने के लिए। यूहन्ना 11:11-14

ऊ. गुप्त बातों को प्रकट करने के लिए। 1 शमूएल 10:22

इस वरदान का संचालन:

अ. यह स्वभाव में अलौकिक है - तर्क या अनुमिति, विवेचन, वगैरा से नहीं; न ही स्वाभाविक ज्ञानेंद्रियों से, परन्तु पवित्र आत्मा के अलौकिक प्रकटीकरण से प्राप्त होता है।

आ. यह विश्वास से कार्य करता है - प्रकटीकरण पानेवाला व्यक्ति ऐसा विश्वास से करता है।

इ. प्रकटीकरण व्यक्ति के आत्मा में आता है - बुद्धि या भावनाओं में नहीं।

ई. यह तत्त्वतः एक मौखिक वरदान नहीं है (प्रेरितों 9:11)। यह व्यक्ति के आत्मा में धीमें से और अश्रव्य आवाज में प्राप्त होता है।

उ. यह जब दूसरों को बताया जाता है तो मौखिक बनता है (यूहन्ना 1:47; 4:18)।

1. कोई भी आत्मा से परिपूर्ण मसीही जो परमेश्वर की सुनने का इच्छुक है, इस वरदान को प्रयोग में ला सकता है।
2. सलाह की सेवकाई में यह एक अनिवार्य सम्पत्ति है।
3. अपनी सेवकाई में इस अभिव्यक्ति के निरन्तर कार्य के लिए आज्ञाकारी कार्य और प्रतिक्रिया अत्यावश्यक हैं।
4. बुद्धि का वचन प्रायः इसके संयोजन में प्रकट होता है। यह जानने के लिए कि ज्ञान के वचन के विषय में क्या करना है और इसे कैसे ठीक-ठीक और बुद्धिमानी से इस्तेमाल करना है, परमेश्वर द्वारा दी गई बुद्धि है।

5. **बुद्धि का वचन** (1 कुरिं. 12:8)

परिचय

यह वरदान सूची में पहले स्थान पर है क्योंकि यह इतना महत्त्वपूर्ण जो है। यह हमें ईश्वरीय बुद्धि के साथ बोलने और कार्य करने में समर्थ करता है और दूसरे वरदानों का सही उपयोग और विनियोग निश्चित करता है। जब बुद्धि का वचन अनुपस्थित होता है तो दूसरे वरदान गलत तरीके से इस्तेमाल किए जा सकते हैं जो अकसर बहुत उलझनें पैदा करता है।

परिभाषा

बुद्धि का वचन पवित्र आत्मा द्वारा अलौकिक रूप से प्रदान किया गया ईश्वरीय बुद्धि का अंश है। एक निश्चित स्थिति में क्या करना या कहना चाहिए, जानने के लिए यह तात्कालिक बुद्धि मुहैया कराता है।

परमेश्वर प्रायः इसे ज्ञान के वचन के साथ में देता है ताकि विश्वासियों को पता हो कि ज्ञान का वचन ठीक ठीक कैसे इस्तेमाल करना है। परमेश्वर ने हनन्याह को, ज्ञान के वचन, के द्वारा शाऊल का पता और स्थिति के बारे में बताया। उसने उसे, बुद्धि के वचन, के द्वारा यह भी बताया कि उस स्थिति में उसे क्या करना चाहिए।
नोटः यह बुद्धि का वचन है, बुद्धि का वरदान **नहीं** है।

उदाहरण

एक व्यक्ति कानूनी समस्या में पड़ जाता है और अपने वकील से सलाह लेता है। वकील अपने मुवक्किल को अपनी सारी बुद्धि और ज्ञान नहीं देता है। वह अपने ज्ञान का वचन, या अंश निकालता है जो उसके मुवक्किल की आवश्यकताओं में लागू हेता है, और उसे देता है। उसी प्रकार, परमेश्वर जो सबकुछ जानता है, बुद्धि के अपने असीम भण्डार में से वह अंश निकालता है जिसे उसके एक बच्चे को आवश्यकता है। वह इसे अपने आत्मा के द्वारा भेजता है।

भिन्नता

बुद्धि का वचन

- यह स्वाभाविक बुद्धि नहीं है
- यह शैक्षिक उपलब्धि से मिली बुद्धि नहीं है।
- यह बाइबल को समझने की बुद्धि भी नहीं है।
- यह स्वभाव में अलौकिक है।
- यह जैसा पवित्र आत्मा चाहता है देता है (1 कुरिं. 12:11)
- यह एक विशेष आवश्यकता या स्थिति के लिए दी जाती है।
- यह बुद्धि का वरदान नहीं, बल्कि बुद्धि का वचन है।

बाइबल के कुछ उदाहरण

अ. लूका 4:1-3। यीशु की जंगल में परीक्षा होती है। यीशु ने शैतान को जो उत्तर दिए पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान किए बुद्धि के वचन थे।
आ. लूका 20:22-26। शास्त्रियों ने यीशु को फँसाने की कोशिश की; परन्तु आत्मा द्वारा दिया बुद्धि के वचन ने सबको चकरा दिया।
इ. यूहन्ना 8:3-11। एक बार फिर शास्त्रियों और फरीसियों ने यीशु को फँसाने की कोशिश की, परन्तु उसके विवेकी शब्दों और स्थिति के सम्भालने से उसके विरोधी चकरा गए।
ई. प्रेरितों 6:15। कलीसिया के प्रबंध के लिए बुद्धि देना।
उ. प्रेरितों 15:28। एक कलीसिया के संकट को हल करना।
ऊ. प्रेरितों 27:23-24। पौलुस को स्थिति पर नियंत्रण मिलता है और अनेक लोगों का उद्धार होता है।

नोचः बुद्धि के वचन की मसीह से सब चेलों को प्रतिज्ञा की गई है। "इसलिए अपने अपने मन में ठान रखो कि हम पहले से उत्तर देने की चिन्ता न करेंगे। क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूँगा कि तुम्हारे सब विरोधी सामना या खण्डन न कर सकेंगे" (लूका 21:14-15)।
अवलोकनः बुद्धि का वचन तत्त्वतः एक मौखिक वरदान नहीं है, बल्कि प्रकटीकरण का एक वरदान है। यह धीमे से अपने आत्मा में प्राप्त किया जाता है। यह तब सामने आता है जब सलाह, प्रचार या सुसमाचार प्रचार में इस्तेमाल होता है या जब इस पर कार्य किया जाता है।

6. <u>आत्माओं की परख</u> (1 **कुरिं.** 12:10)

आत्माओं की परख एक अधिक महत्त्वपूर्ण विषय है जितना हम इसे समझते हैं। यदि यह आत्मिक वरदान इसके प्रतिरूप, दुष्टात्माओं को निकालना के साथ प्रायः इस्तेमाल किया जाता तो बहुत सी समस्याएँ जिनका हम आज सामना करते हैं बहुत कम हो गई होतीं।
आत्माओं की परख प्रकाशन के वरदानों का तीसरा वरदान है; बुद्धि का वचन और ज्ञान का वचन दूसरो दो हैं। यह पवित्र आत्मा द्वारा दी गई ईश्वरीय योग्यता है ताकि हम आत्मिक स्थानों में प्रवेश करके शैतान की आत्मा (दुष्टात्माएँ), परमेश्वर का आत्मा,

और मनुष्य की आत्मा में भेद पता लग सकें। इसके द्वारा हम कुछ कार्यों, शिक्षा, परिस्थितियों, वगैरा के प्रारंभ का पता लगा सकते हैं जो आत्मिक प्राणियों द्वारा प्रेरित होती हैं।

यह वरदान दूसरे दो प्रकाशन के वरदानों से अधिक सीमित होता है। इस मामले में दिया प्रकाशन विचाराधीन व्यवहार के प्रारंभ तक ही सीमित होता है। फिर भी आत्माओं की परख उतना ही अलौकिक है जितने दूसरे आठ वरदान हैं। यह कलीसिया को वह जानकारी देता है जो किसी दूसरे स्रोत से नहीं मिलती।

अ. वरदान का कार्य

आत्माओं की परख का वरदान हमें आत्माओं के स्वभाव और कार्यों की एक अलौकिक समझ प्रदान करता है। यह हमें आत्मिक कार्य के ईश्वरीय, शैतानी और मानवीय स्रोत का भेद पता लगाने में समर्थ करता है और आत्माओं के स्वभाव को प्रकट करता है। शैतान के कार्यों और परमेश्वर के आत्मा के कार्यों में भेद जानना सदा आसान नहीं होता है। शैतान सदा पवित्र आत्मा के कार्यों की नकल करने को कोशिश करता है। शैतान को धोखेबाज, झूठ का पिता, और साँप कहा जाता है। ये सब नाम धूर्त, कपट प्रकट करते हैं जिन्हें जब उससे हो सके बुराई फैलाने के लिए इस्तेमाल करता है। अनेक बार उसकी नकल इतनी उचित लगती है कि कोई भी धोखा खा जाएगा, यदि कोई उपस्थित न हो जो आत्माओं की परख के वरदान में कार्य करता है। यदि दुष्टात्माओं के काम बुराई और दुष्टता से सदा इतने प्रत्यक्ष बदबू मार रहे होते जैसा हम कल्पना करते हैं, तब तो आत्मा के इस वरदान के होने का कोई कारण नहीं होता।

प्रेरितों 16 के भावी कहनेवाली लड़की के विवरण में, पौलुस ने आत्मा को चुनौती दी जो परमेश्वर के दूसरे सेवकों को सरलता से धोखा दे सकती थी। लड़की एक बिलकुल सच्ची बात कह रही थी जब उसने कहा, "ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं", परन्तु जो आत्मा बोल रही थी दुष्टात्मा थी। एक दुष्टात्मा प्रेरितों को इस प्रकार विख्यात क्यों करेगी? क्योंकि ऐसे व्यक्ति के उनके पीछे चलने से सुसमाचार या इसके सेवकों को कोई श्रेय नहीं मिलेगा और बेशक अनेक लोगों को सोचने पर मजबूर करेगा कि वह उनमें से एक है।

आ. वरदान का प्रचालन और आज उसकी आवश्यकता

आजकल आत्माओं की परख का वरदान संसार भर में अपनी बेदारी अनुभव कर रहा है। वर्तमान बेदारी में इसे अनेक परमेश्वर के सेवकों की सेवकाई में कार्य करते देखा जा सकता है। यदि कलीसिया अपना सम्पूर्ण मिशन पूरा करने वाली है और शैतान के कार्यों को नष्ट करने वाली है तो यह अति आवश्यक है कि यह वरदान कार्य करे। आज भी संसार में उतनी ही दुष्टात्माएँ हैं जितनी उस समय थीं जब यीशु पृथ्वी पर थे और प्रारंभिक कलीसिया के दिनों में भी थीं। उनके उद्देश्य उतने ही बुरे हैं हालाँकि उनके काम आज प्रायः अधिक विवेकी और परिष्कृत हैं। ये अलौकिक वरदान विशेषकर उन मसीही सेवकों के लिए आवश्यक हैं जो उन देशों में काम करता हैं जहाँ प्रेतात्मा-पूजा, शैतान-पूजा और झूठी भक्ति के तरीके भरपूर हैं।

इ. आत्माओं की परख का वरदान कैसे कार्य करता है

इस वरदान का पहला और सबसे प्रत्यक्ष कार्य लोगों के जीवन या स्थितियों में दुष्टात्माओं की उपस्थिति को प्रकट करना है। परन्तु यह एक भविष्यद्वाणी के संदेश, एक विशेष शिक्षा, या किसी अलौकिक प्रदर्शन के स्रोत का मूल्यांकन करने का कार्य भी करता है। इस वरदान के साथ कार्य करनेवाला व्यक्ति बता सकेगा कि संदेश या कार्य का स्रोत शैतानी, ईश्वरीय या मात्र मानवीय है। यदि स्रोत का पता चलता है कि यह शैतानी है, तो इस वरदान में कार्य करनेवाला व्यक्ति नीचे दी बातें भी प्रकट कर सकेगाः

1. दुष्टात्मा का स्वभाव। उसके कार्य ये हैं, चाहे झूठ बोलना, कमजोरी पैदा करना (जैसे कि कैन्सर, अंधापन, गूँगापन, वगैरा), अशुद्ध व्यवहार, वगैरा।
2. दुष्टात्मा का नाम। यह अकसर दुष्टात्मा के स्वभाव के साथ पता हो जाता है, हालाँकि दुष्टात्मा के सही नाम का प्रकट होना कोई असामान्य बात नहीं है।
3. दुष्टात्मा की संख्या। "सेना", मरियम जिसमें से यीशु ने सात दुष्टात्माएँ निकाली, इनकी घटनाएँ ऐसी ही है। एक व्यक्ति में एक ही समय एक से अधिक दुष्टात्माएँ होना कोई असामान्य बात नहीं है। आत्माओं की परख के वरदान द्वारा ये सब बातें प्रकट होती हैं।
4. उस दुष्टात्मा की शक्ति। अकसर एक दुष्टात्मा के साथ मुठभेड़ के दौरान, आत्माओं की परख में कार्य करनेवाले को प्रकटीकरण के द्वारा पता चल जाएगा कि उन में से कौन सी दुष्टात्मा सबसे शक्तिशाली है और सबसे अधिक अधिकार रखती है।

5. जानकारी प्राप्त करना। अकसर दुष्टात्माएं उस व्यक्ति को जिसने, वे जानती हैं अलौकिक रूप से उनकी उपस्थिति का पता लगा लिया है और जिसके पास उनको निकालने की सामथ्र्य है, उसे अधिकतर जानकारी अपने आप ही दे देंगी। परन्तु, क्योंकि हम कह सकते हैं कि दुष्टात्माएँ झूठ बोल सकती हैं, इसलिए अच्छा होगा यदि जो जानकारी वे देती हैं उसे संदिग्ध मानें और पवित्र आत्मा द्वारा अलौकिक रूप से प्रदान की जानकारी पर भरोसा करें।

ई. आत्माओं की परख में सदा दुष्टात्माओं को निकालने के लिए विश्वास सम्मिलित नहीं होता है

हालाँकि आत्माओं की परख का वरदान प्रभावशाली छुटकारे के लिए अत्यावश्यक है, परन्तु यह अपने आप में पर्याप्त नहीं है। इसे विश्वास और सामर्थ्य के काम करने के वरदानों के साथ मेल में कार्य करना चाहिए। वे लोग जो इन वरदानों के साथ कार्य करते हैं दुष्टात्माओं को निकालने में सबसे अधिक सफल होते हैं।

7. <u>विश्वास का वरदान</u> (1 **कुरिं.** 12:9)

क्योंकि विश्वास भविष्य और अदृश्य से सम्बंधित है - जो चीजें प्रकृति के अनुसार अनुभव नहीं की जाती हैं - विश्वास का वरदान वह विशेष प्रतिभा है जो उसे दी जाती है जिसे विश्वास की एक असाधारण क्षमता प्रयोग में लाने के लिए बुलाया गया है। परमेश्वर उसे अलौकिक रूप से हर संदेह से खाली कर देता है और उसे विशेष विश्वास से भर देता है जो उसे जीवन की हर विरोधी और प्रतिकूल परिस्थिति के बावजूद, परमेश्वर के उद्देश्य पूरे करने का समर्थ देता है। यहोशू का सूर्य और चन्द्रमा को स्थिर रहने के लिए कहता है (यहोशू 10:12-14), सम्भवतः बाइबल का सबसे स्पष्ट उदाहरण है। पहले, वह परमेश्वर से बोला (प्रार्थना की), तब वह विश्वास से सूर्य और चन्द्रमा को बोला। यह एक अनोखे असाधारण विश्वास का अलौकिक प्रदर्शन ही हो सकता है। यह निश्चय ही उस प्रकार का विश्वास नहीं है जो हर दिन हमारे पास रहता है। यह विश्वास का एक विशेष विधान है जो परमेश्वर एक विश्वासी को देता है क्योंकि परमेश्वर जो उस विश्वासी से काम चाहता है उसमें साधारण या सामान्य विश्वास से अधिक की आवश्यकता होती है।

विश्वास के वरदान का सामान्य विश्वास से, जो उद्धार करनेवाले विश्वास के मूल बीज से बढ़ता है जिसे परमेश्वर ने हमारे हृदयों में बोया है (रोमियों 1:17 देखो), अत्यधिक उत्तम कार्य है। सामान्य विश्वास की मात्रा विश्वासी के विकास की अवस्थाओं के अनुसार बदलता है ("थोड़ा विश्वास", "महान विश्वास", वगैरा)। सामान्य विश्वास परमेश्वर के वचन पर मनन करने, जीवन की परिस्थियों में प्रयोग में लाने, वगैरा से बढ़ता है। यह बढ़ कर एक बहुत ऊँची मात्रा तक जा सकता है। परन्तु, विश्वास के वरदान का सामान्य विश्वास की सबसे ऊँची मात्रा से भी एक उत्तम कार्य है।

कुछ अनुवादक विश्वास के वरदान को विशेष विश्वास कहते हैं। यह उस विश्वास का संकेत देता है जिसे पवित्र आत्मा ने एक विशेष और असाधारण परिस्थिति में हमारी आवश्यकता को पूरा करने के लिए दिया है। यह आगे सुझाव देता है कि विश्वास का वरदान किसी विश्वासी में स्थाई रूप से नहीं रहता है, परन्तु हर प्रदर्शन एक भिन्न विश्वास का वरदान है। एल्लियाह के जीवन में एक घटना इसे चित्रित करती है जब उसने राजा अहाब को घोषित किया कि इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी (1 राजा 17:1)। उसके विश्वास के वरदान ने उस भविष्यद्वाणी को चमत्कार से पूरा किया।

इसके विपरीत, यह असाधारण विश्वास उस समय नहीं था जब वह डरा हुआ, निराश झाऊ के पेड़ के नीचे बैठा था और मरना चाहता था क्योंकि उस समय इसकी आवश्यकता नहीं थी (1 राजा 19:4)। उसने परमेश्वर या उसके वचन में अपना विश्वास खोया नहीं था। उसका अपना विश्वास तब मजबूत हुआ और उसे परमेश्वर पर भरोसा और हिम्मत रखने के लिए कहा गया, जब परमेश्वर ने बताया कि उसके पास इस्राएल में 7000 दूसरे विश्वासयोग्य अनुयायी हैं।

परमेश्वर चाहता है कि आप जान लें कि आप विश्वास के साथ आगे बढ़ सकते हैं, यह जानते हुए कि जब आपसे कोई विशेष काम की माँग की जाएगी तो वह उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आपको विशेष विश्वास देगा।

विश्वास का वरदान कैसे कार्य करता है?

विश्वास का वरदान एक निष्क्रिय तरीके से कार्य करता लगता है, परन्तु हमेशा ऐसा नहीं है। दानिय्येल की शेरों से रक्षा (विश्वास के वरदान का निष्क्रिय उदाहरण) का शिमशोन का शेर को मारना जो परमेश्वर के सामर्थ्य के प्रदर्शन में मनुष्य का सक्रिय सम्मिलित होने का एक उदाहरण है, विरोध लगता है। यह सामर्थ्य के काम करने का एक उदाहरण है। यह विचार कि विश्वास का

वरदान सक्रिय रूप से कार्य करता है, इसलिए है क्योंकि यह अकसर अधिक नाटकीय वरदानों के साथ (उदाहरणार्थ, सामर्थ्य के काम, चंगा करने का वरदान, वगैरा) मिलकर कार्य करता है। विश्वास का वरदान विश्वास के शब्द बोलने के द्वारा भी कार्य करता है, "मैं ने विश्वास किया, इसलिए मैं बोला" (2 कुरिं. 4:13) - जहाँ एक परमेश्वर के जन द्वारा आत्मा की प्रेरणा में बोले गए शब्द परमेश्वर द्वारा अपने वचनों के रूप में समर्थन पाते हैं। परिणाम तत्काल नहीं आते, परन्तु निश्चित होते हैं। और यह वरदान अनेक प्रकार से कार्य करता है (उदाहरणार्थ, आशीष देने, शाप देने, रचने, नष्ट करने, वगैरा)।

नीचे विश्वास के वरदान का बोले गए शब्दों द्वारा कार्य करने के कुछ उल्लेखनीय उदाहरण हैं:
यहोशू सूर्य और चन्द्रमा को स्थिर खड़े रहने की आज्ञा देता है (यहोशू 10:12-14)। एल्लियाह अपने वचन के द्वारा मौसम पर नियंत्रण रखता है (1राजा 17:1) - "इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ोगी...और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा।" पतरस हनन्याह और सफीरा का न्याय करता है (प्रेरितों 5)। बाइबल विश्वास के वचन का नियम सिखाती है: (मरकुस 11:23) "...जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिए वहीं होगा..." व्यादेश के सम्बंध में "परमेश्वर पर विश्वास रखो", और अय्यूब 22:28 "जो बात तू ठाने वह तुझ से बन ही पड़ेगी...।"

8. <u>**चंगा करने का वरदान**</u> (1 कुरिं. 12:9)

इस वरदान के तीन संदर्भ 1 कुरिन्थियों 12 में आय. 9, 28 और 30 में पाए जाते हैं। इनमें से हर एक में मूल शब्द है "charismata iamton"। दोनों शब्द बहुवचन में हैं, इसलिए इस वरदान का सही अनुवाद होगा, चंगा करने <u>के</u> वरदान।

चंगा करने के वरदान अलौकिक रूप से बीमारियों और कमजोरियों को बिना किसी प्रकार के प्राकृतिक साधनों के चंगा करने का कार्य करते हैं। यह पवित्र आत्मा का सामर्थ्य है जो एक व्यक्ति के शरीर पर उतरता है, उनकी बीमारी को लुप्त करता, और चंगा करने के लिए उनके दर्द को निकाल देता है। यहाँ बहुवचन संज्ञा का उपयोग पीड़ित मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की चंगाई के वरदानों की बहुतायत पर बल देता है। यह इस बात पर भी जोर देता है कि यीशु की चंगाई हर बीमारी, कमजोरी, रोग, महामारी, विकृति, और पीड़ा से छुड़ाएगी। यह भी तात्पर्य है कि इस वरदान के प्रदर्शन बहुत विविध हैं (1 कुरिं. 12:4-7)।

चंगा करने के वरदान प्रतिभाशाली व्यक्ति को सब समय सब प्रकार की बीमारियाँ चंगा करने की योग्यता नहीं देता है। कुछ लोगों ने इसे गलत समझा है और पूछा है कि हम अस्पतालों और वैसी ही जगहों में क्यों नहीं जाते और सब जो बीमार हैं उन्हें चंगा करते। यीशु ने भी ऐसा नहीं किया था। वह एक ही बार एक ऐसे स्थान में गया था जो आज के अस्पताल जैसा है, बैतहसदा का कुण्ड, जहाँ बीमारों की एक भीड़ पड़ी रहती थी। तब भी उसने उन में से एक को चुना और उसे चंगा किया। दूसरे अवसरों पर हम पढ़ते हैं कि बीमारों की भीड़ की भीड़ यीशु के पास आती थी और वह उन सब को चंगा कर देता था। ईश्वरीय चंगाई का महत्त्वपूर्ण नियम है कि व्यक्ति को विश्वास और सहयोग के अभ्यास के रूप में यीशु के पास आना चाहिए।

चंगा करने के वरदान का उद्देश्य

- अ. बीमार और पीड़ितों को छुड़ाना और उनके जीवनों में शैतान के कार्यों को नष्ट करना। (1 यूहन्ना 3:8; प्रेरितों 10:38; लूका 13:16)।
- आ. परमेश्वर का पुत्र होने का यीशु का दावा प्रमाणित करना (यूहन्ना 10:36-38)।
- इ. वचन की पुष्टि करना (मरकुस 16:17-20; प्रेरितों 7:29-30,33)।
- ई. लोगों को सुसमाचार की ओर आकर्षित करना (मत्ती 4:23,25)
- उ. परमेश्वर को महिमा लाना (मरकुस 2:12; लूका 13:13; 18:43; यूहन्ना 9:2-3)।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के सेवकों को चंगा करने के वरदान, उन्हें देने के लिए जिन्हें प्रभु अपने उद्देश्य के लिए चंगा करना चाहता है, देता है। दूसरे सब वरदानों के समान, चंगा करने के वरदान न केवल दिए जाते हैं बल्कि प्राप्त भी किए जाते हैं। जिस प्रकार विश्वास का एक नियम है जो दिखाता है कि इन वरदानों से सेवा कैसे करनी है, वैसे ही एक और नियम है जो उन्हें कैसे प्राप्त करना है से सम्बंधित है। हिजकिय्याह को चंगाई का वरदान पाने में कठिनाई हो रही थी जो परमेश्वर ने उसके लिए भेजा था। उसका विश्वास 2 राजा 20:8-11 में दिए चमत्कार द्वारा एक विशेष रूप से बढ़ाना अवश्य था। नामान को चंगाई का वरदान पाने में कठिनाई हो रही थी जो परमेश्वर ने उसके लिए एलीशा द्वारा भेजा था। चंगाई को अकसर विश्वास के दोहरे कार्य की आवश्यकता होती है: चंगा करने का वरदान पाने के लिए विश्वास और देने के लिए विश्वास।

हालाँकि इस नियम में अपवाद हैं, फिर भी परमेश्वर की इच्छा हमेशा चंगा करने की है। परन्तु, कभी-कभी उसके सामान्य माध्यम जिनके द्वारा चंगाई मिल सकती है ठीक से कार्य नहीं कर रहे होते हैं। इससे हो सकता है परमेश्वर को चंगा करने का एक विशेष वरदान भेजना पड़े। कभी-कभी परमेश्वर चंगा करने के वरदान सामान्य चंगा करने के माध्यमों द्वारा भेजता है; दूसरे समयों में वह अपनी इच्छा के अनुसार असाधारण साधनों से भेजता है (उदाहरणार्थ, पतरस की छाया - प्रेरितों 5:15-16)।

9. <u>सामर्थ्य के काम करने की शक्ति</u> (1कुरिं. 12:10)

एक चमत्कार होता है जब परमेश्वर प्रकृति के साधारण क्रम को हटा देता है। सामर्थ्य के काम करने की शक्ति तब मिलती है जब परमेश्वर मनुष्य की योग्यता से बाहर कुछ करने के लिए पवित्र आत्मा के द्वारा हमें सामर्थ्य प्रदान करता है। वह इसे हमें एक विशेष समय में एक विशेष उद्देश्य के लिए देता है। एक चमत्कार अकसर एक तात्कालिक घटना है जबकि चंगाई का प्रदर्शन धीमे हो सकता है।

आत्मा के सब वरदान चमत्कारी हैं, परन्तु यहाँ पर "चमत्कार" शब्द का इस्तेमाल सामर्थ्य के कामों से है। बाइबल एक चमत्कारों की पुस्तक है। परमेश्वर चमत्कार का परमेश्वर है। मसीहियत एक ऐसा विश्वास है जो चमत्कारों पर स्थापित है। चमत्कारों के प्रदर्शन के बिना मसीहियत में विश्वसनीयता की कमी होगी, क्योंकि परमेश्वर ने यीशु की सेवकाई को सामर्थ्य के कामों, आश्चर्य के कामों और चिन्हों द्वारा प्रमाणित किया था (प्रेरितों 2:22)।

चमत्कार हमें यीशु के पुनरुत्थान का अखण्डनीय प्रमाण देते हैं।

यदि यीशु जीवित न होते हो, उसके नाम में बीमारों को चंगा करने और चमत्कार करने की कोई सामर्थ्य नहीं होती (प्रेरितों 4:33)। पतरस ने अविश्वासी यहूदियों को इस तथ्य के बल पर कि यीशु के नाम में अभी भी बीमारों को चंगा करने और चमत्कार करने की सामर्थ्य है, यीशु के पुनरुत्थान और मन फिराने की उनकी आवश्यकता के बारे में कायल किया। इसलिए:

अ. इसने विश्वासियों को मसीह का प्रचार करने का साहस दिया (प्रेरितों 4:29-30)। लोगों ने पहचाना कि वे यीशु, चमत्कार करनेवाले के साथ थे (प्रेरितों 4:13)।

आ. इसने विश्वासियों को परमेश्वर की और अधिक चाह के लिए भूख दी (प्रेरितों 4:31)।

इ. इसने लोगों को उनके पापों के विषय में कायल और दोषसिद्ध किया (प्रेरितों 5:28,33)।

ई. एक चमत्कार के द्वारा एक दिन में पाँच हजार लोगों ने उद्धार पाया (प्रेरितों 4:4; 5:14)।

उ. सब लोगों ने जो हुआ था के लिए परमेश्वर की महिमा की (प्रेरितों 4:21)।

ऊ. इसने सुसमाचार को शीघ्रता से फैलाया (प्रेरितों 5:14-16)।

इससे पहले यीशु चमत्कार करने लगा, कोई भी उसके पीछे नहीं होता था। उसने आराधनालयों में अकसर प्रचार किया होगा, क्योंकि लूका 4 में लिखा है कि यह उसकी रीति थी। परन्तु जब लूका 4:33-35 में चमत्कार हुए, "इस प्रकार चारों ओर हर जगह उसकी चर्चा होने लगी।" तब से भीड़ की भीड़ उसकी सुनने और उसके चमत्कार देखने के लिए उस पर गिरी पड़ती थी। "एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उनको देखते थे" (यूहन्ना 6:2)।

सब जगह जहाँ चेलों ने प्रचार किया, बीमारों को चंगा किया, दुष्टात्माओं को निकाला और आश्चर्यकर्म किए, बहुत संख्या में लोग मसीह की ओर फिरे।

अ. सामरिया ने फिलिप्पुस की बातें सुनीं, और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। (प्रेरितों 8:6)

आ. जब पतरस ने एनियास को कहा, "यीशु मसीह तुझे चंगा करता है। उठ, अपना बिछौना बिछा", और वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ, तो लुद्दा और शारोन के सब रहनेवाले प्रभु की ओर फिरे। (प्रेरितों 9:34)

इ. जब पतरस ने दोरकास को मरे हुओं में से जीवित किया तब याफा के बहुतेरों ने प्रभु पर विश्वास किया। (प्रेरितों 9:42)

ई. लुस्त्रा के लोगों ने जब पौलुस के वचन पर एक लंगड़े व्यक्ति को उछलकर चलते देखा तो सोचा कि देवता मनुष्यों के रूप में होकर उनके पास उतर आए हैं (प्रेरितों 14:8-18)। "प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अदभुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे...विश्वास करनेवाले बहुत से पुरुष और स्त्रियाँ प्रभु की कलीसिया में बड़ी संख्या में मिलते रहे। यहाँ तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही

उनमें से किसी पर पड़ जाए। यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे" (प्रेरितों 5:12-16)।

उ. प्रेरितों की पुस्तक जोर शोर से चमत्कार करते हुए समाप्त होती है (प्रेरितों 28:8-9)। जब लोगों ने पुबलियुस को चंगा होते देखा, तो उन्होंने विश्वास किया कि यदि परमेश्वर एक को चंगा कर सकता है तो वह सबको जिनको आवश्यकता है चंगा करने के योग्य और इच्छुक भी है। जब लोग परमेश्वर के बारे में सही सोचते और विश्वास करते हैं तब वे उससे वो सब पाते हैं जो वह उन्हें देना चाहता है।

ऊ. परमेश्वर का एक विश्वासी के जीवन में चमत्कार करने की तुलना में चमत्कारों को करना पवित्र आत्मा की समर्थ है, जो विश्वासी को एक चमत्कार करने की योग्यता देता है। इसलिए अनेक लोगों ने जिन्होंने सामर्थ्य के काम करने की शक्ति कभी नहीं पाई है, फिर भी अकसर आश्चर्यचकित चमत्कार अनुभव किए हैं जो परमेश्वर ने उनके लिए किए थे।

कुछ उदाहरण

अ. छुटकारे के चमत्कार, जैसे कि प्रेरितों 5:17-20 और प्रेरितों 12:1-10 में पतरस। प्रेरितों 16:15-30 में पौलुस और सिलास।

आ. एक जगह से दूसरी जगह पहुँचने का चमत्कार (प्रेरितों 8:39)। "प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, और खोजे ने उसे फिर न देखा।"

ये, और अनेक दूसरी घटनाएँ, परमेश्वर द्वारा विश्वासियों के जीवनों में, कभी-कभी विश्वासी के सहयोग के बिना किए चमत्कार हैं। इसलिए ये वो घटनाएं नहीं हैं जहाँ सामर्थ्य के काम करने की शक्ति कार्य कर रही थी यह वरदान कहाँ कहाँ कार्य कर रहा था के उदाहरण:

1. प्रेरितों 19:11, "परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ्य के अनोखे काम दिखाता था"
2. प्रेरितों 9:40, पतरस ने दोरकास को मरे हुओं में से जीवित किया।
3. प्रोरितों 20:9-12, पौलुस यूतुखुस को जीवित करता है।

वरदान का प्रयोगात्मक कार्य

अ. विशेष विश्वास और अधिकार बनाने के लिए पवित्र आत्मा का अभिषेक।

आ. विश्वास और अधिकार का एक उच्चारित वचन। एलिय्याह ने कहा जो देवता आग से उत्तर देगा वही इस्राएल का परमेश्वर होगा। जो आग स्वर्ग से आई सामर्थ्य के काम करने का उदाहरण है।

इ. विश्वास का एक निर्भिक कार्य।

उपसंहार

पवित्र आत्मा और उसकी अभिव्यक्तियों के विषय पर इस संक्षिप्त शिक्षा में, हमने जो बाइबल सिखाती है उस तक अपने आप को सीमित रखने का प्रयास किया है, और न कि जो हमारे अपने मानवीय अनुभव हैं या जो विचार एक विशेष सम्प्रदाय रखती है। जब किसी भी चीज पर जो बाइबल घोषित करती है एक नकारात्मक दृष्टिकोण लिया गया है तो परमेश्वर के लिए कभी भी कुछ प्राप्त नहीं हो सका है। परमेश्वर हमारे विश्वास, न कि हमारे अविश्वास के द्वारा कार्य करता है। इसलिए, अपने पारंपरिक सिद्धान्तों, या अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बावजूद, मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि अलौकिक और चमत्कारों की सम्भवना के विषय में अपने हृदय और मन बन्द मत करो। बाइबल और इस अध्ययन को खुले हृदय से पढ़ो। इसके विषय में अपनी प्रतिक्रिया को परमेश्वर को समर्पित करो। उसे ईमानदारी से बताओ कि आप किसी भी चीज के लिए जो वह कहता है खुले हो और कि जो कुछ उसके पास आपके लिए है आप बहुतायत से उसे अनुभव करना चाहते हो।

पवित्र आत्मा द्वारा चलाए चलना - ईश्वरीय मार्गदर्शन और प्राथमिकताओं के अनुसार जीवन जीना

अध्याय 1 – परमेश्वर के अपने लोगों की आगुआई करने के अनेक तरीके

हम में से कई खुद को ऐसी परिस्थितियों में पाते हैं जहाँ हमें पता नहीं चलता कि हम क्या करें। परन्तु परमेश्वर के पास हमारे लिए उत्तर हैं। परमेश्वर की मनसा यह कभी नहीं है कि जो मसीह की देह में अगुआई में हैं शरीर की शक्ति से अपना काम करते रहें। सेवकाई का काम केवल मानवीय बुद्धि के द्वारा नहीं होना चाहिए। परमेश्वर ने ऐसा बनाया है कि जो अगुआई में हैं वे उसके आत्मा के द्वारा चलाए चलें। यदि हम अपनी सेवकाइयों में आत्मिक फल पाना चाहते हैं, तो हमारी सेवकाइयाँ आत्मा के निर्देशन और आत्मा के सामर्थ्य में चलनी चाहिएँ। जीवन में सबसे हतोत्साहित करनेवाली बात यह है कि हम सेवा में हों और पता न हो कि आत्मा के अनुसार कैसे चलें।

परमेश्वर ने हमें सही फैसले करने में सहायता के लिए अपना आत्मा दिया है। जब कलीसिया में कठिन और विद्रोही लोगों से निपटने की नौबत आती है, तब हमें पवित्र आत्मा के अनुसार चलना चाहिए। जब हम सताव, आत्मिक आक्रमण और दबाव में होते हैं, तब हमें पवित्र आत्मा के अनुसार चलना चाहिए। जब हमें ईमारत के लिए जमीन खरीदनी है, तो हमें आत्मा के अनुसार चलना चाहिए। चाहे हम अगुए चुन रहे, संदेश दे रहे या लोगों की सहायता कर रहे हैं, हमें परमेश्वर के आत्मा के अनुसार चलने की आवश्यकता है।

अगुओं के रूप में, हम क्या करते या नहीं करते, उसके द्वारा अनेक जीवन प्रभावित होते हैं। हमारे सब फैसले मानवीय बुद्धि के हवाले नहीं कर देने चाहिए। परमेश्वर ने हमें अपना आत्मा दिया है ताकि हम सही और विवेकी फैसले कर सकें। परन्तु हमें उसकी सुनना सीखना है। जब हम परमेश्वर के आत्मा की सुनते हैं, तब हम उन चीजों को सुन रहे हैं जो दूसरे लोग नहीं सुनते।

पढ़ो: व्यवस्थाविवरण 4:5-6

1. परमेश्वर अपने लिखित वचन द्वारा हमारी अगुआई करता है

अ. परमेश्वर का लिखित वचन परमेश्वर की बुद्धि है। (लूका 11:49)
क्या आपको आज अपनी कलीसिया, ग्रह सभा के लिए परमेश्वर की बुद्धि चाहिए, तो इसे सबसे पहले बाइबल में खोजो।

आ. परमेश्वर का लिखित वचन सेवकाई में सफलता निश्चित करता है। (यहोशू 1:7-8)

इ. परमेश्वर का लिखित वचन हमारे मार्गों पर उजाला करता है। (भजन 119:105, 128)

1. परमेश्वर अपने वचन द्वारा हमारी अगुआई करता है।
2. हमें परमेश्वर के वचन की ओर सही रवैया अपनाना चाहिए।
3. यह रवैया आज्ञापालन का रवैया होना चाहिए। (यशायाह 8:20)
4. परमेश्वर अपने लिखित वचन के विपरीत अगुआई नहीं करेगा।

ई. पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन द्वारा सब सत्य में ले चलता है। (यूहन्ना 16:13; 17:17)

1. मार्गदर्शन के लिए परमेश्वर के वचन को खोजो।
2. फैसले करने से पहले पता लगाओ परमेश्वर का वचन क्या कहता है।
3. अगुओं को नियुक्त करने से पहले, पता करो कि कलीसिया के अगुओं के लिए बाइबल की योग्यताएँ क्या हैं।
4. जब हम वचन से दूर हो जाते हैं तब संकट में पड़ते हैं।

2. परमेश्वर हमारी खराई से हमारा मार्गदर्शन करता है (नीतिवचन 11:3)

अ. खराई का अर्थ है: चरित्र की खराई और ईमानदारी (अय्यूब 27:3-6)।
जब हम खराई से जीवन जीने के फैसले करते हैं, जीवन आसान बन जाता है।

आ. पास्टरों को खराई से अगुआई करनी चाहिए। (भजन 78:70-72)

1. लोगों को कलीसिया में अगुआई के पदों पर इसलिए नहीं रखना चाहिए क्योंकि वे रुपया-पैसा देते हैं।
2. यदि वे परमेश्वर का चुनाव नहीं हैं, तो उन्हें अगुआई में रखना खराई के नियम को तोड़ना होगा।
3. खराई का अर्थ है कि मैं रुपये-पैसे इकट्ठे करने के लिए सन्दिग्ध साधन इस्तेमाल नहीं करूँगा।
4. पास्टरो, अपनी सेवकाइयों की खराई से रक्षा करो।
5. बोलते समय लोगों के साथ ईमानदार बने रहो।
6. अपने विवेक का उल्लंघन मत करो।
7. यदि आप कुछ पाने के लिए सत्य के साथ किसी भी समय समझौता करते हो, तो आप इसे आखिरकार खो दोगे।

इ. परमेश्वर अपनी शान्ति से हमारा मार्गदर्शन करता है (कुलु. 3:15)

अ. परमेश्वर की शान्ति को उन सब प्रश्नों को जो आपके मन में उठते हैं अन्तिमता के साथ फैसले करने और निर्धारित करने दो। परमेश्वर और अपने हृदय के बीच अम्पायर के समान !
जैसे आप कुछ करने के बारे में प्रार्थना करना आरम्भ करते हो, तो अपने आप पूछो, कि क्या आपके हृदय में शान्ति है या क्या आप अनिश्चितता और बेचैनी महसूस करते हो ?

आ. बुद्धि के मार्ग पर चलने से शान्ति मिलती है (नीतिवचन 3:13, 17)

1. अनेक मुख्य फैसले, उनके वियष में शान्ति होने के आधार पर, किए जा सकते हैं।
2. यीशु शान्ति का राजकुमार है।

ई. परमेश्वर दूसरों की सम्मति से हमारा मार्गदर्शन करता है (नीतिवचन 20:18; 24:6)

अ. परमेश्वर ने हमें हमारी सहायता के लिए मसीह की देह दी है।

1. कोई भी पुरुष या स्त्री अपने आप में सम्पूर्ण नहीं है।
2. यदि दूसरों से मिल रही सम्मति उससे जो परमेश्वर ने आपके हृदय में डाला है भिन्न है, तो इसके लिए प्रार्थना में और अधिक समय लगाओ।
3. अपने फैसलों के लिए केवल आप ही परमेश्वर के सामने उत्तरदायी हो।
4. परन्तु दूसरे हमें चीजों को एक नए दृष्टिकोण से देखने, उन चीजों पर विचार करने जिन पर हमने पहले विचार नहीं किया है, सहायता कर सकते हैं।
5. वे हमें हमारे अपने अभिप्रायों को जाँचने और सही समय के विषय पर विचार करने में सहायता कर सकते हैं।

आ. हमें उनके प्रति खुले होना चाहिए जो हम से प्रेम करते हैं (नीतिवचन 18:1)
याद रखो कि मसीह की देह में अगुओं के रूप में, जो फैसले हम करते हैं, वे दूसरों को प्रभावित करते हैं। इसलिए आओ हम परमेश्वर के वचन के पास चलें, और परमेश्वर की शान्ति और दूसरों की सम्मति के साथ खराई से चलें।

अध्याय 2 - परमेश्वर हमारी अगुआई हमारी आत्माओं से कैसे करता है

पढ़ो: जकर्याह 12:1

1. मनुष्य एक आत्मा है

- इस वचन में ध्यान दो कि मनुष्य की आत्मा परमेश्वर ने रची है।
- मनुष्य के अन्दर आत्मा है।

- 1 थिस्स. 5:23 भी सिखाता है कि मनुष्य के तीन भाग हैं: आत्मा, प्राण और शरीर।

अ. मनुष्य की आत्मा और प्राण में अन्तर है।

1. आत्मा असली व्यक्ति है जो शरीर के अन्दर रहता है।
2. प्राण इच्छा-शक्ति, मन और भावना से मिलकर बना है।
3. शरीर वो घर है जिसमें मनुष्य रहता है।

आ. परमेश्वर आत्माओं का पिता है (इब्रा. 12:9)।

1. यीशु यूहन्ना 4:24 में पुष्टि करता है कि परमेश्वर आत्मा है।
2. यदि परमेश्वर आत्मा है, और मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया है। (उत्प. 1:27; 2:7)
3. बाइबल कहती है कि देह आत्मा बिना मरी हुई है। (याकूब 2:26)

इ. मनुष्य की आत्मा अदन के उद्यान में मर गई थी (उत्प. 2:15-17:3)।

1. परमेश्वर आदम और हव्वा से आत्मिक मृत्यु के विषय में कह रहा था।
2. इसका अर्थ है परमेश्वर से अलग हो जाना (उत्प. 3:8-9)।
3. आदम और हव्वा मनुष्यजाति के मूलस्रोत हैं।
4. तब मनुष्य स्वभाव से, क्रोध की सन्तान बन जाता है। (इफि. 2:1-3)

2. परमेश्वर की उद्धार की योजना ने मनुष्य का स्वभाव बदल डाला (यहेज. 36:26-27) वह योजना यीशु मसीह के द्वारा पूरी हुई थी।

अ. मनुष्य में नई आत्मा (यूहन्ना 3:1,8)

1. मनुष्य को यह नई आत्मा पाने के लिए नया जन्म लेना अवश्य है।
2. यह परमेश्वर के आत्मा के द्वारा आत्मिक जन्म की बात करता है।
3. परिवर्तन अन्दर होता है।
4. जब एक व्यक्ति मसीह को ग्रहण करता है, तो वह एक नई आत्मा पाता है।

आ. हम परमेश्वर को अपनी आत्माओं द्वारा और वह हम से अपने आत्मा द्वारा सम्पर्क करता है।

- यदि परमेश्वर अपने आत्मा द्वारा हमारा मागदर्शन करना और हमारी अगुआई करना चाहता है, तो वह ऐसा हमारी आत्माओं द्वारा करेगा।

इ. परमेश्वर हमें हमारी आत्माओं द्वारा समझाता है (नीतिवचन 20:27)

1. पवित्र आत्मा हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है (रोमियों 8:16; 1 कुरिं. 2:14)।
2. परमेश्वर ने जो हमारे लिए तैयार किया है उसे वह अपने आत्मा द्वारा प्रकट करता है, और पवित्र आत्मा हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है। (1 कुरिं. 2:9-12)

3. परमेश्वर हमारी आत्मा से कैसे निपटता है (यूहन्ना 13:2,21)

अ. आत्मा में व्याकुल होना (यूहन्ना 13:21)

1. जब आप ऐसे लोगों के आस-पास होते हो जिनके गलत आत्मा या अभिप्राय होते हैं, तो आपकी आत्मा व्याकुल होगी।
2. वे शायद सही बात कह रहे हों या सही चीज कर रहे हों, परन्तु जब आप उनके आस-पास आएँ, तो आपकी आत्मा में कुछ परेशानी होगी।
3. जब आप अपने भीतर एक अशान्ति अनुभव करें, तो सतर्क हो जाओ, परमेश्वर आपसे बात कर रहा है।

आ. आत्मा में दुखी होना (प्रेरितों 16:16-18)

- कुछ विशेष लोग या जगह के कारण आप अपनी आत्मा में दुखी हो सकते हैं। जब आपके साथ ऐसा होता है तो चौकन्ने हो जाओ; ऐसी चीजों पर ध्यान देना सीखो क्योंकि यह आपको संकट से दूर रखेंगी।

इ. आत्मा में बेचैन होना (2 कुरिं. 2:12-13)
1. यदि कुछ सही नहीं है तो आपकी आत्मा में चैन नहीं होगा।
2. यदि जिस दिशा में आप जा रहे हैं आप चैन नहीं पाते, तो रुको और परमेश्वर की प्रतीक्षा करो।

ई. आत्मा में उत्तेजित होना (प्रेरितों 17:16-17)
1. जब आपके साथ ऐसा होता है, तब आपको अपना मुँह खोलकर बोलना है।
2. सम्मिलित हो जाओ, परमेश्वर आपका संचालन कर रहा है।
3. "उत्तेजित होना" का अर्थ है: कोंचना, धीमें से धक्का देना।
4. यदि आप इस प्रकार परमेश्वर की सुनना सीखें, तो आपकी सेवकाई अति स्पष्ट होगी।

उ. आत्मा में विवश होना (प्रेरितों 18:5)
1. बोलने के लिए भीतरी विवशता।
2. परमेश्वर आपकी आत्मा से कैसे निपटता है, उसकी ओर अधिक संवेदनशील होने का तरीका है, परमेश्वर के वचन में अधिक समय बिताना।
3. उसका वचन आत्मा और जीवन हैं।
4. प्रार्थना में भी समय बिताओ, विशेषकर अन्य भाषाओं में।
5. जब आप अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हो तो आपकी आत्मा प्रार्थना करती है।
6. प्रार्थना करो और वचन में घुस जाओ।
7. अपनी आत्मा की सुनो।

अध्याय 3 – कठिन समयों में निर्देशन कैसे पाएँ

कभी-कभी जम हम बहुत दबाव में होते हैं, तब परमेश्वर से सुनना कठिन हो जाता है। परन्तु वे ही समय हैं जब हमें परमेश्वर से सबसे अधिक सुनना है।

पढ़ो: 1 राजा 19:1-19

1. वाक्यांश की रूपरेखा
   अ. इस्राएल का देश पतित हो गया था।
   आ. वे मूर्ति पूजा करने लगे थे।
   इ. एलिय्याह ने प्रार्थना की थी और स्वर्ग बारिश के लिए बन्द हो गया था।
   ई. उसने सारे इस्राएल को कर्मेल पर्वत पर उससे मिलने के लिए इकट्ठा किया।
   उ. वहाँ एलिय्याह ने स्वर्ग से आग बुलाई और लोगों ने मन फिराया और परमेश्वर के पास लौट आए।
   ऊ. उसने फिर प्रार्थना की और बारिश होने लगी।
   ए. एलिय्याह ने अनेक अनोखे चमत्कार किए थे जिनके द्वारा उसने प्रभु के लिए जय प्राप्त की थी।
   ऐ. तब उसके जीवन की सबसे महान परीक्षा आई।
   ओ. अनेक बार हमारी महान विजयों के पीछे पीछे महान परीक्षाएँ आती हैं।
   औ. आपकी कुछ सबसे बड़ी परीक्षाएँ जिन्हें आप अनुभव करेंगे, प्रभु के साथ आपके सबसे बड़े और सुन्दर अनुभव के बाद आएँगी।
   अं. एलिय्याह के इस संकटकालीन और कठिन समय में, उसे प्रभु से एक ताजा निर्देशन की आवश्यकता है।

2. वाक्यांश में से सिद्धान्त

इस वाक्यांश में कुछ सिद्धान्त हैं जो हमें सिखाते हैं कि कठिन समयों में प्रभु से निर्देशन कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

अ. छोड़ो मत।

1. जब संकट आया, तब एलिय्याह को पता था कि उसे परमेश्वर से सुनना है।
2. उसने होरेब पर्वत पर जाने का फैसला किया।
3. इसे अब सिनै पर्वत कहते हैं।
4. एलिय्याह का लक्ष्य यही है।
5. परन्तु वहाँ जाने से पहले, वह छोड़ना चाहता था (1 राजा 19:4)।
6. यदि आप हिम्मत नहीं हारते तो अपनी विजय के स्थान पर पहुँचोगे।

आ. अनावश्यक चीजों को छोड़ दो (1 राजा 19:3)

1. उसने अपने सेवक को बेर्शेबा में छोड़ दिया।
2. यह सेवक एलिल्याह का स्थान लेने के लिए परमेश्वर का चुनाव नहीं था बल्कि एलीशा था (1 राजा 19:16)।
3. एलिय्याह अपने सेवक को लेने के लिए कभी नहीं लौटा।
4. कभी-कभी हम अपने जीवन में ऐसी चीजें जोड़ लेते हैं जो परमेश्वर की इच्छा में नहीं थीं।
5. क्या आप उस सीमा के अन्दर हैं जो परमेश्वर ने आपके लिए निर्धारित की है?
6. या क्या आपने अपने जीवन और सेवकाई में बहुत सी चीजें जोड़ ली हैं जिनके विषय में परमेश्वर ने कभी नहीं कहा था? (2 कुरिं. 10:13-14)
7. वो आखिरी चीज क्या है जो परमेश्वर ने आपको करने के लिए कहा था?
8. क्या आपने उसे किया या अधूरा छोड़ दिया है?
9. यदि आपको परमेश्वर का निर्देशन, विशेषकर कठिन समयों में, चाहिए, तो आपको पुनःविचार, पुनःपरीक्षण और पुनःअनुभव करना होगा।
10. समझ लो कि परमेश्वर से एक नया निर्देशन पुराने के बहाव में से आएगा।
11. जब तक कदम संख्या एक पूरा नहीं कर लेते तब तक परमेश्वर की इच्छा में आपको कदम संख्या दो नहीं मिलेगा।

इ. आपको विश्राम की आवश्यकता है (1 राजा 19:5-6)।

1. आत्मिक रूप से, आपको परमेश्वर में विश्राम की आवश्यकता है।
2. चिन्ता आपके जीवन में परमेश्वर की बुद्धि के बहाव को रोक देगा।
3. स्वाभाविक रूप से भी विश्राम महत्त्वपूर्ण है।

ई. परमेश्वर के वचन और प्रार्थना में समय बिताओ (1 राजा 19:6)

1. रोटी परमेश्वर के वचन का प्रतीक है जबकि पानी परमेश्वर के आत्मा का प्रतीक है।
2. यदि आपको परमेश्वर से निर्देशन चाहिए तो आपके लिए खाना और पीना अवश्य है।
3. परमेश्वर के वचन और प्रार्थना और परमेश्वर के आत्मा के साथ संगति में लग जाओ।
4. यदि आप ऐसा करें तो परमेश्वर अपने वचन के द्वारा आपसे बातें करेगा (नीतिवचन 6:22)।
5. यदि आप अपने आप को वचन और प्रार्थना के लिए समर्पित करते हैं तब आप उस स्थान में पहुँचेंगे जहाँ आप परमेश्वर से सुन सकेंगे।

उ. अपने आप को याद दिलाओ कि परमेश्वर आपकी अगुआई कैसे करता है (1 राजा 19:11-12)

1. होरेब पर्वत और सीनै पर्वत वो स्थान है जहाँ परमेश्वर ने सारे इस्राएल से बातें की थीं (निर्ग. 19)
2. परमेश्वर कह रहा है कि वह आपकी ज्ञानेंद्रियों के शारीरिक चिन्हों के द्वारा आपकी अगुआई नहीं करेगा परन्तु पवित्र आत्मा की शान्त, धीमी आवाज के द्वारा करेगा (इब्रा. 12:18,26)।
3. जब आप शान्त होते हैं तब वह शान्त, धीमी आवाज आपसे क्या कहती है?

4. सबसे महत्त्वपूर्ण घटना जो एक व्यक्ति के साथ कभी घट सकती है, वो है उद्धार पाना।
5. यह परमेश्वर के आत्मा का हमारी आत्मा के साथ गवाही देने से प्रमाणित होता है (रोमि. 8:16)।
6. जब जीवन के छोटे मामलों की बात होती है तो हम अधिक की आशा क्यों करें ?
7. आत्मिक रूप से विकसित हो जाओ ताकि जब परमेश्वर आपसे बात करता है तो पहचान सको।
8. जीवन के सारे फैसले जो हम करते हैं उद्धार से कम महत्त्वपूर्ण हैं।
9. परमेश्वर से सुनने से पहले, अपने साथ चमत्कारिक चीजों के होने की आशा मत करो।
10. परमेश्वर एक शान्त, धीमी आवाज में बात करता है।

ऊ. जान लो कि आप अकेले नहीं हो (1 राजा 19:16)

1. आप ही अकेले नहीं हो जो दबाव अनुभव कर रहा है।
2. परमेश्वर के अनेक लोग वैसी ही परीक्षाओं में से गुजर रहे हैं जिनमें से आप गुजर रहे हो।
3. उन्होंने परमेश्वर से सुना और परीक्षाओं में से आगे बढ़ गए हैं।

ए. पाए हुए निर्देशन पर कार्य करो (1 राजा 19:19)

1. यदि आप जानते हो कि आपको परमेश्वर से एक निर्देशन मिला है, तो उस पर कार्य करो।
2. परमेश्वर के बहाव में कूद पड़ो और उसके साथ चलो।
3. आपके उत्तम दिन आपके आगे हैं।

अध्याय 4 - जीवन की प्राथमिकताएँ

जब आपकी प्राथमिकताएं सही होती हैं, तब अच्छे फैसले करने में सहायता मिलती है। यदि आपकी प्राथमिकताएँ टेढ़ी हैं, तब आप अपने जीवन और सेवकाई में बहुत समस्याएँ अनुभव करने वाले हैं।
अपनी प्राथमिकताओं को देखते हुए कुछ फैसले करने में बहुत आसानी हो जाती है। इस अध्ययन में हम चार मुख्य प्राथमिकताओं से निपटना चाहते हैं। ये हैं: सेवकाई, परिवार, परमेश्वर के साथ सम्बंध, और मनोरंजन। एक क्षण के लिए सोचो, आप इनको किस क्रम में लगाओगे ? प्राथमिकताएँ उन चीजों के अनुसार निर्धारित की जाती हैं जिन्हें हम कीमती और बहुमूल्य समझते हैं। आपकी प्राथमिकताएँ क्या हैं, उन चीजों से पता चलेगा जिन्हें आप उस समय करते हैं जब आप अकेले होते हैं।

आओ मैं आपको बताऊँ कि आपकी प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिए:

प्राथमिकता क्र. 1: परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बंध

प्राथमिकता क्र. 2: परिवार

प्राथमिकता क्र. 3: सेवकाई

प्राथमिकता क्र. 4: विश्राम और मनोरंजन

1. किसी भी समय इनमें कोई भी प्राथमिकता ऊपर होने का प्रयास करती है, तो यह पहले स्थान की ओर जा रही है।
2. यह संसार इसीलिए अन्धेरे में डूब गया क्योंकि आदम और हव्वा की प्राथमिकताएँ टेढ़ी हो गई थीं।
3. हव्वा ने भौतिक को आत्मिक से ऊपर रखा।
4. आदम ने अपनी पत्नि को परमेश्वर से ऊपर रखा।
5. परमेश्वर व्यवस्था का परमेश्वर है।
6. परमेश्वर का काम करने का विशेष क्रम होता है।

7. यदि आप अपने जीवन को बाइबल के नमूनों और सिद्धान्तों के अनुसार बनाएँगे तो आप अपने जीवन में कितनी सारी समस्याओं से बच सकते हो।

1. प्राथमिकता क्र. 1: परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बंध (व्यवस्था. 30:19-20)

अ. परिभाषा

1. प्रचार परमेश्वर के साथ सम्बंध नहीं है।
2. प्रचार परमेश्वर के साथ सम्बंध का बहाव है।
3. प्रार्थना करना और बाइबल पढ़ना परमेश्वर के साथ सम्बंध नहीं हैं।
4. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बंध परमेश्वर के साथ आपकी मित्रता और संगति है।
5. प्रार्थना और आराधना में जो समय आप उसकी उपस्थिति में बिताते हैं।
6. उसे जानने के लिए जो समय आप उसके वचन में बिताते हैं।
7. यह जीवन की पहली प्राथमिकता है।

आ. प्रार्थना और वचन के द्वारा परमेश्वर के साथ संगति

1. सब प्रभावशाली सेवकाइयाँ परमेश्वर के साथ इस व्यक्तिगत संगति के परिणाम का बहाव होगा।
2. यीशु दाखलता है और हम डालियाँ हैं (यूहन्ना 15:4-5)।
3. उसके साथ एक जीवित सहभागिता बनाए रखना ही फलवन्त होने का एक मात्र तरीका है।
4. ध्यान दो कि यीशु ने प्रेरितों को नियुक्त किया, सबसे पहले कि वे उसके साथ हों और फिर प्रचार करें (मरकुस 3:13-15)।
5. उसके सामर्थ्य को जानने से पहले उसे जानना आता है (फिलि. 3:10)।
6. परमेश्वर के साथ समय बिताए बिना उसके लिए काम करना मुमकिन है।
7. मार्था काम में अधिक लगी हुई और प्रभु और उसके चेलों की सेवा करने में बहुत व्यस्थ थी। परन्तु यीशु के पावों में बैठने का उसके पास समय नहीं था। (लूका 10:38-42)
8. पास्टरो, अगुओ, यीशु के पावों में बैठने के लिए समय निकालो। हमें परमेश्वर के साथ होने का चुनाव करना होगा।

2. प्राथमिकता क्र. 2: परिवार

अ. पति / पत्नी के साथ प्राथमिकता

1. पति/पत्नी परमेश्वर के पीछे और बच्चों से पहले आते हैं।
2. आदम की पत्नी ने उसे पूरा किया, उसकी सेवकाई को नहीं (उत्प. 2:18)।
3. सेवकाई लोग है; इसलिए यह पति/पत्नी से आरम्भ होनी चाहिए (1 तीमु. 3:1-5)।
4. यदि आप अपनी दुल्हन की देख-भाल नहीं कर सकते हो, तो मसीह की दुल्हन की देख-भाल कैसे कर सकोगे?
5. यदि आप अपने परिवार की देख-भाल नहीं कर सकते हो, तो परमेश्वर के परिवार की देख-भाल कैसे कर सकोगे?
6. परमेश्वर के अतिरिक्त, सेवकाई में कोई दूसरा व्यक्ति पत्नी से पहले नहीं आता है।

आ. बच्चों के साथ प्राथमिकता

1. आपके बच्चे आपका पहला मिशन क्षेत्र हैं।
2. उनके उद्धार के बाद, वे पहली कलीसिया बनते हैं।
3. दूसरों की सेवा करने में योग्य ठहरने से पहले, सेवक का परिवार पहले व्यवस्थित होना चाहिए।
4. याजक एली की कहानी याद रखो (1 शमू. 2:22-36)।
5. आप एक महान प्रचारक हो सकते हो, परन्तु यदि आप अपने परिवार के लिए समय नहीं निकालते तो आपकी सेवकाई घोर विपत्ति में समाप्त हो सकती है।

3. **प्राथमिकता क्र. 3: सेवकाई** (कुलु. 4:17; 2 तीमु. 4:5)
अपने आपको सेवकाई के लिए सम्पूर्ण रूप से दे दो।
सेवकाई लोगों के जीवन और नियति बदलने के लिए परमेश्वर के साथ परिश्रम करना है।
सेवकाई कई क्षेत्रों में बाँटी जा सकती है:

अ. प्रार्थना और अध्ययन का समय
हमें प्रार्थना और परमेश्वर के वचन में समय बिताना चाहिए, ताकि परमेश्वर से ताजा संदेश पाकर हम परमेश्वर के झुँड को खिला सकें।

आ. कलीसिया के कर्मचारियों और अगुओं के लिए समय निकालो

<u>यीशु के नमूने के अनुसार चलो:</u>
1. उसके तीन सबसे करीबी चेले थे: पतरस, याकूब और यूहन्ना।
2. फिर दूसरे बारह।
3. फिर सत्तर चेलों का समूह।
4. फिर भीड़।

- आपको अपनी कलीसिया में अगुओं के लिए समय निकालना चाहिए।
- उसके बाद, मण्डली की सेवा करना।
- उनके लिए उपलब्ध रहो और स्पर्शग्राह्य बनो। अपने लोगों से मिलते रहो।

इ. सेवकाई काम है (1 पतरस 5:1-5)
1. सेवक तानाशाह नहीं हैं।
2. वे उदाहरण द्वारा अगुआई करें।

4. **प्राथमिकता क्र. 4: विश्राम और मनोरंजन** (मरकुस 6:31)

अ. विश्राम के लिए समय निकालो
1. सेवकाई इतनी व्यस्त हो सकती है कि आप हर दिन सारा दिन गुजार दें और फिर भी सब तक न पहुँच सकें।
2. कभी कभी समय होंगे जब यीशु आप से कहेगा, आओ अलग चलें और छोड़ी देर विश्राम करें।
3. यदि आप विश्राम के लिए समय नहीं निकालोगे तो आपका शरीर जवाब दे देगा।

आ. व्यायाम के लिए समय निकालो (1 तीमु. 4:8)
1. मनोरंजन के लिए कुछ करो।
2. आपको जो अच्छा लगे और आपके शरीर को लाभ दे, उसका पता लगाओ।
3. इससे आपके मन को मुक्त होने में सहायता मिलती है।
4. सेवकाई के साथ-साथ विश्राम और व्यायाम का सन्तुलन होना अवश्य है।
5. विश्राम और व्यायाम के लिए समय निकालो। जीवन की प्राथमिकताओं के अनुसार फैसले करो।

अध्याय 5 – परमेश्वर का मार्गदर्शन खोजने में फंदे और खतरे

इस अध्ययन में हम कुछ व्यावहारिक बुद्धि पर ध्यान देंगे जो आपको बुद्धिमान फैसले करने और धोखा न खाने में सहायता करेगी। सावधान रहो कि आप बाहरी रूप-रंग या लोकप्रिय विचारों के आधार पर फैसले न करो।

पढ़ो: प्रेरितों 27:9-15

1. पौलुस का आन्तरिक प्रत्यक्षज्ञान

यह कुछ ऐसा था जिसे पौलुस ने अपनी आत्मा में देखा।

अ. पौलुस ने जो अपनी आत्मा में देखा था उसका, सबकुछ जो दृश्य था उसने खण्डन किया।

- तीन चाजों ने पौलुस का खण्डन किया:
  1. विशेषज्ञ ने उसका खण्डन किया (प्रेरितों 27:11)
  2. बहुतों ने उसका खण्डन किया (प्रेरितों 27:12)
  3. परिस्थितियों ने उसका खण्डन किया (प्रेरितों 27:13)

आ. वे सब गलत निकले, परन्तु पौलुस सही था।

इ. आत्मा की भीतरी गवाही को सुनना सीखो।

- हमारे जीवनों में अनेक बार, जब परमेश्वर हम से हमारी भीतरी आत्मा के द्वारा बोल रहा होता है, हम सुनते नहीं हैं।

2. परमेश्वर की इच्छा निर्धारित करने के लिए बाहरी चिन्ह खोजना

न्यायियों 6: गिदोन की कहानी

नए नियम के मसीही होने के नाते, क्या हमें गिदोन के समान चिन्ह खोजने चाहिए?

सबसे पहले, हमें कुछ सच्चाइयों को समझना है:

अ. गिदोन एक नया-जन्मा विश्वासी नहीं था।

- वह नई वाचा के अधीन नहीं था।
- वह एक पतित पीढ़ी में जी रहा था।
- उसका पिता बाल देवता का भक्त था।
- वह परमेश्वर को एक व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था।

आ. परन्तु मसीहियों में परमेश्वर की ज्योति है जो गिदोन में नहीं थी।

- हम नई वाचा के अधीन हैं।
- हम परमेश्वर से जन्मे हैं।
- परमेश्वर का आत्मा हम में है
- हमारे पास परमेश्वर का वचन है।
- यदि हम चिन्हों को खोजने लगें या ऊन रखने लगें, तो हम संकट में पड़ सकते हैं।
- नए नियम में हम केवल एक बार ऐसा कुछ पाते हैं, वो प्रेरितों अध्याय एक में है।
- परन्तु प्रेरितों अध्याय दो में पवित्र आत्मा आया। वह हमारे भीतर रहने आया। फिर दोबारा नए नियम में हम ऐसा कभी कुछ किसी को करते नहीं पाते हैं।

यदि हम परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए चिन्ह खोजते हैं, तो हम धोखे में पड़ सकते हैं।
हमें बाहरी चिन्हों के बजाय हमारे भीतर रह रहे परमेश्वर के आत्मा के अनुसार चलना है।

इ. यहोशू के जीवन में बाहरी चिन्हों के धोखे को याद करो (यहोशू 9:3-16)

- इसिलिए हमें संवेदनशील होने की आवश्यकता है।
- यदि कुछ सही नहीं लगता है, तो परमेश्वर की बाट जोहने में समय लगाओ।
- परमेश्वर हमारा मार्गदर्शन करना चाहता है।
- परमेश्वर हमारे हृदयों द्वारा हमारी अगुआई करता है।

3. व्यक्तिगत भविष्यद्वाणी द्वारा परमेश्वर की इच्छा खोजना

अ. भविष्यवाद्वाणी के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें:

1. जो भविष्यद्वाणी असल से परमेश्वर के आत्मा से है, परमेश्वर के लिखित वचन का कभी भी खण्डन नहीं करेगी।
2. नए नियम की भविष्यद्वाणी का वरदान मार्गदर्शन के लिए नहीं है।
    - अ. नया नियम हमें नहीं सिखाता कि भविष्यद्वाणी के अनुसार चलें।
    - आ. 1 कुरिं. 12:7-11 में हम आत्मा के नौ वरदान पाते हैं जो अध्ययन के उद्देश्य से तीन वर्गो में विभाजित किए गए हैं:
        1. सामर्थ्य के वरदान
        2. प्रकाशन के वरदान
        3. मौखिक वरदान
3. नए नियम में भविष्यद्वाणी का उद्देश्य 1 कुरिं. 14:1-5 में दिया है:
    - अ. उन्नति: निर्माण करना
    - आ. उपदेश: परमेश्वर के करीब बुलाना
    - इ. शान्ति : सान्त्वना देना
4. हमें भविष्यद्वाणी द्वारा मार्गदर्शन नहीं पाना है।
    - अ. पवित्र आत्मा उन चीजों की पुष्टि कर सकता है जिन्हें परमेश्वर ने दूसरों द्वारा हम से पहले ही कही हैं।
    - आ. मुख्य बात परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बंध विकसित करना है।
    - इ. भविष्यद्वाणी कलीसिया की उन्नति, उपदेश और शान्ति के लिए है।

आ. कलीसिया में परमेश्वर के कार्य को स्वीकार करना (1 थिस्स. 5:19-21)

1. हमें भविष्यद्वाणियों को तुच्छ नहीं जानना है।
2. कभी-कभार पवित्र आत्मा भविष्य की घटनाएँ प्रकट कर सकता है।
3. परन्तु हमें सब चीजों को परखना है।
4. भविष्यद्वाणियाँ परखी जा सकती हैं।
5. क्योंकि मनुष्य गलती कर सकता है।
6. हम भविष्यद्वाणी को परमेश्वर के वचन से परख सकते हैं।
7. हम भविष्यद्वाणी की परख पवित्र आत्मा की अपनी आत्मा में गवाही से कर सकते हैं।
8. यदि यह परमेश्वर से है, तो इसे ग्रहण करो।
9. परन्तु किसी को अपने जीवन को व्यक्तिगत भविष्यद्वाणी द्वारा मार्गदर्शन करने देने के फंदे में मत फँसो।

इ. नए नियम में परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन के अनेक तरीके:

1. सपनों द्वारा
2. दर्शनों द्वारा
3. पवित्र आत्मा की आवाज सुनने से

ई. यह भीतरी प्रभाव से कहीं बढ़कर है:

1. परमेश्वर हमारी इन में से कोई भी तरीकों से जो वह चुनता है, हमारी अगुआई कर सकता है।
2. उन तरीकों से मार्गदर्शन पाने की खोज मत आरम्भ करो।
3. यदि आप करते हो, तो धोखे में पड़ सकते हो।
4. आपके पास परमेश्वर का वचन है।
5. आपके पास पवित्र आत्मा की उपस्थिति है।
6. परमेश्वर सदा आपको आपके हृदय में शान्ति द्वारा मार्गदर्शन देगा।
7. इन चीजों पर ध्यान दो। यदि परमेश्वर आपको किसी प्रभावशाली चीज द्वारा मार्गदर्शन देने का फैसला करता है, तो यह उसका परमाधिकार है।

8. यदि आपको एक सपना, एक दर्शन या एक प्रकटीकरण मिलता है, या यदि आप एक आवाज सुनते हो, तो यह परमेश्वर के लिखित वचन का खण्डन नहीं करेगा।
9. प्रभु के साथ गहरा और घनिष्ठ सम्बंध विकसित करो।
10. पवित्र आत्मा को पहचानना सीखो।
11. उसके भीतरी प्रभावों को सुनना और अनुभव करना सीखो।
12. परमेश्वर के वचन को जानो।

विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे....

"**विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे**" (**मरकुस** 16:17)

यहाँ मसीह अलौकिक सामर्थ्य की दो अभिव्यक्तियों को बिलकुल साथ में जोड़ता है जिन्हें मसीही विश्वासियों की गवाही की पुष्टि करनी है। पहली है दुष्टात्माओं को निकालना; दूसरी है नई भाषाओं में बोलना। आज विश्वव्यापी कलीसिया में हम नई भाषाओं में बोलने के विषय में काफी कुछ सुनते हैं (विशेषकर पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने के प्रमाण के रूप में), परन्तु दुष्टात्माओं को निकालने के विषय में बहुत कम। कैसे हो सकता है कि ये दो अभिव्यक्तियाँ एक दूसरे इतनी दूर हो गई हैं ?
असल में, मसीह दुष्टात्माओं को निकालना नई भाषाओं में बोलने से पहले रखता है। यह क्रम महत्त्वपूर्ण है। इरादा यह है कि इससे पहले लोग आत्मा में बपतिस्मा और नई भाषाओं में बोलना खोजें, वे दुष्टात्माओं से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाएँ। परन्तु, बुद्धि और समझ की कमी के कारण, यह सामान्यतः कलीसिया में आजकल उपयोग में नहीं लाया जाता है। परिणाम यह होता है कि लोग अकसर पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाते हैं और नई भाषाओं में बोलते हैं, परन्तु उन्हें फिर भी दुष्टात्माओं से छुटकारा पाने की आवश्यकता होती है। अब समय है कि कलीसिया प्रार्थनापूर्वक, खुले मन से दुष्टात्मा-विद्या के विषय में अर्पित हो।

"दुष्टात्मा" के लिए नए नियम का यूनानी शब्द है 'daimonion"। यह एक दूसरे यूनानी शब्द "daimon" का आल्पार्थक किस्म है। यूनानी पौराणिक कथाओं और लोकसाहित्यों में, ये शब्द एक विशेष प्रकार के प्राणियों का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे जिन्हें विभिन्न दर्जे के अलौकिक प्रभाव या शक्ति का श्रेय दिया गया था। इन प्राणियों से विभिन्न पूजापद्धतियाँ और अन्ध-विश्वासी प्रेक्षण जुड़े हुए थे, और आम व्यक्ति के रोजाना के जीवन में वे एक महत्त्वपूर्ण भाग अदा करते थे।
नए नियम में इस से सम्बधित एक और वाक्यांश इस्तेमाल किया है, जो है "अशुद्ध आत्मा"। प्रकाशितवाक्य अध्याय 16, आय. 13 और 14 की तुलना से पता चलता है कि ये दो वाक्यांश "दुष्टात्मा" और "अशुद्ध आत्मा" कुछ कुछ अन्तर्बदल करके इस्तेमाल किए गए हैं।

मनोविज्ञान साधारणतः उन तीन तत्त्वों को पहचानती है जो "व्यक्तित्व" के विचार से जुड़े हैं। ये तीन तत्त्व हैं: ज्ञान, इच्छा-शक्ति और भावना। यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि ये तीनों तत्त्व नए नियम के दुष्टात्माओं के चित्र में पाए जाते हैं।

दुष्टात्माएँ ज्ञान रखती हैं। मरकुस 1:24 में, कफरनहूम के आराधनालय में जिस व्यक्ति में दुष्टात्मा थी, उसने मसीह से कहा: "मैं जानता हूँ, तू कौन है ? परमेश्वर का पवित्र जन !" प्रेरितों 19:15 में, इफिसुस के उस व्यक्ति में से दुष्टात्मा ने स्क्किवा के सात पुत्रों को कहा: "यीशु को मैं जानती हूँ, और पौलुस को भी पहचानती हूँ, परन्तु तुम कौन हो ?"
दुष्टात्माओं की इच्छा-शक्ति होती है। मत्ती 12:44 में, दुष्टात्मा जो मनुष्य में से निकल जाती है, पर विश्राम की जगह पाती नहीं, कहती है, "मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी, लौट जाऊँगी।" लूका 8:31-33 में, गिरासेनियों के देश के दुष्टात्माओं ने अपनी इच्छा-शक्ति यह कहकर बड़ी दृढ़ता से दिखाई कि उन्हें अथाह गड़हे में जाने की आज्ञा न दी जाए परन्तु सूअरों में पैठने दिया जाए।
दुष्टात्माओं में भावनाएँ होती हैं। याकूब 2:19 में हम पढ़ते हैं: "दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और थरथराते हैं।"
दुष्टात्माओं की बोलने की उनकी योग्यता एक और तथ्य है जो उनके व्यक्तित्व को अनुप्रमाणित करता है। यह नए नियम के अनेक वाक्यांशों में पाया जाता है। मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से, हम सामान्तः व्यक्तित्व का विचार उसी पर लगाते हैं जो अपने आप को बोधगम्य बोली द्वारा व्यक्त कर सकता है।

इसलिए हर स्वीकृत स्तर से, हम देखते हैं कि दुष्टात्माएँ व्यक्तित्व के सारे गुण प्रकट करते हैं। यह बहुत बड़े महत्त्व का है। मसीही विश्वासी तब तक दुष्टात्माओं से सफलतापूर्वक निपट नहीं पाएँगे जब तक वे पहचानते नहीं कि वे व्यक्ति हैं, चीजें नहीं। एक दुष्टात्मा एक आदत, या एक मानसिक स्थिति, या एक मनोवैज्ञानिक दशा नहीं है। एक दुष्टात्मा एक व्यक्ति है।
1 कुरिन्थियों 12:10 में दी गई "आत्माओं की परख" नामक पवित्र आत्मा की अभिव्यक्ति एक साधन है जिसके द्वारा दुष्टात्माओं की उपस्थिति या कार्य का पता लगाया जा सकता है। अनेक मसीही जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए हैं इस परख को कुछ परिमाण तक प्रकट करते हैं, परन्तु अकसर वे पवित्र आत्मा के वरदान के इस प्रचालन के स्वभाव को सम्पूर्ण रूप से समझते नहीं हैं और इसलिए इसका भरपूर लाभ नहीं उठाते हैं। इस प्रकार की परख नियमित इस्तेमाल द्वारा बढ़ाई जाती है। इसी कारण से हम इब्रानियों

5:14 में पढ़ते हैं, "पर अन्न सयानों के लिए है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते भले-बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।" आज की कलीसिया में, कुल मिलाकर बहुत कम विश्वासी हैं जो आत्मिक परिपक्वता का यह चिन्ह दिखाते हैं।

यदि मसीही अपनी आत्मिक इन्द्रियाँ उपयोग में लाने के इच्छुक हों, तो उन्हें जल्दी ही पता चलेगा कि ऐसे बहुत से विभिन्न लक्षण हैं जो सामान्यतः दुष्टात्माओं की उपस्थिति या कार्य का संकेत देते हैं। इनमें से सबसे सामान्य लक्षण, दो शीर्षकों में, नीचे दिए गए हैं: पहला, मनोवैज्ञानिक, मुख्य रूप से अन्दरूनी स्वभाव और व्यक्तित्व से सम्बंधित है; दूसरा, शारीरिक, मुख्य रूप से बाहरी शारीरिक रूप-रंग और दशा से सम्बंधित है।

1. मनोवैज्ञानिक

(अ) दृढ़ या आवर्तक बुराई या विनाशक भावनाएं या रवैये जो एक व्यक्ति को उसकी अपनी इच्छा-शक्ति या स्वभाव के विरुद्ध अधिकार में रख सकते हैं: उदाहरणार्थ, नाराजगी, घृणा, डर, ईर्ष्या, डाह, धमण्ड, आत्मदया, तनाव, अधीरता।

(आ) "मनोदशा (मूड)" - अनुचित, आकस्मिक, अत्यधिक घटाव-बढ़ावः उदाहरणार्थ, बातूनी प्रफुल्लता से खामोश उदासी तक।

(इ) विभिन्न प्रकार के धार्मिक भ्रम या बन्धनः उदाहरणार्थ, पवित्रशास्त्र-निरपेक्ष तपस्या की अधीनता, सामान्य भोजन खाने से इनकार, सब प्रकार के अन्ध-विश्वासी अनुपालन, सब प्रकार की मूर्तिपूजा।

(ई) तावीज, तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष, फलित-ज्योतिष, ओझा, आदि का सहारा लेना।

(उ) वशीभूत करनेवाली आदतें: उदाहरणार्थ, पेटूपन, शराब, निकोटीन, मादक औषध, सब प्रकार का व्यभिचार, अनियंत्रणीय अशुद्ध विचार या नज़र।

(ऊ) ईश-निन्दा, उपहास, अशुद्ध भाषा।

(ए) बाइबल की सच्चाई या पवित्र आत्मा के कार्यों का दृढ़ या हिंसक विरोध।

2. शारीरिक

(अ) अपसामान्य बेचैनी और बातूनीपन; बुदबुदाना।

(आ) आँखें भावशून्य या असामान्य रूप से चमकीलीं और बाहर निकली हुई, या स्वाभाविक रूप से फोकस करने में अयोग्य।

(इ) मुँह पर झाग; बदबूदार साँस।

(ई) धकधकी, या हृदय की असामान्य तेज गति।

(उ) पवित्र आत्मा के सामर्थ्य को टालना या संघर्ष करना।

अनेक मामलों में, इनमें से केवल एक लक्षण दुष्टात्मा की उपस्थिति या कार्य का निर्णायक संकेत नहीं देगा। परन्तु जहाँ इनमें से कई लक्षण इकट्ठे पाए जाएँ तो दुष्टात्मा के कार्य की सम्भवना बहुत ही अधिक होती है।

इन लक्षणों के अतिरिक्त, नया नियम साफ-साफ संकेत देता है कि दुष्टात्माएँ अकसर शारीरिक बीमारी या कमजोरी के कारण होते हैं। उदाहरण के तौर पर, लूका 13:11 में, हम एक स्त्री के बारे में पढ़ते हैं "जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।" जैसे ही वह दुर्बल करनेवाली आत्मा से छूट गई, उसकी शारीरिक दशा पूर्णतया सामान्य हो गई। यीशु ने स्वयं कहा कि वह "अब्राहम की बेटी" है। जिसका अर्थ है, वह एक सच्ची विश्वासिन थी। ऐसा कहा नहीं गया है कि वह किसी विशेष पाप की दोषी थी। दुष्टात्मा की शक्ति केवल उसकी शारीरिक देह में प्रकट हुई थी।

फिर प्रेरितों 19:12 में, हम इफिसुस में पौलुस की सेवकाई के विषय में पढ़ते हैं: "रुमाल और अंगोछे उसकी देह से स्पर्श करा कर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियाँ जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएँ उनमें से निकल जाया करती थीं।" यहाँ "दुष्टात्माएँ" और "बीमारियाँ" एक तरीके से एक साथ शामिल हैं जिससे साफ-साफ परिणाम निकलता है कि इन दोनों में किसी प्रकार का अनियमित सम्बंध है।

नीचे कुछ सामान्य मानसिक या शारीरिक अवस्थाएँ दी हैं जो कभी-कभी दुष्टात्माओं द्वारा उत्पन्न की जाती हैं: पागलपन, अनिद्रारोग, मिरगी, दौरा, मरोड़, आधासीसी, दमा, सानसाइटिस, अर्बुद, फोड़ा, हृदय रोग, गठिया, लकवा, गूँगापन, अंधापन।

<u>दुष्टात्माओं के विनाशक प्रभाव और शक्ति से छुटकारे की शर्तें क्या हैं?</u>

सही रोग निदान पहली शर्त है। 1 कुरिन्थियों 9:26 में, पौलुस अपनी सेवकाई का वर्णन इस प्रकार करता है: "मैं..लड़ता हूँ, परन्तु उसके समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है।" जहाँ मसीहियों का सामना दुष्टात्माओं से होता है, परन्तु अपने शत्रु की प्रकृति

को पहचानते नहीं, तो वे उस मुक्केबाज के समान होते हैं जो मुक्कों को अन्धाधुन्ध मारता तो है परन्तु अपने मुक्के अपने विरोधी के शरीर पर लगा नहीं पाता है। वे बहुत सा समय और शक्ति खर्च करते तो हैं परन्तु वे अदृश्य शत्रुओं से जो उनका विरोध करते हैं, असली "सम्पर्क" कभी नहीं बना पाते हैं। इसी कारण से, अपेक्षाकृत कम ही प्राप्त होता है।

एक बार जब दुष्टात्माओं की उपस्थिति और कार्य ठीक-ठीक निदान किया गया है, तो छुटकारे के लिए आगे और भी अनेक शर्तें होती हैं। इनमें से कुछ उस विश्वासी से सम्बंधित हैं जो छुटकारा दे रहा है; दूसरी उस व्यक्ति से सम्बंधित हैं जिसे छुटकारे की आवश्यकता है।
सुविधा के लिए हम उस विश्वासी को जो छुटकारा दे रहा है "सेवक" कहेंगे। नीचे पाँच महत्त्वपूर्ण शर्तें दी गई हैं:

(1) सेवक को यीशु के नाम में उसे सौंपे गये अधिकार को पहचानना अवश्य है। यीशु ने स्वयं कहा, "वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे।" लूका 10:17 में हम पढ़ते हैं: "वे सत्तर आनन्द करते हुए लौटे और कहने लगे, 'हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।'" प्रेरितों 16:18 में, जब पौलुस फिलिप्पी में लड़की में भावी कहनेवाली आत्मा से बोला, तो उसने कहा, "मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ कि उसमें से निकल जा।"
(2) सेवक को पवित्र आत्मा के सामर्थ्य की आवश्यकता है। मत्ती 12:28 में, यीशु ने कहा, "पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।" तो वह इस प्रकार दुष्टात्माओं को निकालने की अपनी योग्यता का श्रेय पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को देता है। उसी प्रकार, लूका 4:18 में, वह "बन्दियों को छुटकारे का..प्रचार...कुचले हुओं को.." छुड़ाने की अपनी योग्यता का श्रेय पवित्र आत्मा के अभिषेक को देता है।
(3) सेवक को बाइबल के संबद्ध सिद्धान्त को, जो पापों की क्षमा की शर्तों और यीशु के लहू के द्वारा उद्धार के कानूनी आधार को निश्चित करते हैं, समझना और हर मामले में प्रयोग में लाना चाहिए।
(4) सेवक को घनिष्ठ व्यक्तिगत सलाह के लिए समय और स्थान दोनों देने के लिए अकसर तैयार रहना चाहिए। सामान्य रूप से, सबसे अधिक अनुपयुक्त समय या स्थान एक सार्वजनिक सभा के दौरान कलीसिया का अग्र भाग होता है।
(5) सेवक को किसी भी प्रकार के आत्मिक घमण्ड से सावधान रहना चाहिए। उसे उसकी ओर जिसे छुटकारे की आवश्यकता है, सच्चे, परमेश्वर द्वारा दिए दया से प्रेरित होना चाहिए। कलीसिया के सारे प्रचार कार्यों में, आजकल उन लोगों से, जिन्हें दुष्टात्माओं से छुटकारे की आवश्यकता है, अधिक दरिद्र या दयनीय और कोई नहीं है।

हम अब उसकी ओर ध्यान देंगे जिसे छुटकारे की आवश्यकता है, जिसे सुविधा के लिए हम "मरीज" कहेंगे। नीचे छुटकारे की कुछ माँगें दी गई हैं:

(1) **दीनता**। मरीज को, इससे पहले कि वह शैतान का सामना कर सके, दीन होकर, परमेश्वर के अधीन होना चाहिए (याकूब 4:6-7 देखो)।
(2) **ईमानदारी**। यह मरीज की दशा और कोई पाप जिसका उस दशा में हाथ हो, दोनों की पूरी और खुली स्वीकृति की माँग करता है।
(3) **पापस्वीकार**। मरीज सारे ज्ञात पापों को परमेश्वर के सामने विशेष रूप से स्वीकार करे (1 यूहन्ना 1:9 देखो)। इसके अतिरिक्त, उसे उसके सामने भी पापस्वीकार करने होंगे जो उसके छुटकारे के लिए उसके साथ प्रार्थना कर रहा है। यह याकूब 5:16 के अनुसार अपेक्षित है - "तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो।" यह परमेश्वर के सामने ही नहीं, बल्कि मनुष्यों के सामने पापस्वीकृति की भी बात करता है। क्रम यूँ है: पहले "पापस्वीकार", तब "प्रार्थना"।
(4) **त्याग**। बिना पाप का त्याग का किए, उसका स्वीकार करना काफी नहीं है। "जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाएगी" (नीतिवचन 28:13)। "दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा" (यशायाह 55:7)। पापी न केवल अपना "चालचलन" त्याग दे (उसके बाहरी कार्य), परन्तु "अपने सोच विचार" भी त्याग दे (भीतरी पापी झुकाव या इच्छाएँ, चाहे वे बाहरी चालचलन में दिखाई न दें)। "दया" और "क्षमा" से पहले "त्यागना" आना अवश्य है।
(5) **क्षमा**। जो परमेश्वर से क्षमा की इच्छा रखता है, वह पहले अपने साथी मनुष्यों को क्षमा कर दे। नाराजगी और क्षमा न करनेवाला हृदय, छुटकारे में दो सबसे आम रुकावटें हैं। इब्रानियों 12:15 में हमें "कड़वी जड़" से सावधान रहने को कहा

है। जहाँ कड़वाहट ने हृदय को दूषित किया हुआ है, वहाँ से इसे पूरी तरह से निकलना है, ताकि इसकी एक जड़ भी वहाँ न रह जाए। प्रभु की प्रार्थना में शब्दों के क्रम का एक विशेष महत्त्व है। पहला, "जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर" (यानी, परमेश्वर से हमारी क्षमा, अपने साथी मनुष्य की हमारी क्षमा के समानुपात में है)। फिर, "हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा।" इसका कहने अर्थ है कि छुटकारे से पहले क्षमा आनी चाहिए। क्षमा के बिना, छुटकारे का हमारा कोई हक नहीं है।

(6) जब मरीज ने ऊपर दी गई पाँच शर्तों को पूरा कर लिया हो, तो वह अब योएल 2:32 की प्रतिज्ञा पर दावा करने की स्थिति में है। "उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा।" प्रभु यीशु मसीह के नाम को जोर से पुकारना, सामान्यतः छुटकारे की प्रक्रिया को आरम्भ कर देता है।

<u>यह अनुभूति होना अवश्य है कि छुटकारा साधारणतः एक प्रक्रिया है</u>। यह प्रक्रिया संक्षिप्त या लम्बी; तनावदार और नाटकीय, या शान्त और मुश्किल से गोचर हो सकती है। परन्तु जब कभी भी एक व्यक्ति में से दुष्टत्मा निकाली जाती है, कुछ निश्चित अनुभव या प्रतिक्रिया होती है। जहाँ कोई निश्चित अनुभव या प्रतिक्रिया नहीं होती, तो शंकनीय होगा कि छुटकारा असल में हुआ है। इस विषय में, कुछ बहुत सरल, सामान्य बुद्धि के नियम उपयोग में लाए जाते हैं। यदि एक व्यक्ति में कहीं भी कोई दुष्टात्मा है तो उसे बाहर निकलना है। जब तक दुष्टात्मा असल में बाहर नहीं आता, छुटकारा नहीं हुआ है। साधारणतः दुष्टात्मा अपनी उपस्थिति प्रकट करने और निकल आने में विवश किए जाने के बजाय छुपे रहने का प्रयास करेगा।

एक दुष्टात्मा एक "आत्मा" है। "आत्मा" के लिए यूनानी शब्द है "pneuma" जिसका अर्थ हैः "साँस"। एक व्यक्ति की साँस उसके शरीर में उसके मुँह या नाक में से आती या जाती है। यही बात दुष्टात्माओं के विषय में भी सच है। जब एक दुष्टात्मा एक व्यक्ति में से निकलती है, तो यह सामान्यतः उसके मुँह में से निकलती है। इस समय अकसर कुछ निश्चित प्रदर्शन होता है। इस प्रकार के कुछ प्रदर्शन जो मुँह से सम्बंधित हैं, होते हैं जो छुटकारे की इस प्रक्रिया के चरम बिन्दु का संकेत होता हैः फुफकार, खाँसी, सिसकी, चीख, गर्जन, डकार, थूकना, उलटी।

चिल्लाने या गर्जने की घटना प्रेरितों 8:7 में उल्लेख पाती हैं - "बहुतों में से अशुद्ध आत्माएँ बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं।" परन्तु, विभिन्न सम्भव घटनाओं में से ये दो ही हैं जो किसी प्रकार मुँह से सम्बंधित हैं। अनुभव ने मुझे निश्चय दिलाया है कि विभिन्न प्रकार की दुष्टात्माएं विभिन्न प्रकार के व्यवहार प्रकट करती हैं। उदाहरणार्थ, लौंगिक अशुद्धता की दुष्टात्माएँ साधारणतः वैसे ही थूकते या उलटी करते हुए निकलती हैं (और अकसर साथ में बड़ी मात्रा में चिपचिपा, श्लेष्मल पदार्थ भी निकलता है), डर की दुष्टात्मा साधारणतः एक प्रकार की उन्मत्त सिसकने और रोने के साथ निकलती है। झूठ और घृणा की दुष्टात्माएँ जोर की गर्जन की आवाज करती हैं। निकोटीन (सिगरेट पीने) की दुष्टात्मा खाँसी या हाँफने के साथ निकलती है।

कभी-कभार यह होता है कि दुष्टात्माएँ मरीज के व्यक्तित्व को असल में अलग कर देती हैं और उसके द्वारा अपने व्यक्तित्व को प्रकट और व्यक्त करती हैं। कभी-कभी वे मरीज के वाणी के अंगों को वश में कर लेती हैं और अपने शब्दों को बोलने के लिए उन्हें इस्तेमाल करती हैं। कभी-कभी यह आवाज में बदलाव भी लाता है। एक स्त्री के गले में से एक रूखी, पुरुष की आवाज निकलती सुनाई देती है। यह भी कभी-कभार होता है कि एक व्यक्ति में से दुष्टात्मा एक ऐसी भाषा समझता और बोलता है जो व्यक्ति के लिए अनजान होती है। ऐसे मामलों में, सेवक यीशु के नाम में उसे सौंपे हुए अधिकार को प्रयोग में लाकर, हर दुष्टात्मा को अपना नाम बताने के लिए आज्ञा देता है, जिससे उसका स्वभाव और कार्य प्रकट होता है। नीचे कुछ नाम दिए गए हैं जिन्हें मैं ने दुष्टात्माओं को लेते हुए सुना हैः डर - घृणा - झूठ - संदेह - ईर्ष्या - डाह - उलझन - विकृति - खंडित मनस्कता - मृत्यु - आत्महत्या - व्यभिचार - उपहास - ईश-निन्दा - जादू-टोना।

ईश्वरीय विधान के द्वारा आजकल रूढ़िवाद और विषयासक्ति के पर्दे एक बार फिर हटाए जा रहे हैं, और यीशु मसीह की कलीसिया उसी प्रकार की शैतानी हरकतों का सामना कर रही है जिसका नए नियम की कलीसिया ने किया था। इन परिस्थितियों में, कलीसिया को उन अधिकार और सामर्थ्य के साधनों को दोबारा खोजना चाहिए जो बाइबल की सत्यता, पवित्र आत्मा के अभिषेक, और प्रभु यीशु मसीह के नाम और लहू द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं !

बाइबल का विवरणः सुसमाचारों, प्रेरितों और पत्रों में चिन्ह और चमत्कार

प्रस्ताव

चिन्ह और चमत्कार यीशु की सेवकाई के मर्म थे (और हैं)। महान कार्याधिकार में, परमेश्वर का अधिकार कलीसिया को दिया गया था। पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर का सामर्थ्य दिया गया था। यीशु ने अपनी सेवकाई अपने बपतिस्मा के समय आत्मा से सामर्थ्य पाकर आरम्भ की थी। यीशु का खुद शैतान के साथ संघर्ष हुआ था। उसने और सुसमाचारों के लेखकों ने बीमारी को शैतान के काम के रूप में देखा था। यीशु की चिन्ह और चमत्कारों की सेवकाई पवित्र आत्मा, जो कल्पनाशील और रचनात्मक है, के साथ उसके सम्बंध पर आधारित थी। इसीलिए, हमें यीशु की सेवकाई को, एक चिन्ह और चमत्कारों की सेवकाई विकसित करने के उद्देश्य से एकपक्षीय सिद्धान्तों के समूह के दरजे तक ले आने का प्रयास नहीं करना है।

चेले, जो प्रारम्भिक कलीसिया थे, उसी सेवकाई को करने के लिए समर्थ किए गए थे जो यीशु ने की थी। जिसका परिणाम चिन्ह और चमत्कार थे जो सारी प्रेरितों की पुस्तक में हुए थे। उनका होना और प्रारम्भिक कलीसिया के बढ़ने में एक गहरा सम्बंध है। जब कभी सुसमाचार सुनाया गया और चिन्ह और चमत्कार हुए, कलीसिया बढ़ी थी। नए नियम की कलीसिया की क्रियाएं अलौकिक के पूर्वाभास का प्रदर्शन थीं। कलीसिया की अगुआई अलौकिक साधनों, अर्थात्, दर्शनों, स्वर्गदूतों के आने, भविष्यद्वाणियों, आदि से होती थी। जब सामर्थ्य की मुठभेड़ हुई, चिन्ह और चमत्कार हुए थे। नए नियम में हमारे लिए सफलताएँ और असफलताएं दोनों लिखी गई हैं। पत्र विशेषकर कुछ प्रत्यक्ष असफलताओं की बात करते हैं।

चिन्ह और चमत्कार अकसर प्रेरिताई और सुसमाचार संदेश के गवाह के रूप में किए जाते थे। वे उसके लोगों के लिए परमेश्वर की दया के प्रतीक थे और हैं भी।

प्रलेखन

परिचय

मत्ती 14:26-29 में, हम यीशु का पानी पर चलने और पतरस का निवेदन और वैसा ही करने के प्रयास का वर्णन पढ़ते हैं: 'चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए। और कहने लगे, "यह भूत है!" और डर के मारे चिल्लाने लगे। तब यीशु ने तुरन्त उनसे बातें कीं और कहा, "ढाढ़स बाँधो! मैं हूँ, डरो मत!" पतरस ने उसको उत्तर दिया, "हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे। "उसने कहा, "आ!" तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा।' चंगा करना सीखना वैसा ही है जैसा पानी पर चलना सीखना। दोनों क्षेत्रों में, संबद्ध बाइबल के सिद्धान्तों को जानना, समझना कि यीशु सारी सृष्टि का प्रभु है, दूसरों से बात करना जो इस कार्य में सफलतापूर्वक लगे हुए हैं, और क्यों विभिन्न अभिगम सफल होते या असफल होते हैं के विवरण मिलाना लाभदायक होगा। यह सब चीजें सहायक हैं। परन्तु, जब "नाव में निकलने का समय आता है", तब "पानी पर चलने" के सब अच्छे विचार और अन्तर्दृष्टियाँ कुछ अधिक काम की नहीं होतीं। प्रकृति के नियमों से सफलतापूर्वक आगे बढ़ने की योग्यता कार्य-कौशलों या प्रणाली-विज्ञान का विशेषज्ञ बनने से नहीं प्राप्त होती है। जब पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में सेवा करने की बात होती है तब अनेक लोगों को पता तो होता है कि क्यों चीजें काम कर सकती हैं या करनी चाहिए - परन्तु कम ही लोग उन्हें अपने अनुभव में होता हुआ देखते हैं।

यीशु की चंगा करने की सेवकाई का "कैसे" एक रहस्य है! परन्तु इससे भी अधिक पेचीदा प्रश्न "क्यों" का है। यीशु अपनी चंगा करने की सेवकाई को जारी रखने के विशेषाधिकार को अपने चेलों को क्यों देगा? सच्च तो यह है कि उसने ऐसा करने का फैसला किया है! यह कितना भी दुखदायी क्यों न हो, उसकी देह के कुछ सदस्य हैं जो चमत्कारी के क्षेत्र में प्रवेश करके उसकी ओर आज्ञापालन की प्रतिक्रिया दिखा रहे हैं। याद रखो, ग्यारह चेले नाव में ही रहे थे। केवल पतरस ने ही पानी पर उतरने का साहस किया था। परिणामस्वरूप वह केवल पतरस ही था जिसने प्रभु के बुलावे के उत्तर में प्रकृति के नियमों को जीत लेने के विशेषाधिकार का आनन्द लिया।

आत्मा की सेवकाई उन से रोक ली जाती है जो शरीर की शक्ति में कार्य करने की कोशिश करते हैं। धमण्ड और महत्त्वाकांक्षा आत्मिक क्षेत्र में रुकावट होते हैं। एक व्यक्ति जो जीवित प्रभु के साथ महिमा बाँटने की कोशिश करता है उसके लिए अपनी उपयोगिता को सीमित करता है। दुख की बात है कि अनेक लोग जिन्हें एक चंगाई की सेवकाई में बहुत इस्तेमाल किया गया है इस सूक्ष्म और विनाशकारी भूल में पड़ जाते हैं। यदा-कदा जो आत्मा में आरम्भ होता है, शरीर में समाप्त हो जाता है। दुर्घटनाओं की सम्भवनाओं को जानते हुए, हमें चंगाई की सेवकाई के पास भय और पवित्र आत्मा पर सच्ची निर्भरता के साथ आना चाहिए। यीशु

आज भी वही कर रहा है जो वह गलील की झील पर तूफानी रात को कर रहा था - आम लोगों को प्रकृतिक नियमों के परे चमत्कारी क्षेत्र में उसके साथ चलने के लिए बुलाना। आत्मा के क्षेत्र में एक बात तो निश्चित है - ज्ञात से काफी अधिक अज्ञात है! परन्तु प्रभु हमें उसके पीछे हो लेने के लिए बुला रहा है। जैसे हम उसके पीछे चलने लगें, तो वह हमें देखने के लिए जो वह हमें दिखा रहा है आँखें दे; आत्मा की भाषा सुनने और समझने के लिए कान; और एक चमत्कारी जीवन का रोमांच पल-पल सहने के लिए काफी मजबूत हृदय दे।

यीशु की चंगाई की सेवकाई

जहाँ कहीं भी यीशु गए उन्होंने चंगा करनेवाले के रूप में काम किया। शारीरिक और मानसिक चंगाइयों की इकतालीस भिन्न-भिन्न घटनाएँ चार सुसमाचारों में लिखी गई हैं, परन्तु यह सम्पूर्ण विवरण नहीं है। अनेक संदर्भ लोगों की विशाल संख्या की चंगाई का सार बताते हैं। विस्तार में बताए गए विवरण यीशु की चंगा करने की सेवकाई के मात्र अधिक नाटकीय उदाहरण हैं। उद्धारकर्त्ता के जीवन और सेवकाई के अपने विवरण के अन्त में, यूहन्ना लिखता है: "यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं।" (यूहन्ना 20:30-31; 2125)
सुसमाचारों के विवरण का पाँचवा हिस्सा यीशु की चंगा करने की सेवकाई और इसके द्वारा पैदा हुई चर्चा को दिया गया है। चार सुसमाचारों की 3,779 आयतों में से, 727 आयतें विशेषकर शारीरिक और मानसिक चंगाई और मरे हुओं को जीवित करने से सम्बंधित हैं। चमत्कारों की आम चर्चा को छोड़, यीशु की चंगा करने की सेवकाई को दिया गया ध्यान किसी भी अनुभव को दिए ध्यान से कहीं अधिक बढ़कर है। शारीरिक और मानसिक चंगाई पर जोर की नैतिक शिक्षा को दिया कम ध्यान से तुलना चौंकानेवाली है। नीचे दिए चार्ट में, सुसमाचारों में दिए यीशु के चंगा करने के इकतालीस विवरण क्रम में लगाए गए हैं। कृपया इस सेवकाई की विभिन्नता, बहुसंख्यक प्रकृति और सुसमाचार के लेखकों द्वारा दी गई विशिष्टता पर ध्यान दो। दूसरा चार्ट यीशु की सेवकाई को वर्ग के अनुसार, जबकि तीसरा चार्ट चंगाइयों के अलावा यीशु के चमत्कारों को दिखाते हैं।

यीशु की चंगा करने की सेवकाई: बाहरीदृश्य

विवरण	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना	A	B	C	D	E	F	G	H	I	J
1. अशुद्ध आत्मा वाला मनुष्य		1:23	4:33		×	×								
2. पतरस की सास	8:14	1:30	4:38			×	×	×						
3. भीड़	8:16	1:32	4:40			×	×		×					
4. कई दुष्टात्माएँ		1:34			×					×				
5. कोढ़ी	8:2	1:40	5:12			×	×				×	×		
6. लकवा का रोगी	9:2	2:3	5:18			×			×					
7. सूखा हाथ वाल व्यक्ति	12:10	3:1	6:6			×					×			
8. भीड़	12:15	3:10			×									
9. गदरेनियों का दुष्टात्माग्रस्त	8:28	5:1	8:26		×	×								
10. याईर की बेटी	9:18	5:22	8:41			×	×		×					
11. लहू बहने वाली स्त्री	9:20	5:25	8:43								×		×	
12. थोड़े-से बीमार	13:58	6:5					×							
13. भीड़	14:34	6:55							×				×	
14. सुरूफिनीकी स्त्री	15:22	7:24						×	×					
15. बहिरा और हक्ला व्यक्ति		7:32				×	×	×						
16. अंधा व्यक्ति		8:22				×	×	×						
17. दुष्टात्माग्रस्त बालक	17:14	9:14	9:38			×	×		×	×				
18. अंधा बरतिमाई	20:30	10:46	18:35			×	×				×	×		

19. सूबेदार का सेवक	8:5		7:2					×	×					
20. दो अंधे	9:27					×	×				×			
21. दुष्टात्माग्रस्त गूँगा	9:32				×									
22. दुष्टात्माग्रस्त अंधा-गूँगा	12:22		11:14		×									
23. भीड़	4:23		6:17							×				×
24. भीड़	9:35									×				×
25. भीड़	11:7		7:21							×				×
26. भीड़	14:14		9:11	6:2								×		
27. बड़ी भीड़	15:30									×				×
28. बड़ी भीड़	19:2													
29. मंदिर में अंधे और लंगड़े	21:14													
30. विधवा का बेटा			7:11			×						×		
31. मरियम और दूसरी स्त्रियाँ			8:2		×									
32. दुष्टात्माग्रस्त कुबड़ी			13:10			×	×							
33. जलन्धर का रोगी			14:01				×							
34. दस कोढ़ी			17:11			×					×			
35. मलखुस का कान			22:50			×								
36. भीड़			5:15											
37. विभिन्न लोग			13:32		×									
38. राजकर्मचारी का पुत्र				4:46		×			×					
39. लाचार व्यक्ति				5:2		×					×			
40. जन्म का अंधा				9:1		×	×							
41. लाज़र				11:1		×								

कुँजी:

A. दुष्टात्माओं को निकाला
B. शब्द बोला
C. यीशु ने छूआ
D. दूसरे की प्रार्थना
E. दूसरे का विश्वास
F. यीशु का प्रचार
G. व्यक्ति का विश्वास
H. यीशु को तरस आया
I. व्यक्ति ने यीशु को छूआ
J. यीशु की शिक्षा

यीशु की चंगा करने की सेवकाई

श्रेणी द्वारा

विवरण	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
लंगड़ापन, लकवा				
सूबेदार का सेवक	8:5		7:1	
लकवा के रोगी	9:1	2:1	5:18	

सूखे हाथ वाला व्यक्ति	12:10	3:1	6:6	
दुष्टात्माग्रस्त कुबड़ी			13:16	
मंदिर में अंधे और लंगड़े	21:14			
कोढ़				
कोढ़ी	8:2	1:40	5:12	
दस कोढ़ी			17:12	
बुखार				
पतरस की सास	8:14	1:30	4:38	
राजकर्मचारी का पुत्र				4:47
अंधापन				
जन्म का अंधा				9:1
अंधा बरतिमाई	20:30	10:46	18:35	
अंधा व्यक्ति		8:22		
दो अंधे व्यक्ति	9:27			
मंदिर में अंधे और लंगड़े	21:14			
बहरे				
बहरा और गूँगा व्यक्ति		7:32		
जलन्धर का रोग				
जलन्धर का रोगी			14:1	
शारीरिक चंगाई				
मलखुस का कान			22:50	
पाप से निपटा				
लकवे का रोगी	9:2	2:3	5:17	
लाचार व्यक्ति				5:14
दुष्टात्माग्रस्त				
गदरेनियों का दुष्टात्माग्रस्त	8:28	5:1	8:26	
सुरूफिनीके स्त्री	15:22	7:24		
दुष्टात्माग्रस्त बालक	17:14	9:14	9:38	
अशुद्ध आत्मा वाला व्यक्ति		1:23	4:33	
मरियम और दूसरी स्त्रियाँ			8:2	
गूँगा दुष्टात्माग्रस्त	9:32			
भीड़	4:24			
भीड़	8:16			
अंधा और गूँगा दुष्टात्माग्रस्त	12:22		11:14	
कई दुष्टात्माएँ		1:32,39		
भीड़		3:10,6:13		
भीड़		4:36		
भीड़		6:34		
भीड़		7:17		
मरे हुओं में से जी उठे				
याईर की बेटी	9:18	5:22	8:41	
लाज़र				11:1
विधवा का बेटा			7:11	

सब्त के दिन चंगा हुआ				
अशुद्ध आत्माग्रस्त व्यक्ति		1:21	4:35	
सूखे हाथ वाला व्यक्ति	12:9	3:1	6:6	
दुष्टात्माग्रस्त कुबड़ी			13:16	
जलन्धर का रोगी			14:1	
लाचार व्यक्ति				5:2
जन्म का अंधा				9:1
लहू का बहना				
लहू बहनेवाली स्त्री	9:20	5:25	8:43	
भीड़				
कुछ बीमार लोग	13:58	6:5		
भीड़	14:34	6:55		
भीड़	4:23		6:17	
भीड़	9:35			
भीड़	14:14		9:11	6:2
बड़ी भीड़	15:30			
बड़ी भीड़	19:2			
भीड़				
विभिन्न लोग				
भीड़	11:4			
सब प्रकार के रोग				
	4:23	6:5		
	9:35			
	12:15	6:55		
	14:14			
	14:35			
	19:2			
समान शब्दावली				
दुष्टात्माग्रस्तों ने कहे	8:16	1:32	4:40	
		3:7	6:17	
			8:2	
ये सब और दूसरी श्रेणियाँ				
	4:24		7:21	
	15:30			
	21:14			
चंगाई के अतिरिक्त प्रकृति, अनुग्रह और न्याय के चमत्कार				
बहुत मछलियाँ			5:1-11	
तूफान शान्त करना	8:23-27	4:36-41	8:22-25	
पानी को दाखरस में बदलना				2:1-11
5000 को खाना खिलाना	14:15-21	6:32-44	9:12-17	6:1-13
पानी पर चलना	14:22-23		6:45-52	6:15-21
4000 को खाना खिलाना	15:32-39	8:1-10		

रूपान्तर	17:1-9	9:2-10	9:28-36	
मछली के मुँह में सिक्का	17:24-27			
परदे का फटना और भूँचाल	27:51	15:38	23:45	
153 मछलियाँ				21:1-14

यीशु की चंगाई के कार्य में कुछ मुख्य सिद्धान्त और नमूने

यीशु ने अपने बपतिस्मा और पवित्र आत्मा के अभिषेक के बाद से चंगा करना आरम्भ किया (लूका 3:21-22; 4:1-19)। उसने उनको जो उसके पास आए, हर प्रकार की बीमारी (मरकुस 7:31-37), दुष्टात्माओं और सम्बंधित प्रभावों (मत्ती 17:14-21) से, और शारीरिक मृत्यु (यूहन्ना 11:43-44) से भी छुड़ाया।

सुसमाचार लेखक बारंबार लिखते हैं कि यीशु के चंगाई के कार्य बीमारों के लिए तरस और दया से प्रेरित होते थे। उसे भीड़ पर (मत्ती 9:36; 14:14), और दो अंधों पर भी (मत्ती 20:34) तरस आया। जब उसमें और उसकी चंगा करने की सामर्थ्य में विश्वास दिखाया जाता था, तो वह अधिक चंगा करता जान पड़ता था। वह विशेषकर सूबेदार के "बड़े विश्वास" से प्रभावित हुआ था (मत्ती 8:5-13)। उसने अलौकिक रूप से "खाट उठानेवालों" के विश्वास को देखा, जब वे लकवे के रोगी को लाए थे। अनेक दूसरे उदाहरण अंधा व्यक्ति (मत्ती 9:27-31); लहू बहनेवाली स्त्री (मरकुस 5:24-34); दुष्टात्माग्रस्त लड़के का बाप (मरकुस 9:14-29) हैं। वह अपने गाँव में इतना प्रभावशाली न हुआ (लूका 4:23-28) जहाँ उसमें कोई विश्वास दिखाया नहीं गया था। यीशु ने कभी-कभी चंगा किया जब केवल उसका अपना ही विश्वास होता था, परन्तु वह स्पष्ट रूप से अविश्वासी (नकारात्मक विश्वास) वातावरण द्वारा सीमित होता था। वह नासरत में कोई बड़े काम न कर सका था (मरकुस 6:1-6; लूका 4:23-28), और उसे अंधे व्यक्ति को चंगा करने के लिए बैतसैदा से बाहर ले जाना पड़ा था (मरकुस 8:22)। यीशु सब समय चंगा करता जान पड़ता था, परन्तु जैसे वह आत्मा के साथ प्रवाहित होता था तो उसे स्पष्ट रूप से पता चलता था कि कब आत्मा विशेष रूप से सामर्थ्य में काम करने के लिए तैयार है, उदाहरणार्थ, "चंगा करने के लिए प्रभु की सामर्थ्य उसके साथ थी" - लूका 5:17)।

वह उन्हें सदा चंगा करने के लिए तैयार रहता था जो उसके पास विश्वास से आते थे, जैसे कि कोढ़ी (मत्ती 8:1-4), सूबेदार का बेटा (मत्ती 8:5-13), और सुरूफिनीकी स्त्री (मरकुस 7:24-30)। बारंबार प्रभु अनेक लोगों को, एक के बाद एक, विशाल सभाओं या भीड़ में चंगा करता था (मत्ती 4:23-25; 14:13-14; 15:30-31), परन्तु उनके लिए चमत्कार नहीं करता था जो केवल उसे परखना चाहते थे या अपना मन बहलाना चाहते थे, जैसे कि शास्त्री और फरीसी - मत्ती 12:38-42। जरूरतमन्दों की चंगाई का किसी भी आधार पर विरोध प्रभु को दुखी करता था! दो उदाहरण हैं वह सूखे हाथ वाला व्यक्ति जो सब्द के दिन चंगा हुआ (मरकुस 3:1-6); और वह स्त्री जिसमें दुर्बल करनेवाली आत्मा थी जो सब्द के दिन चंगी हुई (लूका 13:10-17)।

हमारे प्रभु ने चंगाई में अनेक नमूने और तरीके इस्तेमाल किए। कभी-कभी यह एक स्पर्श होता था, जैसा पतरस की सास के साथ हुआ (मत्ती 8:15); तो कभी यह एक प्रार्थना थी जैसा लाजर के साथ था (यूहन्ना 11:41-42)। वह अकसर आज्ञा का एक शब्द बोलता था, जैसे कि सूबेदार को "जा" (मत्ती 8:5-13); लकवे के रोगी को "उठ" (लूका 5:17-26); सूखे हाथ वाले मनुष्य को "अपना हाथ बढ़ा" (लूका 6:6-10; और नाईन की विधवा के बेटे को "उठ" (लूका 7:11-17)। कभी-कभी उसका तरीका एक स्पर्श और एक आज्ञा दोनों होते थे जैसा कोढ़ी के साथ हुआ (लूका 5:12-16)। दूसरे समयों में उसे छूना होता था, जैसा मत्ती 14:34-36 में "जितनों" ने; लूका 8:24-48 में लहू बहने वाली रोगी स्त्री ने उसे छुआ। कई अवसरों पर उसने थूक या मिट्टी इस्तेमाल की (बहिरा और हक्ला - मरकुस 7:31-37; अंधा व्यक्ति - मरकुस 8:22-26; अंधा व्यक्ति - यूहन्ना 9:6-7)। अकसर वह उनसे जो चंगा होने को आते थे विश्वास का कुछ कार्य करने को कहता थ। कुछ उदाहरण हैं: सूखे हाथ वाले मनुष्य को "अपना हाथ बढ़ा" (लूका 6:6-10); अंधे व्यक्ति को "जा, धो ले" (यूहन्ना 9:7); और दस कोढ़ियों को "जाओ, और अपने आप को याजकों को दिखाओ" (लूका 17:11-19)।

यीशु ने अकसर खुले आम चंगा किया, हालाँकि कभी-कभी वह अलग हो जाता (विशेषकर नकारात्मक वातावरण में) और एकांत में चंगा करता था, जैसा कि याईर की बेटी (मरकुस 5:35-43), बैतसैदा का अंधा व्यक्ति (मरकुस 8:22-26); और पतरस की सास (लूका 4:38-39) के साथ हुआ। वह अकसर चंगाई के विषय में प्रश्न पूछता था, यह संकेत देने के लिए कि: 1) जबकि कभी-कभी उसे ज्ञान के वचन मिलते थे, तो कभी-कभी नहीं मिलते थे; 2) वह अपना ध्यान लक्ष्य पर रखना चाहता था। उसने अंधे व्यक्ति को पूछा, "क्या तू कुछ देखता है ?" (मरकुस 8:22-26); गिरासेनियों के दुष्टात्माग्रस्त से पूछा, "तेरा नाम क्या है ?" (मरकुस 5:1-13); दुष्टात्माग्रस्त लड़के के पिता से पूछा, "इसकी यह दशा कब से है ?" (मरकुस 9:14-29); अंधे बरतिमाई को पूछा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ ?" (मरकुस 10:46-52)। यीशु ने बारंबार चंगाई पाए हुओं को "चिकित्सा-प्रमाण" लाने के लिए कहा (लैव्य.

13:49; 14:2-32), और डाक्टरों के काम के विषय में सकारात्मक था। कुछ उदाहरण हैं: कोढ़ी (मत्ती 8:1-4); दस कोढ़ी (लूका 17:11-19); डाक्टर की आवश्यकता (मरकुस 2:17)।

कभी-कभी यीशु को व्यक्ति के चंगा होने के लिए एक से अधिक बार प्रार्थना करनी पड़ती थी, उदाहरणार्थ, बैतसैदा का अंधा व्यक्ति - मरकुस 8:22-26)। वह गिरासेनियों के दुष्टात्माग्रस्त के लिए प्रार्थना करता रहा। उसने बारंबार दुष्टात्माग्रस्तों को छुटकारा दिया और सम्बंधिक प्रभावों से विभिन्न तरीकों द्वारा उन्हें चंगा किया। उसने मरकुस 5:1-13 में दुष्टात्माओं के नाम पूछे; लूका 4:31-37; 40-41 में दुष्टात्माओं को शान्त रहने को आदेश दिया; और एक शब्द के द्वारा उन्हें निकाल दिया (लूका 4:35-36)। अन्त में उसने उसके नाम में और पवित्र आत्मा द्वारा की गई चंगाइयों को शैतान के काम का नाम देने के विरुद्ध बहुत कड़ी चेतावनियाँ दीं। ऐसे शब्द आत्मा की निन्दा करते हैं और वह स्थाई प्रकोप का न्याय लाएँगे! उदाहरणार्थ, फरीसी आत्मा की निन्दा करते हैं (मरकुस 3:19-30)।

यीशु के जीवन के चार महत्त्वपूर्ण पहलू

अ. पिता के साथ उसका सम्बंध

परमेश्वर का अनन्त पुत्र यीशु देहधारी हुआ। यीशु के निष्पाप जीवन और उसकी चमत्कारी सेवकाई का रहस्य पिता के साथ उसके सम्बंध पर आधारित है। हालाँकि वह परमेश्वर था, यीशु ने अपना सामर्थ्य स्वर्गीय पिता के साथ एक घनिष्ठ, बालोचित सम्बंध से पाया था। परमेश्वर जो कह रहा है सुनने की योग्यता, परमेश्वर जो कर रहा है देखने की योग्यता, और चमत्कारी के क्षेत्र में कार्य करना तब आता है जब एक व्यक्ति पिता के साथ वैसी ही घनिष्ठता और निर्भरता विकसित करता है! यीशु ने जो किया कैसे किया? इसका उत्तर पिता के साथ उसके सम्बंध में है। हम उन "इनसे भी बड़े काम" को कैसे करेंगे जिनकी प्रतिज्ञा यीशु ने की है? उसी घनिष्ठता, सरलता और आज्ञापालन के सम्बंध को खोज करके।

यूहन्ना इस सम्बंध के स्वभाव को और यीशु की सवकाई इसमें से कैसे प्रवाहित हुई दिखाता है। यूहन्ना 1:1 में, वह बताता है कि यीशु का पिता के साथ सम्बंध सदा से है। वह आगे कहता है कि यह सम्बंध पृथ्वी पर जारी रहा था। यूहन्ना 3:10-13 में बताता है कि यीशु जो जानता हैं (यूनानीः "oida" - अनुभव द्वारा ज्ञान), वह कहता है। उसका कहना पिता के साथ उसके अनुभव में से निकलता है। यीशु पिता के साथ मिलकर काम करता है; वह अपनी पहल-शक्ति से कुछ नहीं करता। वह वही करता और कहता है जो वह पिता को करते देखता है (यूहन्ना 5:17-21)। यह संक्षिप्त बाहरीदृश्य पिता और पुत्र के सम्बंध पर जोर देता है। यूहन्ना इस विषय पर और भी कुछ कहता है जिसका अध्ययन फायदेमंद होगा।

आ. पवित्र आत्मा के साथ उसका सम्बंध

पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व का वह प्रभुसत्ताक सदस्य है जो मसीही के जीवन में निवास करने आता है। हालाँकि उसके काम विविध हैं, मसीही के जीवन में उसकी उपस्थिति का एक अनिवार्य कारण सामर्थ्य देना है। मसीही के जीवन में पवित्र आत्मा की सेवकाई लूका के सुसमाचार में सबसे अधिक संवेदनशीलता और अनुबोधकता से व्याख्या की गई है। परमेश्वर का काम करने में पवित्र आत्मा मसीही के लिए अलौकिक सामर्थ्य का एक मात्र साधन है। लूका ने मसीह के जीवन में पवित्र आत्मा की इस भूमिका का बड़े ध्यानपूर्वक विवरण लिखा है। वह शक की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता कि केवल पवित्र आत्मा ही यीशु की सेवकाई में उसके सामर्थ्य और प्रभावकारिता की कुँजी था। यीशु की सेवकाई की तैयारी से सम्बंधित इन परिच्छोदों को लूका में पढ़ोः लूका 3:21-23; 4:1,14,18; 5:7। कुछ परिच्छेदों में ही पाँच बार, लूका हमें पवित्र आत्मा के यीशु के साथ सम्बंध के विषय में अत्यावश्यक जानकारी देता है। ये उद्‌घाटक परिच्छेद सेवकाई में यीशु का आरम्भ दिखाते हैं। उसने पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से प्रचार किया और चंगा किया। पवित्र आत्मा ने यीशु के द्वारा उसी प्रकार चंगा किया जैसे वह हमारे द्वारा करता है।

इ. उसका प्रार्थना का जीवन

प्रार्थना पर, और जिस प्राकर इसका चंगाई से सम्बंध है, सारे नए नियम में बल दिया गया है। यह यीशु के जीवन पर विशेषकर अंकित थी। एक अवसर पर यीशु अनुमान देते हैं कि चंगाई के बहुत कठिन मामलों में लम्बी प्रार्थना एक अनिवार्य तत्त्व हो सकता है (मरकुस 9:29)। मसीह के जीवन में प्रार्थना की खोज करना, विशेषकर जब यह उसकी चंगाई की सेवकाई से सम्बंधित है, दिलचस्प होगा। लूका इस विषय में एक बात को महत्त्व देता लग रहा है। हम ने पहले ही लूका का यीशु की सेवकाई और पवित्र आत्मा के बीच सम्बंध के साथ विमोहन पर ध्यान दिया है। वह प्रार्थना के विषय में भी वही संकेत दे रहा है। यीशु के बपतिस्मा के समय लूका बताता है कि यीशु प्रार्थना कर रहा था। अपनी सेवकाई में उतरने से पहले यीशु ने जंगल में चालीस दिन उपवास और प्रार्थना में बिताए थे (लूका 4:1-13)। लूका द्वारा प्रार्थना का अगला वर्णन सेवकाई के एक बहुत ही भीड़-भाड़ और व्यस्त कार्यक्रम

से पहले यीशु का सुबह जल्दी उठकर परमेश्वर के साथ एकान्त में समय बिताना है (लूका 4:42)। तब वह हमें लोगों की भीड़ की भीड़ के बारे में बताता है जो यीशु की सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिए आए, पर वह कैसे प्रार्थना करने के लिए जंगलों में चला गया (लूका 5:15-16)। यीशु ने बारह प्रेरितों को चुनने से पहले, जिन्हें उसने प्रचार करने और चंगा करने को भी भेजा, सारी रात प्रार्थना में बिताई थी (लूका 6:12-16)।

यीशु का, शिक्षा और चंगाई दोनों में, प्रार्थना का जीवन और उसकी सामर्थ्य से भरी सेवकाई के बीच अत्यावश्यक सम्बंध आज कलीसिया के लिए एक सहायक नमूना है। अच्छा प्रचार, कम से कम कुछ हद तक, गहरे अध्ययन और वाणी, उपदेश-कला और संचारण के ठोस सिद्धान्तों के द्वारा विकसित किया जा सकता है; परन्तु एक दुखी व्यक्ति की विस्मयकारी माँगों की सेवा जो दुखी है एक सक्रिय और विश्वासी प्रार्थना के जीवन से ही पूरी की जा सकती हैं। चंगाई की सेवकाई में प्रार्थना के हथियार को इस्तेमाल करना सीखना मसीही जीवन के दूसरे पहलुओं से असंबद्ध तो निश्चय ही नहीं है। मसीही जीवन के एक पहलु में सक्रिय रूप से व्यस्त होने में असफलता पूरे को प्रभावित करती है। मसीही चंगाई की सेवकाई में सम्मिलित सक्रिय, विश्वासी प्रार्थना कलीसिया के जीवन के सब पहलुओं मे एक नया जोश लाएगी।

ई. बीमारी का उसका परिदृश्य

यीशु लोगों को चंगा करने के लिए प्रेरित था न केवल उनके लिए अपने प्रेम के कारण, बल्कि उन शक्तियों की ओर अपनी घृणा के कारण भी जिन्होंने उनको बाँध रखा था। जब यीशु दुष्टात्माओं से निपट रहा होता था तब उसके होठों से उनके लिए अकसर फटकार निकलती थी। अपनी सेवकाई के आरम्भ में यीशु की मुलाकात एक दुष्टात्मा से हुई जो चिल्लाने लगी, पर यीशु ने उसको डाँटा (लूका 4:35)। यीशु ने ऐसा दूसरे अवसरों पर भी किया, जब एक बार उसने बुखार को भी डाँटा जैसे कि यह कोई जीवित चीज हो जो उसकी आज्ञा मान सकती है (इसने माना भी, लूका 4:39)। एक और बार यीशु ने आँधी और लहरों को डाँटा जो उस नाव को डुबाने वाले थे जिस पर वह और उसके चेले थे (लूका 8:24)।

"डाँट" शब्द के विशेष इस्तेमाल के अतिरिक्त, एक और प्रमाण भी है कि यीशु दुष्टता की शक्तियों का विरोधी था। इसका एक उदाहरण मरकुस 3:1-6 में से मिलता है। यहाँ हम यीशु को सब्त के दिन आराधनालय में पाते हैं। वहाँ एक सूखे हाथ वाला मनुष्य था। फरीसी देख रहे थे कि क्या वह सब्त के दिन चंगा करेगा। यीशु ने उस मनुष्य को आगे बुलाया और बीच में खड़ा होने को कहा। फिर वह विरोधियों की ओर मुड़ा और उनसे पूछा कि क्या व्यवस्था सब्त के दिन भला करने की अनुमति देता है। पर वे चुप रहे। तब यीशु ने उनके मन की कठोरता से उदास होकर, उनको क्रोध से चारों ओर देखा, और उस मनुष्य से कहा, "अपना हाथ बढ़ा।" यहाँ उन कुछ उदाहरणों में से एक है जब हम यीशु को उनके तरस की कमी पर क्रोधित होते देखते हैं। यीशु का मूल रवैया यह था कि दुष्टात्माग्रस्त और बीमार दुष्ट शक्तियों के प्रभाव में थे। कुछ दुष्ट साधनों ने जैसे कि दुष्टात्माएँ, शैतान, कुछ जो विनाशकारी था - जो आत्मा का बिलकुल उलटा है - उसने बीमार व्यक्ति पर नियंत्रण, या कम से कम आंशिक नियंत्रण कर लिया था। और क्योंकि यीशु अपने स्वभाव से इन शक्तियों का विरोधी था, वह उन्हें अधीनता में लाना और लोगों को स्वतंत्र करना चाहता था। यीशु चंगा करता था क्योंकि वह उस सबके विरोध में था जो मनुष्यों को बन्धन में या गुलामी में रखता है। उसने पहचाना कि अन्धकार की शक्तियाँ किसी प्रकार मनुष्य की शारीरिक कमजोरियों से सम्बंधित हैं, और इन कमजोरियों का विरोध करते हुए, वह शैतान और उसके राज्य का अपना विरोध प्रकट कर रहा था।

यीशु और दूसरों की चंगाई की सेवकाई

यीशु न केवल परमेश्वर का राज्य लाने, लोगों का उद्धार करने और उन्हें चंगा करने आया था, बल्कि दूसरों को यह चंगाई की सेवकाई भी देने आया था ताकि वे लोगों को परमेश्वर के शासन में लाने में भागीदार हो सकें। यीशु ने हम, कलीसिया को 2000 वर्ष पहले, चंगाई के चिन्हों के द्वारा जो इस संदेश के साथ-साथ और इसे प्रमाणित करने के लिए होते हैं, सारी सृष्टि को सुसमाचार सुनाने का कार्य सौंपा था। आज हम पाते हैं कि विश्व की लगभग आधी जनसंख्या ने अभी तक यीशु का सुसमाचार नहीं सुना है। इसलिए, यदि हम परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक पहुँचता हुआ देखना चाहते हैं तो यीशु की चंगाई की सेवकाई का दूसरों (कलीसिया) को दिया जाना और इसका सामर्थ्य के साथ उपयोग होना, बहुत महत्त्व का है।

सेवकाई का नमूना बनना

यीशु ने अपनी चंगाई की सेवकाई को तब ही दूसरों को दिया जब उसने इसे अच्छी तरह आदर्श के अनुसार बना लिया था। उसने बारह चेलों को चुना और बुलाया ताकि वे पहले उसके साथ रहें, और तब वह उनको चंगा करने के लिए भेजे। उन्होंने पहले यीशु को चंगाई का नमूना बनाते हुए देखा। यीशु के साथ रहते हुए हर दिन, उन्होंने चंगाई में सिमिमिलित सामर्थ्य, आनन्द, जिम्मेवारी, तनाव और थकावट को देखा। उन्होंने उसके उदाहरण से सीखा कि ठीक-ठीक क्या करना है। यीशु का तरीका था कि जब वे देख

रहे हैं तो वह चंगा करे, फिर उसके देखते देखते वे सेवा करें या उनकी रिपोर्ट सुने, और तब उन्हें अपने आप करने के लिए छोड़ दे।

सेवकाई का देना

यीशु ने यह सेवकाई समर्पित लोगों को दी। बारहों को यीशु की ओर वचनबद्ध होने के लिए बुलाया गया था। वे मूल रूप से मिश्रति लोग थे जिनकी पृष्ठभूमियाँ कठोर, यथापूर्व स्थिति, या अतिवादी थीं। परन्तु आपसी वचनबद्धता के द्वारा यीशु ने उनको चेले बना दिया। उसने उनके अन्दर चरित्र और अगुआई पैदा की। फिर भी जब उसने उन्हें भेजा तो वे सिद्ध नहीं थे। प्रशिक्षण में यह एक खतरा होता है। सत्तर के प्रशिक्षण में वचनबद्ध लोगों का एक विस्तृत समूह शामिल था जिन्हें जब बारहों ने वह कर लिया जो यीशु ने किया था, भेजा गया था। इसके पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि यीशु ने यह चंगाई की सेवकाई कलीसिया को दी है, और कि कोई भी आत्मा से भरा हुआ विश्वासी चंगा कर सकता है।

सेवकाई के लिए नियुक्ति और वरदान

यीशु ने यह सेवा नियुक्ति और वरदान द्वारा दी है। पहले स्वयं आदर्श के अनुसार करने के बाद, यीशु ने अपने चेलों को चंगा करने भेजा, और ऐसा करने के लिए उन्हें सामर्थ्य दिया। इसलिए वे उसके अधिकार (नियुक्ति) और उसके सामर्थ्य (वरदान) में कार्य कर रहे थे। जब से यीशु ने पृथ्वी छोड़ी है, उसकी सेवकाई का देना बदला नहीं है। उसका कार्याधिकार सब विश्वासियों के लिए अभी भी बना हुआ है और इस कार्याधिकार को पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा का वरदान भेजा गया है।

सेवकाई के लिए निर्देश

यीशु ने कुछ निर्देश दिए थे। उसने उन्हें बताया कि उन्हें कहाँ और किस के पास जाना चाहिए। (वह ऐसा आज भी हर दिन सुननेवाले विश्वासियों के हृदय में अपने आत्मा के द्वारा कर रहा है।) उन्हें पानेवालों पर परमेश्वर का राज्य घोषित करना और चंगाई मुक्त भाव से देनी थी क्योंकि उन्होंने भी मुक्त भाव से पाया था। पररमेश्वर पर भरोसा करने, कम सामान के साथ सफर करने और बीमारों को चंगा करने की जीवन शैली बनाई गई थी। उन्हें अपने आप को ग्राही लोगों के अतिथि-सत्कार और सहयोग में देना था, और उन लोगों के साथ समय बर्बाद करने से बचना था जो परमेश्वर के राज्य को ठुकरा देंगे। सताव अपेक्षित था, इसलिए, उन्हें बुद्धिमानी से कार्य करना था और अपनी निष्कपटता बनाई रखनी थी। हमारे अन्दर पवित्र आत्मा हर परिस्थिति के लिए सहायक और निर्देशक है।

सेवकाई में कठिनाइयाँ

जिन्हें यह सेवकाई दी गई थी उनके सामने कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। उनका प्रारंभिक भ्रमण एक बड़ी सफलता और आनन्द से भरा हुआ था। दुष्टात्माएँ भी यीशु के नाम में उनके अधिकार में थीं! परन्तु, उन्हें जल्दी ही अपने ही घमण्ड और सांसारिकता का सामना करना पड़ा था, जैसे कि दूसरों को जो यीशु के नाम में चंगा कर रहे थे, रोकने की कोशिश करना। वे अविश्वास में गिर पड़े और यीशु को उन्हें फटकारना पड़ा। प्रारंभिक कलीसिया को, विशेषकर उस समय के धार्मिक अगुओं के हाथ से दुष्ट सताव का सामना करना पड़ा था।

सेवकाई में आत्मा का अभिषेक

चंगाई की सेवकाई अनुयायियों के पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और अभिषेक से जोश पाए निश्चयात्मक विश्वास द्वारा चलाई गई थी। <u>चंगाई की सेवकाई में मुख्य तत्त्व आत्मा द्वारा दिया विश्वास और अभिषेक थे</u>, अर्थात्, जब पतरस और यूहन्ना ने सुन्दर नामक द्वार पर पड़े लंगड़े व्यक्ति को चंगा किया, तो पतरस ने समझाया कि यह उनकी भक्ति के कारण नहीं हुआ है बल्कि यीशु के नाम और उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, जिससे यह मनुष्य चंगा हुआ है। यह विश्वास की प्रार्थना थी जिसने बीमार को चंगा किया। इसलिए एक निश्चयात्मक विश्वास का अर्थ है प्रमाण की आवश्यकता या परवाह के बिना एक भरोसा, सच्चाई का दृढ़ विश्वास और इसके लिए खड़े रहने की तत्परता। इस चंगाई में प्रकट है कि दूसरे तत्त्व भी वर्तमान थे (उन्होंने वचन बोला, हाथ रखे, वगैरा), परन्तु सबकुछ आत्मा के निर्देश और अभिषेक से किया गया था। इससे विश्वास में जोश आया, यह या तो पानेवाले में या चंगा करनेवाले में हुआ था। इस पर भी ध्यान देना अवश्य है कि वे समूह में सेवा करते थे।

सेवकाई का प्रसार

चंगाई की सेवकाई का एक से अनेक तक प्रसार के अंतरिक्षी और व्यापक प्रभाव हुए। जब यीशु ने बारहों को और बाद में सत्तर को भेजा, तो उसने न केवल लोगों के चंगा होने की सम्भावनाओं को बहुत बढ़ा दिया, बल्कि जैसे उसने आप कहा, उसने शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरते हुए देखा (लूका 10:18)। अन्धकार के राज्य को हार मिली। परमेश्वर के राज्य का विस्तार जो चंगाई करते हैं उनकी संख्या के अनुपातिक है। प्रारंभिक कलीसिया में यह सुसमाचार प्रचार का सबसे प्रभावशाली साधन था। इसी तरीके से उन्होंने संसार को उलटा-पुलटा कर दिया और रोम साम्राज्य को लगभग ले लिया। सारे नगर मसीह की ओर फिरे। व्यापार और समाज बदल गए; सताव और कोलाहल हुआ; कलीसियाएँ स्थापित की गईं। यह सब चंगाई की सेवकाई के निरन्तर प्रसार के कारण हुआ।

आज चंगाई की सेवकाई

चंगाई की सेवकाई आज भी तर्कसंगत है। यह आपके उपयोग में लाने के लिए है। हम ने ऊपर दिए वचनों के द्वारा बताया है कि यह आज भी तर्कसंगत है। हमारी दिलचस्पी यही है कि आप वही करने लगें जो यीशु और उसके चेलों ने किया, क्योंकि आपको यही तो करना है। हमें चंगाई का अध्ययन करने को नहीं कहा गया था, हालाँकि यह कोर्स आपको आपके विश्वास और सेवकाई के लिए बाइबल का एक आधार देता है। हमें लोगों को चंगा करने का अधिकार और सामर्थ्य दिया गया था। जोर इसी पर दिया जाना चाहिए।

प्रेरितों: एक परिचय

प्रारंभिक कलीसिया उस प्रकार क्यों बढ़ी? क्या कोई नमूना मिलता है जिससे पता चले कि परमेश्वर ने अपनी कलीसिया को बढ़ाने के लिए कुछ किया था? क्या चिन्ह और चमत्कारों का हाथ हो सकता है? आओ हम देखें यदि हम इन में से कुछ प्रश्नों के उत्तर पा सकते हैं। प्रेरितों की पुस्तक असल में छ: भागों में बाँटी गई है। हर भाग प्रेरितों 1:8 के पूरा होने में हमें यरूशलेम से रोम की ओर, एक-एक कदम आगे ले चलता है। आत्मा की सेवकाई यरूशलेम में आरम्भ होकर, यहूदा और सामरिया, अन्यजातियों के बीच, फिर एशिया, यूरोप, और अन्त में रोम तक पहुँचती है। प्रेरितों की पुस्तक पवित्र आत्मा का सामर्थ्य पाए हुए परमेश्वर के लोगों की शैतान के क्षेत्र में परमेश्वर के शासन को लाने की कहानी है। लूका नए नियम में पवित्र आत्मा का धर्मविज्ञानी है, और वह अपने पाठकों को, तब और आज, समझाना चाहता है कि यह परमेश्वर का सामर्थ्य देनेवाला आत्मा है जो कलीसिया को अपनी सीमाओं से बाहर वह करने और बनने के लिए जो परमेश्वर चाहता है ले चलता है। प्रेरितों में कलीसिया की बढ़त को समझने के लिए पवित्र आत्मा आधारीय है।

सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार – प्रेरितों की पुस्तक

आओ हम अब प्रेरितों के पाठ को यह पता लगाने के लिए देखें कि क्या लूका ने हमारे लिए कोई नमूना छोड़ा है कि परमेश्वर कैसे कार्य करता है। हम जो यहाँ देखते हैं उसे सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार कहते हैं। लूका (प्रेरितों 1) हमें यह बताते हुए आरम्भ करता है कि यह उसके सुसमाचार की साथी पुस्तक है, जिसमें उसने यीशु जो करने और सिखाने लगा था, वर्णन किया था। जोर इस बात पर दिया गया लगता है कि लूका यीशु की करने और सिखाने की कहानी उसके चेलों के द्वारा जारी रखता है जिन्हें उसने अपने पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ्य दिया था (आय. 5 देखो)। चेले अभी भी राज्य के विषय में ठीक समझे नहीं थे जैसे आय 6-7 से पता चलता है। प्रेरितों की प्रगति की कुँजी अध्याय 1:8 में है। फिर यीशु स्वर्ग में चला जाता है और अपनी वापसी की प्रतिज्ञा छोड़ जाता है।

लूका सामर्थ्य-नहीं-पाए समूह की तुलना पिन्तेकुस्त के बाद सामर्थ्य पाए समूह से करते हुए आरम्भ करता लगता है। अध्याय 1 में यह समूह अभी भी पुराने नियम के अनुसार काम करता नज़र आता है। ध्यान दें कि यहूदा का स्थान जो लेगा उसके चुनाव के लिए वे चिट्ठियाँ डालते हैं, जो पुराने नियम के "ऊरीम और तुम्मीम" की याद दिलाता है जिनके द्वारा परमेश्वर की इच्छा पता लगाई जाती थी। आत्मा के आने के बाद, जब किसी को चुना जाता था तो इनमें से कुछ भी इस्तेमाल नहीं किया गया (6:1-6 देखो)। आत्मा के आने का सम्पूर्ण विवरण अध्याय 2 में है।

प्रेरितों की पुस्तक में चिन्ह घटनाओं के कम से कम दस प्रकार हैं जिनके द्वारा कलीसिया की बढ़त सुसमाचार प्रचार से हुई थी। उनकी सूची नीचे दी गई है:

1. **बोलनेवाले वरदान** - ये चार बार घटित होते हैं (तीन से कलीसिया बढ़ती है)।
   उदाहरण परिणाम

अन्य भाषाएँ - 2:4	3,000 जुड़ गए - 2:41
अन्य भाषाएँ - 10:44	विश्वासी बपतिस्मा पाए - 10:47
भविष्यद्वाणी (?) - 13:1	यूहन्ना बपतिस्मादाता के चेलों का परिवर्तन - 19:7
अन्य भाषाएँ / भविष्यद्वाणी - 19:1-7	

2. **दर्शन** - इसकी चार घटनाएं हैं।

उदाहरण	परिणाम
कुरनेलियुस - 10:1	विश्वासी बपतिस्मा पाते हैं - 10:47
पतरस - 10:9	
पौलुस, मकिदुनी पुरुष - 16:8	यूरोप की कलीसियाएँ
पौलुस - 18:9	कुरिन्थ में कलीसिया

3. **सामर्थ्य के काम** - पौलुस और इलीमास के बीच 13:4 में एक का वर्णन है। परिणाम - हाकिम का परिवर्तन।

4. **मृत जीवित हुए** - जीवित करने की दो घटनाएँ लिखी हैं।

उदाहरण	परिणाम
दोरकास - 9:36	बहुतेरों ने विश्वास किया - 9:42
यूतुखुस - 20:9	

5. **चमत्कार** (विशेष) - छः बार होते हैं।

उदाहरण	परिणाम
हनन्याह / सफीरा - 5:11	डर - 5:12
आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले जाता है - 8:39	
पौलुस अंधा हो जाता है - 9:1-9	
इलीमास का अंधा होना - 13:11	हाकिम विश्वास करता है - 13:12
पौलुस पर पत्थराव / जीवित होना - 14:19-23	चेले - 14:21
पौलुस को साँप काटता है - 28:3-10	कलीसिया की स्थापना - प्रेरितों में नहीं पर इतिहास में वर्णन है।

6. **चंगाइयाँ** (विशेष) - सात का वर्णन है।

उदाहरण	परिणाम
लंगड़ा पुरुष - 3:1	5,000 पुरुष - 4:4
बीमार और अशुद्ध आत्माएं - 5:16	चंगाइयाँ - 5:16
पौलुस का अंधापन चंगा हुआ - 9:1-9	
एनियास का लकवापन पतरस चंगा करता है - 9:32-35	लुद्दा और शारोन के सब प्रभु की ओर फिरते हैं - 9:35
लंगड़ा पुरुष - लुस्त्रा - 14:8	चेले - 14:21
दुष्टात्मा निकाली - 16:16	भाई - 16:40
पुबलियुस का पिता - बुखार / पेचिश - 28:3-10	टापू के सब बीमार चंगे हुए - कलीसिया के इतिहास के अनुसार कलीसिया आरम्भ हुई।

7. **हाथ रखना** - चार बात होता है।

उदाहरण	परिणाम
सात का चुनना - 6:6	चिन्ह और चमत्कार / स्तिफनुस - 6:8
	चिन्ह / फिलिप्पुस - 8:6
सामरिया / आत्मा पाना - 8:17	शमौन का आना - 8:24

हनन्याह से पौलुस को - 9:17
कलीसिया का पौलुस और बरनबास को - 13:1-3

8. **संवेद घटना** - यह तीन बार होता है।

उदाहरण	परिणाम
आँधी की सनसनाहट / आग की जीभें - 2:4	3,000 उद्धार पाते हैं - 2:41
पतरस के लिए द्वार खुलते हैं - 12:8	
भूकम्प, बन्धन खुलते हैं, द्वार खुलते हैं - 16:25	दारोगा का उद्धार - 16:34

9. चिन्ह और चमत्कार - ये नौ बार घटते हैं और सबसे अधिक बार होते हैं। लूका उनका उल्लेख करता है (2:22) और लिखता है कि ये चीजें जब यीशु चेलों के साथ था तो उसने की थीं। इनमें चंगाइयाँ, दुष्टत्माओं को निकालना, प्रकृति और भोजन के साथ चमत्कार, मरे हुओं को जीवित करना, एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाया जाना शामिल है।

उदाहरण	परिणाम
चेलों द्वारा - 2:43	रोजाना कलीसिया में जुड़ना - 2:47
सामर्थ्य के कामों में परमेश्वर का सामर्थ्य प्रकट होना - 4:33	
प्रेरितों के हाथ - 5:12	बड़ी संख्या का जुड़ना - 5:14
स्तिफनुस - 6:7	
फिलिप्पुस - 8:6	समारिया की कलीसिया - 8:12
उनके साथ प्रभु का हाथ - 11:20-21, 13:11	बड़ी संख्या में विश्वास किया और प्रभु की ओर मुड़े - 11:21
आत्मा से परिपूर्ण - 11:24-25	प्रभु कलीसिया में जोड़ता है - 11:24
स्तिफनुस - 6:8	
पौलुस और बरनाबस - 14:1-7	विश्वासी - 14:4,20
अनोखे चमत्कार / इफिसुस में शिक्षा - 19:11	प्रकाशितवाक्य की सारी कलीसियाएँ इन दो वर्षों में आरम्भ हुई थीं।

10. **स्वर्गदूतों का आना** - तीन का वर्णन है।

उदाहरण	परिणाम
फिलिप्पुस - 8:26	खोजे का बपतिस्मा - 8:38
पतरस - 12:8	
पौलुस - 27:21	

शिक्षा / प्रचार से सम्बंध

चिन्ह और चमत्कारों के विषय में एक और बात कहनी अवश्य है। प्रचार और कलीसिया की बढ़त से सम्बंधित चौदह बार प्रेरितों में चिन्ह और चमत्कार होते हैं। आओ हम नीचे दी गई सारणी पर ध्यान दें:

चिन्ह और चमत्कार	प्रचार	कलीसिया की बढ़त
2:4	2:14	2:41
3:1	3:12	4:4
8:6	8:6	8:12
8:26	8:35	8:38

10:3, 12, 44	10:34	10:47
11:20-21	11:20	11:21
11:24-25	11:25	11:24
13:1-3		एशिया, यूरोप में कलीसियाएँ
14:1-7	14:3	14:4, 20
14:8-18	14:15	14:21
16:16	16:14	16:40
16:25	16:31	16:34
18:1	18:1-18	18:18
19:11	19:10	एशिया में कलीसियाएँ

दो महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ करनी अवश्य हैं: (1) बीस बार चिन्ह और चमत्कार कलीसिया की बढ़त से सीधे सम्बंधित हैं। (2) केवल एक बार कलीसिया की बढ़त का श्रेय प्रचार को मिलता है।

प्रेरितों के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हो जाता है कि चिन्ह और चमत्कारों ने सुसमाचार के प्रसार में एक अत्यावश्यक और अनिवार्य भूमिका निभाई है। क्या ऐसा होना बन्द हो गया है? बिलकुल नहीं! पवित्र आत्मा आज भी उसी प्रकार कलीसियाओं में शामिल होना चाहता है, जैसा उसने सदियों से किया है, ताकि सुसमाचार का प्रसार तेज हो सके।

पत्र – सम्भव असफलताएँ

नए नियम के पन्ने चमत्कारों से भरे पड़े हैं जिन्हें यीशु और उसके चेलों ने किया था। परन्तु, लोगों के चार उदाहरण हैं जब उन्हें चंगाई नहीं मिली थी। पौलुस के सम्भव अपवाद के अतिरिक्त (गलातियों 4:13-16), उनका चंगा न होने का कोई कारण या उद्देश्य नहीं दिया गया है। वे हैं 1) पौलुस की संभावित आँख की बीमारी (गला. 4:13-16); 2) त्रुफिमुस, जिसे पौलुस मीलेतुस में बीमार छोड़ आया (2 तीमु. 4:20); इपफ्रुदीतुस बीमार था और मरने पर था (फिलि. 2:25-30) - परमेश्वर ने उस पर दया की, परन्तु क्या इसका अर्थ है वह चंगा हो गया था? 4) तीमुथियुस को पौलुस ने सलाह दी थी कि अपने पेट के और अपने बार-बार बीमार होने के कारण थोड़ा-थोड़ा दाखरस काम में लाया कर (1 तीमु. 5:23)। एक और पौलुस से सम्बंधित अकसर विवादग्रस्त बाइबल का अंश है - वह 2 कुरिं. 12:7-10 में "शरीर में एक काँटा" की बात करता है। यह अंश अकसर गलातियों के अंश (4:13-15) के साथ जोड़ा जाकर सुझाव पाता है कि "काँटा" एक शारीरिक बीमारी थी जिससे पौलुस कभी भी चंगा नहीं हुआ था। परन्तु जिस संदर्भ में यह पाया जाता है उससे लगता है कि यह "काँटा" पौलुस की ओर दूसरों का विरोध हो सकता है (आय. 10)। फिर भी, इस सारे विषय पर और अधिक छानबीन और स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

आत्मिक युद्ध – एक परिचय

एक परिभाषा : आत्मिक युद्ध आत्मिक क्षेत्र में एक संघर्ष है - अन्धकार और दुष्ट शक्तियों (शैतानी शक्तियाँ) का स्वर्ग और पृथ्वी पर परमेश्वर, उसकी सृष्टि, और उसके अधिकार के विरुद्ध। (इफिसियों 6:12)

आत्मिक युद्ध तब आरम्भ हुआ जब लूसीफर (या शैतान) ने जो परमेश्वर का एक स्वर्गदूत था, उस प्रतिष्ठा, सामर्थ्य, और अधिकार को जो केवल परमेश्वर का है, और उसकी महिमा को हड़पने के लिए परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और दूसरे स्वर्गदूतों को भी, जिन्हें अब दुष्टात्माएँ कहते हैं, विद्रोह में शामिल किया। यशायाह 42:8 में, परमेश्वर अपने नबी द्वारा स्पष्ट करता है, "मैं यहोवा हूँ, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूँगा।"
परन्तु हम देखते हैं कि अपने घमण्ड के कारण शैतान ने परमेश्वर का स्थान लेने की कोशिश की, और परमेश्वर के रूप में महिमा पानी चाही। दो शास्त्र जो उसके पाप और विद्रोह का वर्णन करते हैं यशायाह 14:10-14 और यहेजकेल 28:12-17 हैं। हालाँकि ये शब्द बेबीलोन और सोर राजाओं के विरुद्ध प्रतीकात्मक रूप से बोले गए थे, परन्तु स्पष्ट रूप से ये एक स्वर्गदूत के बारे में हैं, जो बाइबल के अनुसार कोई और नहीं पर शैतान ही हो सकता है। लूका 10:18 में यीशु भी शैतान के स्वर्ग से गिरने की बात करते हैं। यहूदा 6 और 2 पतरस 2:4 में भी वचन उसके अनुयायियों की उसके साथ गिरने की बात करते हैं। हम दानिय्येल 10:13,21 और यहूदा 6 में, स्वर्गीय स्थानों में परमेश्वर के स्वर्गदूतों और अन्धकार की शक्तियों, (गिरे हुए स्वर्गदूतों), या दुष्टात्माओं के बीच असली युद्ध के बारे में पढ़ते हैं। इस प्रकार के एक भावी युद्ध की चर्चा प्रकाशित. 12:9 में की गई है।
मनुष्य इस युद्ध में कैसे और कब सम्मिलित हुआ के बारे में हम उत्पत्ति 3:1-16 पहली बार पढ़ते हैं जब शैतान एक साँप के रूप में मनुष्य को लुभाता और धोखा देता है, जिससे मनुष्य पाप करता है और उसके और परमेश्वर के बीच अलगाव हो जाता है। यशायाह 59:1-2 देखो। स्पष्ट रूप से, शैतान परमेश्वर और उसकी सृष्टि (मुख्य रूप से मनुष्य) का शत्रु है, और वह कभी भी पश्चाताप नहीं करेगा जिससे प्रकाशित. 20:7-10 के अनुसार उसका न्याय होगा।

अपने शत्रु, शैतान के विषय में ध्यान में रखने योग्य कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य :
1. वह एक धोखेबाज है - उत्प. 3:13; प्रकाशित. 12:9
2. वह एक झूठा है - उत्प. 3:4; यूहन्ना 8:44
3. वह एक दोष लगानेवाला है - अय्यूब 1:11; 2:5; जकर्याह 3:1-2; प्रकाशित. 12:10
4. वह एक कातिल है - यूहन्ना 10:10; 1 पतरस 5:8
5. वह एक चोर है - यूहन्ना 10:10; मत्ती 13:19

क्योंकि शैतान सीधे परमेश्वर पर आक्रमण नहीं कर सकता है, वह लोगों पर आक्रमण करता है जो परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाए गए हैं। तो, हम उसके आक्रमणों से अपना बचाव, और उस पर जय कैसे प्राप्त कर सकते हैं? पहले, हमें समझना चाहिए कि शैतान ने मनुष्य को हराया क्योंकि उसने उससे पाप करवाया, और उसे परमेश्वर से अलग किया, केवल परमेश्वर ही शैतान से अधिक शक्तिशाली है। परन्तु सुसमाचार यह है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को क्रूस पर अपना लहू बहाने, हमें पापों की क्षमा करने और पाप, मृत्यु और शैतान की शक्तियों पर जय देने भेजा। इन महत्त्वपूर्ण पवित्रशास्त्र के वचनों को पढ़ो: 1 कुरिं. 15:22-26; रोमियों 5:12,15। इब्रानियों 2:14-15; 1 यूहन्ना 3:8 भी देखो। केवल यीशु के लहू के द्वारा ही इस युद्ध में हम जय पा सकते और शत्रु को हरा सकते हैं। इसे उसका सुसमाचार, उसका वचन, उसकी गवाही प्राप्त करके और अपने जीवनों को सम्पूर्ण रूप से उसे समर्पित करके कार्यान्वित किया जाता है। प्रकाशित. 12:11 देखो।
यीशु का हमारे शत्रु पर अब जो अधिकार है उसके सम्बंध में उसकी क्रूस पर मृत्यु के महत्त्व को इन वचनों से देखा जा सकता है: फिलि. 2:7-11; कुलु. 1:13-16; मत्ती 28:18। एक बार और वचन से यह सत्य स्थापित होता है कि केवल यीशु की ही शैतान और अन्धकार की सारी शक्तियों पर जय है, हम उस पर विश्वास के द्वारा ही उस जय में प्रवेश कर सकते हैं।

इस अध्ययन में हम संक्षिप्त में देखेंगे कि हम मसीह में कौन हैं, और क्योंकि हम मसीह में हैं हमें स्वर्गीय स्थानों और पृथ्वी पर अन्धकार की सारी शक्तियों पर क्या अधिकार मिला है।

मसीह में होने के लिए, व्यक्ति को परमेश्वर के वचन के आज्ञापालन में नीचे दी गई माँगों को पूरा करना है:

1. वह नया जन्म पाया है और यीशु को अपना व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में जानता है - यूहन्ना 3:3-5; 1 यूहन्ना 5:4-5,18; रोमियों 10:9-10।
2. उसने मन फिराया है, बपतिस्मा लिया है और उसके पाप क्षमा हुए हैं - प्रेरितों 2:38; 1 यूहन्ना 1:8-9।
3. वह सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर के अधिकार में हैं - याकूब 4:7; 1 पतरस 5:6।
4. वह उसमें बना रहता है और उसका वचन उसमें बना रहता है - 1 यूहन्ना 2:3-6; यूहन्ना 15:7।
5. वह परमेश्वर के उसके लिए प्रकट वचन की आज्ञापालन में चलता है - 1 यूहन्ना 2:3।
6. वह पवित्र आत्मा द्वारा चलता और बपतिस्मा पाया है - रोमियों 8:9,14; घलातियों 5:24-25; मत्ती 3:11।

तब हम अपनी पहचान देख सकते हैं, (हम मसीह में कौन हैं), परमेश्वर के वचन में प्रतिज्ञाओं के अनुसार अपनी मिरास को जान सकते हैं (2 कुरिं. 1:20)। आओ हम, हम मसीह में कौन हैं से सम्बंधित कुछ मुख्य वचनों पर ध्यान दें : (पश्च-लेख - "मसीह में / उस में और मसीह द्वारा / उसके द्वारा" वाले सब वचनों के एक सम्पूर्ण ऊपरी-दृश्य और समझ के लिए अपने आप अध्ययन करो, जो आपके लिए एक बहुत बड़ी और आत्मिक आशीष होगी!! या पुस्तक क्रम. 12 में उनका अध्ययन करो)

अ) एक नई सृष्टि - 2 कुरिं. 5:17
आ) परमेश्वर की सन्तान - यूहन्ना 1:12; रोमियों 8:14-16
इ) वारिस और संगी वारिस - रोमियों 8:17; याकूब 2:5
ई) एक चुना हुआ वंश और एक राज-पदधारी याजकों का समाज - 1 पतरस 2:9
उ) पवित्र आत्मा के मन्दिर - 1 कुरिं. 3:16; 6:19-20
ऊ) मित्र - यूहन्ना 15:15
ए) सहकर्मी - 1 कुरिं. 3:9
ऐ) सेवक - 2 कुरिं. 3:5-6
ओ) सैनिक - 2 तीमु. 2:3-4
औ) विजयी - 1 यूहन्ना 4:4; 5:4
अं) जयवन्त से भी बढ़कर - रोमियों 8:37-39

हम अब, मसीह में अपने अधिकार की स्थिति पर ध्यान देंगे, और कि आत्मिक युद्ध में हम इसे कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं। हम मत्ती 28:18 से जानते हैं कि स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार यीशु को दिया गया है, और कि उसने प्रधानताओं और अधिकारियों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार की ध्वनि सुनाई (कुलु. 2:14-15)। इब्रानियों 2:14-15 में जो लिखा है उसके अनुसार उसने शैतान को शक्तिहीन कर दिया गया है। आदम के पतन से कलवरी तक, मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ शैतान के हाथ में थीं, और हमें आत्मिक मृत्यु में रखने और नरक ले जाने का अधिकार उसके पास था। परन्तु यीशु ने उन कुंजियों को उससे छीनकर, हम पर से शैतान का अधिकार तोड़ दिया। "कुंजियाँ" शब्द, अधिकार का उल्लेख करता है। प्रकाशित. 1:17-18 में, हम देखते हैं कि अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद से यह कुंजियाँ यीशु के पास हैं, और उसने जय के द्वारा मृत्यु को निगल लिया है। (1 कुरिं. 15:54-57 भी देखो)। यीशु के यूहन्ना 12:31 और 16:11 में कहे वचनों के अनुसार शैतान का न्याय हो चुका (उसकी नियती पहले ही तय हो चुकी) है। शैतान का यीशु में कुछ भी नहीं है, और इसलिए हम जो मसीह में हैं, उन्हें भी शैतान छू नहीं सकता है। (यूहन्ना 14:30 और 1 यूहन्ना 5:18)। हमारे अधिकार के अनुकूल, यीशु ने हमें मत्ती 16:19 के अनुसार, स्वर्ग और पृथ्वी पर बाँधने और खोलने के लिए, स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दी हैं। आत्मिक युद्ध में, यह शैतानी शक्तियों को लोगों में उन्हें काम करने से बाँधना, लोगों के जीवनों पर से उनके अधिकार को खोलना, और लोगों पर परमेश्वर की आशीष खोलना है।
और अधिक विशेष रूप से हम "बाँधने और खोलने" को नीचे दिए तरीके से समझ सकते हैं:

- <u>बाँधने का अर्थ है</u>: रोकना या प्रभावहीन करना, इसकी शक्ति और अधिकार को तोड़ना। हम उन चीजों या प्राणियों को बाँधते हैं जिनको स्वर्ग में अनुमति नहीं है, अर्थात्, दुष्टात्माएँ, बीमारी और शैतानी आक्रमण। स्वाभाविक स्थितियाँ भी जो परमेश्वर की चीजों के प्रवाह में नहीं हैं, अर्थात्, तूफान, नकारात्मिकता और विपरीत परिस्थितियाँ।
- <u>खोलने का अर्थ है</u>: मुक्त करना/छोड़ना। इसके दो भिन्न उपयोग हैं:
  1. एक बीमारी या दुष्टात्मा से छुटकारा देना, जिसका सरल अर्थ है: बीमारी को एक व्यक्ति के शरीर को छोड़ने और चले जाने की आज्ञा देना।

2. व्यक्ति पर परमेश्वर की चंगाई, सम्पन्नता, या आशीषें डालना। इस मामले में, हम वह खोलते हैं जिसकी स्वर्ग में अनुमति है।

हम ये सब चीजें स्वर्गीय स्थानों में मसीह में अपने अधिकार की आत्मिक स्थिति के कारण कर सकते हैं (इफि. 1:3)। बाइबल इफि. 2:6 में भी कहती है कि हम यीशु मसीह में उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठे हैं; और इफि. 1:20-22 के अनुसार, यह स्थिति सब प्रकार की प्रधानता, अधिकार, सामर्थ्य और प्रभुता, और हर एक नाम के ऊपर है...और कि शैतान उसके और हमारे भी पैरों के नीचे है!

हमारे अधिकार के क्षेत्र में एक और महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त - हमारे जीवनों में उसकी इच्छा और ईश्वरीय उद्देश्य पूरे करने के लिए - आत्मिक युद्ध में, और हमारे जीवनों के हर क्षेत्र में, उसके नाम के उपयोग की अनुमति है जो यीशु ने हमें विश्वासियों के रूप में दी है, जो परमेश्वर को महिमा लाएँगे। यूहन्ना 14:13-14 में, यीशु उसके नाम के उपयोग का अधिकार उन्हें देता है जिन्हें उसने चुना और नियुक्त किया है (विश्वासी), और जो उसमें बने रहते हैं (उसके साथ एक व्यक्तिगत सम्बंध रखते हैं), और जो उसकी इच्छा के अनुसार चीजों को माँगते हुए उसके वचन के अधिकार को पहचानते हैं। (यूहन्ना 15:16; 15:7 और 1 यूहन्ना 5:14-15 पढ़ो)। यह बात स्पष्ट रूप से समझ लो कि एक व्यक्ति का नाम, और जो चीजें उसने कहीं हैं उपयोग में लाना, उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व होता है। तो जब हम यीशु के नाम में कुछ कहते हैं, तो एक तरीके से यह यीशु बोलता है जब हम बोल रहे होते हैं। जब हम उसका नाम लेते हैं तब हम उसे सामने लाते हैं; उसका अधिकार हमारे द्वारा खोला जाता है। (यूहन्ना 16:24 और मत्ती 18:20 देखो)।

चेतावनी: यह याद रखने की बात है कि अपने आप में हमें अत्मिक युद्ध में शैतान और उसकी दुष्टात्माओं को पराजित करने का कोई सामर्त्य और अधिकार नहीं है। (यूहन्ना 15:5)। केवल उनके पास ही यह अधिकार है, जो मसीह में हैं।

हम बाइबल में दो घटनाएँ पाते हैं जहाँ उन लोगों ने अपने ही हानि और विनाश के लिए, यीशु को व्यक्तिगत रूप से बिना जाने यीशु के नाम में अधिकार उपयोग में लाने की कोशिश की। एक का मत्ती 7:22-23 में सामान्य रूप से उल्लेख है। दूसरा प्रेरितों 19:13-16 में एक विशेष घटना है, जब स्क्किवा के सात पुत्रों ने एक व्यक्ति में से एक दुष्टात्मा निकालने की कोशिश की।

परन्तु अपने सारे चेलों को, यीशु शत्रु के सारे सामर्थ्य पर अधिकार देता है, और प्रतिज्ञा करता है कि किसी वस्तु से हमें कुछ हानि नहीं होगी। (लूका 10:17-20)। ध्यान दो कि आय. 20 में यीशु हमारे नाम स्वर्ग में लिखे होने पर अधिक बल देता है, जो उद्धार और उसे जानना है।

परमेश्वर के वचन (बाइबल) के सामर्थ्य और अधिकार को पहचानो, 2 तीमु. 3:16-17! जब शत्रु के विरुद्ध युद्ध में हों तो वचन कैसे उपयोग में लाना है (यूहन्ना 14:26 और 16:13) पवित्र आत्मा द्वारा सिखाया जाना और मार्गदर्शन पाना अत्यावश्यक है।

वे कुछ धूर्त तरीके क्या हैं जिन्हें शत्रु हम पर आक्रमण करने के लिए इस्तेमाल करता है? और हम अपना बचाव और शैतान के आक्रमणों को निष्फल कैसे कर सकते हैं, उसे हरा कर, उस जय में कैसे जी सकते हैं जो क्रूस पर पहले ही हमारे लिए प्राप्त की जा चुकी है?

पहले इस सच्चाई पर ध्यान दो कि अधिकतर शैतानी आक्रमण और पराजय जो मसीही अनुभव करते है, वो अनजान, लापरवाही में पकड़े जाना, और उनके जीवनों में परमेश्वर के अतिरिक्त दूसरी चीजों में मगन हो जाने के कारण होते हैं, और इस प्रकार शैतान को लुभाने, धोखा देने, मुसीबत में डालने और तंग करने का अवसर देते हैं। बदले में हमें "सचेत और जागते" रहकर, जब उसकी उपस्थिति महसूस करते हैं शैतान का सामना करना है। (1 पतरस 5:8-9)। विश्वासी अपने आप को निश्चित आक्रमण के लिए खुला कर देते हैं जब वे पाप करते हैं, और शत्रु को उनके जीवनों में पहुँच या पाँव रखने का स्थान देते हैं। इफि. 4:26-27 देखो। पाप के ये बेरोक, अपश्चातापी क्षेत्र प्रवेश द्वार कहलाते हैं, जिन में से शैतान अन्दर आ जाता है और विश्वासियों को प्रभावित करता और सताता है, और उन्हें दूर, वापस गुलामी में ले जाता है। गला. 6:7-8 देखो। नीचे इसके कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

पाप / प्रवेश द्वार	परिणाम / गहरे पाप / आक्रमण	परमेश्वर का समाधान / युद्ध
क्रोध इफि. 4:26-27	अक्षमा, कड़वाहट, नाराजगी, घृणा, टूटे हुए सम्बंध मत्ती 6:14-15; इब्रा. 12:15; तीतुस 1:15-16	मन फिराओ, क्षमा करो, मुड़ जाओ, प्रार्थना करो इफि. 4:32; कुलु. 3:8,13; मत्ती 5:44 सामना करो - याकूब 4:7
घमण्ड	विद्रोह, विनाश	मन फिराओ, अपने को दीन करो, परमेश्वर के

नीतिवचन 16:5	2 पतरस 2:10-12; नीतिवचन 16:18	अधीन हो जाओ, शैतान का सामना करो 1 पतरस 5:6,8; याकूब 4:6-7
व्यभिचार नीतवचन 5:1-23	कामविकृति, भ्रष्टता, गुलामी, बीमारी, मृत्यु 1 कुरिं. 5:1-5; रोमियों 1:26-28	मन फिराओ, दूर रहो, अधीन हो जाओ, सामना करो 1 कुरिं. 6:18; 1 थिस्स. 4:3; 5:22
मूर्तिपूजा व्यवस्था. 5:7-9	धोखा, परमेश्वर से दूर होना 1 राजा 11:1-9; रोमियों 1:25	मन फिराओ, इससे भागो, अधीन हो जाओ, सामना करो 1 कुरिं. 10:14; प्रकाशित. 2:5

दूसरे क्षेत्र जिनसे बचना चाहिए, उनका उल्लेख गलातियों 5:19-20 और 2 पतरस 2:13-22 में है। जैसे हम ऊपर देखते हैं, शैतान संसार की चीजों और भोग-विलासों को परमेश्वर के लोगों को भटकाने, और उनके जीवनों में परमेश्वर से अधिक महत्त्व दूसरी चीजों या लोगों को देने के लिए इस्तेमाल करना चाहता है, जिससे परमेश्वर के साथ उनके सम्बंध में रुकावट पड़े या टूट जाए। याकूब 4:4; 1 यूहन्ना 2:15-16। ध्यान दें कि समाधान सदा ही मन फिराना (परमेश्वर की ओर फिरना), और उसके वचन का पालन करना है! ऐसा करने से हम "परमेश्वर के अधीन" होने के द्वारा शत्रु पर आक्रमण करते हैं, और तब हम उसके अधिकार से शैतान का सामना करते हैं "तो वह हमारे पास से भाग निकलेगा।" जैसे यीशु ने यूहन्ना 14:30 में कहा, "...इस संसार का सरदार आता है, मुझ पर उसका कोई अधिकार नहीं", वैसे हम भी उसके सामर्थ्य से पाप से दूर रहें ताकि जब शत्रु हम पर आक्रमण करने या हम पर दोष लगाने की कोशिश करे तो वह कोई प्रवेश नहीं पाए, और उसका हम पर कोई अधिकार नहीं होगा!

तीन युद्धक्षेत्र

विद्वान हमारे जीवनों में तीन युद्धनीतिक क्षेत्रों के बारे में बताते हैं जिन्हें हमें दुष्ट के आक्रमणों के विरुद्ध मजबूत करना चाहिए। ये हैं: मन, हृदय और मुँह। ये आत्मिक युद्ध में संकटकालीन स्थान हैं, और हमें उनकी रक्षा के लिए लड़ना चाहिए।

1. मन

हर विचार जो हमारे मन आता है, उसके तीन सम्भव स्रोत हो सकते हैं:

अ. **परमेश्वर** परमेश्वर हमारे मन से प्रकाशनों, मार्गदर्शन और पवित्र आत्मा के बुद्धि और ज्ञान के वचनों के वरदानों के द्वारा बात करता है।

आ. **हम स्वयं** परमेश्वर ने हमें अपने विचार स्वयं पैदा करने की रचनात्मक योग्यता के साथ रचा है। नीतिवचन 23:7

इ. **शैतान** हालाँकि शैतानी शक्तियाँ हमारे विचार नहीं पढ़ सकती हैं, वे बुरे विचार और प्रलोभन वहाँ डाल सकते हैं।

हम इसकी एक स्पष्ट तस्वीर पतरस के जीवन से देख सकते हैं:

1 परमेश्वर: मत्ती 16:16-17
2 स्वयं: मत्ती 17:4
3 शैतान: मत्ती 16:22-23

हालाँकि हम विचारों को अपने मन में आने से सदा रोक नहीं सकते हैं, पर हम पता लगा सकते हैं कि वे कहाँ से आ रहे हैं, और जब वे वहाँ हैं तो उनके साथ कुछ कर सकते हैं। और हमें डरने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि 2 तीमु. 1:7 कहता है, "परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।" इसलिए पवित्र आत्मा हमें इस क्षेत्र में दो चीजें करने की सामर्थ्य देता है:

1. कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करना, और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देना है। (बुरी और शैतानी विचारों को अपने मन से निकाल फेंकना है)। 2 कुरिं. 10:3-5 देखो।
2. परमेश्वर के विचार सोचने में समर्थ करता है, और उसके वचन याद दिलाता है। फिलि. 4:8; यूहन्ना 14:26 देखो। (हमें ऐसा करने के लिए अपने मन अनुशासित करने हैं।)

अपनी कल्पनाओं के क्षेत्र में हमें सतर्क रहना है कि हम उन्हें कैसे इस्तेमाल करते हैं। परमेश्वर ने हमें सक्रिय कल्पनाशक्ति, और अपने मनों के साथ और मनों में रचने की योग्यता दी है। इसी कारण से मनुष्य के इतिहास में कितने सारे अविष्कार किए गए हैं। परन्तु मुख्य रूप से परमेश्वर ने हमें कल्पनाशक्ति विश्वास के लिए दी है, अर्थात् जो परमेश्वर ने कहा है उसकी कल्पना करने के लिए जैसे कि यह पहले से ही पूर्ण है। मैं बिम्बविधान की बात नहीं कर रहा हूँ, परन्तु केवल वही चीज जो परमेश्वर अपने वचन के अनुसार हमारे मनों में विश्वास करने के लिए डालता है। शैतानी शक्तियाँ हमारी कल्पनाओं को दूषित करने की कोशिश करती हैं, ताकि हम चिन्ता करें और उनकी कल्पना करें कि हमारे साथ बुरी चीजें घट रही हैं या ये शक्तियाँ हमें पापी और स्वभाव में अवैध सुखद स्वैरकल्पनाओं से लुभाने की कोशिश करती हैं जो हमें अविश्वास, डर, गुलामी और दूसरे पापों में ले जाती हैं। मत्ती 5:27-28; रोमियों 14:23 देखो।

2 कुरिं. 10:4 में लिखा है, "क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।" दो मानसिक गढ़ है जिन्हें शत्रु अकसर विश्वासियों के मनों में स्थापित करने की कोशिश करता है, जो हैं: "हीनता" और "दण्डाज्ञा"। हीनता की भावनाएँ तब उठती हैं जब शैतान इस प्रकार की बातें लोगों को बताने की कोशिश करता है: "तुम काफी अच्छे, काफी होशियार नहीं हो, तुम योग्य नहीं या तुम बेकार हो, वगैरा...।" दण्डाज्ञा की भवानाएँ तब उठती हैं जब शैतान हम पर दोष की भावनाएँ डालता है: "तुम एक पापी हो, तुम काफी आत्मिक नहीं हो, तुम्हारी प्रार्थनाएँ नहीं सुनी जातीं क्योंकि परमेश्वर तुम से खुश नहीं है, वगैरा...।" हम इन गढ़ों को इनका इनकार करके, और बदले में परमेश्वर का वचन हमारे बारे में जो कहता है उसका विश्वास करके ढा सकते हैं। इब्रा. 412; इफि. 2:10। और पवित्र आत्मा की आवाज, न कि शैतान की आवाज, सुनना सीखो! रोमियों 8:1 देखो।

मूल रूप से दो प्रकार के डर हैं जिनकी हमें जानकारी होनी चाहिए। एक परमेश्वर में विश्वास के द्वारा आता है, और दूसरा अविश्वास के द्वारा आता है।

1. प्रभु का भय: परमेश्वर और उसके वचन के लिए एक पवित्र आदर और भय, यह जानते हुए कि अवज्ञा विच्छेद, भ्रष्टता और विनाश लाएगी। व्यवस्था. 13:4।
2. किसी चीज या व्यक्ति का डर: भजन 31:13; 1 यूहन्ना 4:18।

यदि हम प्रभु का भय मानें और उस पर भरोसा रखें, तो दूसरे और शैतानी डर निकल जाएँगे क्योंकि हम उसके प्रेम में सुरक्षित रहेंगे। 1 यूहन्ना 4:18। और हम विश्वास पाएंगे कि वह नियंत्रण में है और यदि वह हमारी ओर है तो हमारे विरोध में कौन हो सकता है! भजन 118:6; रोमियों 8:31।

<u>बुद्धि भी दो प्रकार की है:</u>

1. भक्तिपूर्ण बुद्धि: याकूब 3:13,17
2. सांसारिक या शैतानी बुद्धि: याकूब 3:14-16

भजन 111:10 में लिखा है, "बुद्धि का मूल परमेश्वर का भय है...।" परमेश्वर अपने किसी भी बच्चे को बुद्धि देने की प्रतिज्ञा करता है जो विश्वास से माँगेगा। याकूब 1:5-6 देखो। इसलिए प्रभु का भय मानकर, और उसकी बुद्धि पाकर और उसमें चलकर, हम आत्मिक युद्ध करते, और शैतानी डर और बुद्धि से अपनी रक्षा करते हैं।

परीक्षा: याकूब 1:14-16 के अनुसार, हम अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ते हैं, जो पाप को जन्म देती है, फिर मृत्यु आती है। शैतान इन दुष्ट अभिलाषाओं या लालची विचारों को बनाता और उनमें जोड़ता है, और जब पाप होता है, तो उसे हम पर आक्रमण करने और हमें और गहरे विनाश में ले जाने को प्रवेश द्वार मिलता है। परन्तु परमेश्वर, अपने सामर्थ्य से, सुरक्षा और बचाव के मार्ग का प्रबंध करता है, हम अपने विचारों पर अधिकार ले सकते, बुरी स्थितियों से बच सकते, सही फैसले कर सकते, और उसके मार्गों पर चल सकते हैं। 2 पतरस 1:3-4; 2:9; 1 कुरिं. 10:13 देखो। यीशु ने हमें आत्मा के सामर्थ्य में परीक्षा से लड़ने, और शत्रु के झूठ को तोड़ने के लिए परमेश्वर का वचन उपयोग में लाने का उदाहरण दिया है। लूका 4:1-14।

धोखा: इसे संसार में शैतान की मुख्य युक्ति कहा गया है। जब कोई धोखा खाता है, तो उसे निश्चय होता है कि जो वह विश्वास करता है, चाहे वह वास्तव में कितना भी झूठ क्यों न हो, सच है। वह शत्रु के झूठ में विश्वास करता और जीता है। बाइबल हमें धोखे से बचने की सख्त चेतावनियाँ देती है। नीचे दिए वचनों का अध्ययन करो जो लोगों के इन समूहों पर लागू होते हैं।

अविश्वासी	शारीरिक विश्वासी	परिपक्व विश्वासी
यशायाह 44:20	याकूब 1:22, 26	रोमियों 16:17-18
यिर्मयाह 17:9	गलातियों 6:3,7	1 कुरिं. 10:12
इब्रानियों 3:13	1 कुरिं. 3:18	2 पतरस 3:17
2 कुरिं. 4:4	1 कुरिं. 15:33	1 तीमु. 4:1
1 कुरिं. 6:9-10	1 यूहन्ना 1:1-8	2 कुरिं. 11:14

जब हम परमेश्वर और एक दूसरे के सामने दीन होते हैं तब धोखा तोड़ा और आत्मिक युद्ध लगाया जाता है, और हम प्रार्थना और उपवास करके हर एक धोखे की आत्मा पर यीशु के नाम में अधिकार लेते हैं और इसे अपने बीच में से निकाल देते हैं। 2 इतिहास 7:14; लूका 22:31-32; मरकुस 9:29।

2. <u>हृदय</u>

आत्मिक युद्ध के विषय में, हृदय की बातें अकसर बाइबल में दो चीजों के बारे में हैं - रवैये और भावनाएँ। कई बार हम केवल कार्य के पापों पर ध्यान केन्द्र करते हैं, और हृदय के पापों को जैसे कि विद्रोह, स्वाधीनता, कलह, धमण्ड, अक्खड़पन, कड़वाहट और नाराजगी को अनदेखा कर देते हैं जो लगभग सदा कार्यों के पापों से पहले आते हैं। ये प्रभु के साथ हमारी चाल में रुकावट डालते हैं, और शैतान के आक्रमण के लिए द्वार खोलते हैं। भजन 66:18 देखो। यिर्मयाह 17:9 में, बाइबल कहती है, "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?" परन्तु परमेश्वर जो सब मनुष्यों के हृदय जानता है (प्रेरितों 1:24), यहेजकेल 36:26-27 में प्रतिज्ञा के अनुसार अपने बच्चों में एक नया हृदय बनाया है और हमारे हृदयों में अपने पुत्र का आत्मा भेजा है (गला. 4:6)। परन्तु परमेश्वर के बच्चों के रूप में, कभी-कभी हमारे हृदय ठण्डे हो जाते हैं और हम परमेश्वर, लोगों, और हालातों की ओर, जो उन्होंने कहा या नहीं कहा के कारण, या जो उन्होंने किया या नहीं किया के कारण, या हमारी इच्छाओं के अनुसार हमारी आवश्यकता पूरी नहीं कीं के कारण बुरे रवैये बना लेते हैं। इन बुरे रवैयों के कारण गलत भावनाएं पैदा होती हैं और जब हम परमेश्वर पर निर्भर होने के बजाय अपनी भावनाओं पर अधिक निर्भर होते हैं तब मुसीबत में पड़ते हैं। शैतान को चीजों को विकृत करना अच्छा लगता है और हमारे हृदयों को और भी परेशान करता रहता है, परन्तु यीशु ने यूहन्ना 14:1 कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी रखो।" यहाँ जिस प्रकार हम आत्मिक युद्ध करते हैं, वह हैः पहले, "सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर..." (नीतिवचन 4:23)। दूसरा, भजन 51:10-12 में दी गई राजा दाऊद की प्रार्थना करो। तीसरा, परमेश्वर के प्रेम को पवित्र आत्मा के द्वारा निरन्तर हृदयों को भरने दो। (रोमियों 5:5।

3. <u>मुँह</u>

अकसर, हम जिन्हें भाइयों के प्रोत्साहक और सत्य के उद्घोषक होना चाहिए, बदले में अपने मुहों को शैतान के हाथों में विनाश के औजार बनने देते हैं। हमारे शब्द सत्य, धार्मिकता, और जीवन के लिए पवित्र आत्मा के माध्यम हो सकते हैं, या धोखा, दोषारोपण और मृत्यु के लिए शैतान के माध्यम हो सकते हैं। बाइबल नीतिवचन 18:21 में कहती है, कि "जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।" शैतान हमारे शब्दों को जब भी उसे अवसर मिले प्रेरित करना चाहता है। यह अकसर तब होता है जब हम मित्रों के साथ एकत्र होते हैं। यह किसी के बारे में जो उपस्थित नहीं है एक अहानिकर टिप्पणी से आरम्भ होता है। <u>टिप्पणियाँ अवलोकर बन जाती हैं, अवलोकन चिन्ता बनते हैं, चिन्ता आलोचना बनती है, और आलोचनाएँ दोषारोपण बन जाते हैं।</u> याकूब 3:8-10 के अनुसार, हम या तो अपने मुँहों से लोगों पर परमेश्वर की आशीष डालते हैं या शैतान के आक्रमणों में सहयोग देते हैं। इसी लिए हमें बहुत ही सावधान रहना है कि हम अपने हृदयों और मनों में क्या आने देते हैं क्योंकि जो चीजें मुँह से निकलती हैं हृदय में से आती हैं, और हृदय में से बुरे विचार निकलते हैं। मत्ती 15:18-19 देखो। इस क्षेत्र में आत्मिक युद्ध करने के लिए, हमें पहले भजनकार की भजन 141:3 की प्रार्थना करनी चाहिए। दूसरा, इफि. 4:29,31 में दिए परमेश्वर के वचन का पालन करना है। तीसरा, एक बार फिर परमेश्वर के प्रेम से अपने हृदयों को भरने दो ताकि हम प्रेम के वचन बोल सकें जो लोगों की उन्नति करें, क्योंकि यीशु ने कहा है, "क्योंकि जो मन में भरा है, वहीं मुँह पर आता है।" मत्ती 12:34। हमें एक दूसरे से अविश्वास के नकारात्मक शब्द बोलने के बजाय परमेश्वर के वचन पर आधारित विश्वास के शब्द बोलने की आदत डाल लेनी चाहिए। अन्त में, परमेश्वर की जयवन्त सेना को बनाने की सेवकाई के रूप में, हमें 1 कुरिं. 14:26 में दिए उपदेश के वचन पर ध्यान देना अवश्य है। इसलिए आओ हम अपने मुँहों को एक दूसरे का सामना करने के लिए इस्तेमाल न करें, परन्तु शैतान का सामना करने के लिए करें, और वह आप से भाग जाएगा!

शैतानी गढ़ों से निपटना - विजयी कैसे हों

घोर अपशकुन है, स्पष्ट और खुला। तुरही की आवाज, तीव्र और निकट है। बन्धन में पड़े हुओं की चिल्लाहट सारे देश भर में गूँज रही है। मैं नरकलोक के द्वारों को चकनाचूर होते सुन रहा हूँ, क्योंकि वे कामुकता, व्यभिचार, और कामना, विकृति और नग्नता की दुष्टात्माओं के प्रवाह को बढ़ाने के लिए चौड़े कर रहे हैं। हम इतिहास के डरावने समय में जी रहे हैं जब प्रधान और अधिकारी शव की मक्खियों के समान हमारे ईर्द-गिर्द घूम रहे हैं, जब व्यसन, क्रूरता, धर्म परित्याग और हर प्रकार की बुराई तेजी से बढ़ रही है। हमारा संसार पाप के साथ पूरी तरह निरंकुश है, प्रेम और शान्ति रहित है। दीवार पर हम "खतरा! युद्ध! संकट! आक्रमण!" पढ़ सकते हैं।

दुष्टात्माओं के काम, विशेषकर नौजवानों की उप-संस्कृति में, एक समान्य बात बनती जा रही है। गुप्तविद्या, भयानक फिल्मों, और नारकीय पुस्तकों की ओर आकर्षण की एक नई लहर शैतान को पहले से कहीं अधिक लोकप्रिय बना रही है। परन्तु, इन सब चीजों के बीच, प्रभु अपने लोगों को आत्मिक युद्ध करने के लिए बुला रहा है। यह ऐसा युद्ध है जहाँ सब विश्वासियों को मोरचे पर होना है। यह जय का युद्ध है और रणनीतियाँ पहले ही बनाई जा चुकी हैं। इस युद्ध में, हमें शैतान के कपटी और व्यापक कामों को नष्ट करने के लिए कहा गया है। भले ही हम दुष्ट के हर एक काम को निकाल नहीं सकते, हम लोगों को इसमें से बचाने में सहायता कर सकते हैं। भले ही हम शैतान को नष्ट नहीं कर सकते, हम उसके कार्यों और गतिविधियों को बाँध सकते हैं। हम उसकी प्रगति, युक्तियों और युद्धनीतियों में रुकावट डाल सकते हैं, हम उसके उद्देश्यों को व्यर्थ कर सकते और लोगों के जीवनों में परमेश्वर के राज्य को स्थापित कर सकते हैं।

1. प्रार्थना और उपवास

"जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ, वह क्या यह नहीं, कि अन्याय के बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहनेवालों का जूआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, और सब जूओं को टुकड़े टुकड़े कर देना?" यशायाह 58:6। यदि आपका जीवन प्रार्थना के लिए नहीं दिया गया है तो शत्रु का सामना करना नामुमकिन है। यह प्रार्थना है जो आपके जीवन पर परमेश्वर का अभिषेक लाएगी। प्रार्थना और उपवास आपकी आत्मा, प्राण और शरीर को परमेश्वर के आत्मा के साथ अनुरूप होने में अनुशासित करेगें। इस आत्मिक मार्ग के द्वारा ही हम आत्मिक संसार में प्रवेश कर सकते और अन्धकार की शक्तियों को मन्द कर सकते हैं। परमेश्वर ने हमें यह काम करने के लिए मसीह यीशु के द्वारा सामर्थ्य और अधिकार दिया है। प्रार्थना और उपवास के द्वारा हम शत्रु का सामना कर सकते और उसकी गतिविधियों को रोक सकते हैं। "मैं तुम से सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी। क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।" (मत्ती 18:18-20)।

बाँधने का अर्थ है: किसी चीज को रस्सियों या जंजीरों से कैद रखना या कसकर बाँधना। परमेश्वर का वचन हमें शत्रु के कामों को बाँधने का अधिकार देता है। इसमें उसे काम करने से रोकना, नियंत्रण करना या मना करना सम्मिलित है। उदारणार्थ, आप कह सकते हैं, "शैतान, मैं यीशु मसीह के नाम में तुझे "स" के जीवन में काम करने से रोकता हूँ। या आप कह सकते हैं, "तू विद्रोह, डर, कलह या अस्वीकरण की आत्मा (या जो कुछ भी यह है), मैं तुझे यीशु के नाम में अपने जीवन में काम करने से बाँधता और रोकता हूँ। मैं स्वयं को यीशु के लहू से ढाँपता हूँ और तेरा मेरे जीवन में कोई भाग नहीं है।"

<u>मैं बहुत सी चीजों पर जोर देना चाहता हूँ जिनके विषय में मुझे विश्वास है कि वे बाँधने और खोलने की कुंजियाँ हैं:</u>

- आपको अपने आदेश में निश्चित होना अवश्य है। केवल यह मत कहिए, "मैं यीशु के नाम में तुझे, दुष्टात्मा बाँधता हूँ", परन्तु नाम लेकर कहो कौन सी दुष्टात्मा है - पहचान बताओ।
- आदेश दो; अधिकार लो; अपनी बात पर जमे रहो।
- विश्वास करो; विश्वास रखो कि दुष्टात्माएं आपकी आज्ञा मानेंगी।
- बाँधने के बाद, उन्हें निकलने को कहो। उन्हें बाँध कर. वहीं पर मत छोड़ दो, परन्तु उन्हें सूखी भूमि, या समुद्र में, या आकाश में जोने को कहो। निश्चित बनो, क्योंकि आप चतुर हस्तियों से निपट रहे हो।

उस सामर्थ्य और अधिकार को उपयोग में लाना सीखो जिन्हें परमेश्वर ने आपको दिया है। अपनी प्रार्थनाएँ जीवन, सामर्थ्य, अधिकार, प्रेम, भरोसा, और ताकत से भरी हों। शैतान के कामों को बाँधने के बाद, उस स्थान में परमेश्वर के कार्यों - अर्थात्, प्रेम, शान्ति, आज्ञापालन या स्वास्थ्य - को स्थापित करो। इनको पूरी तरह व्यक्त होने में समय लग सकता है, इसलिए धीरज रखो। यह बगीचे में बीज बोने के समान है, फसल आने से पहले समय लगता है।

प्रार्थना और उपवास के द्वारा हम शत्रु के कामों को नष्ट कर सकते हैं। यह हमारा घर में करने का एक काम है। मसीह चाहता है कि हम शत्रु का सबकुछ नष्ट कर दें। "जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।" (1 यूहन्ना 3:8)। "इसलिए जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।" (इब्रानियों 2:14)।
अनेक बार में सभाओं में गया हूँ और शैतान को लोगों को या किसी विशेष व्यक्ति को वचन सुनने से ध्यान भंग करते देखा है। अकसर वह सामान्य परिस्थितियों को जैसे कि बच्चों का रोना या लोगों का खाँसना इस्तेमाल करता है। कभी-कभी वह सभा से पहले उलझनें या गलतफहमियाँ पैदा करता है, या वह चीजों को योजना के अनुसार नहीं होने देता है। ऐसे मामलों में मैं ने सीखा है कि केवल बैठकर शत्रु को सभा को नष्ट करते देखने के बजाय उस पर अधिकार लेने से सहायता मिलती है। मैं यीशु के नाम उसे बाँधता हूँ और उसे काम न करने की आज्ञा देता हूँ।

मुझे याद है कि एक दिन मैं एक जगह खुले में एक सभा कर रहा था, कि अचानक दस शराबी लोग आए और शान्तिभंग करने लगे। वे लोगों को अपने घरों और जो मार्ग पर जा रहे थे उन्हें बुलाने लगे कि वे आएँ और हमें, पागल लोगों को देखें! लोग हरकत करने लगे और 15 से 20 मिनट में हमारी सभा में लोगों की संख्या दुगुनी हो गई, जिन पर ये लोग आक्रमण करने लगे। तब हम ने अधिकार लिया और यीशु के नाम में उन्हें चुप रहने का आदेश दिया। हम ने शैतान के काम को बाँधा और हम ने शान्ति के लिए प्रार्थना की। शैतान हारा क्योंकि हमारी सभा की संख्या दुगुनी हो गई और कई लोगों ने अपने जीवन प्रभु को दिए। शैतान जब भी परमेश्वर के काम में हस्तक्षेप करने की कोशिश करता है, सदा हारेगा, इसलिए यदि ऐसा कुछ होता है तो शान्त रहो और परमेश्वर को आपके युद्ध लड़ने दो। "तुम्हारे सामने कोई भी खड़ा न रह सकेगा, क्योंकि जितनी भूमि पर तुम्हारे पाँव पड़ेंगे उस सब पर रहनेवालों के मन में तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारे कारण उनमें डर और थरथराहट उत्पन्न कर देगा।" (व्यवस्था. 11:25)

2. वचन पढ़ना और उस पर मनन करना

कुछ लोग परमेश्वर के वचन की उपेक्षा के कारण, अपनी पुरानी आदतों में लौट जाते हैं या अपने आपको शैतानी कार्यों के नियंत्रण में होने देते हैं। शैतानी प्रभाव से छुटकारा पाना एक बात है, परन्तु स्वतंत्रता बनाए रखना दूसरी बात है। यदि आपका मन परमेश्वर के विचारों से नहीं भरा हुआ है तो शत्रु उसे अपने विचारों से भर देगा। "जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढती फिरती है, और पाती नहीं। तब कहती है, 'मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी, लौट जाऊँगी।' और लौटकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उसमें पैठकर वहाँ वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।" (मत्ती 12:43-45)।
परमेश्वर का वचन हमारे मनों में से संसार को निकालने और हमारे विश्वास को बनाने में सहायता करता है, जिसके बिना हम परमेश्वर की आशीषें नहीं पा सकते हैं। स्वाभाविक जीवन में एक डाक्टर एक मरीज का इलाज एक लम्बे समय तक कर सकता है। यदि मरीज डाक्टर की हिदायतों को नहीं मानता, तो वह अपने जीवन को खतरे में डालता है। उदाहरणार्थ, मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ जो शराबी था। वह गुलामी की आत्मा से बँधा हुआ था जिसने उसे बन्धन में रखने के लिए शराब को इस्तेमाल किया था। डाक्टर ने उसे कहा, शराब मत पियो, नहीं तो मर जाओगे, परन्तु उसने डाक्टर का कहना नहीं माना और शीघ्र ही मर गया। वैसे ही आत्मिक क्षेत्र में, लोगों को शत्रु को उनसे दूर रखने के लिए, उन्हें वचन में रखना होगा। यह विशेषकर उन लोगों के लिए महत्त्व का है जो पूर्व में शैतानी गतिविधियों में सम्मिलित थे और शैतानी शक्तियों के वश में थे। वचन प्रभु में उन्हें नया और उनकी आत्माओं को मजबूत रखेगा।
परमेश्वर के वचन में किसी को भी गुलामी की आत्मा से छुड़ाने की काफी सामर्थ्य है। विश्वासियों को उस सामर्थ्य को समझने की आवश्यकता है जो परमेश्वर के वचन में है और परमेश्वर के वचन को केवल पढ़ें ही नहीं बल्कि उसे अपने जीवनों में उपयोग में लाएँ। "इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।" (रोमियों 12:2)।

3. एक शुद्ध जीवन जीना

सब मसीही पाप से लड़ने और जीतने के लिए पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से सज्जित हैं। पाप व्यक्ति के जीवन में अशुद्धता लाता है जो गुलामी, विकृति, या अशुद्ध आत्माओं के प्रवेश के लिए सरलता से एक द्वार खोल देता है। शुद्धता के लिए कोई अनुकल्प नहीं

है। परमेश्वर इसकी हर विश्वासी से माँग करता है। शुद्धता एक व्यक्ति के जीवन में से बिना रुकावट पवित्र आत्मा के अभिषेक को प्रवाहित होने देती है। अनेक बार हम प्रार्थना करते हैं कि पवित्र आत्मा का सामर्थ्य हमारे जीवनों में प्रकट हो परन्तु कुछ नहीं होता। इसका एक कारण है कि इससे पहले कि हमारे जीवन पवित्र आत्मा के सामर्थ्य को रख सकें उन्हें शुद्ध होने की आवश्यकता है। परमेश्वर की इच्छा शुद्ध पात्रों को उपयोग में लाने की है और शैतान की इच्छा शुद्ध पात्रों को अपवित्र करने की है ताकि वह उन्हें इस्तेमाल कर सके - या कम से कम परमेश्वर को उन्हें उपयोग में लाने से रोक सके।

छुटकारे की सेवकाई में मैं ने एक बात समझी है कि शैतानी बन्धनों से छुटकारा पाने के बाद जब तक व्यक्ति का जीवन साफ न रखा जाए, तो शत्रु बिना समय गँवाए लौट आएगा। मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ जो कई वर्षों तक दुष्टात्मा के वश में था। उसके अन्दर कई दुष्टात्माएं थीं। वह सड़कों पर नंगा चलता, और कूड़ा-दान में से खाता था। उसके सामान्य बनने की कोई भी आशा नहीं थी, परन्तु उसके लिए प्रार्थना की गई और उसमें से सारी दुष्टात्माएँ निकाली गईं। उसे चेतावनी दी गई कि शरीर की इच्छाओं में मन मत लगाना, शराब से दूर रहना, वचन पढ़ना और शत्रु के क्षेत्र से दूर रहना। इन सब का उसने कुछ समय तक पालन किया, परन्तु एक दिन उसने पीने के लिए जाने का फैसला किया। उसे दोबारा चेतावनी दी गई, परन्तु उसने सुना नहीं। दुष्टात्माएँ लौट आए और इस समय वे पहले से अधिक खराब थे।

वचन शुद्धता के विषय में क्या कहता है? "हम जानते हैं कि हमारा मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें....इसलिए पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो; और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंपो।" (रोमियों 6:6,12-13)। "इसलिए हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु में समझाते हैं कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसे तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ। क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन सी आज्ञा पहुँचाई। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो : अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो, और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नि को प्राप्त करना जाने, और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान जो परमेश्वर को नहीं जानतीं।" (1 थिस्सलुनीकियों 4:1-5)। "इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ।" (रोमियों 12:1)। "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है, और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है; और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।" (1 कुरिन्थियों 6:19-20)। "हे प्रियो, मैं तुम से विनती करता हूँ कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो; ताकि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपा-दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें।" (1 पतरस 2:11-12)।

मैं एक बात और कहना चाहूँगाः हमारे जीवनों में ऐसे समय होते हैं जब प्रार्थनाएँ या बाइबल अध्ययन किसी काम का नहीं होता। जब हम पाप मन में रखते या परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाते हैं! जब तक हम मन न फिराएँ और सही न हो जाएं, हम अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। पाप हार का द्वार खोल देता है, और यह बीमारी या विनाश का द्वार भी खोल सकता है। जब तक इससे मन न फिराया जाए, यह तुम्हें नीचे दबाए रखेगा।

4. यीशु का लहू लगाना

"क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।" (1पतरस 1:18-19)। यीशु का लहू शक्तिशाली है क्योंकि यह ईश्वरीय लहू है। हम सबका लहू पहले मनुष्य, आदम से आता है, परन्तु यीशु का लहू आदम से नहीं है। उसका जन्म मनुष्य से नहीं, पर पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ था। उसका लहू स्वयं परमेश्वर से आया। जब एक बच्चा गर्भ में आता है, तो उसका लहू पिता या माता से मिलता है। इसलिए यीशु के साथ भी ऐसा ही हुआ। क्योंकि यीशु का कोई मानवीय पिता नहीं है, उसका लहू सीधे पवित्र आत्मा के द्वारा दिया गया था। उसका लहू पाप से दूषित नहीं था। यह पवित्र और जीवन और सामर्थ्य से भरा हुआ था। इसीलिए शैतान इससे डरता है। वह इसके आगे खड़ा नहीं हो सकता। यह वो लहू है जो हमें संसार की हर अशुद्धता से शुद्ध कर सकता है। यह लहू इतना शुद्ध, इतना पवित्र है कि न शैतान और न उसकी दुष्टात्माएँ इसे छूने का साहस कर सकते हैं!

"फिर मैं ने स्वर्ग से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, 'अब हमारे परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ्य और राज्य और उसके मसीह का अधिकार प्रकट हुआ है, क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया

करता था, गिरा दिया गया है। वे मेम्ने के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली।'" (प्रकाशित. 12:10-11)।

हमारी गवाही का वचन क्या है?

- कि यीशु के लहू के द्वारा हम मोल लिए गए हैं (प्रेरितों 20:28)।
- कि यीशु के लहू के द्वारा हम धोए गए हैं (1 यूहन्ना 1:7)।
- कि यीशु के लहू के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल है (कुलु. 1:20)।
- कि यीशु के लहू के द्वारा हम धर्मी ठहराए गए हैं (रोमियों 5:8-9)।
- कि यीशु के लहू के द्वारा हम पवित्र किए गए हैं (इब्रा. 13:12)।
- कि यीशु के लहू के द्वारा हमारी परमेश्वर के साथ संगति है (इफि. 2:13)।
- कि यीशु के लहू के द्वारा हम परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं (इब्रा. 10:19-22)।
- कि यीशु के लहू के द्वारा हमारा उद्धार हुआ है (इफि. 1:7)।

और गवाही आगे चलती रहती है। हर विश्वासी को यह स्वीकृति करना सीखना चाहिए, क्योंकि यह एक वास्तविकता है।

5. स्तुति और आराधना करना

"इसलिए हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।" (इब्रा. 13:15)। स्तुति हमें शैतान की शक्तियों के विरुद्ध जय में लिए चलती है। यह आनन्द, जय, सामर्थ्य का वातावरण पैदा करती है, और सबसे बढ़कर, यह परमेश्वर की उपस्थिति हमारे बीच लाती है। उदाहरणार्थ, जब पिटाई के बाद पौलुस और सिलास कैदखाने में थे, तो वे बैठकर शोक नहीं मना रहे थे, परन्तु उन्होंने परमेश्वर की स्तुति और आराधना की। परिणाम? प्रेरितों 16:25-26 में पढ़ो। स्तुति और आराधना आपकी आत्मा में यहाँ तक बल प्रदान करेगी कि आप अपने को शैतान से स्वतंत्र घोषित कर सकते हो। स्तुति और आराधना के विषय में 2 इतिहास 20:1-30 में एक और अनोखी कहानी पढ़ो। भजन 149 भी पढ़ो।

6. अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना

यदि आपने यह वरदान पाया है तो शैतान को इसे चुराने मत दो। यह एक प्रध्वंसक सामर्थ्य है। यह शैतान फोड़नेवाला है! अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना आपकी आत्मा को बल प्रदान करेगा, और यह आपको अन्धकार को पहचानने और सामना करने के योग्य करेगा। अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना शैतान के राज्य में गड़बड़ मचाता है और हमारे विरुद्ध उसकी योजनाओं को खराब करता है। "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है : क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है।" (रोमियों 8:26)।

कुछ सच्चे मसीहियों ने इस अदभुत वरदान को अनुभव नहीं किया है। दूसरे इससे डरते हैं; किसी कच्चे मसीहियों के कुछ मिथ्या निरूपण के कारण, आपके पास यह वरदान नहीं है, कृपया इससे चूक मत जाओ। आप फिर भी एक भिन्न तरीके से परमेश्वर की गहराई को प्राप्त कर सकते हो। परन्तु, मैं आपको खोजने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ और खुला हृदय रखो। वह सारी सामर्थ्य प्राप्त कर लो जो परमेश्वर के पास आपके लिए है।

7. अधिकार लेना

ध्यान दो कि सारी शैतानी हस्तियाँ दुष्ट और अनैतिक होती हैं। परन्तु, हमें उनसे डरने की आवश्यकता नहीं है। यीशु ने हमें उन पर सामर्थ्य और अधिकार दिया है। हमारे पास हर शैतानी या दुष्टात्मा पर सम्पूर्ण अधिकार और जय मिली है। यीशु ने उन्हें हमारे लिए जीत लिया है। उसने हर सामर्थ्य, अधिकार, प्रधानता और शासक को हमारे लिए जीत लिया है। उसने शैतान और उसकी दुष्टात्माओं से उनका अधिकार उतार लिया है। सदा याद रखो कि शैतान आपके और मेरे समान एक रचा हुआ प्राणी है। वह शायद शक्तिशाली लगे, परन्तु वह प्रभु के सामने एक टिड्डी से अधिक शक्तिशाली नहीं है। वह कोई जोड़ नहीं है। उसकी शक्तियाँ हर पहलू से सीमित हैं। उदाहरणार्थ, जब तक परमेश्वर ने उसे अनुमति नहीं दी, वह अय्यूब को किसी प्रकार से छू नहीं सका था। अय्यूब के ईर्द-गिर्द सुरक्षा का बाड़ा था और शैतान उसे भेद नहीं सकता था। जब आप परमेश्वर के सामर्थ्य से सुरक्षित हो तो आपको शैतान से डरने का कोई कारण नहीं है। (अय्यूब 1:11-19; भजन 124:5-6 और 1 पतरस 5:8 पढ़ो)।

अपने शत्रु को समझना : शैतान और दुष्टात्माएँ

अ. <u>शैतान का व्यक्तित्व</u>

1. पुराने नियम में - शैतान के विषय में पुराने नियम में सीधे संदर्भ हैं (उत्प. 3:1-15; 1 इतिहास 21:1; अय्यूब 1:6-12; 2:1-7; जकर्याह 3:1-2)।
2. नए नियम में - अनेक संदर्भ हैं (मत्ती 4:1-11; लूका 10:18-19; यूहन्ना 13:2,27; प्रकाशित. 20:1-3, वगैरा)।
3. शैतान एक व्यक्ति है - नीचे दिए वचनों का अध्ययन करो (अय्यूब 1:8-10; यशायाह 14:13-14; मत्ती 4:10; यूहन्ना 8:44; यहूदा 9)
4. शैतान के बारह नाम:
    - अ) <u>शैतान (Satan)</u> - शब्द का अर्थ है: परमेश्वर और मनुष्य का "विरोधी" (1 इतिहास 21:1; 1 तीमु. 1:10)।
    - आ) <u>शैतान (Devil)</u> - शब्द का अर्थ है: "निन्दक, भाइयों पर दोष लगानेवाला" (केवल नए नियम में मिलता है)
        1) वह मनुष्य के सामने परमेश्वर की झूठी निन्दा करता है (उत्प. 3:1-7)
        2) वह परमेश्वर के सामने मनुष्य की झूठी निन्दा करता है (अय्यूब 1:9; प्रकाशित. 12:10)
    - इ) <u>साँप</u> - इस शब्द के द्वारा उसकी धूर्तता और धोखेबाजी प्रकट होती है (अय्यूब 26:13; 1 कुरिं. 11:3)
    - ई) <u>अजगर</u> - अजगर एक समुद्र का जानवर है (साँप या जल-दैत्य) और संसार के समुद्रों में उसके कार्यों का वर्णन कर सकता है (यशायाह 51:9; प्रकाशित. 13:2)।
    - उ) <u>बालजबूल</u> - सीरियक में इसका अर्थ है: "घूरा का प्रभु" - मक्खियों का प्रभु" (मत्ती 10:25; लूका 11:15,18-19)।
    - ऊ) <u>बलियाल</u> - (2 कुरिं. 6:15) पुराने नियम में शब्द निकम्मापन के भाव से इस्तेमाल किया गया है (1 शमू. 10:27; 1 राजा 21:13)।
    - ए) <u>लूसीफर</u> - अर्थ है: "भोर का तारा" (यशायाह 14:12)।
    - ऐ) <u>दुष्ट</u> - उसके चरित्र का वर्णन (मत्ती 13:19; 1 यूहन्ना 5:19)।
    - ओ) <u>परीक्षा करनेवाला</u> - उसके कार्यों का वर्णन (1 थिस्स. 3:5)।
    - औ) "इस संसार का ईश्वर" - (2 कुरिं. 4:4)। वह झूठे पन्थों और शैतानी उपासना का संस्थापक है। उसके अपने "सेवक" (2 कुरिं. 11:15), "सिद्धान्त" (1 तीमु. 4:1), "बलिदान" (1 कुरिं. 10:20) और "आराधनालय" (प्रकाशित. 2:9) हैं।
    - अं) <u>आकाश का अन्धकार का हाकिम</u> - (इफि. 2:2; 6:12)। वह दुष्ट स्वर्गदूतों का अगुआ है (मत्ती 24:41) और दुष्टात्माओं का राजकुमार (मत्ती 12:24) है।
    - अः) <u>संसार का सरदार</u> - (यूहन्ना 12:31; 16:11)। यह उस प्रभाव के विषय में हो सकता है जो वह इस संसार पर रखता है।

आ. <u>शैतान के कार्य</u>

शैतान के विभिन्न नाम उसके काम की प्रकृति का संकेत देते हैं। उसका उद्देश्य यशायाह 14:14 में बताया गया है। "...मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा।" क्योंकि वह परमेश्वर पर सीधे आक्रमण नहीं सकता है, शैतान अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए विभिन्न तरीकों को उपयोग में लाता है। वह नीचे दिए तरीकों से परमेश्वर की प्रधान सृष्टिः मनुष्य, पर आक्रमण करता है:

1) झूठ बोलना - (यूहन्ना 8:44; 2 कुरिं. 11:3)
2) परीक्षा लेना - (मत्ती 4:1)
3) लूटना - (मत्ती 13:19)
4) सताना - (2 कुरिं. 12:7)
5) बाधा डालना - (1 थिस्स. 2:18)
6) छानना - (लूका 22:31)
7) मूर्ति बनना / नकल करना - (मत्ती 13:25; 2 कुरिं. 11:14)
8) दोष लगाना - (प्रकाशित. 12:9-10)
9) बीमारी से पीड़ित करना - (1 कुरिं. 5:5; लूका 13:6)

10) अधिकार में रखना - (यूहन्ना 13:27)
11) हत्या करना और निगल जाना - (1 पतरस 5:8; यूहन्ना 10:10)

इ. शैतान की नियती

1) शैतान क्लेश की अवधि के दौरान थोड़े समय के लिए पृथ्वी पर गिराया जाएगा (प्रकाशित. 9:1; 12:9,10,12-13)।
2) जब मसीह सामर्थ्य और महिमा में अपना राज्य पृथ्वी पर स्थापित करने आएगा, तो वह वहाँ से "अथाह-कुंड" में डाल दिया जाएगा (प्रकाशित. 20:1-3)।
3) वह एक थोड़े समय के लिए छोड़ा जाएगा जिस समय वह पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को व्यर्थ करने की कोशिश करेगा (प्रकाशित. 20:3)।
4) उसकी योजना असफल होगी, उसकी सेनाओं को नष्ट करने के लिए स्वर्ग से आग गिरेगी, और अन्त में वह और उसके स्वर्गदूत आग की झील में डाल दिए जाएँगे जहाँ वे युगानुयुग की पीड़ा में तड़पते रहेंगे (प्रकाशित. 20:7-10; मत्ती 25:41)।

दुष्ट स्वर्गदूत

हम इनकी दो श्रेणियाँ देखेंगे: अ) स्वर्गदूत जिन्हें कैदखाने में रखा गया है, और
आ) स्वर्गदूत जो स्वतंत्र हैं।

अ. स्वर्गदूत जो कैदखाने में रखे गए हैं

उनका उल्लेख 2 पतरस 2:4 और यहूदा 6 में लिखा है।

1) 2 पतरस 2:4 - पतरस मात्र कहता है कि उन्होंने पाप किया, और "अन्धेरे कुण्डों" में डाल दिए गए और न्याय के दिन तक बन्दी हैं।
2) सुझाव दिया गया है कि ये स्वर्गदूत "परमेश्वर के पुत्र" हैं जिन्होंने "मनुष्यों की पुत्रियों" से विवाह कर लिया जिनके अस्वाभाविक सन्तान या शूरवीर (इब्रानी "nephilim" अर्थ है: "गिरे हुए" - उत्प. 6:1-4) उत्पन्न हुए, और यह "पराये शरीर" हैं जिनका जिक्र यहूदा 6-7 में किया गया है। और उन्होंने स्वर्ग छोड़ दिया था, और जब वे पृथ्वी पर आए, तो उन्होंने ऐसे घृणित काम के लिए मानवीय शरीर ले लिए थे।

आ. स्वर्गदूत जो स्वतंत्र हैं

1) उनका जिक्र कभी कभी उनके अगुए, शैतान के साथ किया गया है (मत्ती 25:41; प्रकाशित. 12:7-9) या कभी कभी अलग भी (भजन 78:49; रोमियों 8:38; 1 कुरिं. 6:3; प्रकाशित. 9:14)।
2) वे "प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता" में सम्मिलित हैं - (इफि. 1:21)।
3) उनका जिक्र स्पष्टतया इफि. 6:12; कुलु. 2:15 में है।

इ. दुष्ट स्वर्गदूतों के काम

1) परमेश्वर उन्हें एक दुष्ट व्यक्ति को यातना देने या सताने के लिए छोड़ता है (भजन 78:49)।
2) वे शैतान की योजना और उद्देश्यों को पूरा करने में उसका सहयोग और सहायता करते हैं (इफि. 6:12)।
3) वे अच्छे स्वर्गदूतों का उनके काम में विरोध करते हैं (दानि. 10:12-13)।
4) वे विश्वासियों को शारीरिक वेदना, सताव और परमेश्वर और उसके वचन की निन्दा के द्वारा मसीह और उसकी सिद्ध इच्छा से अलग करने की कोशिश करते हैं (रोमियों 8:38)। विश्वासी इन दुष्ट स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे, जिन्हें अन्त में उनके अगुए, शैतान के साथ आग की झील में डाल दिया जाएगा।

दुष्टात्माएँ

अ. शब्द दुष्टात्मा

1) "DIAMONION" (व्यवस्थाविवरण 32:17; भजन 106:37; मत्ती 8:31; मरकुस 1:34; लूका 8:2, वगैरा)।
2) "अशुद्ध आत्मा" - (मत्ती 10:1; लूका 9:42, वगैरा)।

आ. दुष्टात्माएँ क्या हैं?

बाइबल उनके प्रारंभ के विषय में चुप है, परन्तु हम निश्चित रूप से जानते हैं कि:

1) वे बुरे मनुष्यों की आत्माएँ नहीं हैं जो मर गए हैं। बाइबल बार-बार दावा करती है कि पाप में मरे मनुष्यों की आत्माएँ "अधोलोक" में हैं - पृथ्वी पर घूम नहीं रही हैं (भजन 9:17; यहेजकेल 32:17-24; लूका 16:23; प्रकाशित. 20:13)। केवल यीशु के पास अधोलोक की कुंजियाँ हैं (प्रकाशित. 1:18)।
2) वे गिरे हुए स्वर्गदूत नहीं हैं:
   अ) हमारे पास गिरे हुए स्वर्गदूतों का मनुष्यों के शरीरों में निवास करने का विवरण नहीं है, और
   आ) उनकी गतिविधियों का क्षेत्र स्वर्गीय स्थान है न कि पृथ्वी।
3) वे उस श्रेणी की आत्माएँ हैं जिनके विषय में बाइबल के विद्वान सोचते हैं कि वे आदम-पूर्व जाति की देहमुक्त आत्माएँ या उत्पत्ति 6 की दानव जाति हैं।

इ. दुष्टात्माओं के काम

दुष्टात्माएँ अपने अगुए शैतान की बुरी योजनाओं और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, उसकी आज्ञा में और सहयोग में काम करती हैं।

1) उनमें शरीर पर कब्जा करने की तीव्र इच्छा होती है। वे न केवल एक बड़ी संख्या में मनुष्य के शरीरों पर कब्जा करती हैं, परन्तु कुछ मामलों में पशुओं के शरीरों पर भी कब्जा करने की इच्छुक हैं (मरकुस 5:8-14; प्रेरितों 16:16)।
2) वे बीमारी लगाती हैं (अय्यूब 2:5-10; लूका 9:37:42)।
3) वे मानसिक रोग पैदा करती हैं (मत्ती 5:4-5; लूका 8:35)
4) वे अनेकों को अनैतिक अशुद्धता में ले जाती हैं (मरकुस 1:23-27; लूका 4:33)
5) वे झूठे सिद्धान्त फैलाती हैं (1 तीमु. 4:1)
6) वे परमेश्वर के बच्चों की आत्मिक प्रगति में रुकावट डालने की कोशिश करती हैं (इफि. 6:12)।
7) कभी-कभार परमेश्वर उन्हें अपने उद्देश्य पूरे करने के लिए उपयोग में लाता है (न्यायियों 9:23; 1 शमू. 16:14)।

दुष्टात्माओं के साथ मूल रूप से तीन प्रकार के आवेष्टन हैं:

1) प्रेतात्मवाद: अर्थात्, आत्मायन, टेबल-टैपिंग, गुप्तविद्या, वगैरा।
2) ज्योतिष-विद्या: अर्थात्, भूतसिद्धि, शकुन निकालना, हस्तरेखा-शास्त्र, जन्मपत्री, वगैरा।
3) शैतान उपासना: शैतानी विधियाँ, वशीकरण, जादू-टोना, वगैरा।

विश्वासियों के रूप में, हमें इन चीजों से दूर रहना है, और उनसे कोई वास्ता नहीं रखना है।

<u>शैतान, दुष्ट स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं पर हमारा अधिकार</u>

अ. पवित्रशास्त्र बिलकुल स्पष्ट है कि मसीह ने शैतान और उसकी सारी सेनाओं पर पहले ही जय प्राप्त कर ली है (1 यूहन्ना 3:8; लूका 10:18; कुलु. 2:15)।

आ. मसीह ने हमें उन पर सारा अधिकार दिया है (लूका 10:19; मत्ती 28:18-19)। इसलिए यदि हम मसीह के साथ सही सम्बंध में हैं तो हमें कुछ भी डर नहीं।

इ. पवित्रशास्त्र हमें उपदेश देता है कि:
   1) शैतान की शक्तियों का सामना करो (1 पतरस 5:9; याकूब 4:7), और
   2) उसके विरुद्ध खड़े रहो (इफि. 6:11,13-14)।

ई. हमारे सुरक्षा के हथियार हैं: सत्य, धार्मिकता, शान्ति का सुसमाचार, विश्वास, उद्धार और प्रार्थना (इफि. 6:14-18)।

उ) हमारे आक्रामक हथियार हैं:
   1) आत्मा की तलवार - परमेश्वर का वचन (इफि. 6:17)।
   2) मेम्ने का लहू।
   3) हमारी गवाही का वचन - (प्रकाशित. 12:11)।
   4) यीशु का नाम - (मरकुस 16:17)।

नोटः जब आप किसी व्यक्ति के जीवन या कार्यों में एक दुष्टात्मा / दुष्टात्माओं की स्पष्ट उपस्थिति अनुभव करो तो आपको अधिकार लेना है और उस दुष्टात्मा / दुष्टात्माओं को निकालना है। यह समय उस व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करने का नहीं है, बल्कि अन्धकार की शक्तियों को फटकारने और आज्ञा देने का है कि वे यीशु मसीह के नाम के अधिकार में आएँ और यीशु के सामर्थी नाम में निकल जाएँ!

अच्छे स्वर्गदूत

अ. स्वर्गदूत

"स्वर्गदूत" शब्द का अर्थ इब्रानी और यूनानी दोनों भाषाओं में "संदेशवाहक" है। केवल संदर्भ ही स्पष्ट कर सकता है कि शब्द मानव या अतिमानव के विषय में है (उदाहरणार्थ, लूका 7:24; प्रकाशित. अध्याय 2 और 3)। उन्हें पंखों वाले प्राणी कहा गया है (दानि. 9:21; प्रकाशित. 14:6)।

आ. करूब

1) यद्यपि शब्द का अर्थ अनिश्चित है, इसका अर्थ "पर फैला देना" और "रक्षा करना" है।
2) ऐसा समझा जाता है कि वे मुख्य रूप से परमेश्वर के सिंहासन के रक्षक हैं (भजन 18:9-10; 80:1; 99:1; प्रकाशित. 4:6-)। शैतान अपने पतन से पूर्व एक करूब रहा होगा। (यहेजकेल 28:14-16)।

इ. साराप

1) वे नाम से केवल यशायाह 6:2,6 में ही पाए जाते हैं।
2) वे करूबों से भिन्न हैं:
   अ) परमेश्वर करूबों के ऊपर विराजमान है (1 शमू. 4:4; भजन 80:1; 99:1), परन्तु साराप उसके ऊपर खड़े रहते हैं (यशा. 6:2)।
   आ) करूब परमेश्वर के सिंहासन के रक्षक हैं, और उसके राजदूतों या संदेशवाहकों के रूप में भी कार्य करते हैं। साराप परमेश्वर की आराधना में स्वर्ग की अगुआई करते हैं और स्वीकृत आराधना और सेवा के लिए परमेश्वर के सेवकों को शुद्ध करते हैं।

ई. प्रधान स्वर्गदूत

1) प्रधान स्वर्गदूत का उल्लेख दो बार पवित्रशास्त्र में होता है (1 थिस्स. 4:16; यहूदा 9)।
2) मीकाईल को एक प्रधान स्वर्गदूत कहा गया है, जिसके अपने स्वर्गदूत हैं (प्रकाशि. 12:7)।
3) जिब्राईल को भी प्रधान स्वर्गदूत माना जाता है।

परमेश्वर का चंगा करने का सामर्थ्य

अध्याय 1 बीमारी कहाँ से आरम्भ हुई

उस प्रकार का विश्वास विकसित करने पहले जो परमेश्वर का चंगा करनेवाला सामर्थ्य ला सकता है, बीमारी का आरम्भ और परमेश्वर इस के विरुद्ध क्यों है के कारण समझना अवश्य है। हमें मनुष्य जाति के आरम्भ की ओर, मनुष्य की सृष्टि की ओर यह समझने के लिए कि वहाँ क्या हुआ था, चलना होगा। तब हम बीमारी की ओर और मनुष्यों को सम्पूर्ण करने की परमेश्वर की इच्छा की ओर, ताकि वे पतन के परिणामों से स्वतंत्र हों, उसका रवैया समझना आरम्भ कर सकते हैं।

आदम को आत्मिक रूप से सिद्ध सृजा गया था

आदम और हव्वा को पापरहित, दोषरहित और सिद्ध, परमेश्वर के स्वरूप और समानता में सृजा गया था। (उत्पत्ति 1:26)। उनका परमेश्वर के साथ मजबूत सम्बंध था और वे उसके साथ बेदाग सहभागिता का आनन्द लेते थे। वे निर्दोष, और सब प्रकार के नैतिक भ्रम से स्वतंत्र थे। वे भीतरी शान्ति और समन्वय का लेते और डर से अनजान थे। वे किसी अन्तर्बाधा या मनोग्रन्थि से पीड़ित नहीं थे, और न ही वे किसी हानिकर या विनाशकारी भाव से संकोची थे। वे नंगे थे, परन्तु इसके विषय में कोई घबराहट, दोष या लज्जा अनुभव नहीं करते थे (उत्पत्ति 225)। ये सब चीजें मिलकर उनके सिद्ध स्वास्थ्य का कारण थीं। अपने सिरजनहार के हाथों से नए नए, वे सिद्ध पाणी थे - आत्मिक, शारीरिक, मानसिक और भावात्मिक रूप से। वे परमेश्वर के रचनात्मक प्रतिभा के, उसके अपने स्वरूप और समानता में सृजे, एक भव्य रचना थे। (उत्प. 1:26)।

आदम को मानसिक और मनोवैज्ञानिक रूप से सिद्ध सृजा गया था

परमेश्वर के स्वरूप और समानता में सृजे जाकर, उसने उससे एक असाधारण और प्रतिभाशाली मन और बुद्धि प्राप्त की थी। इस असाधारण क्षमता का एक भाग सकारात्मक प्रतिरूपों में सोचने की योग्यता थी जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए पूर्ण रूप से सहायक थी। आदम की आश्चर्यजनक बौद्धिक शक्तियों की स्वीकृति में, परमेश्वर ने सृष्टि के सारे प्राणियों के नाम रखने का काम उसे सौंपा (उत्प. 2:19-20)। उसने उसे पृथ्वी और हर जीवित प्राणी पर शासन करने और अधिकार रखने का काम भी उसे सौंपा। सामान्य विचार यह दिया जाता है कि आदम एक हद तक मनौवैज्ञानिक रूप से सुयोग्य था जिससे उसके और परमेश्वर के लिए एक सुव्यवस्थित और परस्पर आनन्ददायक सम्बंध और सहभागिता का आनन्द लेना मुमकिन था। आदम को "परमेश्वर से थोड़ा ही कम" सृजा गया था, इस लिहाज से जिससे वे संगति की एक विशेष श्रेणी अनुभव कर सकते थे। (भजन 8:5)।

आदम को भावात्मक रूप से सिद्ध सृजा गया था

मुझे विश्वास है कि अपने आरम्भिक स्थिति में आदम ने केवल सकारात्मक भावनाओं को ही अनुभव किया था। उसे वही अनुभव किया जो "अच्छा" था, अर्थात् प्रेम, शान्ति और आनन्द। और केवल उसके घातक अवज्ञा के बाद ही वह उन नकारात्मक भावनाओं को, अर्थात् डर, बेचैनी और आतंक अनुभव करने लगा। शक्तिशाली नकारात्मक भावनाएँ उतनी ही हानिकारक हैं जितनी सकारात्मक भावनाएँ रचनात्मक और दीर्घ कालीन हैं। परमेश्वर ने उसे **भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल** खाने से सावधान किया था। यदि आदम ने परमेश्वर की आज्ञा न तोड़ी होती, तो वह और उसके वशंज सदा अच्छा ही अनुभव कर रहे होते, परन्तु अब पतन के कारण, मनुष्य जाति उन सारी विपत्तियों से परिचित है जो नकारात्मक भावनाएँ लाती हैं।

आदम को शारीरिक रूप से सिद्ध सृजा गया था

परमेश्वर ने स्वयं आदम के शरीर के हर भाग की योजना बनाई और रचना की, "तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है" (उत्प. 1:31)। मानव डील-डौल और रचना अभी भी सबसे अधिक असाधारण मशीन है जो कभी बनाई गई है। आधुनिक विज्ञान की प्रगति और आश्चर्यजनक चीजें जो मनुष्य ने बनाई हैं, उनकी कुछ भी तुलना मानव प्राणी की अदभुत जटिलता से नहीं है। राजा दाऊद हम सब की भावनाओं को प्रकट कर रहा था जब उसने कहा "मैं भयानक और अदभुत रीति से रचा गया हूँ" (भजन 139:14)। जब सबकुछ जैसा परमेश्वर ने चाहा था, कार्य करता है, तो हम जानते हैं कि हम कितने अदभुत तरीके से रचे गए हैं। परन्तु, जब कुछ गड़बड़ होती है तो हमें पता चलता है कि हम कितने भयानक रूप से रचे गए हैं।

सम्पूर्ण मनुष्य की सिद्धता

परमेश्वर सदा से सम्पूर्ण मनुष्य के लिए वचनबद्ध रहा है। उसने हमें सिद्ध बनाया है और यीशु मसीह में उसके उद्धार का सामर्थ्य सम्पूर्ण मनुष्य के लिए अत्यावश्यक महत्त्व का है। परमेश्वर की चंगा करने की सामर्थ्य अभी भी परमेश्वर की सम्पूर्ण मनुष्य के लिए दिलचस्पी में आधारित है।

क्या गड़बड़ हुई?

इतिहास में एक समय आया जब मनुष्य संकट के किनारे खड़ा था। अवज्ञा के एक कार्य ने मानव जाति को परमेश्वर की उपस्थिति से एक लम्बे, अंधेरे पतन में धकेल दिया। आरम्भिक दम्पत्ति को बगीचे के हर एक पेड़, शाक और फल तक पहुँच थी। एक मात्र अपवाद भले और बुरे के ज्ञान का पेड़ था। परमेश्वर ने कहा, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" (उत्प. 2:16-17)।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को चेतावनी दी थी कि यदि उन्होंने कभी भी उसकी आज्ञा तोड़ी, तो वे आत्मिक रूप से मर जाएँगे। क्योंकि वे आत्मिक रूप से मर गए, मृत्यु की व्यवस्था उनमें कार्य करने लगी और वे आखिरकार शारीरिक मौत भी मरने लगे। शारीरिक मृत्यु आत्मिक उल्लंघन का सीधा परिणाम था जिसकी वजह से आदम और हव्वा परमेश्वर की उपस्थिति से खदेड़े गए थे। क्योंकि वे परमेश्वर की उपस्थिति से जो उनका जीवन का स्रोत था, दूर हो गए, पाप और मृत्यु की व्यवस्था उनमें कार्य करने लगी। विकृति की एक प्रक्रिया आरम्भ हो गई। यदि वह परमेश्वर के साथ सही सम्बंध में रहता तो यह मानव जाति पर की न आती। विकृति की प्रक्रिया बीमारी और बूढ़ा होना कहलाती है। अदन के संकट से यह मनुष्य को पीड़ित करती आई है।

<u>अवज्ञा के इस एक मात्र कार्य ने, संसार में हर नकारात्मक चीज को आरम्भ किया जो मानव जाति को आत्मिक, मानसिक और शारीरित रूप से शापित करती है।</u>

यह ...... का स्रोत है:

बीमारी
गड़बड़
असमर्थता
कष्ट
असुविधा
विपत्ति
फूट
निराशा
असामंजस्य
विघटन

ये सब नकारात्मक भावनाएं और रवैये जो अच्छे स्वास्थय के लिए हानिकारक हैं, अवज्ञा में से निकले हैं। वे स्वास्थ्य को नष्ट करते हैं। बीमारी चैन की कमी है। परमेश्वर और अपने साथ सम्पूर्ण रूप से मेल होने की कमी। बीमारी अवज्ञा से आरम्भ हुई और इसने बाकी के सारे पहलुओं के लिए द्वार खोल दिया।

पतन की आत्मिक विपत्ति

अपनी अवज्ञा के तात्कालिक और सीधे परिणाम के रूप में, आदम और हव्वा ने परमेश्वर के साथ अपने यशस्वी सम्बंध और उस सम्बंध के साथ आनेवाले सब लाभ खो दिए। उन्होंने अपनी निर्दोषता खो दी और दोष और दण्डाज्ञा प्राप्त की। उन्हें उनके बाकी के जीवन भर के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से खदेड़ दिया गया। मनुष्य ने अपना अधिकार भी खो दिया। यह सच्चा अधिकार उसका परमेश्वर के स्वरूप और समानता में होने और परमेश्वर के साथ सही सम्बंध में होने पर निर्भर था। मनुष्य सृष्टि में परमेश्वर का प्रतिनिधि था। तब से मनुष्य सृष्टि पर अपने अधिकार का पुनःदावा करने का प्रयास कर रहा है। आदम का सारा वंशज परमेश्वर की समानता पाये होते। बदले में उन्हें आदम की पापी मानवता हाथ लगी (उत्प. 5:3)।

पतन की मानसिक और भावात्मक विपत्ति

अवज्ञा के द्वारा मनुष्य ने अपनी मानसिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धता खो दी। आज भी वह उस ज्ञान को पाने के लिए जो उसे प्रभुत्व देगा, हर सम्भव प्रयास करता है, परन्तु सत्य तो परमेश्वर के साथ सही सम्बंध पर निर्भर है, क्योंकि परमेश्वर सत्य का

लेखक है। मनुष्य ने मनोवैज्ञानिक स्वतंत्रता, सही सोचने की परमेश्वर द्वारा दी गई उसकी योग्यता खो दी और इसके द्वारा उसने अपनी भावात्मक स्वास्थ्य भी खो दिया।

आदम ने स्वयं को शैतान के हाथ, जो इस संसार का ईश्वर बन गया है, बेच दिया (2 कुरिं. 4:4)। आदम ने परमेश्वर द्वारा दिए अपने सारे हक और अधिकार बन्धक रख दिए। तब से मानव जाति शैतान और उसकी सेना के शिकार होते रहे हैं। पतन से लेकर मानव जाति दुख, पीड़ा और कठिन परिश्रम से स्वतंत्र नहीं रही है (उत्प. 3:15-19)।

पतन की शारीरिक विपत्ति

"और आदम से उसने कहा, 'तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना, उसको तू ने खाया है इसलिए भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा; और वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा; और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है; तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।'" (उत्प. 3:17-19)।

मानव जाति ने एक ऐसी भूमि पाई जो शापित थी, जिसमें से उसे पसीने बहा बहाकर रोजी रोटी कमानी पड़ेगी। काँटे और ऊँटकटारे उगेंगे जो मनुष्य के परिश्रम को बढ़ाएँगे। वह परमेश्वर की उपस्थिति और जीवन के वृक्ष से खदेड़ा गया था। उसका अन्त मृत्यु था: " मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।" हव्वा ने भी, एक विशेष शाप पाया जिसे वह अपने सारे वंश की स्त्रियों को दे जाएगी। इसमें दुख, पीड़ा और पीड़ित होकर बच्चे उत्पन्न करना सम्मिलित था, और अपने पति की अधीनता का जीवन था। (उत्प. 3:16)।

मनुष्य ने अपना स्वास्थ्य खो दिया और बीमारी पाई। बीमारी की वर्तमान महाविपत्ति जो सारी मानव जाति को पीड़ित करती है, इसका आरम्भ अदन की विपत्ति में हुआ था। पाप संसार में उस समय आया था। पाप के साथ बीमारी आई। बेलगाम बीमारी का अन्तिम परिणाम मृत्यु है। यदि आदम ने पाप नहीं किया होता, तो मानव जाति ने दुख और बीमारी नहीं देखी होती। उसने भले और बुरे के ज्ञान का फल खाने का फैसला किया। बीमारी उस बुराई का भाग है। इसलिए सारी बीमारियाँ शैतान से आती हैं। परमेश्वर बीमारी का कर्त्ता नहीं है। अध्याय दो में हम बीमारी के बहुत से कारणों पर की चर्चा करेंगे।

अध्याय 2 लोग बीमार कैसे होते हैं

बीमारी और रोग के कुछ कारण

नीचे बीमारी और रोग के कुछ कारणों का सार प्रस्तुत किया गया है:

1. बीमारी तब संसार में आई जब आदम ने पाप किया

बीमारी अवज्ञा के सीधे परिणाम के रूप में उस शाप का भाग है जो सारी मानव जाति पर आया है। इसलिए, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, पाप सारी बीमारियों का मूल कारण है। यह "पाप की मजदूरी" का भाग है (रोमियों 6:23)। बीमारी आराम की कमी, शान्ति की कमी दिखाता है। अपने उल्लंघन के बाद आदम के मन और भावनाओं की स्थिति ऐसी ही थी। दोषसिद्धि, दोष, दण्डाज्ञा और लज्जा का बोझ जो उस पर आया, उसने उसे बीमारी के लिए खुला और असुरक्षित छोड़ दिया।

हमारे विश्वास करने के अच्छे कारण हैं कि पतन तक, संसार में कोई संक्रामक जीव, जीवाणु या रोगाणु नहीं थे। अपनी सृष्टि की रचना पर परमेश्वर ने देखा कि सबकुछ "बहुत ही अच्छा है।" वह ऐसा नहीं कह सकता था यदि वहाँ पहले से रोगाणु, कैन्सर कोशाणु, और बहुत से बीमारी लाने वाले जीवाणु होते। ये भयानक ध्वंसक शाप के साथ ही आए।

2. पाप – परमेश्वर से विच्छेद, अभी भी बीमारी लाता है

क्योंकि पाप मूल रूप से परमेश्वर के राज्य का इनकार है, और जो हमें परमेश्वर के जीवन से पृथक् करता है, तो हम देख सकते हैं कि यह अन्यसंक्रामण अभी भी बीमारी का एक प्रधान कारण है। परमेश्वर के राज्य के आनेवाले प्रदर्शन में, जब सारा विद्रोह दबा दिया जाएगा, तब कोई दर्द, दुख या मृत्यु नहीं होगी (प्रकाशित. 21:4)।

3. वंशानुगत जननिक कमजोरियाँ बीमारियाँ लाती हैं

कुछ कमजोरियाँ जो बीमारियाँ पैदा कर सकती हैं, कभी-कभी एक वंश से दूसरे वंश में हस्तान्तरित होती हैं। वे पतन हुई मानव जाति की कमजोरी और नश्वरता का एक पहलू हैं जो पहले पतन में आरम्भ हुई और एक वंश से दूसरे वंश तक पहुँचाई गई। कुछ बीमारियाँ एक वंश से दूसरे वंश में आती रहती हैं और "परिवारिक-कमजोरी" के रूप में देखी जाती हैं। परन्तु, यह विनाशकारी जंजीर आत्मिक अधिकार द्वारा तोड़ी जा सकती है। एक मसीही के लिए यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर अब उसका स्वर्गीय पिता है और कि अब परमेश्वर, न कि मानव वंश, उसकी नियती निर्धारित करता है।

4. बीमारियाँ प्रायः संक्रामक जीवों द्वारा लाई जाती हैं

हमारे आस-पास जीवन की वास्तविकता एक निरन्तर अनुस्मारक है कि हम पापी संसार में जी रहे हैं। आरम्भिक सृष्टि में कोई वाइरस, संक्रामक जीवाणु या महामारियाँ नहीं थीं। सबकुछ जो परमेश्वर ने बनाया था "बहुत अच्छा" था। मनुष्य के आज्ञोल्लंघन और उसका परिमाणी परमेश्वर से विच्छेद से संसार में संक्रामण और बीमारी आए। तब से मानव जाति को बीमारियों के विनाश से संघर्ष करना पड़ रहा है। यह निश्चय ही वह संसार नहीं जो परमेश्वर ने चाहा था हो। वह बीमारी का कर्त्ता नहीं है। उलटे जब वह मानव जाति की पीड़ा को देखता है तो तरस से भर जाता है और हमारी बीमारियों से हमें आराम देना और चंगा करना चाहता है। यीशु के दुख और मृत्यु का एक भाग हमें चंगा करना है - हमारे पाप और बीमारी के लिए एक विषहर प्रदान करना। (1 पतरस 2:24)।

5. बीमारी क्षय और मृत्यु की प्रक्रिया का एक भाग है

पापी मानव जाति का एक लक्षण जन्मजात मानव कमजोरी है जो यदि अधिक दबाव लगाया गया तो सबसे कमजोर बिन्दु पर टूट जाएगा। आदम की हर एक पापी सन्तान इस कमजोरी को उत्तराधिकार में पाता है और जीवन के दबाव उनके कमजोर स्थान खोज लेते हैं चाहे वे शारीरिक, मानसिक या भावात्मिक क्यों न हों। इसलिए, बहुत सारी बीमारियाँ जीवन के उन दबावों के परिणामस्वरूप आती हैं, जो एक व्यक्ति में कमजोरी के एक विशेष क्षेत्र को कमजोर देते हैं।

6. दुर्घटनाएँ बीमारी ला सकती हैं

दुर्घटनाएँ अस्वास्थ्य का एक और प्रत्यक्ष कारण हैं। लोग किसी प्रकार की दुर्घटना के कारण से सब प्रकार की चोटें या अशक्तताएँ पा लेते हैं। अधिकतर दुर्घटनाओं के पीछे कोई गुप्त आत्मिक कारण नहीं होते हैं। वे कुछ कारणों से हो सकते हैं जो दुर्भाग्यवश कभी-कभी मसीहियों और गैरमसीहियों दोनों के साथ घटते हैं।

दुर्घटनाओं के कारण आकस्मिक गम्भीर अक्षमता आने से भावात्मक दुख और उदासी भी जीवन में आते हैं। यह और भी विनाशकारी हो सकता है क्योंकि मसीही प्रायः सब घटनाओं का श्रेय अलौकिक कारणों को देते हैं और इसलिए दुर्घटनाओं का जिम्मेवार या तो परमेश्वर या शैतान को मानते हैं। यह आत्मनिरीक्षण का कारण बनता है, कि क्यों परमेश्वर ने यह समस्या उनके जीवन में आने दी। इस प्रकार के प्रश्न उठ सकते हैं जैसे कि, "यह मेरे साथ क्यों हुआ?", "मैं ने क्या गलत किया?", "मैं ने परमेश्वर को कैसे अप्रसन्न किया?" ऐसे भारी आत्मनिरीक्षण व्यक्ति की दुविधा को बढ़ा देते हैं और बिना वजह उन्हें आत्मिक अन्धरे और उत्पीड़ना में डाल देते हैं। हमे समझने की आवश्यकता है कि अधिकतर दुर्घटनाओं के पीछे कोई गुप्त अशुभ कारण नहीं होते हैं। वे किसी स्वाभाविक परिस्थिति का कारण हो सकते हैं और जिस प्रकार हम जीवन जीते हैं उससे उनका कोई सीधा सम्बंध नहीं होता है।

7. स्वास्थ्य की उपेक्षा बीमारी लाती है

हमें सच्चाई का सामना करना चाहिए कि यदि हम स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति के तत्त्वों की उपेक्षा करें तो हमारा स्वास्थ्य हानि उठाएगा। स्वस्थ्य रहने के लिए, एक उचित आहार बनाए रखना अवश्य है। कुछ पोषक और विटामिन हैं जो हमारे नियमित आहार का भाग होने चाहिए। आहार में अभाव और कमी अन्त में स्वास्थ्यभंग कर देगी। अपर्याप्त आराम और नींद भी स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालेंगे। बहुत अधिक काम और बहुत कम आराम और विश्राम स्वास्थ्य को कमजोर करेगा। इपफ्रुदीतुस (फिलि. 2:25-30) इसका एक उदाहरण है। वह मृत्यु के करीब पहुँच गया था और उसकी हालत का कारण, प्रभु और उसके लोगों की सेवा के लिए अधिक काम था।

8. स्वाभाविक बूढ़ा होना शारीरिक शक्ति कम करता है

जब व्यक्ति जवान होता है तो उसमें एक युवा जीवन-शक्ति होती है जो अच्छे स्वास्थ्य की सहायक होती है। बाइबल "ओस के समान" जवानी की बात करती है (भजन 110:3)। दाऊद भी "तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है" की बात करता है

(भजन 103:5)। यशायाह भी नया बल प्राप्त करने की बात करता है (यशा. 40:31)। यिर्मयाह हमें बताता है कि "पुरुष के लिए जवानी में जुआ उठाना भला है।" (विलापगीत 3:27)। जीवन का प्रारंभिक समय कड़ी मेहनत के लिए अच्छा है। यह सर्वोत्तम अवस्था और शारीरिक शक्ति का चरम है। सुलेमान प्रगामी वर्षों की सीमाओं को कितने सजीव रूप से समझाता है। वह हम से आग्रह करता है, "अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजरहार को स्मरण रख" (सभोपदेशक 12:1)। जब तक तुम्हारे पास ताकत और जीवन-शक्ति है तो परमेश्वर से पूरी शक्ति के साथ प्रेम कर और उसकी सेवा कर।

यह अनोखा समझा जाता था कि मूसा, जब वह अधिक प्रगामी उम्र में पहुँचा तब भी न तो उसका आँखें धँधली पड़ी थीं और न ही उसका पौरुष घटा था (व्यवस्था. 34:7)। परन्तु सामान्य चीज तो यह है कि जब जीवन का चरम गुजरने लगता है तब ताकत कम होती है और आँखें धुँधली पड़ने लगती हैं। तो क्या इसका अर्थ यह है कि हम प्रगामी वर्षों में स्वास्थ्य और ताकत की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं ? क्या इसका अर्थ यह है कि हम परवर्ती वर्षों में शारीरिक चंगाई की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं ? बिलकुल नहीं! परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है, "जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो।" (व्यवस्था. 33:25)।

मेरा विश्वास है यह सिखाता है कि हम, उस समय की हमारी उम्र के समानुपात में, अपने सारे जीवन भर अच्छा स्वास्थ्य रखने की अपेक्षा कर सकते हैं। मैं प्रगामी उम्र के कई मसीहियों से मिला हूँ, जो सोचते हैं कि शारीरिक विकृति और घटती ताकत इस बात का संकेत हैं कि परमेश्वर अब उनमें रुचि नहीं रखता है। कभी-कभी वे चिन्ता करते हैं कि सम्भवतः उन्होंने कोई पाप किया है और उनकी शारीरिक कमजोरी उस का न्याय है। कई सच्चे मसीही इस विषय में बड़ी दण्डाज्ञा में डूब जाते हैं, और सोचते हैं कि उन्होंने कोई भयानक, अक्षम्य पाप किया होगा। यह समझने से उन्हें बहुत बड़ी सहायता मिली है कि प्रगामी वर्षों में शारीरिक विकृति की एक स्वाभाविक प्रक्रिया होती है जो मसीहियों और गैर-मसीहियों दोनों को प्रभावित करती है। अपने जीवन के परवर्ती वर्षों का भी अपनी सम्पूर्ति है और उनकी उपेक्षा नहीं करनी है।

9. दुष्टात्माएं बीमारी ला सकती हैं

दुष्टात्माए कभी-कभी बीमारी और पीड़ा का सीधा कारण हो सकती हैं। मत्ती 9:32-33 में हम एक गूँगे के विषय में पढ़ते हैं "जिसमें दुष्टात्मा थी।" जब यीशु ने गूँगी आत्मा को निकाल दिया, तो वह व्यक्ति बोलने लगा। प्रकट है उसके स्वर-सूत्र एक गूँगी आत्मा ने वश में कर रखे थे। मरकुस 9:17-27 में एक जवान की कहानी है जिसे यीशु के पास लाया गया, जिसमें गूँगी आत्मा थी, जो असल में बहरापन और गूँगापन दोनों का कारण था। यीशु ने गूँगी आत्मा को निकाल दिया, तो जवान बोलने लगा। लूक 13:11-16 में, एक स्त्री का विवरण है "जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी।" उसकी रीढ़ ही हड्डी टेढ़ी हो गई था और उसका चेहरा जमीन की ओर झुका हुआ था। आधुनिक चिकित्सा कहेगी कि उसे रीढ़ का पुराना झुकाव था। यीशु ने उसे उसकी कमजोरी से छुड़ा दिया और तुरन्त उसकी रीढ़ सीधी हो गई, और वह अपने छुटकारे के लिए परमेश्वर की महिमा करने लगी।

पवित्रशास्त्र में अनेक अवसर है जहाँ कहा गया है कि लोग कमजोरी की आत्माओं से पीड़ित थे। उनके चंगाई पाने का एक ही तरीका था कि विश्वास और अधिकार के शब्द के द्वारा उन आत्माओं को निकाल दिया जाए। एक बार जब वे निकाल दी जाती हैं, तो लक्षण भी गायब हो जाते हैं। ऐसे लोग एक छुटकारे की सेवकाई के अवाला और किसी भी साधन से चंगे नहीं हो सकते हैं। दुष्टात्माओं को यीशु के नाम में जो सब नामों में ऊँचा नाम है, जीत लेना और निकाल देना है। एक बार जब यह होता है, तो पीड़ित व्यक्ति विभिन्न लक्षणों से मुक्त हो जाता है और पूर्ण रूप से चंगा हो जाता है। यह अत्यावश्यक है कि ऐसे लोग सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर के अधीन हो जाएँ, नियमित उसका वचन पढ़ें और अपने जीवन के हर पहलू में उसके पीछे चलने और उसकी आज्ञा मानने का प्रयास करें। इसे विश्वासयोग्यता से करने में असफलता, उन दुष्टात्माओं को वापस बुला सकता है और उनकी हालत पहले की तुलना में और अधिक खराब हो सकती है। (मत्ती 12:45; लूका 11:26)।

10. बीमारी उससे जो परमेश्वर चाहता है, विपथगमन है

एक विपथगमन "सामान्य से एक विचलन" है। बीमारी आरम्भिक सृष्टि, जैसा परमेश्वर ने उसे बनाया था, का भाग नहीं थी। और न ही आज मानव जाति के उसकी योजना या इच्छा है। परमेश्वर बीमारी का कर्त्ता नहीं है। वह बीमारी, रोग और उनसे पैदा हुई पीड़ा के विरुद्ध है। वह उन लोगों की ओर जो किसी प्रकार पीड़ित या बीमार हैं, तरस से भरा है। उसकी सच्ची इच्छा अनेक बार बाइबल में व्यक्त की गई है, और सबसे स्पष्ट 2 यूहन्ना 2 में है।

"हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे और भला चंगा रहे।"

अध्याय 3 चंगाई के लिए परमेश्वर का समाधान

परमेश्वर के मुक्तिप्रद नाम

जब हम यहोवा के मुक्तिप्रद नाम पर विचार करते हैं तो हम परमेश्वर की सम्पूर्ण व्यक्ति - आत्मा, प्राण और शरीर के लिए उसकी दिलचस्पी समझने लगते हैं। यहोवा का अर्थ है "स्वयं-विद्यमान जो अपने आप को प्रकट करता है"। यह नाम परमेश्वर के मुक्तिप्रद कार्य के विशेष संदर्भ के साथ उपयोग किए गए हैं।

पवित्रशास्त्र में सात संयुक्त नाम हैं जिन्हें यहोवा नाम के साथ समुच्चयबोधक में उपयोग किया जाता है। उन में से हर एक उद्धार के एक एक विशेष पहलू को, जो उसने मुहैया किया है, प्रकट करता है।

1. **यहोवा यिरे** (उत्प. 22:14): **"प्रभु उपाय करेगा"**

इस प्रकार यहोवा ने अब्राहम से अपनी घोषणा मोरिय्याग पर्वत पर की थी। अपने एकलौते प्रिय पुत्र के बलिदान की विस्मयकारी सम्भावना के सामने, अब्राहम ने प्रभु की आवाज सुनी, "उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा।" परमेश्वर ने आवश्यकता को देखा और पास की झाड़ी में एक बलिदान मुहैया किया था। "अब्राहम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रखा।" यह जानना कितना अदभुत है कि परमेश्वर ने हमारे लिए एक उद्धारकर्त्ता देने का वचन किया है!

2. **यहोवा राफा** (**निर्गमन** 15:26): **"मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला प्रभु"**

अपने लोगों को मिस्र से निकालने के कुछ देर बाद, परमेश्वर ने अपने आप को उनका चंगा करनेवाले के रूप में प्रकट किया था। उसने पहले ही अपने आप को उनके उद्धारकर्त्ता और छुटकारा देनेवाले के रूप में दिखाया था। अब वह अपने आप को उनका चंगा करनेवाले के रूप में भी प्रकट करता है।

पुराना नियम चंगाई को उद्धार के एक अनिवार्य भाग के रूप में दिखाता है। पौलुस हमें बताता है कि नया नियम एक "बेहतर वाचा", हर प्रकार से उत्तम है। यदि पुरानी वाचा ने सम्पूर्ण व्यक्ति के लिए प्रबंध किया था, तो निश्चय ही नई वाचा कम तो नहीं करेगी।

3. **यहोवा निस्सी** (**निर्गमन** 17:15): **"प्रभु हमारा झंडा या हमारा विजेता"**

यह प्रकाशन परमेश्वर के इस्राएल को अमालेकियों पर एक महान विजय देने के तुरन्त बाद आया। मूसा प्रभु की ओर अपने हाथ उठाए खड़ा रहा और प्रभु ने उनके सामने से उनके सारे शत्रुओं को नष्ट कर दिया। एक महान विजय हासिल की गई थी। मूसा ने प्रभु के लिए एक वेदी बनाई और उस स्थान का नाम यहोवा निस्सी रखा, प्रभु जिसने अपनी विजय का झंडा हम पर फैलाया है।

4. **यहोवा शालोम** (**न्यायियों** 6:23): **"प्रभु हमारी शान्ति"**

यह मुक्तिप्रद नाम हमारे लिए परमेश्वर की शान्ति, जो मसीह में उद्धार के द्वारा हमारी है, को जानने और पाने के विशेषाधिकार को प्रकट करता है। यह शान्ति की पूर्णता है, जिसका अर्थ है "अपनी शान्ति के लिए सब कुछ जो आवश्यक है, होना।" पवित्रशास्त्र मसीह के विषय में कहता है, "वह हमारी शान्ति है" (इफि. 2:14)। शान्ति शब्द (इब्रानी में "शालोम") का अथ है तन्दुरुस्ती, सम्पूर्णता, हमारे कल्याण के लिए सबकुछ जो आवश्यक है।

5. **यहोवा रॉ** (**भजन** 23:1): **"प्रभु, मेरा चरवाहा"**

दाऊद का यह भजन प्रभु समान एक चरवाहे के अधीन होने के परमानन्द और सुरक्षा का वर्णन करता है। प्रभु एक चरवाहे के रूप में अपनी ध्यान रखनेवाली दिलचस्पी पर जोर देता है। क्योंकि हम परमेश्वर की चराई की भेड़ें हैं, तो यह जानना अदभुत है कि मसीह के उद्धार ने एक इतने सहृदय और दयालु चरवाहे की सुरक्षा हमारे लिए प्रदान की है।

6. **यहोवा सिदकेनु** (**यिर्मयाह** 23:6): **"यहोवा हमारी धार्मिकता"**

यीशु ने हमारे लिए मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता बनना मुमकिन किया है। (2 कुरिं. 5:21)। उसने यह हमारे लिए पाप बनकर और हमारे लिए परमेश्वर की सजा और न्याय लेकर किया। मसीह का उद्धार न केवल हमें बचाता है, बल्कि यह पिता के सामने हमारी धार्मिकता घोषित करता है। "(मसीह) जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।" (1 कुरिं. 1:30)।

7. **यहोवा शाम्मा (यहेजकेल** 48:35): **"यहोवा वहाँ है"**

यीशु के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति हमें लौटा दी गई है। आदम को परमेश्वर की उपस्थिति में से खदेड़ दिया गया था, परन्तु हम मसीह के द्वारा उसकी उपस्थिति में वापस लाए गए हैं। उसके उद्धार पाए लोगों के रूप में, हमारे पास उसकी उपस्थिति की आशीष निरन्तर रहती है।

इन में से हर एक मुक्तिप्रद नाम उन विभिन्न आशीषों को प्रकट करता है जिन्हें परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमारे लिए उपलब्ध किया है। चंगाई कुछ कृपापात्र लोगों का विशेषाधिकार नहीं है; यह उन सबका मुक्तिप्रद अधिकार है जो वाचा की माँगों को पूरा करते हैं। परमेश्वर इस्राएल के लिए यहोवा राफा था, और उसने घोषित किया, "मैं यहोवा बदलता नहीं" (मलाकी 3:6)।

मसीह के प्रायश्चित के द्वारा चंगाई

हर आशीष जो हम परमेश्वर से पाते हैं मसीह की कलवरी पर जय के द्वारा मिलती है। इसमें चंगाई भी सम्मिलित है। प्रायश्चित शब्द का अर्थ है परमेश्वर के साथ एक होना। इसका उद्देश्य हमें परमेश्वर के साथ एक करना और पाप के कारण मनुष्य ने जो सबकुछ खो दिया था उसे पुनःस्थापित करना है। एस चीज जो उसने खोई थी, स्वास्थ्य और ताकत थी। इसलिए प्रायश्चित के द्वारा स्वास्थ्य पुनःस्थापित किया गया है। पाप और बीमारी वो दुगुना शाप था जो मानव जाति पर आया था। दुगुने शाप के लिए मसीह ने दुगुना इलाज किया है। यशायाह यह कहानी बड़े सजीव तरीके से वर्णन करता है। "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया" (यशायाह 53:4)।

हम समझते हैं कि मसीह ने हमारे रोगों को उसी प्रकार उठा लिया है जिस प्रकार उसने हमारे पापों को उठाया है। हम जानते हैं कि उसने हमारे पापों को हमारे स्थानापन्न के रूप में उठाया है। यह हमारे रोगों के विषय में भी सच होना चाहिए। मसीह ने हमारे लिए उन्हें भी सह लिया। क्योंकि उसने मेरे स्थानापन्न के रूप में मेरे पापों को उठा लिया, मैं उनसे स्वतंत्र हुआ हूँ। क्योंकि उसने मेरे रोगों को भी उठा लिया है, मैं उनसे भी स्वतंत्र हुआ हूँ। मसीह ने हमारे पापों और हमारे रोगों दोनों को अपने ऊपर उठा लिया है, इसलिए उन सबके लिए क्षमा और चंगाई है जो विश्वास से उन्हें स्वीकार करेंगे। यदि मसीह ने मेरे पापों की सजा सह ली है, तो मुझे उसे सहने की आवश्यकता नहीं है। यदि मसीह ने मेरे रोगों को सह लिया है, तो मुझे उन्हें सहने की आवश्यकता नहीं है।

चंगाई कलवरी पर मोल ली गई थी

हमारा यह विश्वास करना सही है कि क्रूस पर मसीह का प्रायश्चित सम्पूर्ण व्यक्ति - आत्मा, प्राण और शरीर, के लिए एक सम्पूर्ण इलाज प्रदान करता है। मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा मानव जाति के लिए सम्पूर्णता मोल ली है।

क्योंकि वह पुराने नियम में चंगा करनेवाला परमेश्वर था, वह आज भी चंगा करनेवाला परमेशेवर है। वह आज भी यहोवा राफा है। प्रभु हमारा डाक्टर, बदलता नहीं है! परमेश्वर संगत है। उसका चरित्र, स्वभाव और प्रबंध अपरिवर्तनीय हैं। इसलिए वह भी अपरिवर्तनीय है।

मसीह की चंगा करने वाली सेवकाई

यीशु स्वयं चंगाई की सेवकाई के लिए हमारा सबसे उत्तम मार्गदर्शक है। परमेश्वर का सच्चा हृदय और स्वभाव यीशु मसीह में सबसे स्पष्ट दिखता है। फिलिप्पुस मे पूछा, "हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे, यही हमारे लिए बहुत है।" यीशु ने उससे कहा, "हे फिलिप्पुस, क्या तू मुझे नहीं जानता...जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है...क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझे में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो। मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।" (यूहन्ना 14:8-12)। यह परच्छेद हमें सिखाता है कि यीशु मसीह अपने जीवन और सेवकाई के द्वारा पिता अपने अपरिवर्तनीय स्वभाव में कैसा है दिखाने आया था। यीशु हमें स्पष्ट रूप से दिखाता है कि वह सम्पूर्ण मनुष्य में दिलचस्पी रखता है। जब चंगाई की आवश्यकता थी तब उसने चंगा किया। जब भोजन की आवश्यकता थी तब उसने भीड़ को खाना खिलाया। उसने मनुष्य को जैसा वह सृजा गया है - आत्मा, प्राण और शरीर, पिता का प्रेम दिखाया।

हम यह भी सीखते हैं कि यीशु ने अपने चमत्कारों को कैसे कीमती माना। उसके लिए, चमत्कार उसके शब्दों की सच्चाई की पुष्टि करते थे। हमें भी अपनी सेवकाई में मसीह के चंगा करने के सामर्थ्य के लिए विश्वास करने को कहा गया है, "जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा।"

मसीह ने क्यों चंगा किया?

1. मसीह ने अपनी भविष्यद्वाणी की सेवकाई को पूरा करने के लिए चंगा किया

जब पतरस की सास की चंगाई के बाद भीड़ इकट्ठी हुई, तो मत्ती हमें बताता है, "उसने सब बीमारों को चंगा किया; ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो : 'उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।'" (मत्ती 8:16-17)।

2. अपना तरस व्यक्त करने के लिए

कितने सारे वचन मसीह के तरस का वर्णन करते हैं जिससे प्रेरित होकर उसने लोगों की आवश्यकता पूरी की। यीशु ने "उन पर तरस खाया, और उनके बीमारों को चंगा किया।" (मत्ती 14:14; 20:34; मरकुस 1:40-41; 5:19; 9:22)।

3. परमेश्वर की दया दिखाने के लिए

इपफ्रुदीतुस के विषय में बात करते हुए, पौलुस कहता है, "परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की, और केवल उस ही पर नहीं पर मुझ पर भी कि मुझे शोक पर शोक न हो।" (फिलि. 2:27)।

4. प्रमाणित करने के लिए कि परमेश्वर ने वास्तव में उसे भेजा है

चमत्कार और चंगाइयाँ जो यीशु की सेवकाई के साथ साथ होती थीं, यह प्रमाणित करने के लिए कि परमेश्वर ने उसे भेजा है चिन्ह या प्रत्यय-पत्र थे। पतरस कहता है, "यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रकट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो।" (प्रेरितों 2:22)

5. शैतान के कार्य नष्ट करने के लिए

"परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।" (1 यूहन्ना 3:8)। "परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।" (प्रेरितों 10:38)। "ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।" (इब्रा. 2:14)। बीमारी शैतान का एक काम है और यीशु इसे नष्ट करने के लिए प्रकट हुआ था।

6. परमेश्वर के काम प्रकट करने के लिए

एक दिन यीशु और उसके चेलों ने एक व्यक्ति को देखा जो जन्म से अंधा था। चेले इस व्यक्ति के अंधेपन का कारण जानना चाहते थे। क्या वह उसके पाप, या उसके माता-पिता के पाप के कारण अंधा पैदा हुआ था। परन्तु यीशु किसी और चीज में दिलचस्पी रखता था। उसने कहा: "इसलिए हुआ कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों। जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है।" (यूहन्ना 9:1-4)। तब उसने उस व्यक्ति को चंगा किया, यह स्पष्ट करने के लिए कि बीमारों को चंगा करने का एक कारण परमेश्वर के काम प्रकट करना था।

7. परमेश्वर की महिमा प्रकट करने के लिए

यीशु ने बड़े बड़े सामर्थी काम किए थे ताकि उसके पिता की महिमा हो। लाज़र की कब्र के सामने खड़े होकर उसने मार्था से कहा, "क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।" (यूहन्ना 11:40)।
लूका 13:10-17 में, हम एक स्त्री की कहानी पढ़ते हैं जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली आत्मा लगी थी, और कैसे यीशु ने उसे उसकी दुर्बलता से छुड़ा दिया। आय. 13 हमें बताती है, "तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।" ध्यान दो कि चंगा होने के बाद वह परमेश्वर की महिमा करने लगी।

चंगा करने के लिए यीशु द्वारा उपयोग में लाए कुछ तरीके

यीशु ने लोगों को चंगा करने लिए कोई एक तरीका उपयोग में नहीं लाया; उसने विभिन्न तरीकों से उन्हें चंगा किया। आओ हम संक्षेप में उनमें से कुछ पर विचार करें:

1. यीशु ने अधिकार का शब्द बोला

रोमी सूबेदार जो अपने सेवक के लिए यीशु के पास आया था (मत्ती 8:5-13), यीशु के अधिकार के शब्द को पहचानता था। एक सेना का अधिकारी होने के रूप में, वह आदेश देने और पाने दोनों का आभ्यस्त था। वह जानता था कि अधिकार का एक सच्चा शब्द तात्कालिक उत्तर लाता था। वह मसीह के अधिकार से इतना प्रभावित था कि उसने आग्रह किया, "केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।" बाद में उसने पाया कि वास्तव में उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया था जिस समय यीशु ने कहा था।

हमें भी यीशु के नाम में अधिकार मिला है। मसीह ने स्वयं कहा, "जो कोई इस पहाड़ से कहे, 'तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़,' और अपने मन में संदेह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा।" (मरकुस 11:23)

2. उसने बीमारों पर हाथ रखे

यीशु ने प्रायः बीमारों पर उन्हें चंगा करने के लिए उन पर हाथ रखे। उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण, लोगों का हाथ रखने पर बहुत विश्वास था। याईर ने यीशु से विनती की कि यीशु आकर उसकी बेटी पर हाथ रखे, जो मरने पर थी (मरकुस 5:21-23)। जब यीशु नासरत में आया, तो उसने "बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।"

3. उसने बीमारी को डाँटा

यीशु ने वास्तव में कभी-कभी बीमारियों को सम्बोधित किया, उन्हें डाँटा और निकल जाने की आज्ञा दी। लूका अध्याय चार में दो दिलचस्प घटनाओं का वर्णन करता है। पहला आराधनालय में एक व्यक्ति से सम्बंधित है जिस में एक अशुद्ध आत्मा थी। यीशु ने आत्मा को डाँटा, और उसे आज्ञा दी, "चुप रह, और उसमें से निकल जा।" आत्मा ने तुरन्त आज्ञा मानी और उसमें से निकल गई। (लूका 4:33-37)।

यीशु और उसके कुछ चेले आराधनालय से सीधे पतरस के घर गए, जहाँ उसकी सास बुखार से बीमार पड़ी थी। लूका हमें बताता है कि यीशु ने बुखार को डाँटा; और बुखार उतर गया, और तुरन्त वह उठी और उनकी सेवा-टहल करने लगी। दिलचस्प बात यह है कि डाँटा शब्द दोनों मामलों में एक ही है। यीशु बुखार के साथ भी उसी प्रकार पेश आया जैसा वह आत्मा के साथ आया था। उसने दोनों को बोलकर डाँटा, जाने की आज्ञा दी, और वे निकल गए।

4. उसने लोगों को छुआ

"यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा। और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया।" (मत्ती 8:3)। "तब उसने उनकी आँखें छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो।" (मत्ती 9:29)। जब पतरस ने महायाजक के सेवक पर वार किया और उसका कान काट डाला, तो हम पढ़ते हैं, "इस पर यीशु ने...उसका कान छूकर उसे अच्छा किया।" (लूका 22:51)। अनेक दूसरे उदाहरण भी हैं जहाँ यीशु ने लोगों को छूआ और उन्हें चंगा किया।

5. लोगों ने यीशु को छुआ

"वहाँ के लोगों ने उसे पहचान लिया और आस-पास के सारे देश में समाचार भेजा, और सब बीमारों को उसके पास लाए, और उससे विनती करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आँचल ही को छूने दे; और जितनों ने उसे छुआ, वे चंगे हो गए।" (मत्ती 14:35-36)। "एक स्त्री थी, जिसको बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था...वह यीशु की चर्चा सुनकर भीड़ में उसके पीछे से आई और उसके छू लिया, क्योंकि वह कहती थी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी। और तुरन्त उसका लहू बहना बन्द हो गया और उसने अपनी देह में जान लिया कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई हूँ।" (मरकुस 5:25-29)।

अध्याय 4 चंगाई के माध्यम

परमेश्वर के चंगा करने के कुछ तरीके

परमेश्वर के आज हमारे लिए अपना चंगा करने का सामर्थ्य उपलब्ध करने के अनेक तरीके हैं। वह किसी भी तरीके से जो वह चुनता है, कार्य कर सकता है। उसे बताने की गलती मत करो कि उसे किस प्रकार चंगा करना चाहिए। उसे बेहतर पता है। उसे उसके तरीके से करने दो। आओ हम उन कुछ तरीकों को देखें जिनके द्वारा वह कार्य करना चुन सकता है।

स्वाभाविक चंगाई

मैं आप विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर एक चंगा करनेवाला परमेश्वर है। और वो चंगाई और स्वास्थ्यलाभ के स्वाभाविक नियम के कारण है जिसे उसने मानव शरीर में बनाया हुआ है। शरीर में बीमारी के प्रतिरोध और स्वास्थ्यलाभ की आश्चयजनक शक्तियाँ हैं। उचित अवसर दिए जाने पर यह अकसर अपने आप को चंगा कर लेता है।

एक क्षण के लिए एक अदभुत पदार्थ के विषय में सोचो जिसे परमेश्वर ने लहू में डाला है। फाइबरिन लहू में एक प्रोटीन है। यह घुलनशील है और रक्तवह-तन्त्र में निरन्तर बिना कोई समस्या पैदा किए घूमता रहता है। परन्तु, यदि एक व्यक्ति चोट खाता है और लहू बहने लगता है, तब फाइबरिन इकट्ठा होने लगता है और थक्का बनाता है। यह फाइबरिन जो एक सफेद धागे के समान है, बाहरी वातावरण के साथ सम्पर्क में आकर, सफेद रेशों का एक जाल बनाने लगता है और थक्का बन जाता है। यह चोट में से लहू का बहना रोक देता है।

सफेद रक्त कोशाणु भी शरीर के अदभुत रक्षा तन्त्र का एक भाग हैं। वे शरीर की रक्षा सेना हैं। जब संक्रामक जीव शरीर में प्रवेश करते हैं, तब मस्तिष्क तुरन्त श्वेताणुओं को संकेत भेजता है। वे तुरन्त उस स्थान पर एकत्र होने लगते हैं जहाँ जीवाणु आए हैं और बाहरी जीवों को नष्ट करते हुए उन पर आक्रमण आरम्भ करते हैं। जैसे वे हमलावर सेना को जीत लेते हैं, वे शत्रु के शवों के ढेर लगाने लगते हैं। इस ढेर को मूल रूप से फोड़ा कहते हैं, यह उन जीवों का जमाव है जिन्हें रक्त कोशाणुओं ने पराजित किया है। आखिरकार फोड़ा फूटता है और शरीर शत्रु के अवशेष को बाहर कर देता है जिन्होंने असफलतापूर्वक तन्त्र को संक्रमित करने का प्रयास किया था।

मानव शरीर में और भी दूसरे अजूबे हैं जो मिलकर बीमारी के प्रतिरोध का आश्चर्यजनक तन्त्र बनाते हैं। वे हर समय शत्रु के आक्रमणों से शरीर की रक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति जिसे परमेश्वर ने इसके नियुक्त किया है, बनाए रखने का प्रयास करते हैं। याद रहे कि बीमारी अस्वाभाविक है। अच्छा स्वास्थ्य उसकी अदभुत सृष्टि के लिए परमेश्वर की सामान्य स्थिति है।

शरीर की आहार-सम्बंधी और सामान्य देखरेख

शरीर की अपर्याप्त देखरेख अस्वास्थ्य की स्थिति पैदा कर सकती है, जिसमें शरीर को न केवल शारीरिक चंगाई की आवश्यकता होती है, बल्कि प्राथमिकताओं में परिवर्तन भी लाना होता है जो शरीर को पर्याप्त देखरेख और ध्यान दे सके।

मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि हम अन्यजातीय यहूदी व्यवस्था के अनुसार चलें। मैं यह कह रहा हूँ कि हमें उन से आहार और स्वास्थ्य-विज्ञान के मामलों को ध्यान देने की आवश्यकता सीखनी चाहिए। जब एक व्यक्ति कुपोषण (एक अपर्याप्त आहार के परिणाम) से पीड़ित है, तो इसका केवल एक ही इलाज है - आहार में एक निश्चित सुधार। व्यक्ति को निश्चित करना है कि उसकी योग्यता के अनुसार, आहार सन्तुलित और भोजन पौष्टिक हो जिसमें प्रोटीन और विटामिन सम्मिलित हों जो शरीर को अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए अवश्य हैं। कुछ देशों में यह इतना सरल नहीं है। भोजन की गम्भीर कमी इसे कठिन बना देती है और कभी-कभी आवश्यक भोजन के संपूरक भी प्राप्त करना नामुमकिन होता है। परन्तु, उन देशों में भी जहाँ ऐसा नहीं है, अनेक लोग पौष्टिक आहार के महत्त्व को पहचानने में असफल रहते हैं। कुछ ऐसा भी सोचते हैं कि वे उचित भोजन नहीं खा सकते परन्तु अन्त में उन्हें चिकित्सा पर खर्चे करने पड़ते हैं। भोजन पर खर्च करना बीमारी के इलाज पर खर्च करने से भला है।

दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग भी हैं जो जरूरत से अधिक खाते, या गलत प्रकार की चीजें अधिक खाने के कारण अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लेते हैं। वे बहुत अधिक चरबीदार खाना और बहुत अधिक स्टार्च खाते हैं। ये चीजें शक्ति के बजाय चरबी ऊतक बनाते हैं। कुछ लोग अतिभार बन जाते हैं और परिणामस्वरूप उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। यह कहा जाता है कि अनेक लोग "अपने ही दाँतों से अपनी कब्र खोद रहे हैं।" उनकी खाने की आदतें अस्वास्थ्य पैदा कर रहीं और अकालिक मृत्यु ला रही हैं। ऐसे मामलों में अनुशासन की आवश्यकता है। हमारे शरीर अब हमारे नहीं हैं। उन्हें मोल देकर खरीदा गया है। वे अब परमेश्वर के हैं और उनकी उचित देखरेख के द्वारा हमें परमेश्वर की महिमा करनी है। (1 कुरिं. 6:20)।

डाक्टरी देखरेख और ध्यान

उन मामलों में जहाँ शरीर का स्वास्थ्य, स्वास्थ्य के स्वाभाविक नियमों की ओर अपर्याप्त ध्यान के कारण बिगड़ गए हैं, तो प्रायः डाक्टरी सलाह और देखरेख लेना आवश्यक होगा। कोई डाक्टर चंगा नहीं कर सकता है। केवल परमेश्वर चंगा कर सकता है! चिकित्सा-शास्त्र एक मरीज को चंगा करने के लिए परमेश्वर के नियमों से सहयोग करता है। एक प्रसिद्ध डाक्टर ने कहा, "मैं देखभाल करता हूँ, परन्तु परमेश्वर चंगा करता है।" यह एक सच्चा कथन है। क्योंकि परमेश्वर तत्त्वतः बीमारी और रोग के विरुद्ध है, इसलिए डाक्टर उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परमेश्वर का सहयोग दे रहे हैं।

मनोवैज्ञानिक और भावात्मिक चंगाई

1. सही रवैये और विचार

हाल में चिकित्सा-शास्त्र में एक महत्त्वपूर्ण विकास "मनोदैहिक" बीमारियों का निदान और उपचार हुआ है। इससे हमारा अर्थ उन शारीरिक बीमारियों से है जो मरीज के मन में आरम्भ होती हैं। यह कोई काल्पनिक बीमारियाँ नहीं हैं। व्यक्ति वास्तव में शारीरिक रूप से बीमार है। परन्तु, आरम्भ में बीमारी मरीज के मन में पैदा हुई थी। सुलेमान ने इस विषय का संकेत दिया था, जब उसने कहा, "जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है" (नीतिवचन 23:7)। एक व्यक्ति अपने मन को जिस चीज पर भी ध्यान लगाने देता है, वही वह बन जाएगा! यदि वह बीमारी से डरता है, और सदा बीमार पड़ने की सम्भावना का विचार करता रहता है, तो वही विचार उस बीमारी को पैदा कर सकते हैं जिनका वह विचार कर रहा है।

अय्यूब भी इस सिद्धान्त से अच्छी तरह परिचित था। ऐसा लगता है, हालाँकि वह स्वस्थ्य और बहुत ही सम्पन्न था, उसके मन में एक नकारात्मक विचार था कि एक दिन उसका सबकुछ खो जाएगा। सम्भवतः वह अपने आप में सोचता था, "यह सपना सा लगता है। मेरे साथ कितना अच्छा हो रहा है, मुझे आशा नहीं है यह ज्यादा देर तक चलेगा।" जो कुछ भी उसके विशेष विचार रहे होंगे, वे प्रकट हैं नकारात्मक और निराशावादी ही थे। जब विपत्ति उस पर आई और वह इतना बीमार हो गया कि वह चाहता था कि वह पैदा ही नहीं हुआ होता, तो उसने कहा, "क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आ पड़ती है, और जिस बात से मैं भय खाता हूँ वही मुझ पर आ जाती है।" (अय्यूब 3:25)। अय्यूब को समझ आया कि जिस डर से उसने अपने विचारों को लुब्ध होने दिया था, वही चीजें उसके जीवन में होने लगी थीं। डर यातना देता है (1 यूहन्ना 4:18)। डर ध्वसंक है। यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों का विनाशक है। यह एक कारण है कि क्यों यीशु ने समझाया, "मत डर, केवल विश्वास रख" (लूका 8:50)। हमें विश्वास के लिए, न कि डर के लिए बनाया गया है। विश्वास हमें बल देता और दृढ़ करता है। डर धैर्य भंग करता और विनाश करता है।

2. अनियंत्रित भावनाएँ

नकारात्मक भावनाएँ जिन्हें यदि नियंत्रण में न रखा जाए, तो स्वास्थ्य के लिए विनाशक हो सकती हैं। अनेक मसीही यह निश्चय करने के बजाय कि वे अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखें, अपनी भावनाओं के नियंत्रण में आ जाते हैं। वे बहुत अधिक "वे कैसा महसूस करते हैं" पर निर्भर होते हैं। यदि वे थोड़ा उदास होते हैं तो वे उस उदासी को अपने ऊपर राज्य करने देते हैं। हर छोटी निराशा, परेशानी या उलटाव उन्हें गहरी उदासी में ले जाते हैं। ऐसी भावात्मिक अनुशासनहीनता अन्त में स्वास्थ्य को कमजोर करती और गम्भीर बीमारी ला सकती है। मसीहियों का अभिप्राय कभी भी उनकी भावनाओं के वश में होना नहीं है! बदले में, उन्हें परमेश्वर के वचन में विश्वास के द्वारा उनकी भावनाओं, कल्पनाओं, मनोदशा पर राज्य करना चाहिए (2 कुरिं. 10:4-5)। परमेश्वर का वचन विश्वसनीय है, हमारी भावनाएँ अविश्वसनीय हैं। यदि हम नियमित परमेश्वर के वचन सुनें और उस पर चलें, तो यह हमारी भावनाओं को स्थिर करेगा। वचन से भरा हुआ विश्वासी हचकोले नहीं खाएगा। वह उतना स्थिर बनेगा जितना वचन है। वचन हमारे मन और हृदय में ताकत, उद्देश्य और धैर्य के गुण लाता है।

कुछ विश्वसनीय चिकित्सा अधिकारियों ने कहा है कि तमाम शारीरिक बीमारियों का 30% आरम्भ में मन या भावनाओं में आरम्भ होता है। इस प्रकार के भावात्मिक रवैये जैसे कि चिन्ता, डर, बेचैनी, असुरक्षा, अस्वस्थ (वीभत्स) आत्मविश्लेषण, तन्त्रिकीय तनाव, ईर्ष्या, कुण्ठा, क्रोध और निराशावाद, ये सब सामर्थी और विनाशक शक्तियाँ हैं। यदि बेरोक छोड़ दिये जाएँ, तो वे व्यक्ति के स्वास्थ्य के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। अधिकाँश गम्भीर बीमारियों के वे ही प्रधान कारण होते हैं। उच्च रक्तचाप, हृदय की समस्याएँ, रक्तवह-तन्त्र बीमारियाँ, अस्थमा, पेट को फोड़े और पुराना सरदर्द ये कुछ बीमारियाँ हैं जो उन बीमारियों के प्रतीक हैं जो गलत मानसिक और भावात्मिक रवैयों से पैदा होती हैं।

जब एक व्यक्ति की बीमारी मनोदैहिक रूप से आई है, तो न केवल उसे शारीरिक बीमारी से चंगाई की आवश्यकता है, परन्तु उसकी भावनाओं और मानसिक प्रक्रियाओं को भी भीतरी चंगाई की आवश्यकता है। परमेश्वर के लिए शारीरिक लक्षणों को चंगा करना सरल बात है, परन्तु यदि मानसिक रवैये ठीक तरह से बदले नहीं जाते हैं तो व्यक्ति उसी या वैसी ही बीमारी से तुरन्त ही दोबारा बीमार हो जाएगा।

उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर के लिए पेट का फोड़ा चंगा करना एक सरल बात है। अधिक कठिन मानसिक रवैयों की भीतरी चंगाई है जिन्होंने फोड़ा पैदा किया था। यदि सम्बंधित व्यक्ति मानसिक तनाव, चिन्ता और बेचैनी का बड़ा बोझ उठाना चाहता है, तो वो रवैये दूसरा फोड़ा पैदा कर देंगे। दाऊद ने ऐसी पुरानी समस्याओं की चंगाई के एक प्रभावशाली नुसखा दिया है:

अ. अपना बोझ प्रभु पर डाल दे

दाऊद हमें प्रोत्साहित करता है, "अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा।" (भजन 55:22)। इसमें हर बेचैनी, चिन्ता, डर या नकारात्मक रवैया प्रभु पर डालना सम्मिलित है। इससे पहले हम ऐसा कर सकें, हमें अपना जीवन सम्पूर्ण रूप

से प्रभु को समर्पित करना है। जब हमारा जीवन पूर्ण रूप से प्रभु के अधीन है, तो यह अब उसकी सम्पत्ति बन गया है। इसकी देखभाल की जिम्मेवारी अब उसकी है। वह इसे अच्छे स्वास्थ्य और ताकत में रखेगा। जब हम उन सब बोझों को प्रभु पर डाल कर छोड़ने के इच्छुक हैं, तब वह हमें जीवित रख सकेगा। यदि हम उन भारी बोझों को उठाए रखने पर जोर देते हैं, तब परमेश्वर भी हमें स्वास्थ्य में नहीं रख सकता है!

आ. परमेश्वर के वचन का मनन कर

दाऊद उस व्यक्ति की आशीषों का भी वर्णन करता है जो परमेश्वर के वचन पर रात और दिन ध्यान लगाए रखता है। "वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है" (भजन 1:3)। परमेश्वर के वचन पर मनन करने का बड़ा चिकित्सीय मूल्य है। दाऊद का पुत्र, सुलेमान आगे कहता है कि परमेश्वर के वचन से "सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं" (नीतिवचन 4:22)।

इ. अपने विचारों को अधीनता में लाना

हर विचार मसीह के अधीन लाया जा सकता है। कभी-कभी कुछ कष्टप्रद विचार होते हैं जो हमें छोड़ते नहीं हैं। वे हमारे मन में शैतानी गढ़ों के समान होते हैं (2 कुरिं. 10:3-5)। इन विचारों के अधीन रहने का कोई कारण नहीं है। उनका सामना आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, से करो। पवित्रशास्त्र के परिच्छेद लो जो परमेश्वर द्वार दिए समाधान हैं और डर के साथ युद्ध करो। "परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है" (2 तीमु. 1:7)। इसे केवल एक ही बार मत कहो। इसे देर तक बोलते रहो। परमेश्वर को तुम्हें सामर्थी और जयवन्त बनाने दो। इसे जोर से बोलो। इसमें अपना हृदय मजबूत करो। शैतान के गढ़ टूट कर नीचे गिर पड़ेंगे!

ई. अपने मन परमेश्वर पर लगाओ

तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शान्ति होती है; और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती।" (भजन 119:165)। वो शान्ति जो किसी के पास परमेश्वर के वचन के लिए निरन्तर प्रेम के कारण आती है, चंगाई की शान्ति होती है। जिसका मन "तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।" (यशा. 26:3)। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग हर मानसिक और भावात्मक समस्या से पूर्ण रूप से स्वतंत्र रहें। वह यह भी चाहता है कि उसके लोग विभिन्न बीमारियों से भी स्वतंत्र रहें जो उन समस्याओं के रहने से पैदा होती हैं।

3. मानव आत्मा को मुक्त करना

आत्मिक जन्म के समय, अनन्तकाल का जीवन मानव आत्मा को लौटाया जाता है। यह जीवन एक अव्यक्तिक शाक्ति नहीं है; यह पवित्र आत्मा है जो हम में बसने आता है। (1 कुरिं. 6:17)। वह परमेश्वर का जीवन है जो हमें प्राप्त होता है। दुख की बात है कि अनेक विश्वासी आत्मा की बातों में सिखाए नहीं गए होते हैं, या गलत सिखाए गए होते हैं। कइयों को सिखाया जाता है कि चमत्कारों का युग चला गया है। कइयों को सिखाया जाता है कि आत्मा के वरदान प्रेरितों के युग के लिए ही थे। अनेक उस सामर्थ्य से अनजान हैं जो परमेश्वर के वचन में है। इस अज्ञानता के कारण, उनकी आत्मा जेल में एक निर्दोष व्यक्ति के समान है। मनुष्य की आत्मा से कुछ भी भूल नहीं हुई है, परन्तु अज्ञानता और भ्रम ने आत्मिक बढ़त को अंधा कर दिया और रोक दिया है।

जैसे मन परमेश्वर के वचन के द्वारा नया किया जाता है (इफि. 4:22-24; कुलु. 3:10,16), प्रकाशन मानव आत्मा को स्वतंत्र कर देता है और वृद्धि होने लगती है। जो आत्मा के सामर्थ्य में वचन की सेवा करते हैं वे यह आत्मिक मुक्ति लाने के लिए परमेश्वर के साधन हैं। यीशु ने कहा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहो, तो तुम सचमुच मेरे चेले हो। तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा...इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।" (यूहन्ना 8:31-32,36)। "परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।" (यूहन्ना 16:13)। "प्रभु तो आत्मा है : और जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता है।" (2 कुरिं. 3:17)। पवित्र आत्मा उन लोगों को इस्तेमाल करता है जो उसके साधनों के रूप में आत्मिक मुक्ति और कल्याण लाने के लिए उसकी ओर समर्पित होते हैं। जब यह छुटकारा होता है, हम असली आत्मिक स्वास्थ्य में प्रवेश करते हैं। यह सम्पूर्ण मनुष्य के कल्याण का आधार है।

सही शिक्षा लोगों को बहुत से चोरगढ़ों और फँदों से जो बीमारी और समस्या पैदा कर सकते हैं, बचने में सहायता करती है। वचन सिखाने का मुख्य उद्देश्य नया जन्म पाई आत्मा में परमेश्वर के प्रभाव को मजबूत करना है; या, दूसरे शब्दों में, विश्वासियों की आत्मिक चेतना या संवेदनशीलता विकसित करना है। कितने सारे मसीही उनकी स्वाभाविक परख और उनके हृदयों में परमेश्वर की सलाह में भेद नहीं कर पाते हैं। यह आत्मिक कुपोषण के समान है। परमेश्वर के वचन का पोषण करने से, वे परमेश्वर की आवाज पहचानना सीख लेंगे, क्योंकि वे जान जाएँगे कि यह उनके वचन के ज्ञान से मेल खाती है। यह आत्मिक मुक्ति और परिणामस्वरूप सम्पूर्ण मनुष्य को स्वास्थ्य लाता है।

परमेश्वर की दिलचस्पी मनुष्य के सम्पूर्ण स्वास्थ्य और कल्याण में है। इस स्वास्थ्य को पैदा करने के लिए शारीरिक चंगाई एक अत्यावश्यक तरीका है। परमेश्वर द्वारा प्रेरित शिक्षा इस ईश्वरीय स्वास्थ्य को पैदा करने का एक दूसरा तरीका है।

सुसमाचार प्रचार चंगाई

यह वो चंगाई की सेवकाई है जिसके विषय में यीशु ने कहा सुसमाचार के प्रचार के साथ साथ चलेगी। यह पाँच प्रमाणों में से एक है जिसकी उसने प्रतिज्ञा की कि सच्चे सुसमाचार के प्रचार के साथ साथ सदा चलेगा (मरकुस 16:18)। इस प्रकार की चंगाई देखने के लिए अनेक चीजों की आवश्यकता है:

1. प्रतिज्ञा से पहले यह आज्ञा आई थी, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" (मरकुस 16:15)। यह सुसमाचार प्रचार की एक सेवकाई है; नए क्षेत्र में जाकर, उद्धार नहीं पाए हुओं को सुसमाचार प्रचार करना। पौलुस ने इस नियम का अनुसरण किया। उसने वहाँ सुसमाचार का प्रचार करना चाहा जहाँ मसीह के बारे में बताया नहीं गया था, ताकि वह उस नींव पर न बनाए जिसे किसी दूसरे ने पहले ही रखा था। परिणामस्वरूप, उसकी सेवकाई की गवाही है कि परमेश्वर ने "चिन्हों, और अदभुत कामों की सामर्थ्य से, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से मेरे ही द्वारा किए।" (रोमियों 15:18-20)। परिणाम यह हुआ कि अन्यजातियों वचन और कर्म के द्वारा सुसमाचार के अधीन हो गए।
2. नए नियम के सुसमाचार प्रचार में शारीरिक चंगाई और अनन्त उद्धार की आशा पर जोर देना सम्मिलित था। यीशु की सेवकाई का एक मुख्य भाग बीमारों और पीड़ितों की सेवा करने में दिया गया था। वे उसके पास आए और हमें बताया गया है कि अनेक बार, "उसने ..सब बीमारों को चंगा किया।" (मत्ती 8:16)। उसी प्रकार बीमारों की भीड़ की भीड़ प्रेरितों के पास आई। कम से कम एक बार, चलते समय पतरस की परछाई बीमारों पर पड़ने से चंगाई और छुटकारे हुए (प्रेरितों 5:15-16)। बहुत से आश्चर्यकर्म, चिन्ह और चमत्कार प्रेरितों के हाथों से किए गए (प्रेरितों 5:12)। यह बहुत हद तक इन चिन्हों का परिणाम था कि बड़ी संख्या में लोग कलीसिया में जुड़ गए (प्रेरितों 5:14।
3. हाथ रखना भी चंगाई के इस विशेष पहलू की एक खास विशेषता थी। इस कार्य के महत्त्व के कुछ पहलुओं पर विचार करो। उस समय के लोगों के सांस्कृतिक वातावरण में, हाथ रखना प्रायः किसी को कुछ प्रदान करने के लिए किया जाता था। अकसर यह एक सम्मान या एक आशीष, एक विशेषाधिकार, वगैरा प्रदान करना होता था। इसलिए जिन पर हाथ रखे जाते थे, परम्परा के अनुसार कुछ पाने की आशा करेंगे। ध्यान दो कि यीशु ने इस बारे में कहा था। "विश्वास करनेवाले" ही बीमारों पर हाथ रखेंगे। ऐसा यीशु के नाम में किया जाना चाहिए। विश्वासी के हाथ बीमार की ओर बढ़ाया, और उस पर रखा होना चाहिए। यीशु ने कहा, "वे चंगे हो जाएँगे।" (मरकुस 16:17)।

   बीमार की ओर अपने हाथ बढ़ाने से हम उनके साथ अपना सम्बंध स्थापित करते हैं। हम ऐसा यीशु के नाम में करते हैं। जैसे हम यह विश्वास में करते हैं, हम प्रभु के हाथों का विस्तार बन जाते हैं। परमेश्वर के पास जरूरतमंद संसार तक पहुँचने के लिए हमारे हाथों के अलावा और कोई हाथ नहीं हैं। सुसमाचार प्रचार करना और बीमारों पर हाथ रखना मसीह की एक आज्ञा है। हमें उसके आज्ञाकारी होना अवश्य है। हमें ऐसा विश्वास में करना है। जब आप पीड़ितों को छूते हो तो उस क्षण परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर दावा करते हो: "वे चंगे हो जाएँगे।" चंगाई का तात्कालिक होना अनिवार्य नहीं है। यह एक प्रक्रिया हो सकती है। यह सम्पर्क के समय आरम्भ होती है, परन्तु पूरा होने के लिए कुछ समय लग सकता है। विश्वास मत छोड़ो। शक मत करने लगो। परमेश्वर के कथन पर एक सकारात्मक विश्वास बनाए रखो। उसका वचन सच्चा है। यह टलेगा नहीं।

चंगाई की यह सेवकाई हर सुसमाचार प्रचारक के साथ साथ चलनी चाहिए। यह प्रतिज्ञा इस नियुक्ति में निर्विवाद है। इसे हर "विश्वासी" के साथ होना चाहिए। विश्वास करनेवालों के ये चिन्ह होंगे।

कलीसिया-सम्बंधी चंगाई

जबकि सुसमाचार प्रचार की चंगाई मुख्य रूप से गैर मसीहियों को सुसमाचार की सच्चाई और वास्तविकता के विषय में कायल करने के लिए है, कलीसिया की चंगाई कलीसिया में सेवा के लिए है। जो वचन, चंगाई के इस माध्यम के विषय में हमारे विचार का आधार बनता है, वो है याकूब 5:14-16। "यदि तुम में कोई रोगी है, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलकर उसके लिए प्रार्थना करें, और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी। इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो , और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ : धर्मी जन की प्रार्थना से बहुत कुछ हो सकता है।"

इस परिच्छेद के निर्देश विशेषकर मसीहियों के लिए हैं। "यदि तुम में कोई रोगी है" स्पष्ट रूप से संकेत देता है कि याकूब कलीसिया में के लोगों को सम्बोधित कर रहा है। जो निर्देश यहाँ दिए गए हैं, मरकुस 16:15-20 में के निर्देशों से काफी भिन्न हैं।

1. बीमार को "कलीसिया के ऐल्डरों को बुला भेजना है।" पहल बीमार को करनी है। उसे विनती करनी है, अपने लिए प्रार्थना के लिए ऐल्डरों को बुलाना है।

2. यहाँ गलतियों की स्वीकृति भी होनी है। यदि कोई पाप हुआ है, तो उसको भी स्वीकार करना है। हम ने पहले ही विचार किया है कि बहुत सारी बीमारियाँ अन्दर आरम्भ होती हैं। अन्दर पाप हो सकता है। सम्भव है गलत रवैये हों। अकसर हानिकर सोच-विचार के तरीके और भावनाएं होती हैं। आत्मिक बीमारियाँ हो सकती हैं जो शारीरिक रोग पैदा करती हैं। इन पापों की स्वीकृति और दोष स्वीकरण होना चाहिए। दोष स्वीकरण इन गुप्त विनाशकों को खुले में लाता है। इन भीतरी समस्याओं की चंगाई तब तक नहीं हो सकती है जब तक उनका दोष स्वीकरण और उनसे मन फिराया न गया हो।

   बहुत लोगों को स्वीकार करना कठिन होता है कि उनमें कोई दोष है। परिणामस्वरूप उन्हें अपने लिए कोई चंगाई नहीं मिलती है। हमें परमेश्वर को हृदय जाँचने और किसी व्यवहार या विचार, जो उसे पसन्द नहीं है, उस पर अपनी अँगुली रखने देने का इच्छुक होना चाहिए। परमेश्वर के सामने खुले और सच्चे बनो। वह एक प्रेमी पिता है जो आपको चंगा करना चाहता है, कोई डरावना राक्षस नहीं जो आपको सजा देना चाहता है। वह इन समस्या के क्षेत्रों को आपको लज्जित या शर्मिन्दा करने के लिए उघाड़ना नहीं चाहता है। वह उन्हें आपके हृदय और मन में से निकालना चाहता है, क्योंकि वे आपको विषाक्त और नष्ट कर रहे हैं। यदि परमेश्वर आपको किसी पाप या नाराजगी के विषय में अवगत कराता है, जो उसकी इच्छा से मेल नहीं खाता, तो उसे ऐल्डरों (अगुओं) के सामने स्वीकार करो। इसे एक सार्वजनिक सभा में करने के बजाय व्यक्तिगत रूप से करना बेहतर होगा। परन्तु ऐसे अवसर होते हैं जब सारी देह के सामने स्वीकरण जरूरी होता है। यह साधारणतः तब होता है जब पाप समूह के विरुद्ध किया गया हो। नहीं तो, स्वीकरण ऐल्डरों द्वारा एकान्त में लिया जाना चाहिए और विवरण ऐल्डरों के पास गोपनीय रहना चाहिए।

   हालाँकि दोष स्वीकरण ऐल्डरों के सम्मुख किया जाता है, हम वास्तव में अपना दोष स्वीकरण परमेश्वर के सामने कर रहे हैं। हम ने सम्भवतः अपने भाई को नाराज किया हो, परन्तु यह परमेश्वर है जिसके विरुद्ध हम ने पाप किया है और हमें बड़ी उत्सुकता से उसकी क्षमा माँगनी चाहिए। दोष स्वीकरण उस व्यक्ति के सामने भी करना चाहिए जिसके विरुद्ध हम ने पाप किया या जिसे नाराज किया है। हमें दीनता के हृदय से स्वीकरण करना है, सच्चाई से उसकी क्षमा माँगनी है। पुराने नियम में एक भाई के विरुद्ध अपराध के लिए परमेश्वर एक दोषबलि की माँग करता था। (लैव्य. 6:1-7)। उस बलिदान की एक माँग थी कि क्षतिपूर्ति की वस्तु को उसमें 20% जोड़ कर लौटाना था। (लैव्य. 6:5)।

   यहाँ सिद्धान्त यह है कि हमने जिसे नाराज किया है उसके लिए हमें एक उदार क्षतिपूर्ति करनी है। हम ने जो अपने कार्यों के द्वारा उसे हानि या चोट पहुँचाई है, उसके लिए हमें उससे मेल-मिलाप करने का प्रयास करना है।

3. उन्हें तेल से अभिषेक किया जाना चाहिए

   तेल पवित्र आत्मा का प्रतीक है। जब हम किसी पर तेल डालते हैं तो हम प्रतीकात्मक रूप से पवित्र आत्मा को उस व्यक्ति पर उतरने के लिए कह रहे हैं जिसके लिए हम प्रार्थना करनेवाले हैं।

   चेलों ने इस तरीके को स्पष्ट रूप से बारम्बार इस्तेमाल किया था। मरकुस 6:13 में हम पढ़ते हैं, "और बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला, और बहुत से बीमारों को तेल मलकर उन्हें चंगा किया।"

   तेल ज्योति का प्रतीक है। पवित्र स्थान में दीवट वास्तव में तेल का दीपक था। इसलिए यह तेल था जो पवित्र स्थान में उजाला देता था। इसलिए जब हम किसी का तेल से अभिषेक करते हैं, तो हम यह भी कह रहे हैं, "पिता, हम जानते हैं कि हम यह कार्य आपकी उपस्थिति के उजाले में कर रहे हैं। हम समझते हैं कि आपकी उपस्थिति से कुछ भी छुपा नहीं है। तू सब कुछ जानता है। इसलिए, इस स्थिति में हमें पूर्ण रूप से सच्चे होने में सहायता कर, क्योंकि कुछ भी कपटी या पाखण्डी तेरे ध्यान से छूटेगा नहीं। यदि यह व्यक्ति जो तुझे खोज रहा है, उसमें कोई दोष हो जिसकी उसे सच में जानकारी न हो, तो तेरी उपस्थिति की ज्योति उसे प्रकट कर दे ताकि उनसे निपटा जा सके।"

   तेल चंगाई का प्रतीक भी है। इसमें चंगाई के गुण होते हैं। यह सम्भवतः मनुष्य की जानकारी में सबसे पुरानी दवाई थी। इसका एक शान्त करनेवाला, चंगा करनेवाला प्रभाव होता है। अच्छे सामरी द्वारा बचाये व्यक्ति के घावों पर उसने तेल और दाखरस उण्डेला था। दाखरस उसके घाव धोने के लिए, और तेल उसे चंगा करने के लिए था। अब जब हम तेल उण्डेलते हैं तो हम इसे दवाई के रूप में नहीं लगा रहे हैं, परन्तु चंगाई के प्रतीक के रूप में लगा रहे हैं और पवित्र आत्मा की ओर देख रहे हैं कि वह बीमार पर अपनी चंगाई प्रदान कर दे। तेल से अभिषेक करने के बाद, ऐल्डरों को विश्वास की प्रार्थना भी करनी है। याकूब कहता है, " विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा।" (याकूब 5:15)।

प्रभु भोज द्वारा चंगाई

1 कुरिन्थियों 11:23,32 में, हमें स्पष्ट संकेत मिलता है कि प्रभु भोज में उचित रूप से भाग लेने के कारण चंगाई और स्वाश्थ्य मिलता है। पौलुस कहता है कि अनुचित रूप से भाग लेने के कारण कुरिन्थियों में बहुत से लोग बीमार थे और उनमें से कुछ तो असल में मर भी गए हैं। "इसी कारण तुम में से बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए" (1 कुरिं. 11:30)। इसलिए कह सकते हैं कि उचित भागीदार होने से अच्छा स्वास्थ्य बढ़ता है। आओ हम मिलकर इस महत्त्वपूर्ण विषय पर ध्यान लगाएँ।

प्रभु भोज फसह भोज का प्रतीक है

जब यीशु ने पहले पहल प्रभु भोज प्रारंभ किया, तो यह फसह के पर्व के दिन हुआ था (मत्ती 26:19)। चेले जो उसके आस-पास उस रात इकट्ठे हुए थे, इस भोज के तात्पर्य से अवगत थे। उन्हें ध्यान था कि यह 1500 वर्ष पूर्व हुए आरम्भिक फसह का प्रतीक है। उन्हें वो वाचा याद थी जो परमेश्वर ने उनके पितरों के साथ बाँधी थी। वह पहले फसह के दिन उनके पितरों को मिस्र से निकाल लाया था और उन्होंने मिस्र और उसकी गुलामी से एक यशस्वी छुटकारा अनुभव किया था। परमेश्वर की सामर्थी भुजा के द्वारा, वे गुलामी में से छुड़ाए गए थे।

आरम्भिक फसह के भोज में भूना हुआ मेम्ना और अखमीरी रोटी होते थे। उस मेम्ने का लहू उनके द्वारों के अलंगों और चोखटों के सिरों पर लगाया होता था। वह लहू परमेश्वर के लिए संकेत था। उसने उनसे कहा, "मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊँगा" (निर्गमन 12:13)। वे उन लहू लगे हुए द्वारों में से निकलकर उद्धार की स्वतंत्रता में चले गए। लहू उनके उद्धार के लिए था। परमेश्वर ने उनसे यह भी कहा कि स्वतंत्रता में अपना सफर आरम्भ करने से पहले मेम्ने को भून कर उसका हर भाग कड़वे सागपात के साथ खा लें। उनका पौष्टिक आहार उनके शरीरों को कठिन सफर में ताकत देने के लिए था। यह उन्हें शारीरिक शक्ति देने के लिए था। इसलिए फसह का भोज उद्धार और स्वास्थ्य के लिए था।

जैसे यीशु ने उस रात उनके साथ रोटी और दाखरस बाँटा, तो वह उनके साथ नई वाचा बाँध रहा था। दाखरस उसके लहू का प्रतीक था, जो शीघ्र ही उनके उद्धार के लिए बहनेवाला था। रोटी फसह के मेम्ने का प्रतीक था जिसे स्वास्थ्य और शक्ति के लिए खाना था। पौलुस हमारे प्रभु भोज में भाग लेने के विषय में कुछ अर्थपूर्ण सिद्धान्त बताता है।

अ. यीशु को याद करना

यीशु ने कहा, "मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।" (लूका 24:19; 1 कुरिं. 11:24)। जैसे यीशु उस रात उनके साथ मेज पर बैठा था, वह मानव सिद्धता का साकार था। यीशु के जीवन भर, शैतान ने उस पर हर प्रकार से आक्रमण करने और उसे नष्ट करने की कोशिश की थी। उसने उसे बहकाने की कोशिश की थी। (मत्ती 4:1-11)। मुझे निश्चय है कि उसने उस पर बहुत सी भयानक बीमारियाँ डालने की कोशिश की थी। यीशु का अपनी सेवकाई के दौरान बहुत से बीमार लोगों के बीच आना-जाना रहा था, और उनमें से बहुतों में संक्रामक बीमारियाँ रही होंगी। मुझे निश्चय है कि शैतान ने उसे उनके द्वारा संदूषित करने की कोशिश की होगी। परन्तु शैतान की हर कोशिश बुरी तरह से असफल रही थी। उसकी सेवकाई के अन्त में, यीशु ने यह कहा, "इस संसार का सरदार आता है, मुझ पर उसका कोई अधिकार नहीं।" (यूहन्ना 14:30)। शैतान द्वारा की गई सारी कोशिशों के बावजूद, यहाँ यीशु उनके साथ, स्वास्थ्य में हष्ट-पुष्ट बैठा था।

पुरुषत्व के एक सिद्ध नमूने के रूप में यीशु कह रहा था, "जब भविष्य में तुम इस घटना को मनाओ, तो मेरे विषय में सोचो। जैसे मैं आज रात तुम्हारे साथ हूँ, वैसे ही अपने मन में मुझे चित्रित करो। स्वस्थ और बलवान, परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा सुरक्षित, पिता की सुरक्षा और विधान से सारी बुराई से सुरक्षित, स्पष्ट जान लो कि पिता चाहता है कि तुम भी इसी प्रकार स्वस्थ रहो।"

आ. उसकी मृत्यु मनाना

जैसे यीशु ने रोटी और दाखरस सबको दी, तो कहा, "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए दी जाती है...यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है।" पौलुस कहता है, "जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।" (1 कुरिं. 11:26)। गहराई से सोचें तो प्रभु भोज एक उत्सव है। बेशक थोड़ा दुख भी होता है जब हम याद करते हैं कि यह हमारे पाप ही थे जिनके कारण से प्रभु को क्रूस पर कीलों से ठोका गया था। परन्तु, जैसे हम मसीह की मृत्यु पर ध्यान लगाते हैं तो अधिक समय तक उदास नहीं रह सकते हैं। कलवरी कोई हार नहीं थी; यह मसीह की सबसे बड़ा जय थी। अपनी "मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को मिकम्मा" कर दिया। (इब्रा. 2:14)। जैसे हम उस जय को मनाते हैं तो हम यह याद करके आनन्दित होते हैं कि यीशु ने हमारे लिए पाप और

इसके सारे दुष्ट प्रभावों से सिद्ध स्वतंत्रता प्राप्त की है। यीशु वो सबकुछ हमारे लिए लौटा लाया है जो आदम ने खो दिया था। हम मसीह में जयवन्त हैं। (कुलु. 2:10)। उसने हमें अपने विजयी जय के द्वारा सम्पूर्णता में पुनःस्थापित किया है।

इ. उसकी देह को पहचानना

सारे मामले का मर्म यही है। हमारी समस्या, जैसे हम प्रभु भोज मनाते हैं, मसीह की देह को पहचानने में असफलता है। इसका परिणाम मसीहियों में बहुत सारी बीमारी है। (1 कुरिं. 11:27-32)। तो "प्रभु की देह को पहचानना" का अर्थ क्या है।
पहले, इसका अर्थ यह समझना है कि यीशु का शरीर स्वस्थ्य और बलवान था और कि परमेश्वर चाहता है कि हम स्वास्थ्य और बल का आनन्द लें।
दूसरा, कि जैसे हम रोटी खाते हैं, तो हम विश्वास से मसीह की देह खाते हैं। (1 कुरिं. 11:24)। इसमें यीशु का जीवन, स्वास्थ्य और बल होता है। इसलिए हमें विश्वास से खाना है, मसीह में जो स्वास्थ्य है उसे अपना बना लेना है।
तीसरा, हमें मसीह की रहस्यात्मक देह को पहचानना है। मैं मानता हूँ कि यह सबसे गहरा और सबसे महत्त्व का पहलू है। इसी बात पर बहुत से लोग असफल रहते हैं। पौलुस पूरी कलीसिया को मसीह की देह कहता है। (इफि. 1:22-23)। हर नया जन्म पाया व्यक्ति उस देह का सदस्य है। जैसे हम मसीह के साथ अपने सम्बंध को पहचानते हैं, वैसे ही हमें परमेश्वर के हर सदस्य के साथ अपना सम्बंध पहचानना है। ऐसा करने में असफलता "अनुचित रीति से आना और पीना" है। मसीह की रहस्यात्मक सम्पूर्ण देह के एकत्व को न पहचानते हुए, उस पवित्र भोज में भाग लेना अनुचित रूप से भाग लेना है। कृपया ध्यान दो कि "अनुचित" शब्द एक क्रियाविशेषण है, कुछ जो हम करते हैं। यह व्यक्ति की योग्यता या अयोग्यता के विषय में नहीं है। यह है कि क्या प्रभु भोज लेने का यह कार्य एक उचित तरीके से या एक अनुचित तरीके से किया गया है।

ई. आत्मपरीक्षा का एक समय

"इसलिए मनुष्य अपने आप को जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए।" (1 कुरिं. 11:28)। प्रेरित पौलुस, प्रभु भोज के इस शक्तिशाली प्रबन्ध में, हमें याद दिलाता है कि यह उत्सव आत्मपरीक्षा का एक समय भी होना चाहिए। यह भोज का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलू होना चाहिए। जैसे यहूदियों को फसह का पर्व मनाने से पहले उनके घरों में से खमीर के सब निशान मिटा देने को कहा गया था (निर्ग. 12:15,19), उसी प्रकार हमें भी मसीह की देह और लहू के प्रतीकों में भाग लेने से पहले अपने आपको जाँचने की आज्ञा दी गई है। जैसे हम इस प्रकार अपने हृदयों को जाँचते हैं, और पाते हैं कि हम में कोई पाप या विद्रोह है, तो उसे परमेश्वर के सामने स्वीकार करें और उसकी क्षमा सच्चाई से माँगें और प्राप्त करें। जैसे हम पाप स्वीकरण और पश्चाताप द्वारा इस प्रकार पाप से फिरते हैं, तो परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह हमें हमारे पाप क्षमा करने और हमें सारे अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य है (1 यूहन्ना 1:9)।
इस प्रकार एक नियमित आधार पर मसीह की मृत्यु का उत्सव आत्मिक, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य और बल का एक असली माध्यम बन जाता है। परन्तु इसे हमारे लिए प्रभावशाली और लाभप्रद बनने के लिए, हमें सच्चाई से किसी भी पाप को जिससे हम अवगत हुए हैं स्वीकार करने की चेतावनी को मानना है और मसीह की क्षमा प्राप्त करनी है। इस प्रकार हम एक उचित और लाभप्रद रूप से खाने और पीने के योग्य होंगे। पौलुस हमें यह भी याद दिलाता है कि "यदि हम अपने आप को जाँचते तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है।" (1 कुरिं. 11:31-32)।

प्रभु की मेज पर शुद्धता और चंगाई दोनों मिलते हैं। हमें, प्रभु की देह को उचित रीति से पहचानते हुए, इस भोज को नियमित रूप से मनाना और योग्य तरीके से करना चाहिए। ऐसा करते हुए हम आत्मा, प्राण और शरीर की ईश्वरीय स्वास्थ्य की यशस्वी आशीष का आनन्द लें सकेंगे।

विश्वास की प्रार्थना करना

अ. विश्वास जो परमेश्वर का वचन घोषित करता है केवल उस पर आधारित होता है

जिस नींव पर विश्वास की प्रार्थना खड़ी होती है वो केवल परमेश्वर के वचन की सच्चाई है। इसे पुष्टि या प्रोत्साहन के लिए किसी दूसरे स्रोत की ओर नहीं देखना है। यह निर्विवाद रूप से विश्वास करती है कि परमेश्वर का वचन ही अन्तिम सत्य का स्रोत है। "परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे...।" (रोमियों 3:4)। बाइबल के विश्वास का आरम्भ परमेश्वर के वचन में है। "अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों 10:17)। इसका तात्पर्य यह है कि यदि हम विश्वास की प्रार्थना करना चाहते हैं, तो हमें, चंगाई के विषय में उसकी इच्छा से सम्बंधित, अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर के वचन से

परिचित कर लेना चाहिए। हमें उसके वचन से पता होना चाहिए कि चंगा करना उसकी इच्छा है। हमारे भीतर गहराई में विश्वास की एक पक्की नींव होनी चाहिए जो केवल परमेश्वर के वचन से बनी हो।

आ. विश्वास परमेश्वर की इच्छा जानता है

एक कोढ़ी ने एक बार यीशु से कहा, "यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।" (मत्ती 8:1-4)। इस कोढ़ी को उसकी हालत को चंगा करने की यीशु की योग्यता पर किसी प्रकार का भी संदेह नहीं था। उसका संदेह इस बात पर था कि क्या ऐसा करना उसकी इच्छा है या नहीं। यीशु ने इसे तुरन्त तय कर दिया जब उसने कहा, "मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा। और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया।" हमें भी अपने हृदय में दृढ़ता से निश्चित हो जाना चाहिए कि चंगा करना परमेश्वर की इच्छा है। यदि हमारे भीतर किसी अनिश्चितता या संदेह के कारण हमारी प्रार्थनाएँ इस प्रकार "यदि तेरी इच्छा हो तो" आरम्भ होती हैं, तो हम ने विश्वास की प्रार्थना नहीं की है!

बाइबल से जानने के अतिरिक्त कि बीमारों को चंगा करना परमेश्वर की इच्छा है, हमें परमेश्वर की इच्छा उत्सुकता से पता करनी चाहिए कि जिस व्यक्ति के लिए हम प्रार्थना कर रहे हैं उसे चंगा करने की उसकी इच्छा है। दूसरे शब्दों में, हालाँकि चंगा करना सदा ही परमेश्वर की इच्छा है, कभी कभार कुछ कारणों से उसकी चंगाई में विलंब होता है और हमें पता लगा लेना है कि इस व्यक्ति को इसी समय चंगा करना सचमुच उसकी इच्छा है। कभी-कभी जब हम इस बात का पता रहा रहे होते हैं, तब परमेश्वर किसी बाधा के विषय में बताता है जो उसकी चंगाई के सामर्थ्य को रोक रहा है। तब हम उस समस्या को दूर करने का प्रयास कर सकते हैं जिससे चंगाई आ सके। याकूब स्पष्ट करता है कि इस प्रकार संदेह करनेवाला व्यक्ति कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता है (याकूब 1:7)। इसलिए विश्वास की प्रार्थना पूर्ण रूप से आश्वस्त है कि परमेश्वर प्रार्थना सुनने और बीमार को चंगा करनेवाला है। संदेह, अनिश्चितता या असमंजस का कोई स्थान नहीं है। यह प्रार्थना एक सर्वोच्च समर्पित विश्वास की प्रार्थना है।

इ. विश्वास का सुनिश्चित विषय होता है

यीशु ने बारम्बार कहा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?" दूसरे शब्दों में वह पूछ रहा था, "तेरी विशेष इच्छा क्या है?" "तुम्हारी विशेष विनती क्या है?" मसीही अकसर उनकी प्रार्थनाओं में इतने अ-निश्चित होते हैं कि उन्हें बाद में पता नहीं चलता कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी है या नहीं। यदि हम अस्पष्ट रूप से प्रार्थना करते हैं, तो हमें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। हमें विशेष रूप से निश्चित करना है कि हम क्या विश्वास कर रहे और क्या चाहते हैं कि परमेश्वर करे, और धन्यवाद के साथ उस विनती को प्रार्थना में उसे बता दें।

एक अंधा व्यक्ति जिसे यीशु ने ऐसा ही प्रश्न किया था, उसने तुरन्त उत्तर दिया, "हे प्रभु, यह कि मैं देखने लगूँ।" (मरकुस 10:51)। उसने अपनी इच्छा निश्चित, विशेष और संक्षिप्त रूप से बताई। यीशु ने उसकी विनती का तुरन्त उत्तर दिया और व्यक्ति की आँखें खुल गईं।

ई. विश्वास माँगता और पाता है

बहुत से सच्चे मसीही यह समझने में असफल रहते हैं कि विश्वास की प्रार्थना माँगना और पाना दोनों है। माँगना और अनिश्चित काल तक माँगते रहना कभी-कभी अविश्वास का संकेत देता है। यीशु ने कहा, "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा।" (मत्ती 7:7)। इसलिए जब हम ने उससे माँगा है, तब हमें धन्यवाद के साथ उसके हाथ से अपनी विनती ले लेनी है।

उ. विश्वास का सही अभिप्राय होता है

याकूब ने दो मुख्य कारण बताए हैं कि हम कभी-कभी क्यों अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर नहीं पाते हैं (याकूब 4:2-3)। पहला है कि हम कभी-कभी माँगते ही नहीं! दूसरा कारण है कि हम प्रार्थना तो करते हैं, परन्तु गलत कारणों से करते हैं! याकूब कहता है, हम "बुरी इच्छा से" माँगते हैं। इसलिए हमें निश्चित करना है कि हमारे अभिप्राय शुद्ध हों। क्या हम यह विनती सही कारण से पाना चाहते हैं? सही कारण है कि परमेश्वर को महिमा मिले और उसका नाम ऊँचा उठे। इससे कुछ भी कम, अभिप्राय पर संदेह खड़ा करेगा।

बहुत लोग चीजों को बहुत ही स्वार्थी कारणों से माँगते हैं। परमेश्वर साधारणतः आत्मकेन्द्रित प्रार्थनाओं को नहीं सुनता है। अपने अभिप्रायों को स्पष्ट करना और निश्चित करना कि वे उपयुक्त हैं अच्छा होगा। जिस सेवक को परमेश्वर चंगाई लाने के लिए इस्तेमाल करेगा उसे भी निश्चित करना है उसके अभिप्राय भी उपयुक्त हैं। कुछ बीमारों के लिए व्यर्थ और ऊपरी कारणों से प्रार्थना करते हैं। बहुत से सेवक सोचने लगते हैं कि सामर्थ्य उनसे न कि उनके द्वारा आता है। बहुत से घमण्ड से फूल जाते हैं कि परमेश्वर उन्हें इस्तेमाल कर रहा है। वे इस सांसारिक रवैये के कारण अपने आप को और अधिक प्रभावकारिता से अयोग्य ठहराते

हैं। दूसरे भी हैं जो परमेश्वर के वरदान को व्यक्तिगत लाभ के लिए इस्तेमाल करने का प्रयास करते हैं। ऐसा करने से वे वरदान को विकृत करते हैं। सिद्धान्त सदा यही हैः "तुम ने सेंतमेंत पाया है सेंतमेंत दो।" (मत्ती 10:8)।

ऊ. विश्वास की निडर स्वीकृति होती है

विश्वास के कार्य करने के लिए एक सकारात्मक स्वीकृति अत्याश्यक है। "मैं ने विश्वास किया, इसलिए मैं बोला।" (2 कुरिं. 4:13)। "क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुँह से अंगीकार किया जाता है।" (रोमियों 10:10)। "आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है।" (इब्रा. 10:23)। यीशु ने हमारी स्वीकृति और जो हम परमेश्वर से माँगते हैं उसे पाने के बीच सम्बंध को समझाया था। "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, 'तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़', और अपने मन में संदेह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा।" (मरकुस 11:23)।

यदि आपकी स्वीकृति परमेश्वर के वचन से मेल नहीं खाती है तो यह विश्वास नहीं बोल रहा है। विश्वास सदा परमेश्वर के वचन से सहमत होता है। स्वीकार करना शब्द का अर्थ है: सहमत होना, वही बात कहना। यदि हम विश्वास की प्रार्थना करते हैं, तो हमारी बातचीत, बोली और स्वीकृति भी हमारी प्रार्थना से मेल खानी चाहिए।

ए. विश्वास हमारी स्वीकृति की सहमति में कार्य करता है

हमारे विश्वास की स्वीकृति एक मौखिक वक्तव्य है जो विश्वास, हम इस बीमार व्यक्ति की चंगाई के विषय में रखते हैं, उस के रवैये से सहमत होता है। हमें विश्वास के शब्द बोलने से थोड़ा आगे बढ़ना चाहिए। हमें विश्वास के कार्य करने हैं। ये वो कार्य हैं जो विश्वास के वक्तव्य से जो हमने कहे हैं, उनसे सहमत होते हैं। यह परमेश्वर के वचन पर कार्य करना है। याकूब कहता है, "कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है।" (याकूब 2:20)। यदि हम कुछ विश्वास करने का दावा करते हैं परन्तु उस पर कार्य नहीं करते तो हमारा स्वीकरण खाली है। कितनी बार यीशु ने उनसे जिनको उसने चंगा किया था, उनसे विश्वास के कार्य की माँग की। "उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर।" यह अकसर इस सुनिश्चित क्षण पर, जब व्यक्ति विश्वास में कार्य करने लगता है कि चमत्कार होता है। तुलना में, बहुतों को चंगाई नहीं मिलती है क्योंकि जिस क्षण उन्हें अपने विश्वास पर कार्य करना चाहिए, वे प्रतिज्ञा पर कार्य करने में असफल रहते हैं।

ऐ. विश्वास दृढ़ता से चलता रहता है

इब्रानियों 10:23 कहता है, "आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें, (क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है।)"। अनेक बार हमारा विश्वास जाँचा जाता है, और जिस परिणाम के लिए हमने विश्वास किया है वह तुरन्त प्रकट नहीं होता है। विश्वास के उपयोग में यह एक बहुत ही विवेचित और महत्त्वपूर्ण घटक है। सच्चे विश्वास की एक टिकाऊ विशेषता है कि जब परिणाम तुरन्त प्रकट नहीं होता है तब भी वह दृढ़ता से विश्वास करता रहता है। सच्चा विश्वास कहता है, "अपना हियाब न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है।" (इब्रा. 10:35)।

बाइबल का विश्वास केवल उससे सम्बंधित है जो परमेश्वर का वचन कहता है। यह स्वाभाविक इन्द्रियों द्वारा पहचानी भावनाओं, लक्षणों या प्रमाणों पर निर्भर नहीं करता है। यह परमेश्वर के वचन पर विश्वास करता, अंगीकार करना और कार्य करता है। इसलिए जब कोई प्रकट परिवर्तन या सुधार नहीं होता है, यह विश्वास करता रहता है कि परमेश्वर का वचन सच्चा है। विश्वास सदा अंगीकार करता है कि वचन सच्चा है और तदनुसार कार्य करता है।

ओ. विश्वास परमेश्वर को महिमा देता है

अब्राहम एक महान विश्वास के पुरुष के रूप में बहुत प्रसिद्ध है। इस विषय में उसका उदाहरण प्रेरक और शिक्षाप्रद दोनों हैं। रोमियों 4:17-21 हमें इस विश्वास के कार्य के कुछ सहायक सिद्धान्त देता है। इसमें यह तथ्य भी सम्मिलित है कि अब्राहम परमेश्वर को महिमा देने में सावधान था। बहुत सारे मसीहियों के साथ यह एक समस्या है कि परमेश्वर उन पर विश्वास के बड़े बड़े कारनामों के लिए भरोसा नहीं कर सकता है क्योंकि वे महिमा अपने लिए ले लेंगे। वे अपने आप को कुछ बड़ा महान करके दिखाएँगे। परमेश्वर अपनी महिमा का बहुत ही ईर्ष्यालु है। वह इसे दूसरे के साथ नहीं बाँटेगा। हमें इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए। जो अदभुत काम वो करता है उनके लिए सदा परमेश्वर को महिमा और आदर देने में सावधान रहो। यह आपका विश्वास नहीं है जो चमत्कार करता है; यह परमेश्वर का सामर्थ्य है। आपका विश्वास तो मात्र परमेश्वर का सामर्थ्य प्रवाहित होने के लिए एक माध्यम ही था।

अध्याय 5 नए निमय का सुसमाचार प्रचार और चंगाई

हमने पिछले अध्यायों में स्पष्ट रूप से देखा है कि परमेश्वर एक चंगा करनेवाला परमेश्वर है: "मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूँ।" (निर्ग. 15:26)। मसीह एक चंगा करनेवाला मसीहा है: "उसी की मार खाने से तुम चंगे हुए।" (1 पतरस 2:24)। वचन चंगा करनेवाला वचन है: "वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता है।" (भजन 107:20)। नए नियम की कलीसिया चंगा करनेवाला समाज था: "प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अदभुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे।" (प्रेरितों 5:12)।

नए नियम के सुसमाचार प्रचार में चंगाई सम्मिलित थी

जब हम नए नियम के सुसमाचार प्रचार की बात करते हैं, तो हमारा तात्पर्य उस प्रकार का सुसमाचार प्रचार है जो पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित, अभिषिक्त और समर्थ है, और वैसे ही चिन्हों, अदभुत कामों और चमत्कारों द्वारा अनुप्रमाणित होता है जो आरम्भिक कलीसिया की सेवकाई में होते थे। दुर्भाग्यवश बहुत से सेवक आजकल योग्यता, प्रशिक्षण, व्यक्तित्व, संघटनात्मक योग्यता, विख्यापन, वगैरा पर निर्भर होते हैं, और पवित्र आत्मा पर बहुत कम निर्भरता रखते हैं। इसलिए उनकी सेवकाई के साथ साथ चमत्कारों की कमी है!

आरम्भिक कलीसिया में वो चीजें कितनी कम थीं जिनमें आज बहुत लोग विश्वास रखते हैं। उनकी समाज में कोई प्रतिष्ठा या पदवी नहीं थी। उनकी कोई भव्य इमारतें, कालेज और विश्वविद्यालय नहीं थे। उनमें बहुत कम सामाजिक परिष्करण होता था जो शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक स्थिति से आता है। बदले में, वे अपने समाज के बहिष्कृत थे। इस प्रत्यक्ष प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, वे संसार को मसीह के लिए उलटा-पुलटा करने में सफल रहे! यदि हम ने अपनी सेवा में उनके जैसे तरीकों को अपनाया तो हम भी आज वैसे ही परिणाम पाएँगे!

आरम्भिक कलीसिया की बढ़त में चिन्ह, अदभुत काम. चमत्कार और चंगाइयाँ एक मूलभूत घटक थे। प्रेरितों के काम पुस्तक बड़े बड़े चमत्कारों से भरी हुई है जो मसीह ने उन आरम्भिक चेलों द्वारा किए थे। प्रेरितों की पुस्तक न केवल उस युग का ऐतिहासिक वर्णन है; यह सब समय के लिए कलीसिया का ईश्वरीय नीला नक्शा भी है। परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा था कि चमत्कारी प्रेरितों की मृत्यु के साथ गायब हो जाएँ। चमत्कार केवल प्रेरिताई युग के लिए ही नहीं थे; वे हमारे समय के लिए भी हैं!

<u>आओ हम आरम्भिक कलीसिया के कार्यक्रम में चमत्कारों का गतिशील प्रभाव देखें।</u>

1. चमत्कार भीड़ को आकर्षित करते थे

यह यीशु की सेवकाई में सच था। "बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया।" (यूहन्ना 2:23)। "एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उनको देखते थे।" (यूहन्ना 6:2)। यह आरम्भिक प्रेरितों के जीवन में भी सच था। सुन्दर नामक द्वार हुए चमत्कार (प्रेरितों 3:1-16) के कारण 5000 लोग मसीह की ओर फिरे। प्रेरितों (4:4)। "प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और आदभुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे। विश्वास करनेवाले बहुत से पुरुष और स्त्रियाँ प्रभु की कलीसिया में बड़ी संख्या में मिलते रहे।" (प्रेरितों 5:12,14)। "यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे। (प्रेरितों 5:16)।

2. चमत्कार संदेश की पुष्टि करते थे

यीशु ने भविष्यद्वाणी की थी कि सच्चे सुसमाचार के प्रचार के साथ साथ अलौकिक चिन्ह भी होंगे। "विश्वास करनेवालों के ये चिन्ह होंगे।" (मरकुस 16:17-18)। उन पाँच में से एक चिन्ह था, "वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।" (मरकुस 16:18)। "जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित होकर मन लगाया।" (प्रेरितों 8:6)। निष्कर्ष स्पष्ट है। लोग फिलिप्पुस के अधिकार से प्रभावित हुए थे जब उन्होंने उसकी सेवकाई में चमत्कार होते देखे थे, परिणामस्वरूप जो उसे कहना था उस पर चित लगाया। इसलिए प्रतिक्रिया इतनी बड़ी थी कि उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया। (प्रेरितों 8:8)।

3. चमत्कार समाज की असली आवश्यकताओं को पूरा करते थे

प्रेरितों के आस-पास सदा बड़ी भीड़ रहती थी क्योंकि इतने बीमार लोग चंगा होना चाहते थे। वे चंगा होने आते थे। बहुत लोग अधिक पाकर जाते थे - उन्हें राज्य मिलता था। चंगाई और चमत्कार सदा बड़ी भीड़ को आकर्षित करते हैं। यह आज भी उतना

ही सच है जितना बाइबल के दिनों में था। लोगों के लिए यह स्वीकार करना कि वे पापी हैं और उन्हें उद्धारकर्त्ता की जरूरत है, कठिन होता है, परन्तु बीमार व्यक्ति को कायल करना कि उसे चंगाई चाहिए, कठिन नहीं है। वह अपनी जरूरत से बहुत ही अवगत है। नए निमय का सच्चा सुसमाचार प्रचार मनुष्य की शारीरिक जरूरतें और आत्मिक जरूरतें दोनों पूरी करता है।

4. चमत्कार मसीह का मरे हुओं में से जी उठना प्रमाणित करते हैं

बहुत लोग मसीह के पुरनरुत्थान की सच्चाई का खण्डन करते थे। बहुत से चमत्कार जिन्हें परमेश्वर यीशु के नाम में करने लगा, उन्होंने भीड़ को पुनरुत्थान की वास्तविकता के विषय में कायल कर दिया। यदि मसीह अभी भी मरा हुआ होता, तब उसके नाम में कोई सामर्थ्य नहीं होता। जब पतरस सुन्दर द्वार पर हुए चमत्कार के विषय में प्राचीनों से बोला तो उसने कहा, "तो तुम सब और सारे इस्राली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है।" (प्रेरितों 4:10)। पतरस प्रकट है, उन्हें प्रमाणित करने के लिए कि मसीह मरे हुओं में से जी उठा है, चमत्कार की बात कर रहा था।

5. चमत्कार परमेश्वर को महिमा लाते थे

हम ने अंधे व्यक्ति के विषय में पढ़ा जो चंगा हुआ था। "तब वह तुरन्त देखने लगा और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ उसके पीछे हो लिया, और सब लोगों ने देखकर परमेश्वर की स्तुति की। (लूका 18:43)। एक और अवसर पर यीशु ने एक व्यक्ति को चंगा किया जो लकवे का मारा हुआ था। "वह उठा और तुरन्त खाट उठाकर सब के सामने से निकलकर चला गया; इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, 'हम ने ऐसा कभी नहीं देखा।'" (मरकुस 2:12)। द्वार पर लंगड़े व्यक्ति के चंगा होने के विषय में, हम पढ़ते हैं, "उसके कारण सब लोग परमेश्वर की बड़ाई करते थे।" (प्रेरितों 4:21)।

6. चमत्कारों ने नए विश्वासियों के परमेश्वर के सामर्थ्य में स्थापित किया

पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को कहा, "मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था, इसलिए कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।" (1 कुरिं. 2:4-5)। जब सुसमाचार परमेश्वर के अलौकिक सामर्थ्य में आता है, तो नए विश्वासी उस सामर्थ्य में और के द्वारा स्थापित होते हैं। मनुष्यों का ज्ञान (तत्त्व-ज्ञान, तर्कशास्त्र, मूलाधार) पुरुषों और स्त्रियों को मसीही विश्वास में कभी भी स्थापित नहीं कर सकता है।

आरम्भिक कलीसिया के सिद्धान्त और आचरण जो चंगाई लाते हैं

1. उन्होंने परमेश्वर के वचन का प्रचार किया

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस का प्रचार (प्रेरितों 2:14-36) और स्थिफनुस का भाषण (प्रेरितों 7) दोनों आरम्भिक कलीसिया के प्रचार की विषय-वस्तु का एक उत्तम नमूना हैं। परमेश्वर के वचन के प्रचार में अधिकार का एक ईश्वरीय प्रभाव होता है। परमेश्वर अपने वचन के पीछे खड़ा होता है। "मैं अपने वचन को पूरा करने के लिए जागृत हूँ।" (यिर्म. 1:12)। परमेश्वर के वचन के प्रचार से सुननेवालों में विश्वास पैदा होगा जो और कुछ नहीं कर सकता है। "विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों 10:17)। उनका प्रचार मसीह को ऊँचा करता था। उनके संदेश का वह मुख्य विषय होता था। वे उससे सम्बंधित सब भष्विष्यद्वाणियों के विषय में बताते थे। उन्होंने दिखाया कि परमेश्वर के वचन ने कैसे उसके आने की भविष्यद्ववाणी की थी और कैसे उसने सारी भविष्यद्ववाणियों को पूरा किया था। उन्होंने स्पष्ट रूप से दिखाया कि यीशु ही सचमुच परमेश्वर का पुत्र है। उनके प्रचार ने उस प्रभुता और अधिकार को घोषित किया जिसे परमेश्वर ने यीशु पर डाला था। उनके प्रचार में प्रभु यीशु मसीह, नाम को प्रमुख स्थान दिया गया था। उन्होंने सिखाया कि परमेश्वर ने यीशु को सब चीजों का अन्तिम अधिकारी नियुक्त किया है। यीशु मसीह प्रभु है उनकी शिक्षाओं का विषय होता था:

वह सब चीजों पर प्रभु है।

सृष्टि का प्रभु।

उद्धार का प्रभु।

प्रधानताओं और अधिकारियों को क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा नष्ट करने के द्वारा, वह शैतान पर प्रभु है।

वह डर, बीमारी, रोग और दुष्टात्माओं पर प्रभु है।

लोगों को दिखाया गया था कि जब मसीह की प्रभुता उनके जीवनों में स्थापित हो जाती है, तो यह उनकी परिस्थितियों पर भी स्थापित हो जाएगी।

2. उन्होंने आत्मिक अधिकार उपयोग में लाया

आरम्भिक कलीसिया के इन अगुओं को उस अधिकार की गहरी जानकारी थी जिसे परमेश्वर ने उन पर डाला था। उसने उन्हें स्पष्ट किया था, "यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।" (यूहन्ना 16:23)। उसने उनके ऊपर "मुख्तारनामा" - उसके नाम में कार्य करने का एक कानूनी अधिकार - दिया था। इसका अर्थ है उसकी ओर से कार्य करना। एक जन्म से लंगड़े अपाहिज का सामना करने पर, उन्हें उनको दिए नए अधिकार को इस्तेमाल करने का पहला अवसर था। "चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूँ; यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।" (प्रेरितों 3:6)। पतरस ने बाद में भौचक्की भीड़ को स्पष्ट किया कि यीशु के नाम में अधिकार के द्वारा, और उस नाम में विश्वास के द्वारा, यह लंगड़ा उनके सामने बिलकुल भला चंगा खड़ा है। (प्रेरितों 3:16; 4-10)।

यीशु ने उन्हें उसके नाम में जाने और उसके नाम का अधिकार उपयोग में लाने की आज्ञा दी थी। (मरकुस 16:17-18; यूहन्ना 14:12-15; 15:16)। यह अधिकार अभी भी कलीसिया में है। आरम्भिक चेले जानते थे कि वे कौन हैं और उनका अधिकार क्या है। उन्हें अपने स्वाभाविक योग्यताओं या साधनों में कोई विश्वास नहीं था। उन्हें उस अधिकार पर जो यीशु के नाम में था सवोच्च विश्वास था। वे जानते थे कि उस नाम के पीछे परमेश्वर के सिंहासन का सामर्थ्य था। परमेश्वर ने यीशु के नाम में अपना सारा सामर्थ्य और अधिकार मानव जाति को दिया था। यीशु के नाम में चंगाई और उद्धार है। जब हम उस नाम में बोलते हैं, तो दुष्टात्माओं को आज्ञा माननी है। उस नाम के सामर्थ्य और अधिकार के सामने बीमारियों को पीछे हटना है। यीशु ने आपको उसके नाम का अधिकार दिया है! वह चाहता है कि आप जाओ और अधिकार उपयोग में लाओ। उसके नाम में बोलो। बीमारी को उस नाम में जाने को बोलो।

3. उन्होंने लोगों को चंगा होने होने के लिए प्रोत्साहित किया

पतरस ने हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ा और उसे उठाया, और उसी क्षण जैसे व्यक्ति विश्वास में उठने लगा कि परमेश्वर का सामर्थ्य उसके शरीर में आया और उसे पूर्ण रूप से चंगा कर दिया (प्रेरितों 3:7)। पतरस के सक्रिय प्रोत्साहन के बिना, चमत्कार सम्भवत: नहीं हुआ होता। चंगाई की सेवा करने में, निर्देश देने, केवल मौखिक प्रोत्साहन देने से कुछ अधिक सम्मिलित होता है। यीशु के नाम में आत्मिक अधिकार के साथ उससे बोलने के बाद, पतरस उसकी, वह करने में सहायता करने लगा जो उसने पहले कभी नहीं किया था। इस विश्वास के कार्य ने व्यक्ति में परमेश्वर का सामर्थ्य डाल दिया, और वह खड़ा होकर चलने लगा, "और चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया।" (प्रेरितों 3:8)।

4. वे आत्मा के सामर्थ्य में बोलते थे

चेले ऊपरी कोठरी में पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए थे। यह जीवन परिवर्तन करनेवाला अनुभव था। जब वे उस कमरे में से बाहर आए तो वे भिन्न मनुष्य थे। एक सबसे अनोखा बदलाव वह नया साहस था जो उन्होंने दिखाया था। पतरस एक प्रमुख उदाहरण था। पिन्तेकुस्त से पहले, वह डरा हुआ था और कायरता का उदाहरण दिया था; स्वीकार करने से डर रहा था कि वह यीशु को जानता भी है; एक जवान नौकरानी के सामने स्वीकार करने से डर रहा था कि वह यीशु का चेला है। परन्तु अब वह एक नए विश्वास और साहस से भर गया था। जैसे वह भीड़ के सामने यीशु के विषय में प्रचार करने लगा, तो वह यह साहस दिखाने लगा। ये वही लोग थे जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था और जिनसे वह डरता था। लेकिन अब उसने बड़े अधिकार और साहस के साथ मसीह की प्रभुता का प्रचार किया। प्रेरितों 4:8 पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित निडर प्रचार का एक उदाहरण है। "तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा...।"

अधिकतर आधुनिक प्रचार में साहस की कमी होती है। बदले में, यह क्षमा-याचक और कमजोर है। एक कारण है कि प्रचारक अकसर वचन और परमेश्वर के विचारों का विश्वासयोग्यता से प्रचार करने के बजाय उनके अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। दूसरा कारण है कि वे पवित्र आत्मा के अभिषेक पर निर्भर होने के बजाय उनके वाक्पटुता की योग्यता पर निर्भर होते हैं। वे पवित्र आत्मा का सामर्थ्य प्रदर्शित करने के बजाय मनुष्य के ज्ञान के लुभानेवाले शब्दों का उपयोग करते हैं। पौलुस ने ऐसा करने से इनकार किया। वह तो औरों से बढ़कर ऐसा करने की योग्यता रखता था। अपनी शिक्षा और धार्मिक प्रशिक्षण के कारण वह मनुष्य के ज्ञान से बोल सकता था, परन्तु उसने सम्पूर्ण रूप से आत्मा की प्रेरणा और अभिषेक पर निर्भर रहना चुना। (1 कुरिं. 2:1-5)।

5. उन्होंने साहस के साथ कार्य किया

लोगों ने पतरस और यूहन्ना के साहस पर अचम्भा किया और पहचाना कि उनके साहस का कारण यीशु के साथ उनका समय बिताना था (प्रेरितों 4:13)। इसका चिन्ह वही साहस था जो यीशु का था। यह आत्म-विश्वास का कोई घमण्ड नहीं था, परन्तु उनका शान्त साहस था जो जानते हैं कि अपने वचनों की उनके प्रचार और कार्यों द्वारा पुष्टि करने और अनुप्रमाणित करने के लिए परमेश्वर उनके साथ है।

जब स्थानीय अधिकारियों ने उन्हें यीशु के नाम में बोलने या सिखाने से मना किया, तो उनकी प्रतिक्रिया और अधिक साहस पाने के लिए परमेश्वर को प्रार्थना में और खोजने की थी। (प्रेरितों 4:29)।

साहसिक कार्य उस व्यक्ति में देखा जाता है जो अपने परमेश्वर द्वारा दिए अधिकार को जानता है और उसके द्वारा निर्धारित क्षेत्रों में कार्य करता है। चंगाई की सेवकाई में, ऐसा कार्य होता है:

अ. यह जानने से कि परमेश्वर ने एक चंगाई की वाचा बाँधी है।

आ. चंगाई से सम्बंधित परमेश्वर के वचन की सम्पूर्ण समझ होने से।

इ. चंगाई के विषय में परमेश्वर की इच्छा जानने से।

ई. विश्वास का एक आश्वासन पाने से कि परमेश्वर इस व्यक्ति को चंगा करेगा।

उ. विश्वास करने से कि परमेश्वर चिन्हों के द्वारा अपने वचन की पुष्टि करेगा।

6. उन्होंने लोगों के बीच बहुत सारे चिन्ह और चमत्कार किए

प्रारंभिक कलीसिया को चमत्कार की इस महान सेवकाई के द्वारा जो परमेश्वर उन्हें दे रहा था, स्थानीय समाज में एक बहुत बड़ी पहुँच मिली हुई थी। (प्रेरितों 5:12)।

चमत्कार सुसमाचार के प्रस्तुतिकरण को नाटकीय बनाता है।

चमत्कार संदेश के सत्य की पुष्टि करते हैं।

चमत्कार भीड़ को आकर्षित करते हैं। (प्रेरितों 5:14)

चमत्कार अविश्वासियों को कायल करते हैं कि कार्य असल में परमेश्वर का है।

चमत्कारों, चिन्हों और अदभुत कामों पर यह जोर एक अत्यावश्यक कंजी थी जिसके द्वारा कलीसिया ने संसार के लोगों के लिए द्वार खोले थे। उस सेवकाई के कारण जिसमें चमत्कार इतने प्रत्यक्ष थे, सुसमाचार उन दिनों में इतनी शीघ्रता से फैलता गया।

ऐसे चमत्कार अभी भी सुसमाचार प्रचार का एक तत्त्वतः भाग हैं। कुछ का यह तर्क कि लोग बहुत परिष्कृत हो गए हैं इसलिए चमत्कार अब आकर्षित या कायल नहीं करते हैं, ठोस नहीं है। ऐसी कलीसियाएं जो सबसे अधिक प्रभाव डाल रही हैं और सबसे तेज बढ़त अनुभव कर रही हैं, वो कलीसियाएं हैं जो चमत्कारी की सेवकाई उपयोग में ला रही हैं।

7. वे प्रतिदिन यीशु मसीह के बारे में सिखाते थे

आरम्भिक कलीसिया का संदेश अपेक्षाकृत साधारण था; वे यीशु मसीह के विषय में प्रचार करते और सिखाते थे (प्रेरितों 5:42)। उनका संदेश साम्प्रदायिक बल के कारण जटिल नहीं था। यह आधुनिक सिद्धान्त के कारण फीका नहीं पड़ा था और समझौता किए हुए नहीं था। उनकी शिक्षा धर्मविद्या के मतों से नहीं बनी हुई थी। उन्होंने एक सिद्धान्त नहीं सिखाया; उन्होंने एक व्यक्ति का परिचय दिया। उन्होंने व्यवस्था का अक्षर नहीं सिखाया जो मारता है। उन्होंने वचन के आत्मा की सेवा की, जो जीवन देता है! (2 कुरिं. 3:6)। उनकी शिक्षाएँ मन्दिर के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं थीं। वो प्रतिदिन घर घर जाकर सिखाया करते थे। यीशु उनके प्रतिदिन के जीवनों की वास्तविकता था। उसे किसी डिब्बे में नहीं रख गया था, जिस पर लिखा था, "केवल रविवार के लिए।"

जब उन्होंने यीशु मसीह के विषय में सिखाया, तो उन्होंने उसे सर्वोच्च प्रभु के रूप में ऊँचा किया (प्रेरितों 2:36)।

उन्होंने उसका एक मात्र उद्धारकर्त्ता के रूप में प्रचार किया (प्रेरितों 2:38; 4:12)।

उन्होंने उसका एक सामर्थी चंगा करनेवाले के रूप में प्रचार किया (प्रेरितों 3:6-8,16)।

उन्होंने उसके पवित्र आत्मा के बपतिस्मा देनेवाले के रूप में प्रचार किया (प्रेरितों 2:38)।

वे उसे अपने प्रचारों में नियमित और लगातार ऊँचा करते थे।

उनकी सेवकाई प्रेरणात्मक और शिक्षाप्रद थी। यह विश्वास को प्रेरित करती थी।

बाइबल कहती है कि "विश्वास मसीह का वचन सुनने से आता है।" (रोमियों 10:17)। दुरर्भाग्यवश, अधिकाँश आधुनिक प्रचार में विश्वास "चला जाता है"। बहुत से प्रचारक आज विश्वास को बनाने और मजबूत करने के बजाय इसे कमजोर करते और नष्ट करते हैं।

आरम्भिक कलीसिया की सेवकाई में चमत्कारी पर सुसंगत बल के कारण करिश्मा से भरी अगुआई उभर कर आई थी। स्तीफनुस और फिलिप्पुस दोनों आरम्भ में प्रबंध के काम के लिए डीकनों के रूप में नियुक्त किए गए थे (प्रेरितों 6:1-7)। अगली बार जब

हम स्तीफनुस का नाम सुनते हैं, तो वह एक बड़ी भीड़ को एक भारी संदेश प्रचार कर रहा है (प्रेरितों 7)। फिलिप्पुस के विषय अगला वर्णन सामरिया में उसका चमत्कारी सेवकाई के समय है, "लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।" (प्रेरितों 8:5)। उसके संदेश की पहुँच और जो बातें उसने मसीह का प्रचार करते हुए कहीं उसके सुननेवालों के जीवनों में होती हुई देखी जा सकती हैं। लूका कहता है कि फिलिप्पुस परमेश्वर का राज्य और यीशु के नाम (और उस नाम के अधिकार का तात्पर्य जो उनके लिए हो सकता है) का सुसमाचार सुनाता था। क्या ही यशस्वी विषय है! इन बड़े बड़े विषयों का प्रचार करते हुए, मसीह के सुसमाचार की बहुतायत का प्रचार करने का कितना बड़ा अवसर था।
पवित्र आत्मा और परमेश्वर के वचन द्वारा बनाए वातावरण में, चमत्कार होने लगे, "क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएँ बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गए; और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया। (प्रेरितों 8:7-8)। फिलिप्पुस नए नियम में एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जिसके विषय में कहा गया है कि वह सुसमाचार प्रचारक था। इसलिए, सामरिया में उसके कार्य को एक सुसमाचार प्रचार की सेवकाई के उदाहरण के रूप में देखा जाना चाहिए। इसमें मसीह का प्रचार करना सम्मिलित था, परन्तु चंगाई और छुटकारे की सेवा भी सम्मिलित थी। जिस प्रकार का प्रभाव सामरिया पर पड़ा, उसकी सेवकाई के चमत्कारी तत्त्वों के बिना नहीं पड़ सकता था।

परमेश्वर चाहता है कि उसकी कलीसिया आज चंगाई का एक उपकरण बने

हमारे समय की कलीसिया के विषय परमेश्वर का उद्देश्य और इच्छा यह है कि वह संसार पर एक जबरदस्त प्रभाव डाले। यह तब ही हो सकता है जब हम विश्वास करें कि परमेश्वर अपनी कलीसिया पर उसके चमत्कारी सामर्थ्य को लौटा देगा। इसे साकार करने के लिए पवित्र आत्मा सारी पृथ्वी पर कार्य कर रहा है। हमारे हृदय और मन आत्मा के लिए खुले रहें, कि वह अपने उद्देश्य हम में पूरे करे सके!

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 5 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

=====

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी,
पी. ओ. बॉक्स 19106,
वरली,
मुम्बई - 400 030
+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**